

दूसरा भाग

शाहनामा-ए-हिन्द का दूसरा भाग शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल हिन्दू अहंदा-हुकूमत ६०० साल कब्जे-मसीह से शुरू होता है। इसमें जुगराफिया, तहकीके नसले-इन्साना पर वहस, हिंदुस्थान में आर्यन कौम की आमद, कदीम द्रविड कौम से उनका टकराव, आर्य कौम की हुकूमतों का कयाम, उनके रहन सहन, तरजे-माआशरत और सनअत-ओ-हरफत, इसके बाद जैन और बौद्ध धर्मों का इतिहास, अजात, शत्रू और शीश नाग खानदान का जिक्र, हिन्द पर यूनान व फारस का आक्रमण, सिकन्दर और पोरस की जग, चंद्र गुप्त मौर्या और अशोक का जमाना, शुक्र व कानू और आन्ध्र खानदान का तजकेरा, सलतनत-ए-मगध का खातमा, यूनानी और सथीन कौमों के हमले, कनिष्क का दौर-हुकूमत, पुराणों का जमाना जो ३२० इसवी से ८०० सने-इसवी तक होता है। इस में चंद्रगुप्त अख्त, समुद्र गुप्त, चंद्रगुप्त सानी, चीनी सय्याह फाहियान की आमद, सफीद हूनों के हमले और हर्षवर्धन शिलादत्य का शानदार दौर-हुकूमत का तजकेरा, हर्षवर्धन, राजपूतों की तरकी व इस्तेका का जमाना, जुनूवी हिन्द में दकन के राष्ट्र कोटों, यादव, होशील और कातके खानदान, चोल, चीरा और पाडिया खानदान का तजकेरा किया गया है, और आखिर में जुनूवी हिन्द में अरबों की तिजारती सर-गरमियों पर भी रोशनी डाली गई है।

★ ★ ★

SDS LIBRARY
Rajpur Road, DELHI-110054

392 Acc. No. 26913
No. Book No. SHA
रुद्रेश कुमार जी शर्मा

Centre for the Study
of Developing Societies
29, Rajpur Road,
DELHI - 110 054



شاہناما -ع- ہیند

ب-شمول

اردو

مہا بھارت

پہلے حصہ

اردو شاعری میں بھارت کا قدیم تاریخ

فریدوسی-ع-ہیند

فریدوسی نیکو

شاہنامہ ہند

اول

بشمول

مہا بھارت

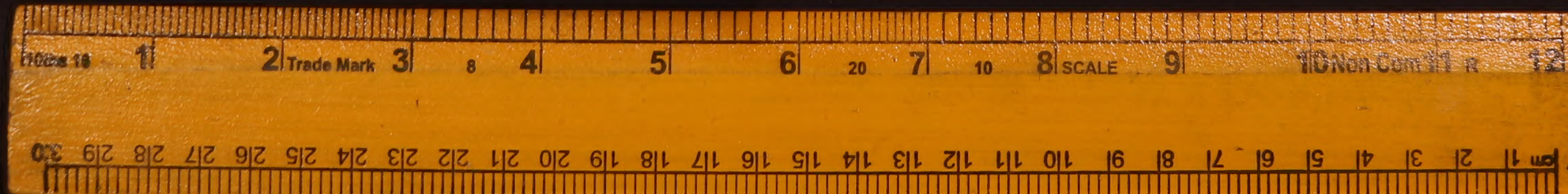
اردو نظم میں وطن عزیز کی قدیم تاریخ

فریدوسی ہند - فروغ نقاش



27-12-77

500-50



प्रकाशक :

फ़ारोग नक्काश

शाहनाम -ए- हिन्द

प्रकाशन केन्द्र,

(हिन्दी - उर्दू - महाभारत)

मोहम्मद अली रोड,

मोमिनपुरा, नागपुर-१८.

ناشر غفرناش

شاہنامہ ہند

پبلشنگ ہاؤس

(ہندی - اردو - महाभारत)

محمد علی روڈ، موئن پورہ، ناگپور - ۱۸

प्रतियाँ : एक हजार

تعداد : ایک ہزار

सर्वाधिकार प्रकाशकाधिनि ©

جمہ حقوقي بحق مصنف محفوظ

प्रथम संस्करण : १९९७

اشاعت بار اول : ۱۹۹۷ء

मूल्य : पाँच सौ रुपये

قیمت : پانچ سو روپے
بیرون ملک : تیس / ۳۰ امریکی ڈالر

विदेशी मुद्रा : तीस यु.एस. डॉलर

मुद्रक :

रा.का. बेडेकर

मॅनेजर :

शिवशक्ति प्रेस प्रा लि.

बैद्यनाथ भवन, ग्रेट नागरोड

नागपुर-९

مطبع :

آر۔ کے۔ بیٹر کے کر
مینجر شیشو شکتی پریس پرائیویٹ لمیٹید
بیدھ ناتھ بھون، گرینٹ ناگ روڈ
ناگپور - ۹



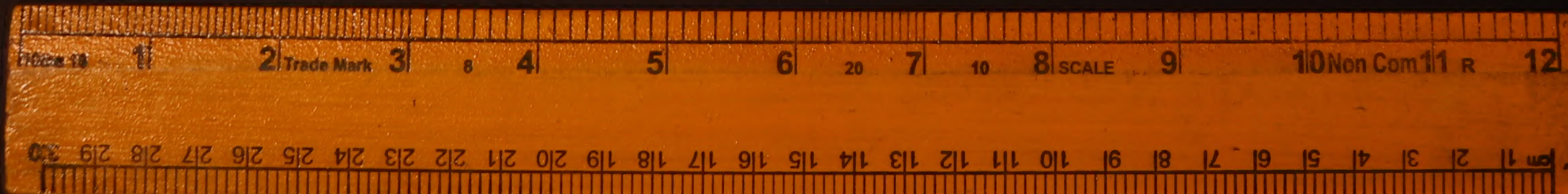
श्री सुरेश कुमारजी शर्मा

नागपुर नगर स्थित श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि.

प्रतिष्ठान के आप कुशल प्रबंधक निर्देशक है ।

हिन्दी उर्दू महाभारत ग्रंथ प्रकाशन तथा मार्गदर्शन के लिये

आपका अपूर्व सहयोग मिला वह वास्तवमें अविस्मरणीय है ।





सैयद शहजाद हुसैन साहब,
डिविजनल कमिशनर नागपूर, की लेखक फिरदौसी-ए-हिन्द
फरोग नक्काश के घर एक मुलाकात

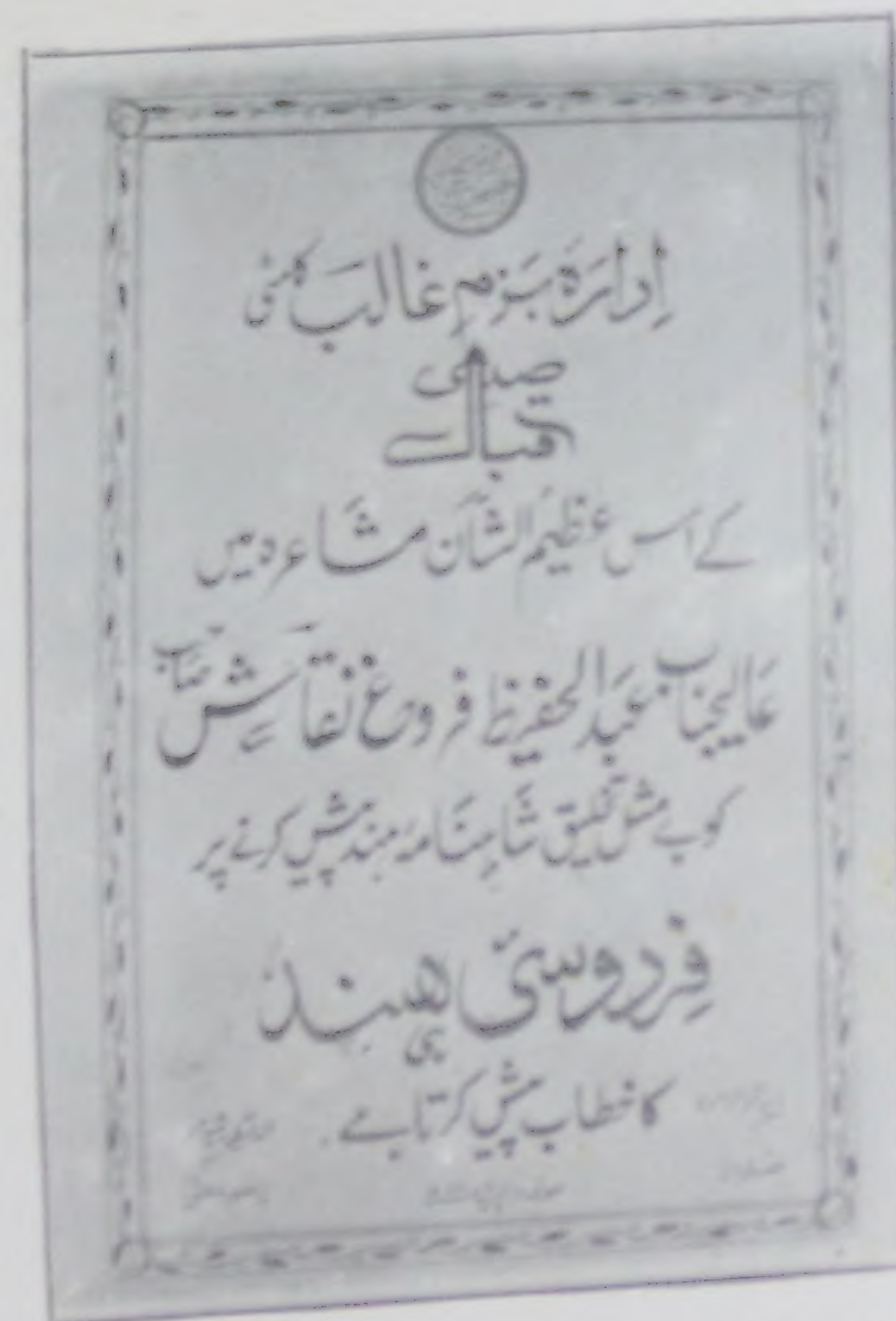


नागपूर महानगर पालिका की ओर से पेशकर्दी मानचिन्ह



सन १९७७ में नागपूर महानगर पालिका की रजत जयंती उत्सव के अवसर पर
तत्कालीन महापौर श्री अटल बहादूर सिंह, फरोग नक्काश का सत्कार करते हुए।





सन १९७८ में "बज़्मे-ग़ालिब" संस्था (कामटी) की ओर से मिला मान चिन्ह



सन १९७८ में "बज़्मे-ग़ालिब" संस्था (कामटी) की ओर से "फ़िरदौसी-ए-हिन्द" का खिताब पेश करते हुए महाराष्ट्र के तत्कालीन मंत्री श्री तेजसिंह राव भोंसले



सन १९८० में इकबाल अकादमी के मुशायरे में माजी केन्द्रीय सांसद श्री दत्ताजी मेघे, फ़िरदौसी-ए-हिन्द फ़रोग नक्काश को "कवमी-यक-जहती के अलंबरदार", अवॉर्ड प्रदान करते हुए।



भूतपूर्व केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री वसंत साठे के साथ फरोग नक्काश





राजाराम वाचनालय की ओर से विदर्भ साहित्य संघ के अध्यक्ष श्री सुरेश द्वादशीवार लेखक फरोग नक्काश का सत्कार करते हुए ।



फिरदौसी-ए-हिन्द फरोग नक्काश को उर्दू अकादमी के मुनायरे नागपुर में प्रो. एस. एम. आई असीर, वजीर ट्रान्सपोर्ट महाराष्ट्र सिपास नामा देते हुए ।



श्री सुशील कुमार शिंदे और श्री सतीश चतुर्वेदी, फरोग नक्काश के घर भेट वार्ता





नगर संस्था सारथी की ओर से मिला मानचिन्ह



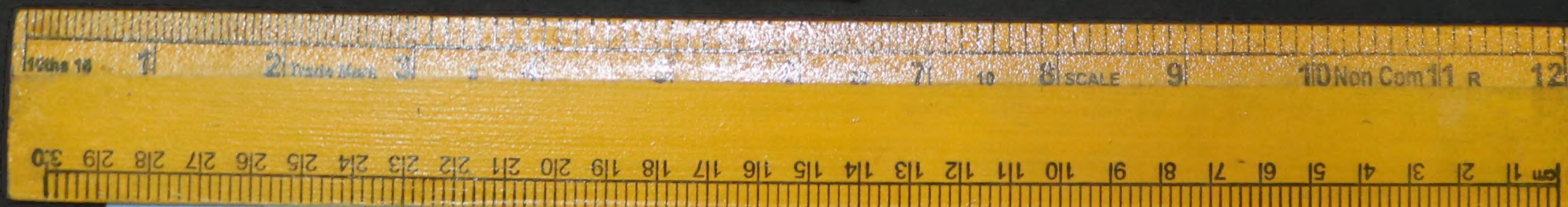
सारथी संस्था की ओर से आयोजित समारोह में डॉ. श्रीपदराव (तत्कालीन विधान सभा अध्यक्ष, आंध्रप्रदेश) शायर को शिल्ड प्रदान करते हुए ।



वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की ओर से मिला मानचिन्ह



वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की ओर से एक समारोह में नागपुर के विभागीय आयुक्त जनाब सैयद शहज़ाद हुसैन शायर को प्रशस्ती-पत्र प्रदान करते हुए ।





वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

(कोल इण्डिया लिमिटेड का उपक्रम)

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में

प्रमाण पत्र

श्री फरोग नक्काश, नागपुरी, कालरी _____ क्षेत्र को

_____ सांस्कृतिक गतिविधि _____ में

सर्वश्रेष्ठ कार्य प्रदर्शन के लिये १५ अगस्त १९९५ के दिन

डब्ल्यू. सी. एल. मुख्यालय नागपुर में आयोजित "स्वतंत्रता दिवस"

समारोह में सम्मानित किया जाता है।

आप नागपुर शहर के जाने माने शायर हैं। आपने महाभारत ग्रन्थ को
उर्दू शायरी में लिखकर एक प्रशंसनीय कार्य किया है।

उर्दू शायरी के माध्यम से आपने हिन्दुस्थान के तारीख को बयान
करने की भी कोशिश की। कम्पनी प्रबन्धन आपका अभिनन्दन करते हुए
आपको ₹१०००/- की राशि एवं पदक प्रदान कर सम्मानित करती है।

नागपुर
१५/८/९५

२२ नवंबर १९९५

तपन कुमार सिंह
महाप्रबन्धक, समन्वय

रमेश बिहारी माथुर

अध्यक्ष - प्रबंध-निर्देशक

आभार

आदरणीय सैयद शहजाद हुसैन साहब डिविज़नल
कमिश्नर नागपुर का मैं दिल की गहराईयों से आभारी हूँ।
जिन की कलात्मक दृष्टी ने उर्दू महाभारत की छपाई एवं
प्रकाशन पर कुछ लोगों को इस ओर आकर्षित किया।
जिन के नाम निम्न प्रकार हैं।

श्रीमान सुरेशकुमारजी शर्मा साहब

(प्रबंध निर्देशक, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. नागपुर)

श्री रमेश बिहारी माथुर साहब

(ना. प्रबंध निर्देशक, वेस्टर्न कोल फिल्ड्स लि. नागपुर)

श्री. ज़ामिन अमीन साहब व श्री. ज़ुज़र अमीन साहब

इन सभी का आभारी हूँ, जिन के वित्तिय सहायता से
किताब उर्दू महाभारत प्रकाशित हुई।

फरोग नक्काश

هدیهء تشکر

عزت مآب سید شہزاد حسین صاحب، ڈویژنل کمشنر، ناگپور کا میں
تمہارے دل سے مشکور ہوں جن کی قدر شناس نگاہوں نے اردو महाभारत
کی طباعت اور اشاعت پر چند اہل خیر حضرات کو متوجہ فرمایا۔
جن کے اہمائیے گرامی حب ذیل ہیں۔

عالی جناب سریش کمار جی شرما صاحب

مینینٹ ڈائریکٹر، شری بیدنا تھ ٹیلر وید، بھون، ناگپور

شری رمیش، ہماری ماتھر صاحب

سابق مینینٹ ڈائریکٹر، ویسٹرن کول فیلڈ میڈیٹ، ناگپور

جناب ضامن امین صاحب اور جناب جوزر امین صاحب

ان سب کا شکر گزار ہوں جنکے مالی تعاون سے کتاب اردو महाभारत

زیور طبع سے آراستہ ہوئی۔

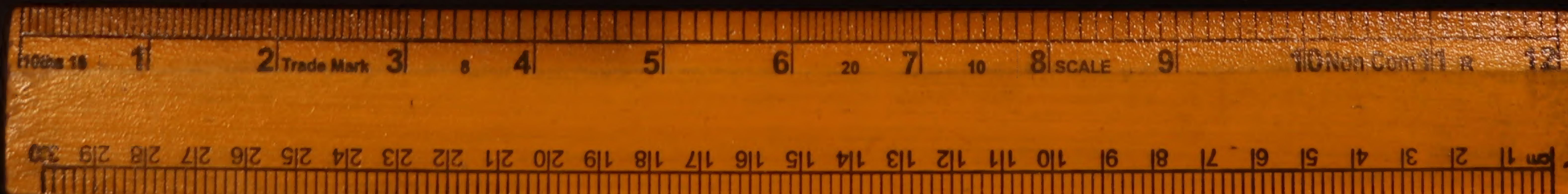
فروغ نقاش

इन्तेसाब

उस चालीस साला कठिण
परिश्रम के नाम
जो कौमी एकता के पेशेनज़र
शाहनामा-ए-हिन्द
नज़्म करने में व्यतीत हुई।

انتساب

اس چالیس سالہ سعی پیہم کے نام
جو **قومی یکجہتی** کے پیش نظر
شاہنامہ ہند "نظم کرنے میں صرف ہوئی"



महाभारत से मुत्तअल्लिक

जैरे-नज़ार यह किताब मनुबूम महाभाग्य आज से पैतीस साल कबल अज़ाज़ के शानिय मे हत चुकी थी। मगर हालान की निनुम-जर्गीफी इस किताब की अज़ाज़त मे माने रही। तू तो कई मन्त्रियो और साहबे-इक़्तदार ने वादा फरमाया मगर नोकरशाही के आगे जिन मे उर्दू के कई नाम नेबाद र्म्हानर साहबान मौबूद थे, एक न चली, यह भी ख़याली हुआ वरना आज शाहनामा के बीस हज़ार (२०,०००) अज़ाज़ मुश्मल न होते। यकीनन यह शाहनामा मेरे सत्रो-नहम्पुन का समर है। जिस मे ये उनका पाठकूर है।

हुन्ने-इत्यादि कहिए या मेरी तारा-चूरी, जिस में दिविजल कमजूर जताव
मेघद पीतनाद हुम्न साध जेमे मुगलिस और मेहनत जनास को अपना हमदर्द पाया,
जिसमे मेरी नासम तमन्गु को जिना बन्यी। उन्होंने चंद मुगैपर हजरात को इस
मननूय महाभारत की अज्ञात पर तयज्जह मयतुन करवायी। सुदा का शुक है कि
यह तमाम अकले-रीर हजरात इसकी अज्ञात पर आमादा हो गए। अब यह किताब
अपने के हाथ में है। मैं अपने इस काम में सदा तक कामचाव हुआ हूँ, इसका फैसला
अपने को करना है। चाही नमूना चंद इतिहासात पेरो-निदमत है।

दुसरी की पानी सजिये वे बाद अनाहार इस तपस्या के साथ पेश है, कि ऐ सुर जभीने-हस्तिना
 कुछ बल दिय ता अन्धी तरह चरद होये कि जब नैर करे-अरे मेषानों में चौरे और पान्दव अपने
 जलपान से मिले बड़ी जगमगात की साथ रो-ये-रो-येने आपस में उलझ पड़ने थे, और ताँ बल दिन
 की मार जाता कि जब औरतगण के सभी आँरे पड़ पड़ पर चढ़कर अपनी जेनिया घुंघार रहे थे
 कि तुम्हें से निकलकर बीस की बाजा जाता है। ऐसे इस तरह पेश किया है।

जबानक भीम भी इस पेंद के नीचे चला आया ।
जबानक या वह एक तुरफान अपने दिल में भर लाया ।।

उत्तर कर वह भी जा बैठा गजर की एक टहनी पर ।
निगाहा पेश की उस जोर में, वह थे ज़िगर होकर ।।

ज्या जय हुक के बाद हुक गिर पड़े फिर कोर ऊपर से।
किन्नी का पाँव दूरा, हाथ उठाया, रूँ बड़ा सर से।।

इससे देखी जा दुर्धन ने कौरवगण की यह हालत ।
इसी पान्था की जानिक में उसे वे इन्तिहा नफरत ।।

यही मे इस मुसुमत की हुई बस उज्जेदा दिल में ।
कदम फीरो ने राखा दुश्मनी की पहली मजिल में ।

مہاجماعت سے متعلق

زیر نظر کتاب منظوم مہاجرات آن سے بیست سال قبل اشعار کقالب میں دھال دی گئی تھی بحر حالات
کی قسم علیٰ ہذا اس کتاب کی اشاعت میں مانع رہی یوں لوگ بھی منتروں اور صاحب اقتدار نے وعدہ فرمایا مگر فکر
شامی کے لگے جن میں اردو کے کئی نام نہاد اسکالر صاحبان موجود تھے ایک نے جلی یہ بھی اچھا ہی ہوا وہ
آن شاہنامہ کے بیس ہزار اشعار مکمل نہ ہوئے بیسیاں شاہنامہ میرے صوبہ مکمل کا ٹہرے جس سے میں کٹا ٹکوں ہوں
حسن اتفاق کیسے یا میری طاہری جس سے ڈور نزل کش جناب سید شہزاد عیسیٰ صاحب جیسے مخلص
اور محنت شناس کو یوں بددلیا جس نے میری ناک آتشا کو جلا بخشی انہوں نے چند غیر حضرات کو اس
منظوم مہاجرات کی اشاعت پر تو مجھ مبذول کروائی خدا کا شکر ہے کہ وہ تمام اہل غیر حضرات اسکی
اشاعت پر آمادہ ہو گئے اب یہ کتاب آپ کے ہاتھ میں ہے میں اپنے اس کام میں کہاں تک کامیاب
ہوا ہوں اسکا فیصلہ آپ کو کرنا ہے بطور نمونہ چند اقتباسات پیش خدمت میں

[illegible]

اجالہ مصمم بھی اس بڑے میکمے میں آیا۔ شرارت کا وہ اک لوفان اپنے دل میں بھرا لیا۔

ایک کردہ بھی جائیگا سبکی ایک نہیں پر ہلایا پیٹر کو اس روز سے وہ بے جگر ہو کر

پناہ کے بعد اگر شہرے بھڑکے اور پھر کسی کا پاؤں ٹوٹا نہ اٹھ کر انوں بہا سے

لوہور دیکھی جو دیو دھن کے گوردھن کی یہ حالت ہوئی بانٹوں کی جانب کے اس بے انتہا فست

یہ ہیں ۷ اک شخصیت کی پہلی ہی ابتدا دیکھیں قدم اوروں نے رکھا دشمنی کی پہلی منزل میں

اور اس کے بعد اُن کے دربار میں جشن برائے انتخاب شہر یعنی سو شہر کے لیے نام لایا
مبارک اور سو شہر ماسٹر لوب اپنے سنباسنوں پر برآمد ہوئے۔ ان سے درویشی اپنی نام تر و متاعوں کے ساتھ
انہوں میں ورمالا لیے ہوئے دربار میں داخل ہوئی ہے اس کے حسن کا ظہر کس ملاحظہ فرمائیے

یکلیک ایک جانب سے سہا سہی بقی لہرائی خرام ناز فرماتے ہوئے اک مہر میں آئی
چلتی چال مستان و شش میں کھینچنے چل کر گئے عشاق کے سینوں میں دلیکے
خرام ناز سے پامال تھا لالہ کا پیرا ہن حنائی پلہ سے فرش مجلس تھا اور شعلہ زان
درخشاں عارض گلگون پیل کھانچو گریو وہ کجلائی ہوئی آنکھیں تھیں پاپٹا ہو اجاڑو
نمیدہ طاق ابو و مدون تو سین میں غنائی گھنی پکلوں کے سائے میں لطافت پیر پیلا
لب لعلیں کی عاشقوں میں درد مند کی لالہ ہمدل خط ہمدل کلم کی گل افشا فی
چشمین خوشاں پر نقشہ گل رنگ کیا کہنے کلاہ و تان کا وہ فاضلہ از و منگ کیا کہنے
بشان دل رانی لیکے ورمالا برسی ہمدم بر عجب حسن فزا ہو گئیں سبکی نکلا میں تم

اس کے بعد ہم کہ وہ تفریح ہے جو چھتری سو رملوں اور راک کلاموں کو مخاطب کر کے کہی گئی ہے

میں تم سے پوچھتا ہوں اس قدر کہوں پوچھتا ہوں نہیں ہے تم میں جب دم غم تو کیوں میدان میں آج
تھیں دکھ کیوں آخر تھا بے لب مشیروں نے یہاں آنے دیا کس واسطے تم کو دوزخوں نے
سر میدان پیشانی سے اب نظریں مارتے ہو کیوں اپنے خاندان کے نام کو بڑھکاتے ہو
انہو جلاو پیس لو جو دیا اب ہے یہی بہتر نہ تھیں ہندوؤں کی طرح تم زمین مند پر
اگر کچھ شرم ہے تم میں تو پھر کیسی پیشانی کر چلو بھر بہت کافی ہے مرنے کیلئے پانی
پھر اس کے بعد ہم کہن کی جانب دیکھ کر یوں کہتا ہے

بتائے کہن تجھ کو کون آفراس جگ لایا دھما جب بازوں میں ترے دم تو کیوں یہاں آیا

پکا پکھ گنک جانیو سے مہا سے برف تھراوی
تیرا مہ-ناز فرماتے ہوئے ایک مہر جوی آری
تیرا مہی چال مہنا نا رینا سے نہ کھو فیتنے
مہر کر رہ گا، ڈرگا کے مہی سے دین فیتنے
تیرا مہ-ناز سے پامال تھا لالہ کا پیرا ہن
تیرا مہی سے پلے-مہا مہی تھا اور جوتا جن
درخشاں عارض گلگون پیل کھانچو گریو
نمیدہ طاق ابو و مدون تو سین میں غنائی
لب لعلیں کی عاشقوں میں درد مند کی لالہ
چشمین خوشاں پر نقشہ گل رنگ کیا کہنے
بشان دل رانی لیکے ورمالا برسی ہمدم
بر عجب حسن فزا ہو گئیں سبکی نکلا میں تم

اس کے بعد ہم کہ وہ تفریح ہے جو چھتری سو رملوں اور راک کلاموں کو مخاطب کر کے کہی گئی ہے

میں تم سے پوچھتا ہوں اس قدر کہوں پوچھتا ہوں نہیں ہے تم میں جب دم غم تو کیوں میدان میں آج
تھیں دکھ کیوں آخر تھا بے لب مشیروں نے یہاں آنے دیا کس واسطے تم کو دوزخوں نے
سر میدان پیشانی سے اب نظریں مارتے ہو کیوں اپنے خاندان کے نام کو بڑھکاتے ہو
انہو جلاو پیس لو جو دیا اب ہے یہی بہتر نہ تھیں ہندوؤں کی طرح تم زمین مند پر
اگر کچھ شرم ہے تم میں تو پھر کیسی پیشانی کر چلو بھر بہت کافی ہے مرنے کیلئے پانی
پھر اس کے بعد ہم کہن کی جانب دیکھ کر یوں کہتا ہے

بتائے کہن تجھ کو کون آفراس جگ لایا دھما جب بازوں میں ترے دم تو کیوں یہاں آیا



یہاں بیٹا دھما کانون کے کھنڈ کو دینا ہے۔
 یہاں کھنڈ سب بٹا ! کھا کھنڈ کو گرن بھی دینا ہے ॥
 ہوا ہوتی اگر توجہ میں جہمی میں گد گدا ہوتا۔
 کھنڈ کے سب سے پتلی کی گدہ میں گد گدا ہوتا ॥

پانچ سو سالہ جہنم کے دھنڑے-پانچ سو سالہ جہنم کے دھنڑے، جہنم میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 اور دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔ اور دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔

میرا پانچ سو سالہ جہنم کھنڈ کے یہاں آئی۔
 کھنڈ کے یہاں آئی۔ کھنڈ کے یہاں آئی۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔

میرا پانچ سو سالہ جہنم کھنڈ کے یہاں آئی۔
 کھنڈ کے یہاں آئی۔ کھنڈ کے یہاں آئی۔

میرا پانچ سو سالہ جہنم کھنڈ کے یہاں آئی۔
 کھنڈ کے یہاں آئی۔ کھنڈ کے یہاں آئی۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔

یہاں بیٹا دھما کانون کے کھنڈ کو دینا ہے۔
 یہاں کھنڈ سب بٹا ! کھا کھنڈ کو گرن بھی دینا ہے ॥
 ہوا ہوتی اگر توجہ میں جہمی میں گد گدا ہوتا۔
 کھنڈ کے سب سے پتلی کی گدہ میں گد گدا ہوتا ॥

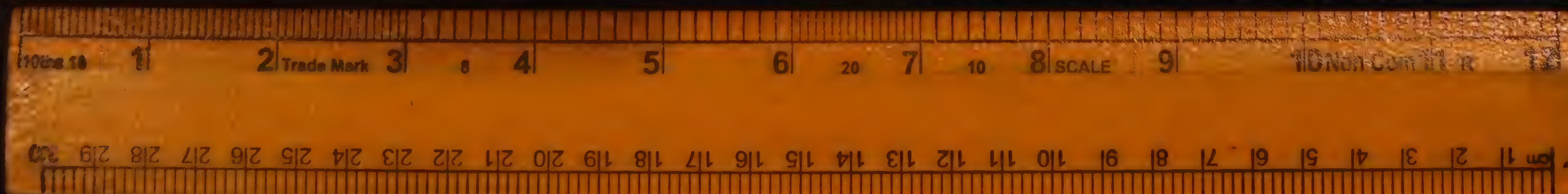
میرا پانچ سو سالہ جہنم کھنڈ کے یہاں آئی۔
 کھنڈ کے یہاں آئی۔ کھنڈ کے یہاں آئی۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔

میرا پانچ سو سالہ جہنم کھنڈ کے یہاں آئی۔
 کھنڈ کے یہاں آئی۔ کھنڈ کے یہاں آئی۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔
 یہاں جہنم کے دھنڑے میں جہنم کے دھنڑے ہیں۔



बनाई मेकरो घनश्याम ने इफानि की बातें ।
बिनाई शरह करके पेद की और जान की बातें ।

بلائیوں کیلئے گھنٹہ گزاری کی باتیں سکھائی شروع کر کے دیکھی اور گیان کی باتیں



स्थापित सत्वगत पर फिर दिया घनश्याम ने भावना ।
 किया उत्पान और वैराग का अच्छी तरह वर्णन ॥
 वह बोले, यह तो चलती फिरती तारों है तेरे आगे ।
 मुद्दर हो चुकी है मौत, उनकी मौत से पडने ॥
 क्यों है तुझ में वह कुचन कि दुर्घोषन को तू मारे ।
 यह पापी आप अपनी मौत ही मर जाएंगे तारे ॥
 मनुष का इतना ही कर्तव्य है कि वह दिनों जाँ से ।
 किए जाए, वस, अपना काम पूरे अज्मो-दकों में ॥
 न रखे फल की वह उम्मीद अपने मन में जरा भर ।
 वह तारा मनअना वस छोड़ दे भगवान के ऊपर ॥

फिर हमने बाद कृष्ण जी अपना अन्तर सब अर्जुन को दिखाने हैं तिनको देखकर अर्जुन के दिन की
 कैशिकावत ही बदल जाती है ।

दहन सोने लगे थे मामने ही 'शाम वनवारी' ।
 कि जिन के मुँह में तीनों लोक के थे सारे समारी ॥
 नजर आता था मंजर त्रिभवन का उनके सीने में ।
 नरक, वैकुण्ठ और परलोक थे दिन के नगीने में ॥
 गरज हर एक ली सोनेन और पानान की मन में ।
 समाई थी थी घनश्याम जी के पुर-त्रिपा तन में ॥
 यह आनम देखकर घनश्याम का अर्जुन असीदत से ।
 गिरा भगवान के चरणों पे डक हुस्ने-अनागत से ॥
 उग्रपा नीस चरणों में तो दिन पर लौफ तारी थी ।
 नमस्कारम नमस्कारम, सा तब पर विदं जारी था ॥
 सुमारी नीला को पणाम लालो बार पे प्रभू ।
 सुमारी हर अदा पर मेरी जाँ वनवार पे प्रभू ॥

और वारा के पहाड़ अमानत भीम पितामह के बाध में चर अउबार, ऐ कुक्षेत्र जुझे वह दिन तो अच्छी
 लख बाद हीगे अब घनश्याम ने भीम पितामह पर नीरों की बाढ़ मारी तो उनके तिम्र में ।

जजारी तीर उनके तिम्र-लाकी में हुए पेचस्त ।
 हुए वज्रा शिखरिण से पितामह आज यूँ वै दस्त ॥
 दिनआविर आगया गल उनको वरली पर लगे गिरने ।
 बना कर सेज धरती पर, न तीर उन को दिये गिरने ॥
 पितामह के लिए तो बन गई थी सेज तीरों की ।
 जमाने जुने तथा देखी थी ऐसी शान वीरों की ॥
 पितामह का सरे-जगाह अब तीरों का बिस्तर था ।
 बदन तीरों पे था उनका, मगर तटका हुआ सर था ॥
 पितामह ने कहा अब नाहिं ये मुझको जरा तकिया ।
 तो दुर्घोषन ने लाया रेणुमो-कम स्वाव क तकिया ॥

सहायत सुनोन चढ़े घेर दिया गच्छाम ने भावना ।
 कि आपत और वीरग का अचमो-दकों में ॥
 वह बोले, यह तो चलती फिरती तारों है तेरे आगे ।
 मुद्दर हो चुकी है मौत, उनकी मौत से पडने ॥
 क्यों है तुझ में वह कुचन कि दुर्घोषन को तू मारे ।
 यह पापी आप अपनी मौत ही मर जाएंगे तारे ॥
 मनुष का इतना ही कर्तव्य है कि वह दिनों जाँ से ।
 किए जाए, वस, अपना काम पूरे अज्मो-दकों में ॥
 न रखे फल की वह उम्मीद अपने मन में जरा भर ।
 वह तारा मनअना वस छोड़ दे भगवान के ऊपर ॥

फिर हमने बाद कृष्ण जी अपना अन्तर सब अर्जुन को दिखाने हैं तिनको देखकर अर्जुन के दिन की
 कैशिकावत ही बदल जाती है ।

दहन सोने लगे थे मामने ही 'शाम वनवारी' ।
 कि जिन के मुँह में तीनों लोक के थे सारे समारी ॥
 नजर आता था मंजर त्रिभवन का उनके सीने में ।
 नरक, वैकुण्ठ और परलोक थे दिन के नगीने में ॥
 गरज हर एक ली सोनेन और पानान की मन में ।
 समाई थी थी घनश्याम जी के पुर-त्रिपा तन में ॥
 यह आनम देखकर घनश्याम का अर्जुन असीदत से ।
 गिरा भगवान के चरणों पे डक हुस्ने-अनागत से ॥
 उग्रपा नीस चरणों में तो दिन पर लौफ तारी थी ।
 नमस्कारम नमस्कारम, सा तब पर विदं जारी था ॥
 सुमारी नीला को पणाम लालो बार पे प्रभू ।
 सुमारी हर अदा पर मेरी जाँ वनवार पे प्रभू ॥

और वारा के पहाड़ अमानत भीम पितामह के बाध में चर अउबार, ऐ कुक्षेत्र जुझे वह दिन तो अच्छी
 लख बाद हीगे अब घनश्याम ने भीम पितामह पर नीरों की बाढ़ मारी तो उनके तिम्र में ।

जजारी तीर उनके तिम्र-लाकी में हुए पेचस्त ।
 हुए वज्रा शिखरिण से पितामह आज यूँ वै दस्त ॥
 दिनआविर आगया गल उनको वरली पर लगे गिरने ।
 बना कर सेज धरती पर, न तीर उन को दिये गिरने ॥
 पितामह के लिए तो बन गई थी सेज तीरों की ।
 जमाने जुने तथा देखी थी ऐसी शान वीरों की ॥
 पितामह का सरे-जगाह अब तीरों का बिस्तर था ।
 बदन तीरों पे था उनका, मगर तटका हुआ सर था ॥
 पितामह ने कहा अब नाहिं ये मुझको जरा तकिया ।
 तो दुर्घोषन ने लाया रेणुमो-कम स्वाव क तकिया ॥

یہ تحکیہ دیکھ کر لوے پتالہ اسلئے ہنکر اسی کی شان کا گیمہ ہو گیا ہے میرا بستر
نہیں ہے ایسے تحکیہ کی محضت جاؤ لے جاؤ مرے بستر کے جیسا کوئی تحکیہ چوٹ لے آؤ
کس کی ہنری ہو آہا صا کر آہنہ شہم پتالہ کا مطلب کیا ہے اور کس قسم کے گیمہ کی محضت ہے لہذا اس کو
کو لہیں اس طبع کو کھولتا ہے

معاذ تیرا رعن نے کہاں سے اسطر تیرا
 کہاں سے ایک بیگ تیرا کہ لوفان سے نکلا
 گمانی کو کہہ سے جسم لینا والا عظیم
 اور لذات اور شہوت سے محبت کیستہ لیتے دور ہے نامی دے چکا تھا آن دہن ایشاد و قرآن کا ہنسنے والا کردار تیرا
 کی سیج پر لیٹا ہوا اشکی سے بے چین سدا بار بار اپنی پرتما کتاب کو یاد کر رہا ہے

زبان کو فشک لب پر پھیر کر ارشاد فرمایا تقدس بخش اپنی گنگناں کو یاد فرمایا
یہ سن کر دوسرا دھرقیہ تیرا بن نے پھر ہلا اہل اٹھارہ میں سے گنگا جل کا ایک فوارہ
زمین سے نکلا پھر اس شان سے فوارہ مضر پتا نہ کے کہیں لگ دھار پھر اس کی بل کا کر
چند لوگ اب سے چمنہ ارشاد

[illegible]

ابھی سو مساجد جو کے سینہ مان کر نکلا
گلے ملنے قصائے ہی میں اپنے عثمان کر نکلا
برہمچاریوں کے ساتھ میدان شجاعت میں
کوئی مغضربات کا نہ تھا اس کی جہالت میں

यह तर्किया देखकर बोले पितामह इस तरह हसकर।
इन्हीं की शान का तर्किया हो जैसा है मेरा ब्रिसतर ॥

नहीं है ऐसे तर्किये की जरूरत जाओ ले जाओ ।
मेरे बिसतर के जैसा कोई तर्किया हो तो ले आओ ।।

हिन्दी की समझ में लगी आ रहा था कि आखिर भीष्म पिनामद का मतलब क्या है। और जिस हिस्से के तस्वियों की ज़रूरत है। नेहाजा उस रात को प्रभुर्न इस तरह सोचना है।

मग्न दो तीर अर्जुन ने कमाँ से इस तरह जोड़ा।
 पितामह के मेरहाने फिर कमाँ को रींचकर छोड़ा।।

क्यों से यह-वह दो तीर डर तूफान से निकले ।
जमीं पर गड़ के तकिपा बन गए इस जान से निकले ।।

मंगला की संरक्षक से जन्म लेने वाला अतीव परमजन्म, भीष्म पितामह जिसने अपने पिता की आज्ञापालन-कर्म पर अपनी आरजू भरी जिन्दगी का प्रतीकदान दे कर जीवन और मरणात्मान और प्रकृति से हमेशा हमेशा के लिए दूर रहने का वचन दे चुका था। आज वही ईश्वर व कुर्यानी का न मिलने वाला किरदार नीरी की संज्ञ पर लेता हुआ निजमगी से वे येन है और बार बार अपनी पाँचों माता मंगला मैया को याद कर रहा है।

जबान को मुस्क लव पर फेर कर इरशाद फरमाया ।
तगददुस बरख अपनी गंगा माँ को याद फरमाया ।।

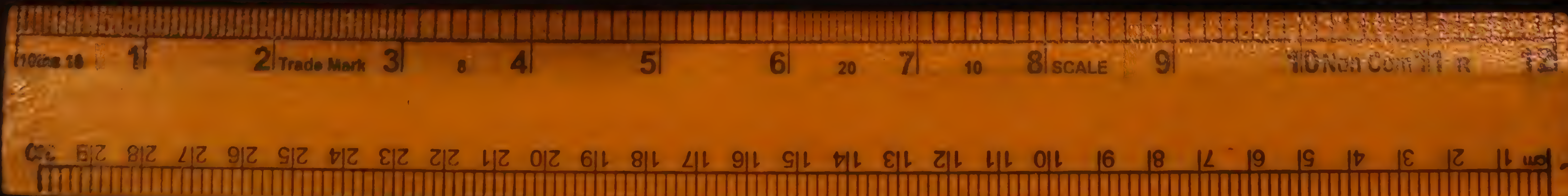
यह मुनकर दूसरा, धरती पर तीर अर्जुन ने फिर मारा।
उधल उड़ल जमी से गया जन का एक फव्वारा।।

जमीं में निकला फिर इस ज्ञान में फव्वारा-मुजतर।
पितामह के दहन तक धार पहुँची उसकी बल खाकर ॥

संस्कृत के शास्त्र में बंद प्रकाश।
संस्कृत का भाषा यानी मुहम्मद मनसूफ-जय त्रिमहा सौत्रिद द्रोणाचार्य जैसा भाषा वैदिक-वर्णन का था ही मगर आज इस भाषा की कमान जयदेव ने सभानी थी, चूंकि लिखित संस्कृत का पत्त सिवाए अर्जुन के किसी को भी मान्य न था। मगर अर्जुन ऐसे भाषा पर लड़ रहा था जहाँ से शास्त्र में पहले बापसी का घाता न था। इस से फायदा उठा कर संस्कृत का प्रचार कर दिया गया लेकिन कोरागण को मान्य न था कि शेर का चेहरा शेर ही होता है। अभयम्पू जैसा कर्मातिन सुरमा जो एक बर्फ श्री बलदेवजी और कृष्ण जी का कर्मातिन जाता है ता दूसरी तरफ वीर अर्जुन और युधामाजी का पुत्र है वह इम्फात का जैसा गवाया करता कि बनेर जो हूए आमाजी से शिकस्त तसरीम कर ले और इसके बाद ही

अभिमान-मू मुसलमान होके सीना तान कर निकला ।
गने मिलने कला से जी मे अपने ठान कर निकला ।।

बड़ा अजमा-याकी के साथ मैदाने-शुजाअत में ।
 छोटी उनसर जबानत का न था उसकी जोबिल्लत में ॥



कर्मों की हाथ में तरकज का बडल पुस्त पर डाले।
जगह थी जेबे-तन, लटके हुए थे तेग और भाले॥

सुवा जाना था दिन में, हर रंग पर वाकपन उसका।
कदम को चूमने खुद बड़ रहा हो जैसे रण उसका॥

अभिमन्यु के तेवर और अदाते-रत्न आगई में परेशान हो कर सारे बड़े बड़े सरदार मुत्तहिद होकर
एक साथ हमला करते हैं।

अकेली जान पर धावा सबआ जेराने-वगा का था।
खदगो-कौम की यूरिश का वह मजर बला का था॥

किमी जानिव में कृपा, और किमी जानिव में दुर्योधन।
बड़े समते-अभिमन्यु, द्रोणा, कर्ण, दुश्शाणिन॥

गरज कौरों के नरगों में अभिमन्यु था इस्तादा।
कि जैसे जेर पर हो, भेड़िए यूरिश पे आमादा॥

न जाने तन पे अपने खा चुका था जखम वह कितने।
बहर लम्हा करीब आते रहे, जैतान के फितने॥

अचानक उसके सीने पे लगी डक जब फिर ऐसी।
कि गज खाकर अभिमन्यु गिरा और काँप उठी धरती॥

मुबारक बाद ऐसी मौत पर और ऐसे जीने पर।
जो मर जाए वगा में जन्म खाकर अपने सीने पर॥

धर्म का नेता युधिष्ठिर जिसने अपनी जिनगी में कभी झूठ न बोला था, लेकिन जब द्रोणाचार्य
ने अपने बड़े अस्वत्थामा के मरने की खबर की तभीक के लिए युधिष्ठिर को चुनवाया और पूछा।

युधिष्ठिर सब बता मिथ्या में तू तो दूर रहता है।
जो सचही बात होती है वही बर वक्त कहता है॥

बना मुझको मेरा फरजन्द क्या मारा गया रण में।
मेरे नुर-नजर की सह क्या बाकी नही तन में॥

युधिष्ठिर गोमगो में पढ़ गया इस बात को सुनकर।
कि आखिर दे द्रोणाचार्य को कौन सा उत्तर॥

जमीर इस बात पर रानी न था के झूठ वह बोले।
खुद अपने हाथ जहरे-किज्व जामे-जीस्त में धोले॥

द्रोणाचार्य के मरवाने के बाद अस्वत्थामा निहायत गैजो-गजब के आलम में पान्धवों की
तरफ वजा और युधिष्ठिर से मुखातिब होकर कहा।

कहा उसने यह पान्धव में के तुम सब हो बड़े कम तर।
द्रोणा को है मारा मेरे मरने की खबर देकर॥

अब उनके बाद जीना मेरा मरने के बराबर है।
यह हत्या डक कयामत के गुजरने के बराबर है॥

मगर डक बात तू मुझको बता ऐ धर्म के रक्षक।
यही सत्य है तो बोले किमको मिथ्या और किसे पातक॥

काम तेमि बाहिन नरकश का बल पश्ट ब्राल
नरकश नरकश का बल पश्ट ब्राल
कहा जाता है कि नरकश का बल पश्ट ब्राल
कहा जाता है कि नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल
अभिमन्यु के नरकश का बल पश्ट ब्राल

دینا دیا گویا مچھلی کا مچھر کم نچر تونے
 دیا اچھا مینا، اپنے گھر کو مار کر تونے ॥
 بنا ہے تاتھی ہے، کینے دن کا راج اور شامن
 بنا ہے دھرم کے بڑے، یہی ہے دھرم کا پالن ॥
 دھما کا نام لے کر، وہ ہوا ہے تونے دینا دیا
 گھر سے بڑے، اے جانیم، تونے گھر سے نہیں آئی ॥
 کئی کے راج کا چار پوئی کے مینے میں جکڑا ہوا ہے ॥ اور وہی کھڑا جی کھڑا کو نہتا
 دھما کا نام لے کر ॥

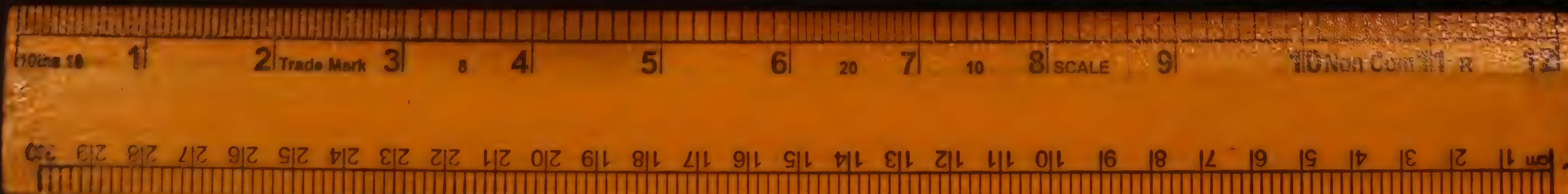
وہا نیرو-کرم اور بڑے اب کھڑا کا مینا
 بڑا ہے پانچویں کے واسطے جس میں بہت کینا ॥
 سنی جس وقت کھڑا ہوئی کی کھڑا نے باتیں
 سمجھ میں آئیں سب چل کیٹ اور ملکی گھاس ॥
 پکڑا کر نے ارجن شکر اور زراں لے
 پھنسا ہے پھڑکی میں میرا تم اے سورما دے ॥
 کرے لوش نہتوں پر یہ کب ہے مروت کا
 طرہ یہ ہے سقاؤں کا اور آوارہ گردوں کا ॥
 تجھے میں جانتا ہوں، تو نہ کا رہے نہ بڑا ہے
 تجھے پر کر لگاوار، یہ تو اور مشکل ہے ॥
 علاوہ اسکے میں لے شام مہر سے نہیں ڈتا
 اولے فرض حق کو پورا کرنے سے نہیں ڈتا ॥
 مجھے معلوم ہے جو دے مرتا ہے سرسیدیاں
 سو گہوٹا ہے، میرا عقیدہ اور ہے ایمان ॥
 علاوہ اسکے بھوکو دھرم سے بھر نہ تم مارو
 یہ بازی حیرت کر سچائی کی بازی نہ تم مارو ॥
 کئی کی باتیں سن کر شری گشتام ہی لے لکھا۔

دکھایا خوب سچائی کا منظر کم نظر تونے
 دیا اچھا مینا، اپنے گھر کو مار کر تونے ॥
 بنا اے لالچی ہے کتنے دن کا اور شامن
 بنا ہے دھرم کے بڑے، یہی ہے دھرم کا پالن ॥
 دھما کا نام لے کر، وہ ہوا ہے تونے دینا دیا
 گھر سے بڑے، اے جانیم، تونے گھر سے نہیں آئی ॥
 کئی کے راج کا چار پوئی کے مینے میں جکڑا ہوا ہے ॥ اور وہی کھڑا جی کھڑا کو نہتا
 دھما کا نام لے کر ॥

وہا نیرو-کرم اور بڑے اب کھڑا کا مینا
 بڑا ہے پانچویں کے واسطے جس میں بہت کینا ॥
 سنی جس وقت کھڑا ہوئی کی کھڑا نے باتیں
 سمجھ میں آئیں سب چل کیٹ اور ملکی گھاس ॥
 پکڑا کر نے ارجن شکر اور زراں لے
 پھنسا ہے پھڑکی میں میرا تم اے سورما دے ॥
 کرے لوش نہتوں پر یہ کب ہے مروت کا
 طرہ یہ ہے سقاؤں کا اور آوارہ گردوں کا ॥
 تجھے میں جانتا ہوں، تو نہ کا رہے نہ بڑا ہے
 تجھے پر کر لگاوار، یہ تو اور مشکل ہے ॥
 علاوہ اسکے میں لے شام مہر سے نہیں ڈتا
 اولے فرض حق کو پورا کرنے سے نہیں ڈتا ॥
 مجھے معلوم ہے جو دے مرتا ہے سرسیدیاں
 سو گہوٹا ہے، میرا عقیدہ اور ہے ایمان ॥
 علاوہ اسکے بھوکو دھرم سے بھر نہ تم مارو
 یہ بازی حیرت کر سچائی کی بازی نہ تم مارو ॥
 کئی کی باتیں سن کر شری گشتام ہی لے لکھا۔

شری گشتام ہی نے کھڑا کی باتیں سن کر
 کو دھت ہو کے بولے کیا تجھ کو یاد ہے عالم ॥
 کہ جب پانچویں کو لا کھی گھر میں تم سب بھلا لیا تھا
 وہ لڈو بھیم نے کیا رہا خود ہو کے کھایا تھا ॥
 بتلو تو جو ایسا تھا کیا سچائی سے تم نے
 ابھینو مرا تاج کھو، کیا دھرم کی رو سے ॥
 علاوہ میر تم لوگوں نے پچال کی کھینچی تھی
 یہ حرکت ایک میں کیا ساری دنیا ہی دیکھی تھی ॥
 تجھے اس وقت اپنے دھرم کا مطلق ہو ش آیا
 نہ سچائی کی غیرت اور محبت ہی کو جو ش آیا ॥
 بتا اے کھڑا کہ کہاں تھا دھرم یہ تیرا
 بہت دن بعد لا دھرم نے دل میں تیرا ॥

وہا نیرو-کرم اور بڑے اب کھڑا کا مینا
 بڑا ہے پانچویں کے واسطے جس میں بہت کینا ॥
 سنی جس وقت کھڑا ہوئی کی کھڑا نے باتیں
 سمجھ میں آئیں سب چل کیٹ اور ملکی گھاس ॥
 پکڑا کر نے ارجن شکر اور زراں لے
 پھنسا ہے پھڑکی میں میرا تم اے سورما دے ॥
 کرے لوش نہتوں پر یہ کب ہے مروت کا
 طرہ یہ ہے سقاؤں کا اور آوارہ گردوں کا ॥
 تجھے میں جانتا ہوں، تو نہ کا رہے نہ بڑا ہے
 تجھے پر کر لگاوار، یہ تو اور مشکل ہے ॥
 علاوہ اسکے میں لے شام مہر سے نہیں ڈتا
 اولے فرض حق کو پورا کرنے سے نہیں ڈتا ॥
 مجھے معلوم ہے جو دے مرتا ہے سرسیدیاں
 سو گہوٹا ہے، میرا عقیدہ اور ہے ایمان ॥
 علاوہ اسکے بھوکو دھرم سے بھر نہ تم مارو
 یہ بازی حیرت کر سچائی کی بازی نہ تم مارو ॥
 کئی کی باتیں سن کر شری گشتام ہی لے لکھا۔



اردو महाभारत की تیاری میں جس کتاب سے
استفادہ کیا گیا وہ ہے ”مہا بھارت بھاشا“
ہندی پستکالیہ متھرا، جس کے مصنف ہیں ملک کے
مشہور دانشور پنڈت جوالا پرشاد جی مشرا،
مراد آبادی۔



اردو महाभारत की تیاری میں جس کتاب سے
استفادہ کیا گیا وہ ہے ”مہا بھارت بھاشا“
ہندی پستکالیہ متھرا، جس کے مصنف ہیں ملک کے
مشہور دانشور پنڈت جوالا پرشاد جی مشرا،
مراد آبادی۔

اردو महाभारत की تیاری میں جس کتاب سے
استفادہ کیا گیا، وہ ہے ”مہا بھارت بھاشا“
ہندی پستکالیہ متھرا، جس کے مصنف ہیں ملک کے
مشہور دانشور پنڈت جوالا پرشاد جی مشرا،
مراد آبادی۔



اردو महाभारत की تیاری میں جس کتاب سے
استفادہ کیا گیا، وہ ہے ”مہا بھارت بھاشا“
ہندی پستکالیہ متھرا، جس کے مصنف ہیں ملک کے
مشہور دانشور پنڈت جوالا پرشاد جی مشرا،
مراد آبادی۔

♦ پرستارنا ♦

دنیا کے شعروادب کی تاریخ میں دو شاہکار سامنے آئے ہیں۔ ایک وہ شاہنامہ جو ایک ہزار سال قبل
دقیقی۔ اسدی اور فردوسی نے لکھا (دیکھیے اردو ترجمہ تاریخ فرشتہ۔ صفحہ ۶۵ اور ۶۶ مطبع منشی نزل کشور
لکھنؤ ۱۹۳۳ء) اور دوسرا حفیظ جالندھری کا شاہنامہ اسلام جو اسلام کے ابتدائی عہد کی تاریخ ہے اور تیسرا
شاہنامہ چالیس سال سے شاہنامہ ہند کے نام سے قومی یک جہتی کے نقطہ نگاہ سے لکھا جا رہا ہے جس میں
جین دھرم، بودھ دھرم اور سناٹن دھرم کے ساتھ ساتھ اسلام دھرم کا بھی احاطہ کیا گیا ہے۔ اب تک اس کی
سات جلدیں مکمل ہو چکی ہیں۔ جن میں بیس ہزار اشعار بغل بادشاہ شاہجہاں تک لکھے جا چکے ہیں۔ اس کا پہلا
حصہ اردو مہابھارت ہے جو آپ کے ہاتھ میں ہے۔ مورخین کی نگاہ میں یہ فرضی داستان ہے لیکن میں ایسا نہیں
سمجھتا۔ میرے نزدیک اس کی بڑی اہمیت ہے۔ کیونکہ قدیم ہندوستانی تہذیب و تمدن اور سناٹن دھرم کی
یہی داستان آئینہ دار ہے۔ جس کو میں نے ہندی اور سنسکرت کے مشہور عالم پنڈت جوالا پر سادھر
مراد آبادی کی تصنیف مہابھارت بھاشا سے بڑی جانفشانی اور پوری دیانتداری سے نظم کیا ہے۔ اس داستان
کو ہند کی بڑی اکثریت پورے یقین اور دل کی گرائیوں کے ساتھ سچ سمجھتی ہے۔ تو مجھے یا کسی اور کو اسے فرضی
داستان کہنے کا کیا حق پہنچتا ہے۔

شاہنامہ ہند کا دوسرا حصہ شاہنامہ ہند بشمول ہندو عہد حکومت ۶۰۰ قبل مسیح سے
شروع ہوتا ہے۔ اس میں جین اور بودھ مذاہب کے تذکرے کے بعد اجات شتر و اوریش ناک خاندان کا
ذکر ہے۔ اس کے بعد ہند پر یونان و فارس کی یورش سکندر اور پورس کی جنگ، چندرگپت، موریہ اور اشوک
کا زمانہ، شنگ و کالو اور آندھرا خاندان کا تذکرہ، سلطنت مگدھ کا خاتمہ، یونانی اور سہیون قوم کے ملے کنشک
کا دور حکومت، اس کے علاوہ پرائون کا زمانہ جو ۳۲۰ عیسوی سے ۸۰۰ عیسوی تک ہوتا ہے
اس میں چندرگپت اول، سمرگپت چندرگپت ثانی چینی سیان فابیان کی آمد،

شاہنامہ-آ-ہند کا دوسرا भाग शाहनामा-आ-हन्द बशमूल हिन्दू
अहदे-हुकूमत ६०० साल कल्ले-मसीह से शुरू होता है। इसमें जैन और बौद्ध धर्मों
के इतिहास के बाद अजात, शत्रू और शीश नाग खानदान का जिक्र है। इसके बाद
हिन्द पर यूनान व फारस का आक्रमण, सिकन्दर और पोरस की जंग, चंद्र गुप्त मौर्या
और अशोक का जमाना, शुंग व कानू और आन्ध्र खानदान का तज्जेरा, सलतनते-
मगध का खातमा, यूनानी और सथीन कौमों के हमले, कनिष्क का दौरा-हुकूमत, इस
के अलावा पुराणों का जमाना जो ३२० इसवी से ८०० सने-इसवी तक होता है।

इस में चंद्रगुप्त अव्वल, समुद्र गुप्त, चंद्रगुप्त सानी, चीनी सय्याह फाहियान की आमद

سفید ہونوں کے محلے اور ہرش وردھن شلا دتیہ کا شاندار دور حکومت کا تذکرہ نہایت تفصیل سے کیا گیا ہے۔ ہرش وردھن کے بعد ہندوستان کے طوائف الملوکی کا شکار ہوتے ہی راجپوتوں کی ترقی و ارتقاء کا زمانہ شروع ہو جاتا ہے۔ جو ۸۰۰ سن عیسوی سے بارہ سوسن عیسوی تک نہایت جاہ و جلال کے ساتھ راجپوت حکمرانی کے فرائض انجام دیتے ہیں۔ علاوہ اس کے جنوبی ہند میں دکن کے راشٹر کوٹوں، یادو، ہوشیل اور کانکے خاندان کے ساتھ ہی ساتھ چول جیر اور پانڈیہ خاندان کا تذکرہ کیا گیا ہے۔ اور آخر میں جنوبی ہند میں عربوں کی تجارتی سرگرمیوں پر بھی روشنی ڈالی گئی ہے۔

شاہنامہ ہند کا تیسرا حصہ شاہنامہ ہند بشمول مسلم عہد حکومت محمد بن قاسم کے محلے سے شروع ہوتا ہے۔ محمد بن قاسم کا پس منظر بیان کرنے کے لیے عربستان کی مسلم عہد کی تاریخ کا تفصیلی خاکہ پیش کیا گیا ہے۔ جس میں حضور سرور کائنات صلی اللہ علیہ وسلم کی ولادت سے وصال تک کے واقعات اور خلفائے راشدین سے لیکر اموی خلفیہ عبدالملک بن مروان تک کے تمام حالات واقعات کو کہیں اختصار اور کہیں تفصیل کے ساتھ نظم کیا گیا ہے۔

شاہنامہ ہند کا چوتھا حصہ سلطان شہاب الدین غوری سے شروع ہوتا ہے جس کا پس منظر بیان کرتے ہوئے شہاب الدین کی پرتوی راج چوہان سے جنگ، قطب الدین ایبک، شمس الدین التمش، فیہ سلطانہ تک کے واقعات کے ساتھ ساتھ سلطان نام الدین اور غیاث الدین بلبن کا احاطہ کیا گیا ہے۔ یہ خاندان ۹۲ سال تک برسر اقتدار رہا اور غیاث الدین بلبن غلام خاندان کا آخری حکمران ثابت ہوا۔

شاہنامہ ہند کا پانچواں حصہ علاؤ الدین خلجی سے شروع کیا گیا ہے جس میں تغلق خاندان غیاث الدین تغلق و فیروز شاہ تغلق تک، تیمور لنگ کی آمد اور اس کی آمد سے تباہ کاریوں کے بعد سیدوں کا خاندان شروع ہوتا ہے۔ بعد ازاں لودھی خاندان کے حکمرانوں، بہلول لودھی، سکندر لودھی، ابراہیم لودھی کا تذکرہ کیا گیا ہے۔ آخر میں تغلق بادشاہ ظہیر الدین بابر ہمایوں اور شیر شاہ سوری پر پانچواں حصہ ختم ہوتا ہے۔ شاہنامہ ہند کا چھٹا حصہ ہندوستان میں مختلف علاقائی حکومتوں پر مشتمل ہے جس میں دکن کا

شاہنامہ-آ-ہند کا تیسرا भाग शाहनामा-आ-हन्द बशमूल मुसलिम अहदे-हुकूमत, मोहम्मद इब्न कासिम के हमले से शुरू होता है। मोहम्मद इब्न कासिम का पसमंजर बयान करने के लिए अरबस्तान की मुसलिम अहद की तारीख का तफसीली खाका पेश किया गया है। जिसमें हुजूर सरबरे-कायनात सललल्लाहों अलैहे वसल्लम की विलादत से विसाल तक के वाक्यात और खुलफा-आ-राशेदीन से लेकर उमवी खलीफा अब्दुल मलिक बिन मरवान तक के तमाम हालात व वाक्यात को कहीं इख्तिसार और कहीं तफसील के साथ नज्म किया गया है।

शहनामा-आ-हन्द का चौथा भाग सुलतान शहाबुद्दीन गौरी से शुरू होता है। जिस का पस मंजर बयान करते हुए शहाबुद्दीन की पृथ्वी राज चौहान से जंग, कुल्बउद्दीन ऐबक, शमसुद्दीन अलतमश, रजिया सुलताना तक के वाक्यात के साथ साथ सुलतान नासिरुद्दीन और गयासुद्दीन बिलबन का अहाता किया गया है। यह खानदान ९२ साल तक बरसरे-इकितदार रहा और गयासुद्दीन बिलबन, गुलाम खानदान का आखरी हुक्मेरा साबित हुआ।

शाहनामा-आ-हन्द का पाचवाँ भाग अलाऊद्दीन खिलजी से शुरू किया गया है जिस में तुगलक खानदान, गयासुद्दीन तुगलक व फिरोजशाह तुगलक तक, तैमूर लंग की आमद और उसकी आमद से तबाह कार्यों के बाद सय्यदों का खानदान शुरू होता है इसके बाद लोधी खानदान के हुक्मेरानों, बहलूल लोधी, सिकन्दर लोधी, इब्राहीम लोधी का तज्केरा किया गया है।

आखिर में मुगल बादशाह जहीरुद्दीन बाबर, हुमायूँ और शेर शाह सूरी पर पाचवाँ भाग समाप्त होता है।

शाहनामा-आ-हन्द का छठवाँ भाग हिन्दुस्तान में मुख्तलिफ़ इलाकाई हुकूमतों पर मुश्तमिल है जिस में दکن का

इसी तरह शुमाल व मशरिक, यूपी, बिहार, उडिसा, बंगाल, आसाम और जुनूबी हिन्द में मद्रास, मैसूर, केरला, आन्ध्रा,

اسی طرح شمال و مشرق، یوپی، بہار، اڑیسہ، بنگال، آسام اور جنوبی ہند میں مدراس، میسور، کیرالا، آندھرا



مہاراشٹر اور شمال مغرب میں راجپوتانہ، سندھ، گجرات، وغیرہ میں تو مکمل طور پر ایک فوج نظر نہ آئی۔ اور انقلاباتِ زمانہ کا یہ عالم ہے کہ آج یہاں شورش اور طوفان برپا ہے تو دوسری جگہ بغاوت اور قتل و خونریزی کا بازار گرم ہے۔ ایک تخت نشین ہوتا ہے تو دوسرا تختہ الٹ دیا جاتا ہے۔ ایک حکمران دوسرے حکمران پر چڑھائی کرتا ہے تو تیسرا اس کی پشت پناہی میں میدانِ جنگ میں کود پڑتا ہے۔ ایک طوفان ہے جو آئے دن کسی نہ کسی مقام پر سر اٹھاتا ہے اور حالات و واقعات میں تبدیلی رونما ہوتی چلی جاتی ہے۔

اب غور فرمائیے کہ ۲۵ سال کا ایک مختصر دور اور اس میں پچاسوں حکومت کا الٹ بھیر تہی سب سے ہو جاتا ہے تو چھ ہزار سالہ دورِ تاریخ میں جس میں سیکڑوں ادوار ہیں کتنے الٹ بھیر اور انقلابات رونما نہیں ہوئے ہوں گے۔ غور کرو تو طبیعت پریشان ہو جاتی ہے۔

ویسے عام طور سے یہ کہا جاتا ہے کہ تاریخ ایک خشک موضوع ہے۔ جملہ اس میں لطف اور مزے کی بات تلاش کی جائے تو واقعی نہیں ملے گی۔ یہ تخیلاتی، جذباتی یا رومانی و فنی شاعری تو نہیں۔ یہ تو تاریخ کا ایک ایسا چوکھٹا ہے جس کے دائرے میں رہ کر ہی حالات و واقعات کو نظم کیا گیا ہے۔

ان قیود کے بعد ناقدین حضرات خواہ مخواہ حسد کی بنیاد یا کسی نہ کسی بہانے سے کائناتوں پر گھسیٹنا چاہیں گے تو یہ ظلم ہی ہو گا۔ یہ ایک ایسا کام ہے جس پر میں نے ۱۰ سال مسلسل محنت کی ہے۔ اگر واقعی اس کام پر محنت کی گئی ہے تو داد دیجئے ورنہ میں داد کا خواہاں بھی نہیں۔

فردوس نظامی
موزعہ ۱۵/۱۶
۱۹۹۵ء

مختصر
تاریخ
۱۹۹۵ء

اب غور فرمائیے کہ ۲۵ سال کا ایک مختصر دور اور اس میں پچاسوں حکومت کا الٹ بھیر تہی سب سے ہو جاتا ہے تو چھ ہزار سالہ دورِ تاریخ میں جس میں سیکڑوں ادوار ہیں کتنے الٹ بھیر اور انقلابات رونما نہیں ہوئے ہوں گے۔ غور کرو تو طبیعت پریشان ہو جاتی ہے۔

بہت سے، عام طور سے یہ کہا جاتا ہے کہ تاریخ ایک خشک موضوع ہے۔ جملہ اس میں لطف اور مزے کی بات تلاش کی جائے تو واقعی نہیں ملے گی۔ یہ تخیلاتی، جذباتی یا رومانی و فنی شاعری تو نہیں۔ یہ تو تاریخ کا ایک ایسا چوکھٹا ہے جس کے دائرے میں رہ کر ہی حالات و واقعات کو نظم کیا گیا ہے۔

ان قیود کے بعد ناقدین حضرات خواہ مخواہ حسد کی بنیاد یا کسی نہ کسی بہانے سے کائناتوں پر گھسیٹنا چاہیں گے تو یہ ظلم ہی ہو گا۔ یہ ایک ایسا کام ہے جس پر میں نے ۱۰ سال مسلسل محنت کی ہے۔ اگر واقعی اس کام پر محنت کی گئی ہے تو داد دیجئے ورنہ میں داد کا خواہاں بھی نہیں۔

فردوس نظامی

۱۹۹۵ء

مختصر

تاریخ

۱۹۹۵ء

एक ज़रूरी बात

कारेइन से एक ज़रूरी बात यह कहनी है कि उर्दू महाभारत के लिखने का एक मकसद यह भी है कि उर्दूदाँ तबका जो महाभारत से नावाकिफ़ है वह भी हिन्दुस्तान के इस अजीम वरसे से मुस्तफीद हो सके।

हिंदीदाँ हज़रात के लिए इसे हिंदी रस्मुलखत में लिख कर मुश्किल अलफाज़ के मायिने भी लिख दीये गये हैं, ताकि समझने में आसानी हो।

ایک ضروری بات

قارئین سے ایک ضروری بات یہ کہنے ہے کہ اسے اردو مہابھارت کے لکھنے کا ایک مقصد یہ بھی ہے کہ اردو داں طبقہ جو مہابھارت سے ناواقف ہے وہ بھی ہندوستان کے اس عظیم ورثے سے مستفید ہو سکے۔
ہندی داں حضرات کیلئے اسے ہندی رسم الخط میں لکھ کر شکل الفاظ کے معنی بھی لکھ دیئے گئے ہیں۔ تاکہ سمجھ میں آسانی ہو۔

فہرست عنوانات

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۳۲	خدمتِ کھنٹی پر دروہاسنی کا عطیہ	۱۶	ادوارِ عالم
۳۳	منتر کی آرائش اور اس کا ردِ عمل	۱۷	مقدس تخلیق
۳۴	ولادت کرن	۲۰	کتابِ مہابھارت
۳۵	کھنٹی اور مادری سے پانڈو کا بیاہ	۲۰	مہابھارت کا مختصر جائزہ اور ان کے مورخین
۳۵	اقلیمِ سمرٹ	۲۱	مہابھارت اور ہم
۳۶	راجہ پانڈو پر بکتِ دم مہنی کا سراپ	۲۲	راجہ بھرت کی نسِ شانتن تک
۳۷	راجہ پانڈو کا آدیش	۲۲	بھیشم تیارہ ابنِ شانتن
۳۷	ایک سو ایک کوروں کیساتھ دریوہن کی پیدائش	۲۳	شانتن کی فریفتگی اور خودداری
۳۸	بھیم سین اور ارجن کی ولادت	۲۳	بھیشم تیارہ کا امیشاد
۳۹	کھنٹی کی مہربانی سے مادری کی گود بھرنا	۲۵	شانتن کی شادی اور رخصت، پتر و پتر کا بیاہ
۴۰	پانڈو کا وظیفہ زوجیت اور اثرِ نفرتِ کندم	۲۶	بھیشم تیارہ کی خدمت اور پتر و پتر کی بدگمانی
۴۱	پانڈو کے ساتھ مادری کا قتل ہونا	۲۷	کفارہ بدگمانی
۴۲	کھنٹی اور پانچوں پانڈوں کی واپسی	۲۸	نسل منقطع کا حل
۴۲	بعدِ مرگ پانڈو دھرتی راشٹر تھت شاپی پر	۲۹	مہرشی ویاس کی تشریف آوری تشریف قبولیت
۴۳	رشی سر دھان جی سے گریہ چار دیوہ کی پیدائش	۳۰	فصلِ حسنہ
	دشمنی کی پہلی منزل	۳۰	دھرتی راشٹر اور پانڈو کی پیدائش
۴۶	راجکین کی شوفیاں	۳۱	دھرتی راشٹر کا بیاہ
۴۷	زہر سے زہر کا مرنا	۳۲	کرشن جی کی بھوجی پر ہفتا ہوسوم کھنٹی
۴۸	ناگ راجہ کی مہمان نوازی اور بھیم کی واپسی		

ویسوی سڑچی

ویسوی	پڑٹ	ویسوی	پڑٹ
سیتلسلا-ع-مہا بھارت		کھندماتے-کونتی پر دویہاسا مونی کا اکتیا	۳۲
ادوارے-آلام	۱۶	منتر کی آرائش اور اس کا ردِ عمل	۳۳
مکد دس تھلیک	۱۷	کھندماتے-کونتی	۳۴
کیتا بے-مہا بھارت	۲۰	کونتی اور مادری سے پانڈو کا بیاہ	۳۵
مہا بھارت کا مختصر جائزہ اور آج		بھکتی م کا سمرٹ	۳۵
کے مورخین	۲۰	راجا پانڈو پر کھندم مونی کا شراپ	۳۶
مہا بھارت اور ہم	۲۱	راجا پانڈو کا آدیش	۳۷
نسلوں کا سیتلسلا		ایک سئ ایک کوروں کے ساٹھ دویہن کی	
راجا بھرت کی نسل شانتنو تک	۲۲	پیدائش	۳۷
بھیم پیتامہ ابن شانتن	۲۲	بھیم سین اور ارجن کی کھندمات	۳۸
شانتن کی فریفتگی اور خودداری	۲۳	کونتی کی مہربانی سے مادری	
بھیم کا ایشاد	۲۳	کی گود بھرنا	۳۹
شانتن کی شادی اور رھلت کھتر		پانڈو کا کھنٹی-کونتی اور	
کھتر کا بیاہ	۲۵	اسیر-ع-نفرین کھندم	۴۰
بھیم پیتامہ کی کھندمات اور کھتر	۲۶	پانڈو کے ساٹھ مادری کا سٹی ہونا	۴۱
کھتر کی بد-گمانی		کونتی اور پانچوں پانڈوں کی واپسی	۴۲
کھتر-ع-بد-گمانی	۲۷	بایدے-مڑگ پانڈو دھرتی راشٹر-شاہی پر	۴۲
نسلے-مونکاتا کا	۲۸	کھنٹی سر دھان جی سے کھنٹی اور	۴۳
مہرشی ویاس کی تشریف آوری اور		کھنٹی کی پیدائش	
اور شرف-کھنٹی	۲۹	دھمنی کی پہلی منجیل	
کھنٹی-کھنٹی	۳۰	لڈکپن کی شوفیاں	۴۶
دھرتی راشٹر اور پانڈو کی پیدائش	۳۰	زہر سے زہر کا مرنا	۴۷
دھرتی راشٹر کا بیاہ	۳۱	ناگ راجا کی مہمان نوازی	
کھنٹی کی کھنٹی پر ہفتا ہوسوم کھنٹی	۳۲	اور بھیم کی واپسی	۴۸

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۶۶	پانڈوؤں کی صحیح انوری اور ویاس جی کا درشن	۴۹	رشی بھروندن سے درونہ جاریہ کی پیدائش
۶۷	بھیم کا ایثار	۴۹	اشوٹ تھامہ کی پیدائش
۶۸	بھو کا بھیم	۵۰	مشعل تپید
۶۹	بھیم اور راکشش کا مقابلہ	۵۰	درونہ جاریہ کی بالوسی
۷۰	کشتی کے داؤں بتیغ	۵۱	حسن حکمت اور محل تک رسائی
۷۱	بھیم کی واپسی اور شہر کے	۵۲	فن حرب و ضرب کی تربیت
	جشن انتخاب شوہر	۵۳	جشن برائے امتحان
۷۲	سرزمین پنجال میں سوئمیر کی تیاریاں	۵۳	جنگ و حرب کی باہر از صلاحیت کا مظاہرہ
۷۳	حسن پنجال کا قتل علمی عکس	۵۵	کرن کی آمد
۷۵	سوئمیر کی شرط اور شہر زوروں کے حوصلے	۵۵	حرکت در یو دھن پر بھیم اور ارجن کا مشعل ہونا
۷۵	سورماؤں کی زور آزمائی	۵۶	مرد و کشتنا
۷۶	بھیم کی تقدیر	۵۷	خیر سے بدھو گھر کو آئے
۷۸	خطابت کا نیا اسلوب	۵۸	بھیم اور ارجن کی جرات آزمائی
۷۹	کرن کی جوابی تقدیر	۵۸	شکست خوردہ راہہ دروید دروچار کے حضور میں
۸۱	ارجن کی کامیاب تیراندازی	۵۹	بغاوت کا خطرہ
۸۱	ورمالا کی رسم	۶۰	سازش کو رواں
۸۳	کوروں اور پھیرلوں کا راجہ دروید پر حملہ	۶۱	پانڈوؤں کا اخراج
۸۴	پانڈوؤں کی واپسی اور ماں کا کم	۶۱	سازش کا انکشاف اور تفحص سرنگ
۸۴	یک جہتی زوجین	۶۲	پروچن اور بھیسلی کی ناکامی
۸۵	جواز زوجین	۶۳	لاکھ کا محل تودہ خاک کی صورت میں
۸۶	طیش شکر اور برہہ ہاتا	۶۴	پانڈو بیاباں میں
۸۶	پاپ سے مکتی پانے کا حل	۶۴	حصین ٹکراؤ
		۶۵	جوش غیرت اور مقابلہ بھیم و راکشش

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۶۶	پانڈوؤں کی صحیح انوری اور ویاس جی کا درشن	۴۹	رشی بھروندن سے درونہ جاریہ کی پیدائش
۶۷	بھیم کا ایثار	۴۹	اشوٹ تھامہ کی پیدائش
۶۸	بھو کا بھیم	۵۰	مشعل تپید
۶۹	بھیم اور راکشش کا مقابلہ	۵۰	درونہ جاریہ کی بالوسی
۷۰	کشتی کے داؤں بتیغ	۵۱	حسن حکمت اور محل تک رسائی
۷۱	بھیم کی واپسی اور شہر کے	۵۲	فن حرب و ضرب کی تربیت
	جشن انتخاب شوہر	۵۳	جشن برائے امتحان
۷۲	سرزمین پنجال میں سوئمیر کی تیاریاں	۵۳	جنگ و حرب کی باہر از صلاحیت کا مظاہرہ
۷۳	حسن پنجال کا قتل علمی عکس	۵۵	کرن کی آمد
۷۵	سوئمیر کی شرط اور شہر زوروں کے حوصلے	۵۵	حرکت در یو دھن پر بھیم اور ارجن کا مشعل ہونا
۷۵	سورماؤں کی زور آزمائی	۵۶	مرد و کشتنا
۷۶	بھیم کی تقدیر	۵۷	خیر سے بدھو گھر کو آئے
۷۸	خطابت کا نیا اسلوب	۵۸	بھیم اور ارجن کی جرات آزمائی
۷۹	کرن کی جوابی تقدیر	۵۸	شکست خوردہ راہہ دروید دروچار کے حضور میں
۸۱	ارجن کی کامیاب تیراندازی	۵۹	بغاوت کا خطرہ
۸۱	ورمالا کی رسم	۶۰	سازش کو رواں
۸۳	کوروں اور پھیرلوں کا راجہ دروید پر حملہ	۶۱	پانڈوؤں کا اخراج
۸۴	پانڈوؤں کی واپسی اور ماں کا کم	۶۱	سازش کا انکشاف اور تفحص سرنگ
۸۴	یک جہتی زوجین	۶۲	پروچن اور بھیسلی کی ناکامی
۸۵	جواز زوجین	۶۳	لاکھ کا محل تودہ خاک کی صورت میں
۸۶	طیش شکر اور برہہ ہاتا	۶۴	پانڈو بیاباں میں
۸۶	پاپ سے مکتی پانے کا حل	۶۴	حصین ٹکراؤ
		۶۵	جوش غیرت اور مقابلہ بھیم و راکشش



صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۱۰۳	کرشن جی کا ارشاد	۸۷	پانڈوؤں کو زندہ دیکھ کر درپو دھن کا کردار
۱۰۲	جرا سنگ کا مکر راٹھار خیال	۸۸	درپو دھن کی کدورت پر راجہ کو ننگ
۱۰۵	گرنا ہن کے جوہر	۸۹	بھیشم تیار کا مشورہ
۱۰۶	لمبھ یزدہ کے جوہر یعنی کشتی کے داؤں پر	۸۹	ناروئی کا دودھان اور بھدر را کا اغوار
۱۰۷	ثبات بھیم میں ترنزل	۹۰	ابھیم کی سپیدالش
۱۰۸	شری کرشن کی رہنمائی	۹۰	پانڈو کی ہویاں
۱۰۹	جرا سنگ کی فرزند	۹۱	آگنی دیوتا کی بدھضی
۱۱۰	اسیران جرا سنگ کی رہائی	۹۲	رکھشا
۱۱۱	یگیہ کا جائزہ	۹۳	تھو میڈالو
۱۱۲	جشن کی آرائش اور یگیہ کا منظر		
۱۱۳	پاک لین مہالوں سے یگیہ کی زینت		
۱۱۳	یگیہ کی اجازت		
۱۱۴	یگیہ کا منظر		
۱۱۵	تلک کی رسم اور گھنٹیا کی پوجا	۹۵	ناروئی کا مشورہ اور راجسوی یگیہ
۱۱۵	شری گھنٹیا کی پرستش پر شتوپال کا سنج پانا	۹۶	راجسوی یگیہ کا طریقہ
۱۱۶	شتوپال کی پیدائش پر برہمنوں کی پیش گوئی	۹۶	پانڈو کے حوصلے اور تقسیم کار
۱۱۷	شری کرشن کی جانب سے شتوپال کے کوہ پارادھ کی بخشش	۹۷	یوگنی سے جنگ وصل
۱۱۸	شری گھنٹیا کے ہاتھوں شتوپال قضا کی گور میں	۹۸	سہر یو اور یادوؤں سے جنگ
۱۱۹	یگیہ کے اختتام کا اعلان	۹۸	قول اور وردان
۱۲۰	سوزش رشک و حد	۹۹	زرا نوبہ
۱۲۰	درپو دھن کی طاقت اپنے عروہ پر	۱۰۰	تسیر ہفت تسلیم
		۱۰۱	مال غنیمت کا جائزہ
		۱۰۱	آرزوئے جنگ
		۱۰۲	جواب جرا سنگ

سلسلہ راجسوی یگیہ

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۱۰۳	کرشن جی کا ارشاد	۸۷	پانڈوؤں کو زندہ دیکھ کر درپو دھن کا کردار
۱۰۲	جرا سنگ کا مکر راٹھار خیال	۸۸	درپو دھن کی کدورت پر راجہ کو ننگ
۱۰۵	گرنا ہن کے جوہر	۸۹	بھیشم تیار کا مشورہ
۱۰۶	لمبھ یزدہ کے جوہر یعنی کشتی کے داؤں پر	۸۹	ناروئی کا دودھان اور بھدر را کا اغوار
۱۰۷	ثبات بھیم میں ترنزل	۹۰	ابھیم کی سپیدالش
۱۰۸	شری کرشن کی رہنمائی	۹۰	پانڈو کی ہویاں
۱۰۹	جرا سنگ کی فرزند	۹۱	آگنی دیوتا کی بدھضی
۱۱۰	اسیران جرا سنگ کی رہائی	۹۲	رکھشا
۱۱۱	یگیہ کا جائزہ	۹۳	تھو میڈالو
۱۱۲	جشن کی آرائش اور یگیہ کا منظر		
۱۱۳	پاک لین مہالوں سے یگیہ کی زینت		
۱۱۳	یگیہ کی اجازت		
۱۱۴	یگیہ کا منظر		
۱۱۵	تلک کی رسم اور گھنٹیا کی پوجا	۹۵	ناروئی کا مشورہ اور راجسوی یگیہ
۱۱۵	شری گھنٹیا کی پرستش پر شتوپال کا سنج پانا	۹۶	راجسوی یگیہ کا طریقہ
۱۱۶	شتوپال کی پیدائش پر برہمنوں کی پیش گوئی	۹۶	پانڈو کے حوصلے اور تقسیم کار
۱۱۷	شری کرشن کی جانب سے شتوپال کے کوہ پارادھ کی بخشش	۹۷	یوگنی سے جنگ وصل
۱۱۸	شری گھنٹیا کے ہاتھوں شتوپال قضا کی گور میں	۹۸	سہر یو اور یادوؤں سے جنگ
۱۱۹	یگیہ کے اختتام کا اعلان	۹۸	قول اور وردان
۱۲۰	سوزش رشک و حد	۹۹	زرا نوبہ
۱۲۰	درپو دھن کی طاقت اپنے عروہ پر	۱۰۰	تسیر ہفت تسلیم
		۱۰۱	مال غنیمت کا جائزہ
		۱۰۱	آرزوئے جنگ
		۱۰۲	جواب جرا سنگ



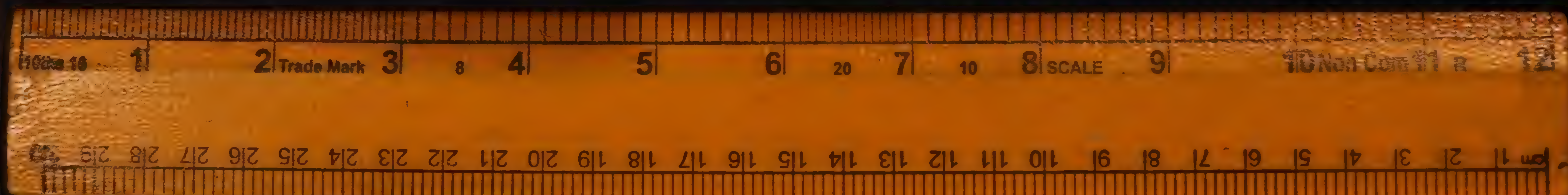
صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۱۲۱	مزار وطن کے نشتر	۱۲۱	مزار وطن کے نشتر
۱۲۲	راجہ پانڈو کے نجات پانے کی خوش خبری	۱۲۲	راجہ پانڈو کے نجات پانے کی خوش خبری
۱۲۳	اور ناروینی کی پیش گوئی	۱۲۳	اور ناروینی کی پیش گوئی
۱۲۴	سلسلہ قمار بازی	۱۲۴	سلسلہ قمار بازی
۱۲۵	دریودھن کی صحت پر حسد کا اثر	۱۲۵	دریودھن کی صحت پر حسد کا اثر
۱۲۶	دھرتی راشٹر کے سمجھانے پر دریودھن کا جواب	۱۲۶	دھرتی راشٹر کے سمجھانے پر دریودھن کا جواب
۱۲۷	کدورت قلب کی مدد ہوگی صرف یوش سے	۱۲۷	کدورت قلب کی مدد ہوگی صرف یوش سے
۱۲۸	شکوئی کا مشورہ قمار بازی	۱۲۸	شکوئی کا مشورہ قمار بازی
۱۲۹	ناہنجاز بیٹے کی حسد	۱۲۹	ناہنجاز بیٹے کی حسد
۱۳۰	دعوت قمار بازی کی منظوری	۱۳۰	دعوت قمار بازی کی منظوری
۱۳۱	ہر گناہ کا ثمر قمار بازی	۱۳۱	ہر گناہ کا ثمر قمار بازی
۱۳۲	جوتے کی دیوی پر تخت شاہی کے ساتھ بھائیوں	۱۳۲	جوتے کی دیوی پر تخت شاہی کے ساتھ بھائیوں
۱۳۳	اور بیوی کی بھینٹ	۱۳۳	اور بیوی کی بھینٹ
۱۳۴	حکم دریودھن	۱۳۴	حکم دریودھن
۱۳۵	دریودی کے سوال پر پرت کا می کا جواب	۱۳۵	دریودی کے سوال پر پرت کا می کا جواب
۱۳۶	دریودی کا دربار میں جانے سے انکار	۱۳۶	دریودی کا دربار میں جانے سے انکار
۱۳۷	دریودھن کا تیج و تاب	۱۳۷	دریودھن کا تیج و تاب
۱۳۸	دشاشن کی چیرہ دستی	۱۳۸	دشاشن کی چیرہ دستی
۱۳۹	دروہ اور پتاماہ کو پسینہ سا نکل آیا	۱۳۹	دروہ اور پتاماہ کو پسینہ سا نکل آیا
۱۴۰	پنچالی کی بے بسی	۱۴۰	پنچالی کی بے بسی
۱۴۱	بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر	۱۴۱	بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر
۱۴۲	نگاہ دور بین عدل دھوکا کھا نہیں سکتی	۱۴۲	نگاہ دور بین عدل دھوکا کھا نہیں سکتی
۱۴۳	تعب ہے مجھے قانون کی اس موٹھکانی پر	۱۴۳	تعب ہے مجھے قانون کی اس موٹھکانی پر
۱۴۴	پکڑ کر اس نے پوشاک تن گھر کو بھیج دینی	۱۴۴	پکڑ کر اس نے پوشاک تن گھر کو بھیج دینی
۱۴۵	ہوا لیکن نہ کیا ختم اس مصوم کے تن کا	۱۴۵	ہوا لیکن نہ کیا ختم اس مصوم کے تن کا
۱۴۶	بھیم کی پرستش	۱۴۶	بھیم کی پرستش
۱۴۷	عجب ہے اندھیرا مخزن انوار کھلائے	۱۴۷	عجب ہے اندھیرا مخزن انوار کھلائے
۱۴۸	دھرتی راشٹر کا وردان	۱۴۸	دھرتی راشٹر کا وردان
۱۴۹	بسرعت قبل پوشش فاتح اقلیم کو رکھا	۱۴۹	بسرعت قبل پوشش فاتح اقلیم کو رکھا
۱۵۰	پانڈو کی واپسی	۱۵۰	پانڈو کی واپسی
۱۵۱	قمار بازی کے دوبارہ مشورے	۱۵۱	قمار بازی کے دوبارہ مشورے
۱۵۲	آخری بازی	۱۵۲	آخری بازی
۱۵۳	دشاشن کی پیش کش	۱۵۳	دشاشن کی پیش کش
۱۵۴	بشکل کورواں موجود ہے اک صدی خدائق	۱۵۴	بشکل کورواں موجود ہے اک صدی خدائق
۱۵۵	پانڈو کا عزم صحرا نوردی اور	۱۵۵	پانڈو کا عزم صحرا نوردی اور
۱۵۶	فسانہ ہائے نل دمیثی	۱۵۶	فسانہ ہائے نل دمیثی
۱۵۷	تخیلی پرنگیا	۱۵۷	تخیلی پرنگیا
۱۵۸	رشی ورہ دش کا درشن	۱۵۸	رشی ورہ دش کا درشن
۱۵۹	برہ کی آگ میں جلتا رہا جو مثل پروانہ	۱۵۹	برہ کی آگ میں جلتا رہا جو مثل پروانہ
۱۶۰	فسانہ ہائے نل اور دمیثی	۱۶۰	فسانہ ہائے نل اور دمیثی
۱۶۱	گل رنگ کی دشمنی	۱۶۱	گل رنگ کی دشمنی
۱۶۲	سوال میں دو توبانی رہا میرا نہ اور تیرا	۱۶۲	سوال میں دو توبانی رہا میرا نہ اور تیرا
۱۶۳	مگر دے مقدس عقل تل پر پر گیا پردہ	۱۶۳	مگر دے مقدس عقل تل پر پر گیا پردہ
۱۶۴	لوقت گفتگو جبکہ دہن سے بھول بھڑکتے تھے	۱۶۴	لوقت گفتگو جبکہ دہن سے بھول بھڑکتے تھے

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۱۲۱	مزار وطن کے نشتر	۱۲۱	مزار وطن کے نشتر
۱۲۲	راجہ پانڈو کے نجات پانے کی خوش خبری	۱۲۲	راجہ پانڈو کے نجات پانے کی خوش خبری
۱۲۳	اور ناروینی کی پیش گوئی	۱۲۳	اور ناروینی کی پیش گوئی
۱۲۴	سلسلہ قمار بازی	۱۲۴	سلسلہ قمار بازی
۱۲۵	دریودھن کی صحت پر حسد کا اثر	۱۲۵	دریودھن کی صحت پر حسد کا اثر
۱۲۶	دھرتی راشٹر کے سمجھانے پر دریودھن کا جواب	۱۲۶	دھرتی راشٹر کے سمجھانے پر دریودھن کا جواب
۱۲۷	کدورت قلب کی مدد ہوگی صرف یوش سے	۱۲۷	کدورت قلب کی مدد ہوگی صرف یوش سے
۱۲۸	شکوئی کا مشورہ قمار بازی	۱۲۸	شکوئی کا مشورہ قمار بازی
۱۲۹	ناہنجاز بیٹے کی حسد	۱۲۹	ناہنجاز بیٹے کی حسد
۱۳۰	دعوت قمار بازی کی منظوری	۱۳۰	دعوت قمار بازی کی منظوری
۱۳۱	ہر گناہ کا ثمر قمار بازی	۱۳۱	ہر گناہ کا ثمر قمار بازی
۱۳۲	جوتے کی دیوی پر تخت شاہی کے ساتھ بھائیوں	۱۳۲	جوتے کی دیوی پر تخت شاہی کے ساتھ بھائیوں
۱۳۳	اور بیوی کی بھینٹ	۱۳۳	اور بیوی کی بھینٹ
۱۳۴	حکم دریودھن	۱۳۴	حکم دریودھن
۱۳۵	دریودی کے سوال پر پرت کا می کا جواب	۱۳۵	دریودی کے سوال پر پرت کا می کا جواب
۱۳۶	دریودی کا دربار میں جانے سے انکار	۱۳۶	دریودی کا دربار میں جانے سے انکار
۱۳۷	دریودھن کا تیج و تاب	۱۳۷	دریودھن کا تیج و تاب
۱۳۸	دشاشن کی چیرہ دستی	۱۳۸	دشاشن کی چیرہ دستی
۱۳۹	دروہ اور پتاماہ کو پسینہ سا نکل آیا	۱۳۹	دروہ اور پتاماہ کو پسینہ سا نکل آیا
۱۴۰	پنچالی کی بے بسی	۱۴۰	پنچالی کی بے بسی
۱۴۱	بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر	۱۴۱	بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر
۱۴۲	نگاہ دور بین عدل دھوکا کھا نہیں سکتی	۱۴۲	نگاہ دور بین عدل دھوکا کھا نہیں سکتی
۱۴۳	تعب ہے مجھے قانون کی اس موٹھکانی پر	۱۴۳	تعب ہے مجھے قانون کی اس موٹھکانی پر
۱۴۴	پکڑ کر اس نے پوشاک تن گھر کو بھیج دینی	۱۴۴	پکڑ کر اس نے پوشاک تن گھر کو بھیج دینی
۱۴۵	ہوا لیکن نہ کیا ختم اس مصوم کے تن کا	۱۴۵	ہوا لیکن نہ کیا ختم اس مصوم کے تن کا
۱۴۶	بھیم کی پرستش	۱۴۶	بھیم کی پرستش
۱۴۷	عجب ہے اندھیرا مخزن انوار کھلائے	۱۴۷	عجب ہے اندھیرا مخزن انوار کھلائے
۱۴۸	دھرتی راشٹر کا وردان	۱۴۸	دھرتی راشٹر کا وردان
۱۴۹	بسرعت قبل پوشش فاتح اقلیم کو رکھا	۱۴۹	بسرعت قبل پوشش فاتح اقلیم کو رکھا
۱۵۰	پانڈو کی واپسی	۱۵۰	پانڈو کی واپسی
۱۵۱	قمار بازی کے دوبارہ مشورے	۱۵۱	قمار بازی کے دوبارہ مشورے
۱۵۲	آخری بازی	۱۵۲	آخری بازی
۱۵۳	دشاشن کی پیش کش	۱۵۳	دشاشن کی پیش کش
۱۵۴	بشکل کورواں موجود ہے اک صدی خدائق	۱۵۴	بشکل کورواں موجود ہے اک صدی خدائق
۱۵۵	پانڈو کا عزم صحرا نوردی اور	۱۵۵	پانڈو کا عزم صحرا نوردی اور
۱۵۶	فسانہ ہائے نل دمیثی	۱۵۶	فسانہ ہائے نل دمیثی
۱۵۷	تخیلی پرنگیا	۱۵۷	تخیلی پرنگیا
۱۵۸	رشی ورہ دش کا درشن	۱۵۸	رشی ورہ دش کا درشن
۱۵۹	برہ کی آگ میں جلتا رہا جو مثل پروانہ	۱۵۹	برہ کی آگ میں جلتا رہا جو مثل پروانہ
۱۶۰	فسانہ ہائے نل اور دمیثی	۱۶۰	فسانہ ہائے نل اور دمیثی
۱۶۱	گل رنگ کی دشمنی	۱۶۱	گل رنگ کی دشمنی
۱۶۲	سوال میں دو توبانی رہا میرا نہ اور تیرا	۱۶۲	سوال میں دو توبانی رہا میرا نہ اور تیرا
۱۶۳	مگر دے مقدس عقل تل پر پر گیا پردہ	۱۶۳	مگر دے مقدس عقل تل پر پر گیا پردہ
۱۶۴	لوقت گفتگو جبکہ دہن سے بھول بھڑکتے تھے	۱۶۴	لوقت گفتگو جبکہ دہن سے بھول بھڑکتے تھے



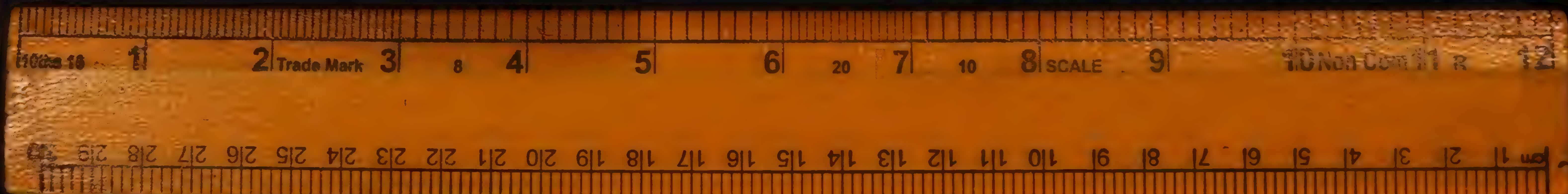
صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
	جنگِ مہابھارت کا طویل سلسلہ	۱۵۲	دیشی کوئل کا تیاگنا
	تخت و تاج کی واپسی درلودھن کا انکار	۱۵۳	دیشی کی آہ و زاری
۱۶۹	درلودھن کی وعدہ غافی	۱۵۳	نل اور دیشی کی صحراوردی
۱۶۹	ارجن میدانِ جنگ میں	۱۵۴	مارگر زہ کی مدد سے راجہ روٹو کے نکل
۱۷۰	شری کرشن جی کا پدیش	۱۵۵	نئی راہیں ملیں اور حضرت دیر بیز برائی
۱۷۱	شری کرشن جی کا لکھ روپ	۱۵۶	سیاہی پھیرنا کیوں چاہتی ہے پارسائی پر
۱۷۲	ارجن آمادہ جنگ	۱۵۶	وفا کی ذہن کے پردے پر تصویریں بھڑائی
۱۷۳	بھیشم پیامہ سنیاتی کے روپ میں	۱۵۷	حیات و موت کی اُلکشمش سے پارا ترنا ہے
۱۷۵	سورماؤں کی فونک جھونک	۱۵۸	گلِ صد برگ کے جیسے مہن میں کھل گئے دونوں
۱۷۶	ہنگامہ جنگ کا ایک عام منظر	۱۵۸	مہاسنی ویاس کا درشن
۱۷۷	نیا کرشن میں تزلزل	۱۵۹	مارگر ٹرے جی کا درشن
۱۷۸	میدھش اور شری کرشن بھیشم پامہ کے حضور میں	۱۶۰	صحراوردی کے بارہ سال
۱۸۰	شکھنڈی میدانِ جنگ میں	۱۶۱	روپوشی کا آخری سال
۱۸۰	ارجن کا تیر بھیشم پیامہ کی پشت میں	۱۶۲	دلِ معصوم میں اک انتہائی برق لہرائی
۱۸۱	بھیشم پیامہ تیروں کی سبج پر	۱۶۲	بھیم کا جوش اور حکمت عملی
۱۸۲	تکیے کی ضرورت	۱۶۳	مواظراتی لیکر جاگ اٹھا نفس امارہ
۱۸۳	تیروں کا کلیہ	۱۶۳	بدل کر پیترا فولا دے ملکہ لگیا کیچک
۱۸۳	اُبل اٹھا زمین سے گنگا جل کا ایک فوارہ	۱۶۳	کیچک کی فکر دار تک
	مہابھارت کا دوسرا کمانڈر انچیف	۱۶۵	درلودھن کا فتنہ
	داروہ چاریہ میدانِ جنگ میں	۱۶۶	ارجن کے مقابلے پر کوروں کی شکست
۱۸۵		۱۶۶	وراثت کی دفتر سے ابھینیکو کا بیاہ
		۱۶۷	حیات افزوز ان کے سامنے تھا ان کا مستقبل

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
	جنگِ مہابھارت کا طویل سلسلہ	۱۵۲	دیشی کوئل کا تیاگنا
	تخت و تاج کی واپسی درلودھن کا انکار	۱۵۳	دیشی کی آہ و زاری
۱۶۹	درلودھن کی وعدہ غافی	۱۵۳	نل اور دیشی کی صحراوردی
۱۶۹	ارجن میدانِ جنگ میں	۱۵۴	مارگر زہ کی مدد سے راجہ روٹو کے نکل
۱۷۰	شری کرشن جی کا پدیش	۱۵۵	نئی راہیں ملیں اور حضرت دیر بیز برائی
۱۷۱	شری کرشن جی کا لکھ روپ	۱۵۶	سیاہی پھیرنا کیوں چاہتی ہے پارسائی پر
۱۷۲	ارجن آمادہ جنگ	۱۵۶	وفا کی ذہن کے پردے پر تصویریں بھڑائی
۱۷۳	بھیشم پیامہ سنیاتی کے روپ میں	۱۵۷	حیات و موت کی اُلکشمش سے پارا ترنا ہے
۱۷۵	سورماؤں کی فونک جھونک	۱۵۸	گلِ صد برگ کے جیسے مہن میں کھل گئے دونوں
۱۷۶	ہنگامہ جنگ کا ایک عام منظر	۱۵۸	مہاسنی ویاس کا درشن
۱۷۷	نیا کرشن میں تزلزل	۱۵۹	مارگر ٹرے جی کا درشن
۱۷۸	میدھش اور شری کرشن بھیشم پامہ کے حضور میں	۱۶۰	صحراوردی کے بارہ سال
۱۸۰	شکھنڈی میدانِ جنگ میں	۱۶۱	روپوشی کا آخری سال
۱۸۰	ارجن کا تیر بھیشم پیامہ کی پشت میں	۱۶۲	دلِ معصوم میں اک انتہائی برق لہرائی
۱۸۱	بھیشم پیامہ تیروں کی سبج پر	۱۶۲	بھیم کا جوش اور حکمت عملی
۱۸۲	تکیے کی ضرورت	۱۶۳	مواظراتی لیکر جاگ اٹھا نفس امارہ
۱۸۳	تیروں کا کلیہ	۱۶۳	بدل کر پیترا فولا دے ملکہ لگیا کیچک
۱۸۳	اُبل اٹھا زمین سے گنگا جل کا ایک فوارہ	۱۶۳	کیچک کی فکر دار تک
	مہابھارت کا دوسرا کمانڈر انچیف	۱۶۵	درلودھن کا فتنہ
	داروہ چاریہ میدانِ جنگ میں	۱۶۶	ارجن کے مقابلے پر کوروں کی شکست
۱۸۵		۱۶۶	وراثت کی دفتر سے ابھینیکو کا بیاہ
		۱۶۷	حیات افزوز ان کے سامنے تھا ان کا مستقبل



صفحہ نمبر	موضوعات	صفحہ نمبر	موضوعات
۲۰۵	دروہ کا یوگ آسن اور سفر آخرت	۱۸۶	یہ ہشتہ کی گرفتاری کا منصوبہ
۲۰۶	دروہ چاریہ کے فرزند شوت تھامائی تخت لائی	۱۸۷	میدان کا وزلا کا ایک عام منظر
۲۰۷	شوت تھاما کا برہماستر	۱۸۸	یہ ہشتہ کو پکڑنے کی ناکام کوشش
	مہا بھارت کا تیسرا لکھنڈا انجیف	۱۸۸	دریو دھن محاذ جنگ سے ارجن کو ہٹا دینے میں کامیاب
۲۰۹	دلاوکر ن سینا پتی کے روپ میں	۱۸۹	ایک جنگی منصوبہ یعنی چکر دیو کا مورچہ
۲۱۰	اسی کو زیب دیتا ہے فقط یہ نصب اکبر	۱۹۰	چکر دیو کے اعلان سے پانڈوؤں کی پریشانی
۲۱۱	ابھی سے لاف کرنے میں کیا حاصل بت خود سر	۱۹۰	تعب آچھو ہو گا میری داستان سن کر
۲۱۲	بھیم کی شجاعت	۱۹۱	یہ ہشتہ نے دیا اذن دغا اپنے بھتیجے کو
۲۱۳	دشاش کی فر کردارنگ	۱۹۲	اٹھائی کو رواں نے چکر دیو کی پہلی پسپائی
۲۱۳	بھیم کا خون دشاش پینے کی پرنگیا کی تکمیل	۱۹۳	دریو دھن کا بیٹا لکشن اھیمینو کے مقابلے میں
۲۱۵	عبث ہے سامنے اک شیر کے رویہ کا اڑنا	۱۹۴	لکشن موت کی آغوش میں
۲۱۶	ارجن کا رتھ تین دم تیکھے	۱۹۵	اھیمینو کے طرز جنگ پر کرواں کو پریشانی
۲۱۷	کرن پر پھولوں کی بارش	۱۹۶	دو رخشاں ہو گئے جنگی ضیاع پاشی سے نظارے
۲۱۸	دلاوکر ن کے پانچ بان ارجن کے سینے میں	۱۹۷	اچانک آگیا ارجن کہیں سے اپنے منڈل میں
۲۱۹	کرن کے رتھ کا چاک پر پھولی کے سینے میں	۱۹۸	ارجن کی پرنگیا
۲۲۰	پھنسلے پر پھولی میں میرا رتھ اے سو واد ملے	۱۹۸	اسے حیرت ہوئی سورن کے فوراً ڈوب جانے پر
۲۲۱	بہت دن بعد دلاوکر نے دل میں ترے ڈیرا	۱۹۹	ارجن چٹائی سمت میں
۲۲۲	موضوع یویش پر شری گھنٹا اور ارجن میں بحث	۲۰۰	شری کرشن کا کرشمہ اور جیدرت کا مہر
۲۲۳	کیا دھرم تاروں نے کھدایا دھرم کا پالن	۲۰۱	دروہ چاریہ پر بے لاگ تبصرہ
۲۲۴	مرا ہے کرن سام دھرمی اس کے یہ کھد کارن	۲۰۲	دروہ کا ہر اک حربہ جگر کے پار ہوتا تھا
۲۲۵	کرن اور کشتی	۲۰۳	غم فرزند سے دل پر نہ اپنے رکھ کے قابو
۲۲۶	دکھائی شان ایسی دھرم کی دھرم تاروں نے	۲۰۴	یہ ہشتہ کی زور و غم کوئی
۲۲۷	نکر اک قوت برداشت کا تلف ارہ دکھلایا	۲۰۴	نہایت سنگدل بیگانہ دروہ محبت میں

صفحہ نمبر	موضوعات	صفحہ نمبر	موضوعات
۲۰۵	دروہ کا یوگ آسن اور سفر آخرت	۱۸۶	یہ ہشتہ کی گرفتاری کا منصوبہ
۲۰۶	دروہ چاریہ کے فرزند شوت تھامائی تخت لائی	۱۸۷	میدان کا وزلا کا ایک عام منظر
۲۰۷	شوت تھاما کا برہماستر	۱۸۸	یہ ہشتہ کو پکڑنے کی ناکام کوشش
	مہا بھارت کا تیسرا لکھنڈا انجیف	۱۸۸	دریو دھن محاذ جنگ سے ارجن کو ہٹا دینے میں کامیاب
۲۰۹	دلاوکر ن سینا پتی کے روپ میں	۱۸۹	ایک جنگی منصوبہ یعنی چکر دیو کا مورچہ
۲۱۰	اسی کو زیب دیتا ہے فقط یہ نصب اکبر	۱۹۰	چکر دیو کے اعلان سے پانڈوؤں کی پریشانی
۲۱۱	ابھی سے لاف کرنے میں کیا حاصل بت خود سر	۱۹۰	تعب آچھو ہو گا میری داستان سن کر
۲۱۲	بھیم کی شجاعت	۱۹۱	یہ ہشتہ نے دیا اذن دغا اپنے بھتیجے کو
۲۱۳	دشاش کی فر کردارنگ	۱۹۲	اٹھائی کو رواں نے چکر دیو کی پہلی پسپائی
۲۱۳	بھیم کا خون دشاش پینے کی پرنگیا کی تکمیل	۱۹۳	دریو دھن کا بیٹا لکشن اھیمینو کے مقابلے میں
۲۱۵	عبث ہے سامنے اک شیر کے رویہ کا اڑنا	۱۹۴	لکشن موت کی آغوش میں
۲۱۶	ارجن کا رتھ تین دم تیکھے	۱۹۵	اھیمینو کے طرز جنگ پر کرواں کو پریشانی
۲۱۷	کرن پر پھولوں کی بارش	۱۹۶	دو رخشاں ہو گئے جنگی ضیاع پاشی سے نظارے
۲۱۸	دلاوکر ن کے پانچ بان ارجن کے سینے میں	۱۹۷	اچانک آگیا ارجن کہیں سے اپنے منڈل میں
۲۱۹	کرن کے رتھ کا چاک پر پھولی کے سینے میں	۱۹۸	ارجن کی پرنگیا
۲۲۰	پھنسلے پر پھولی میں میرا رتھ اے سو واد ملے	۱۹۸	اسے حیرت ہوئی سورن کے فوراً ڈوب جانے پر
۲۲۱	بہت دن بعد دلاوکر نے دل میں ترے ڈیرا	۱۹۹	ارجن چٹائی سمت میں
۲۲۲	موضوع یویش پر شری گھنٹا اور ارجن میں بحث	۲۰۰	شری کرشن کا کرشمہ اور جیدرت کا مہر
۲۲۳	کیا دھرم تاروں نے کھدایا دھرم کا پالن	۲۰۱	دروہ چاریہ پر بے لاگ تبصرہ
۲۲۴	مرا ہے کرن سام دھرمی اس کے یہ کھد کارن	۲۰۲	دروہ کا ہر اک حربہ جگر کے پار ہوتا تھا
۲۲۵	کرن اور کشتی	۲۰۳	غم فرزند سے دل پر نہ اپنے رکھ کے قابو
۲۲۶	دکھائی شان ایسی دھرم کی دھرم تاروں نے	۲۰۴	یہ ہشتہ کی زور و غم کوئی
۲۲۷	نکر اک قوت برداشت کا تلف ارہ دکھلایا	۲۰۴	نہایت سنگدل بیگانہ دروہ محبت میں



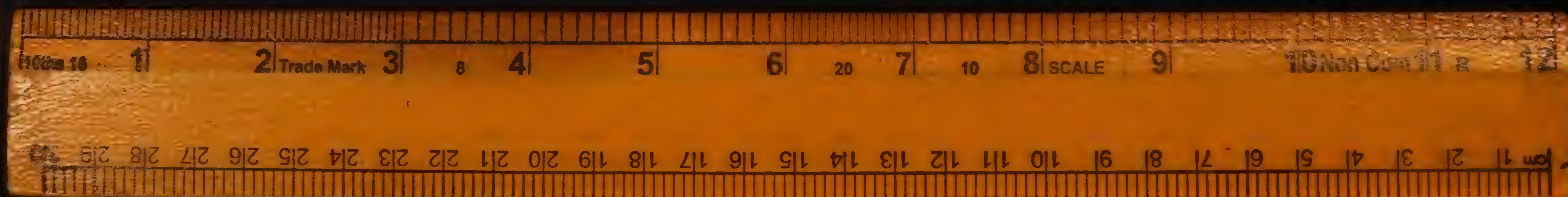
صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۲۵۰	کہے گا جس سے لڑنے کو لڑے گا وہ جوں بھڑے	۲۲۸	کھبھی پرنگی کو بھنگ اپنی وہ نہیں کرنا
۲۵۱	تری اس سرکشی کو آج میں ملانا ہے	۲۲۹	کرن کا آخری امتحان
۲۵۲	اڑا کرتی سران ایل کی مان بھنگاری	۲۳۰	کرن کی سخاوت اپنے عروج پر
۲۵۳	خزانہ سبقت یورش ملا سفر در دشمن سے	۲۳۱	کرن کا سفر آخرت
۲۵۴	سزا اپنے کیے کی آج خود پائے گا در یو دھن	۲۳۲	پیتا اس کی جلالی نقش اپنے ہاتھ پر رکھ کر
۲۵۵	قسم ماضی کی لے کر اک پیام مرثوہ باد آئی		مہا بھارت کا چوتھا کمانڈر انچیف
۲۵۵	در یو دھن کا انجہام	۲۳۳	راجہ شل سیناپتی کے منصب پر
۲۵۶	اسے انسانیت مجروح ہوتی ہی نظر آئی	۲۳۵	نیپا شل کا انداز فوجوں کو روٹانے کا
۲۵۸	اشوت تھما کا انتقام	۲۳۶	نکل سے کرن کے بیٹوں کی زور آزمائی
۲۵۹	بھلا رہاں دھرتی اس سے کوپ کر رہے	۲۳۷	راجہ شل اور بھیم کی زور آزمائی
۲۶۰	ہوئے اشوت کی جاں بخشی پر راضی پانڈو خوشتر	۲۳۸	نہ ہوتا ناش سیر دوستوں کا اس طرح جیوں
۲۶۲	نتیجہ تھا بھیا ناک آرزوئے فوجی کا	۲۳۹	مگر ادھرتی پر راجہ شل رشتہ موت سے جوڑا
۲۶۳	نتیجہ جنگ مہا بھارت	۲۴۱	جنگ میں در یو دھن کی شکست
۲۶۴	کد رقیقت نے روپ اک گین کا یوں سامنے لایا	۲۴۱	دعائوں کی ہمیشہ کام آتی ہے مصیبت میں
۲۶۵	شری کرشن جی کا خاندان دوار کا میں	۲۴۲	اے میرے لال بھرتی پیری ماں سو جان داری
۲۶۶	چلا پھر دوڑھلے کہن کا خوب فرصت سے	۲۴۳	برہمنیش مادر کیسے ہوگا عقل کے دشمن
۲۶۷	یادوں کی ہلاکت	۲۴۴	مجھے انسو ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی
۲۶۸	خدا نگ آہنی سے پائے بنواری ہوا زخمی	۲۴۵	در یو دھن دوبارہ محاذ جنگ پر
۲۶۹	شری کرشن جی کا سفر آخرت	۲۴۶	مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے
۲۷۰	چلے پانڈو وہاں سے چھوڑ کر تاج اور سلطانی	۲۴۷	وہ اب بھگانی پھر تپے ظالم موت کے ڈر سے
۲۷۱	پانڈو وال کا انجام اور سفر آخرت	۲۴۷	زباں کھولے عوام انسان کے سب سے بڑے قاتل
		۲۴۸	شہنشاہی کا جذبہ کون سی ہے آج منزل میں
		۲۴۹	یہ بے پایاں نوازش بول اے ابن قریش کیسی

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۲۲۸	کھبھی پرنگی کو بھنگ اپنی وہ نہیں کرنا	۲۲۸	کھبھی پرنگی کو بھنگ اپنی وہ نہیں کرنا
۲۲۹	کرن کا آخری امتحان	۲۲۹	کرن کا آخری امتحان
۲۳۰	کرن کی سخاوت اپنے عروج پر	۲۳۰	کرن کی سخاوت اپنے عروج پر
۲۳۱	کرن کا سفر آخرت	۲۳۱	کرن کا سفر آخرت
۲۳۲	پیتا اس کی جلالی نقش اپنے ہاتھ پر رکھ کر	۲۳۲	پیتا اس کی جلالی نقش اپنے ہاتھ پر رکھ کر
	مہا بھارت کا چوتھا کمانڈر انچیف		مہا بھارت کا چوتھا کمانڈر انچیف
۲۳۳	راجہ شل سیناپتی کے منصب پر	۲۳۳	راجہ شل سیناپتی کے منصب پر
۲۳۵	نیپا شل کا انداز فوجوں کو روٹانے کا	۲۳۵	نیپا شل کا انداز فوجوں کو روٹانے کا
۲۳۶	نکل سے کرن کے بیٹوں کی زور آزمائی	۲۳۶	نکل سے کرن کے بیٹوں کی زور آزمائی
۲۳۷	راجہ شل اور بھیم کی زور آزمائی	۲۳۷	راجہ شل اور بھیم کی زور آزمائی
۲۳۸	نہ ہوتا ناش سیر دوستوں کا اس طرح جیوں	۲۳۸	نہ ہوتا ناش سیر دوستوں کا اس طرح جیوں
۲۳۹	مگر ادھرتی پر راجہ شل رشتہ موت سے جوڑا	۲۳۹	مگر ادھرتی پر راجہ شل رشتہ موت سے جوڑا
۲۴۱	جنگ میں در یو دھن کی شکست	۲۴۱	جنگ میں در یو دھن کی شکست
۲۴۱	دعائوں کی ہمیشہ کام آتی ہے مصیبت میں	۲۴۱	دعائوں کی ہمیشہ کام آتی ہے مصیبت میں
۲۴۲	اے میرے لال بھرتی پیری ماں سو جان داری	۲۴۲	اے میرے لال بھرتی پیری ماں سو جان داری
۲۴۳	برہمنیش مادر کیسے ہوگا عقل کے دشمن	۲۴۳	برہمنیش مادر کیسے ہوگا عقل کے دشمن
۲۴۴	مجھے انسو ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی	۲۴۴	مجھے انسو ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی
۲۴۵	در یو دھن دوبارہ محاذ جنگ پر	۲۴۵	در یو دھن دوبارہ محاذ جنگ پر
۲۴۶	مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے	۲۴۶	مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے
۲۴۷	وہ اب بھگانی پھر تپے ظالم موت کے ڈر سے	۲۴۷	وہ اب بھگانی پھر تپے ظالم موت کے ڈر سے
۲۴۷	زباں کھولے عوام انسان کے سب سے بڑے قاتل	۲۴۷	زباں کھولے عوام انسان کے سب سے بڑے قاتل
۲۴۸	شہنشاہی کا جذبہ کون سی ہے آج منزل میں	۲۴۸	شہنشاہی کا جذبہ کون سی ہے آج منزل میں
۲۴۹	یہ بے پایاں نوازش بول اے ابن قریش کیسی	۲۴۹	یہ بے پایاں نوازش بول اے ابن قریش کیسی



مہابھارت
کا
طویل سلسلہ

महाभारत
का
तवील सिलसिला



ادوارِ عالم

دیارِ ہند کے کچھ صاحبان دانش و نیش
 ہیں تحقیقاتِ عالم میں بھی کافی اختلاف کے
 مہاجرات کے جیسی اور کتابِ معتبر کوئی
 بیان تیرہ طریقے کرتے ہیں اس ضمن میں دانا
 مگر سارے ہندو اپنے عقائد میں ہیں پختہ تر
 ہے پہلا دورِ ستِ جگ دوسرے جگِ تیسرے
 جو پہلا دورِ ستِ جگ کا ہے اس کا عرصہ مدت
 پھر اس کے بعد ثانی یک تری نام ہے جس کا
 نوشتِ معتبر میں تیسرا یک ہے دوا پر کا
 بیابان اس کرۂ ارضی کی یوں کرتے ہیں پیدائش
 نہ کوئی کر سکا ثابت انہیں اپنے دلائل سے
 یہ تخصیص عقائد ہند والوں نے نہیں دیکھی
 مگر اہل دلائل نے کسی صورت نہیں مانا
 کیا ہے منقسم دنیا کو فرضی چار حصوں پر
 دوا پر تیسرا اور چوتھا کلجگ یہ ہیں چاروں یک
 ہے تہہ لاکھ اٹھائیس ^{۱۴۲۰۰۰} دہ صد سال اور سمیت
 ہے بارہ لاکھ نوہ ^{۸۶۳۰۰۰} شش ہزار اس یک کا عرصہ
 ہوا ہے آٹھ لاکھ چونسٹھ ہزار اک سال کا عرصہ
 ہے آخر دورِ کلجگ اور اس کلجگ کا کل عرصہ
 بس اربعہ لاکھ اور تیس ^{۳۲۰۰۰} دہ صد سال ہے اسکا

اے یہ ایک ایسا ادواری چکر ہے جو ہمیشہ جگِ ستِ شروع ہو کر کلجگ پر ختم ہوتا ہے اور پھرست جگ شروع ہو جاتا ہے۔

ادوارے - آلام

دیارے-ہند کے کچھ ساہبانے-دانیاشو-بہنیش
 بیاں اس کرۂ ارضی کی یوں کرتے ہیں پیدائش
 نہ کوئی کر سکا ثابت انہیں اپنے دلائل سے
 یہ تخصیص عقائد ہند والوں نے نہیں دیکھی
 مگر اہل دلائل نے کسی صورت نہیں مانا
 کیا ہے منقسم دنیا کو فرضی چار حصوں پر
 دوا پر تیسرا اور چوتھا کلجگ یہ ہیں چاروں یک
 ہے تہہ لاکھ اٹھائیس ^{۱۴۲۰۰۰} دہ صد سال اور سمیت
 ہے بارہ لاکھ نوہ ^{۸۶۳۰۰۰} شش ہزار اس یک کا عرصہ
 ہوا ہے آٹھ لاکھ چونسٹھ ہزار اک سال کا عرصہ
 ہے آخر دورِ کلجگ اور اس کلجگ کا کل عرصہ
 بس اربعہ لاکھ اور تیس ^{۳۲۰۰۰} دہ صد سال ہے اسکا

۱) یہ ایک ایسا ادواری چکر ہے جو ہمیشہ سत्य یوگ سے شروع ہو کر کلجگ پر ختم ہوتا ہے اور پھرست یوگ شروع ہو جاتا ہے۔

دیارے-ہند = भारत देश
 ساہبانے-دانیاشو-بہنیش
 = अकलमंद आदमी
 کور-ए-अरजी = जमीन
 तहकीकाते-आलम =
 दुनिया की खोज
 मोअतबर = भरोसे का,
 विश्वास पात्र
 तखसीस = विशेषतः
 दाना = अकलमंद

मुनकसिम = तकसीम,
 वाटप

सानी = दूसरा

नविशते-मोअतबर = पवित्र
 किताब

مقدس تخلیق

مقدس ویدکی تخلیق اقدس کا سب کیا تھا دم تحریر ان نسخوں کا وقت مستحب کیا تھا
 کیا ہے جو بیاں اہل ذکر نے اس کا پس منظر ہمارے سامنے وہ آگیا اک آئینہ بن کر
 دیار اندر کا اک پر شکوہ و مقتدر حاکم جو ایشیا و سخاوت میں تھا اپنے وقت کا حاکم
 وہ نسل پانڈواں سے تھا اسے ارجن سے نسبت تھی وسیع الارض اک رفیقہ پر جس کی بادشاہت تھی
 اسے اک دن بزرگان سلف کی اپنے یاد آئی نزاع باہمی پر ان کی وہ ہنگامہ آرائی
 زبانی اور بے ترتیب ٹکڑے اس فسانے کے چلے آئے تھے کالوں تک جو قفسے اس زمانے کے
 انہیں باضابطہ ترتیب و یکجہر اک عبارت میں کیا محفوظ تا بانی رہے مصحف کی صورت میں
 لہذا اس زمانے کے جواہر علم و دانش تھے وہ بولے گئے سب جس قدر اباب پیش تھے

نے اندر پرستھ، قدیم دہلی کا نام

مுகद्दس तरखलीक

मुकद्दस वेद की तरखलीके-अकदस का सबब क्या था ।
 दमे-तहरीर इन नुसरों का वक्ते-मुसतहब क्या था ॥
 किया है जो बयां अहले-जका ने उसका पस मंजर ।
 हमारे सामने वह आ गया इक आईना बनकर ॥
 दयारे-इंद्र का इक पुर-शिकोह-ओ-मुकतदिर हाकिम ।
 जो ईसार-ओ-सखावत में था अपने वक्त का हातिम ॥
 वह नस्ले-पांडवां से था उसे अर्जुन से निसबत थी ।
 वसीअ-उल-अर्ज इक रक्बे पे जिसकी बादशाहत थी ॥
 उसे इक दिन बुजुगनि - सलफ की अपने याद आई ।
 निजाअ-ए-बाहमी पर उनकी वह हंगामा आरई ॥
 ज़बानी और बे तरतीब टुकड़े उस फ़साने के ।
 चले आए थे कानों तक, जो किसी उस ज़माने के ॥
 उन्हें बा - ज़ाब्ला तरतीब देकर इक इबारत में ।
 किया महफूज, ता बाकी रहें, मुसहफ की सूरत में ॥
 लेहाजा उस ज़माने के जो अहले-इल्म-ओ-दानिश थे ।
 वह बुलवाए गए सब, जिसकद अरबाबे-बीनिश थे ॥

तरखलीके-अकदस = पवित्र वेद
 के लिखने का कारण
 मुसतहब = शुभ घड़ी

पुर-शिकोह = गानदार
 मुकतदिर = भाग्यवान

सलफ = पुरखों

बाज़ाब्ला = बाकायदा
 इबारत = लिखाई

बीनिश = दूरअदेश

?) इन्द्र प्रस्थ, दिल्ली का कदीम नाम

انہیں میں اک بنام ویاس کی تائے زمانہ تھا
زبان کا جو پست تھا فرست میں یگانہ تھا

کچھ اپنے حافظے اور کچھ برہاجی سے خط لیکر
رقم فرمایا ایسا بے نظیر اک مصحفِ طہر

بھرت کے نام سے اس نے کیا موسوم یہ نسخہ
جو اک مضمون کی صورت میں ہے مرقوم یہ نسخہ

وہ جس میں ساٹھ لکھ اشلوک لکھے ہیں مولف نے
برہما سے سنے تھے اور جو دیکھے تھے مولف نے

اسے پھر چار حصوں میں برابر منقسم کر کے
منایا سستی پر جشن اس کو مستم کر کے

یہ جشن پرست ایک عرصہ تک رہا جاری
شریکِ جشن عالم اور جوگی تھے جٹا دھاری

علاوہ ان کے لاکھوں لوگ تھے اس جشن میں شامل
تھا آسودہ نشاط و زمزم سے دامن ساحل

مگر یہ ساٹھ لکھ اشلوک جو ہیں چار نسخوں میں
ہوئی تقسیم انکی اس طرح پھر چند حصوں میں

نفوسِ قدسیہ کے ضمن میں اشلوک جو قسمت
کئے ہیں ساٹھ میں سے تیس لاکھ اشعارِ بابرکت

۱۔ بیانِ کونفوسِ قدسیہ سے جانتے ہیں، ہندو کا عقیدہ ہے کہ وہ زندہ جاوید ہیں، اور دوا پر جگ میں ایک شخص بنام ویاس
ملائے احوال سارلانس کے لئے ظہور میں آئے اور کچھ لوگوں کا یہ بھی عقیدہ ہے کہ یہ ایک ہی شخص ہے جو مختلف زمانوں میں،
مختلف شکلوں میں ظہور کرتا ہے۔ بہر حال ویاس جتنے کچھ برہما کی زبانی اور کچھ اپنے حافظے کے زور پر ویدک چار کتابیں ترتیب دیں۔
چونکہ یہاں کوروں، پانڈو کی جنگ میں موجود وید کا پہلا نسخہ رنگ وید دوسرا بکرود تیسرا سام وید اور چوتھا افرودید ہے۔
اسی وجہ سے اسے بیس کہتے ہیں۔ بیس کے لغوی معنی "تفصیل دینے والا اور اصل کرنے والا" ہیں۔ درج کیا گیا اس کا اصلی نام "وین پان" تھا
اور ولایتِ میاندوآب میں پیدا ہوا۔

۲۔ مہابھارت کی وجہ تسمیہ جو شہرت اور افواہ سے سنی گئی ہے اس سے بھی ظاہر ہوتا ہے کہ "مہا" بمعنی بزرگ اور بھارت بمعنی "جنگ"
ہے مگر یہ بات مرتعِ خلافِ عقل معلوم ہوتی ہے کہ اہل ہند کی لغت میں بھارت بمعنی جنگ کے آیا ہو۔ ہاں بظاہر جو اس کتاب
میں اقوال اولادِ عالی نژاد راجبھرت کا ہے۔ کتاب اس کے نام سے موسوم ہوئی اور استعمال کی کثرت سے الف ایذا ہوا۔

فیراسات = اکرل مندی

موسمِ ہفے-اتہر = پوین
کیتا

نوسوا = کیتا

موسمِ ہفے = ایک جگہ جما
کرنے والا
(ڈکڑا کرنے والا)

موسمِ ہفے = موسمِ ہفے

نیشات-او-جمجمہ =
خوشی کی ترنگ

نپوسے-کودسیا = پوین
دنمان

۱) بھاسجی کو نپوسے کودسیا سے جانتے ہیں، ہندو کا عقیدہ ہے کہ وہ زندہ جاوید ہیں، اور دوا پر جگ میں ایک شخص بنام ویاس
ملائے احوال سارلانس کے لئے ظہور میں آئے اور کچھ لوگوں کا یہ بھی عقیدہ ہے کہ یہ ایک ہی شخص ہے جو مختلف زمانوں میں،
مختلف شکلوں میں ظہور کرتا ہے۔ بہر حال ویاس جتنے کچھ برہما کی زبانی اور کچھ اپنے حافظے کے زور پر ویدک چار کتابیں ترتیب دیں۔
چونکہ یہاں کوروں، پانڈو کی جنگ میں موجود وید کا پہلا نسخہ رنگ وید دوسرا بکرود تیسرا سام وید اور چوتھا افرودید ہے۔
اسی وجہ سے اسے بیس کہتے ہیں۔ بیس کے لغوی معنی "تفصیل دینے والا اور اصل کرنے والا" ہیں۔ درج کیا گیا اس کا اصلی نام "وین پان" تھا
اور ولایتِ میاندوآب میں پیدا ہوا۔

۲) مہابھارت کی وجہ تسمیہ جو شہرت اور افواہ سے سنی گئی ہے اس سے بھی ظاہر ہوتا ہے کہ "مہا" بمعنی بزرگ اور بھارت بمعنی "جنگ"
ہے مگر یہ بات مرتعِ خلافِ عقل معلوم ہوتی ہے کہ اہل ہند کی لغت میں بھارت بمعنی جنگ کے آیا ہو۔ ہاں بظاہر جو اس کتاب
میں اقوال اولادِ عالی نژاد راجبھرت کا ہے۔ کتاب اس کے نام سے موسوم ہوئی اور استعمال کی کثرت سے الف ایذا ہوا۔

جو باقی تیس میں سے پندرہ ہیں لاکھ کل منتر
کیے ہیں رسترو کی کیلئے مخصوص یہ منتر

جوان میں پندرہ لاکھ اور بھی اشلوک ہیں باقی
انہیں قسمت کیے یوں متفق ہیں جس پہ اشراق

کرچوہ لاکھ بھوت اور راکشش اور قوم جت سے
مؤلف نے کے مخصوص منتر پاک مصحف کے

فقط اک لاکھ منتر جو بچے ہیں وید کے باقی
وہ انساں کیلئے ہیں اور کہہ ملتے ہیں آفاق

یہی اک لاکھ منتر درمیان ابن آدم میں
فیوض خلق اور برکت رسان بزم عالم میں

مگر ان میں سے بھی جو بیس دہ صد ایسے ہیں منتر
جو سب ہی شتمل ہیں کورو پاندو کی لڑائی پر

علاوہ ان کے جو مرقوم ہیں پسند و نصیحت پر
میں کچھ اشلوک گیتا اور کچھ منتر حکایت پر

کتب معتبر کا نام رکھا پھر مہابھارت
ہے وجہ تسمیہ اسکی زبان عالم و خلقت

لے حکماء کا ایک قدیم گروہ
لے وید کے ایک لاکھ منتر جو مہابھارت میں مرقوم ہیں انہیں اٹھارہ پر یعنی اٹھارہ باب میں ترتیب دے کر دنیا کے

استفادہ کیلئے چھوڑا گیا ہے مگر اسٹھ لاکھ اشلوک کا کہیں پتہ نہیں ملتا جو دیوتاؤں اور رستروک کے رہنے والوں اور جنوں
راکشش گندھرب قسم کی مخلوقات سے متعلق ہیں۔ وہ کہاں ہیں وہ حقیقت میں یا عرف افواہ، ابھی یا تحقیق طلب ہیں۔

فرشتہ

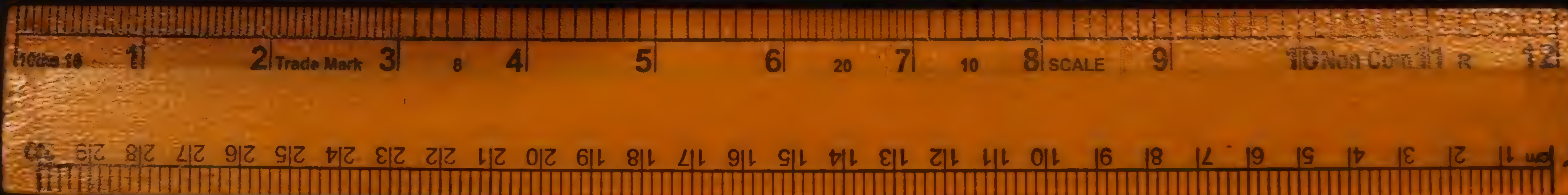
قسمت = भाग करना
इशराकी = पुराने जमाने
के ग्यानी

मरकूम = लिखा हुआ

वजहे-तसमिया = नाम
रखने का कारण

१) यह शब्द उर्दू बोल चाल में इसी तरह इस्तेमाल होता है । वरना इसका सही शब्द मंत्र ही है ।

२) हुकमा का एक कदीम गिरोह । वेद के एक लाख मंत्र जो महाभारत में मरकूम हैं इन्हे अद्वारह परब यानी अद्वारह बाब में तरतीब देकर दुनिया के इस्तेफादा के लिए छोड़ा गया है मगर उनसठ लाख श्लोक का कही पता नहीं मिलता जो देवताओं और सित्र लोक के रहने वालों और जिन व राक्षस गंधर्व किस्म की मखलूक़ात से मुताल्लिक हैं । वह कहाँ हैं वह हकीकत है या सिर्फ़ अफवाह, अभी यह तहकीक़ तलब है । (फ़रिश्ता)



کتاب مہا بھارت

یہ ہندوستان جس کی خاک دامن گیر ہے گویا ہر اک کو اک میں اپنا لینے کی تاثیر ہے گویا
یہاں آئی ہے جو بھی قوم جائز خواہشیں لے کر یہیں آباد ہو کر رہ گئی، سمجھی گئی برتر
بنام آریہ ہرمز کے بیٹے بھی یہاں پہنچے بزم خود لئے ہمراہ اک عزم جواں پہنچے
بہ شانِ نو یہاں صدیوں انہوں نے حکمرانی کی نہایت کروفر سے اس وطن کی پاسبانی کی
انہیں کی نسل سے وابستہ ہے اک داستانِ رزم کہ جس کو دیاں نے تالیف فرمایا بشکلِ نظم
اسی منظوم جنگی سرفروشانہ حکایت کو مہا بھارت کہا جاتا ہے اس رزمی عبارت کو
ہے اس درج کوروں پانڈوں کا قصہ خلیم حقیقت میں وہ غول آمیز تصویروں کا ہے البم

کتاب وید کے مانند اسکو سمجھا جاتا ہے

عقیدت اور تقدس کی نظر سے دیکھا جاتا ہے

مہا بھارت کا مختصر جائزہ
اور آج کے مورخین

یہ ہے ایسی حکایت جو ہے وابستہ عقیدت عقیدت کے علاوہ جو ہے وابستہ حقیقت
بھرت کی نسل کو پر مغز سامنے عقیدت کیلئے پیش جس انداز و شوخی عبارت سے

۱۔ یہ قافیہ صوتی اعتبار سے رکھا گیا ہے۔ ۲۔ لمبا دراز

یہ ہندوستان جس کی خاک دامن گیر ہے گویا ہر اک کو اک میں اپنا لینے کی تاثیر ہے گویا
یہاں آئی ہے جو بھی قوم جائز خواہشیں لے کر یہیں آباد ہو کر رہ گئی، سمجھی گئی برتر
بنام آریہ ہرمز کے بیٹے بھی یہاں پہنچے بزم خود لئے ہمراہ اک عزم جواں پہنچے
بہ شانِ نو یہاں صدیوں انہوں نے حکمرانی کی نہایت کروفر سے اس وطن کی پاسبانی کی
انہیں کی نسل سے وابستہ ہے اک داستانِ رزم کہ جس کو دیاں نے تالیف فرمایا بشکلِ نظم
اسی منظوم جنگی سرفروشانہ حکایت کو مہا بھارت کہا جاتا ہے اس رزمی عبارت کو
ہے اس درج کوروں پانڈوں کا قصہ خلیم حقیقت میں وہ غول آمیز تصویروں کا ہے البم

مہا بھارت کا مؤخر سر جایزہ
اور آج کے مؤرخین

یہ ہے ایسی حکایت جو ہے وابستہ عقیدت عقیدت کے علاوہ جو ہے وابستہ حقیقت
بھرت کی نسل کو پر مغز سامنے عقیدت کیلئے پیش جس انداز و شوخی عبارت سے

۱) یہ قافیہ صوتی اعتبار سے رکھا گیا ہے۔ ۲) یہ لمبا دراز

تاسیر = اصرار

ب شانه-نص =
اک نڈ شانه سے

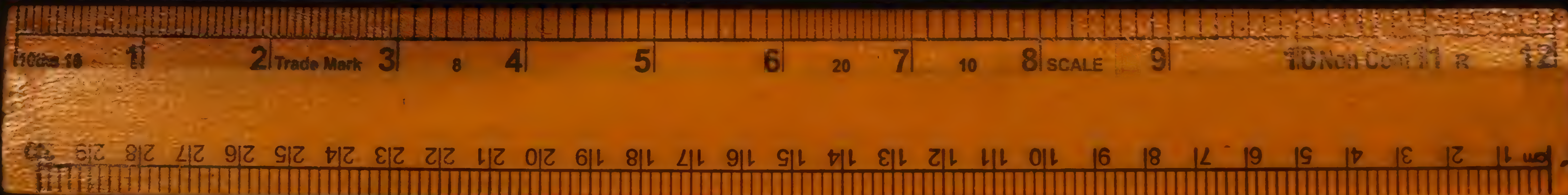
داساتانہ-رجم = یوڈ کا
کسسا
نجم = کویتا

خولجم = لکھا، دراج

اکیدت = شریدا
تکدودس = پویتر

پور-مجم = اکملمند

شورکی = چنچلپن



इसे सुनकर मोहब्बत नगमाए-इरफाँ सुनाती है ।
 बयाँ करते हुए जिसको अकीदत झूम जाती है ॥
 दिगर इसके है इसमें खूबसूरत बाब इक गीता ।
 जो ना शाइستگی से पाक है, बकवास से रीता ॥
 श्री घनश्याम ने अर्जुन को इस गीता की सूरत में ।
 दिया उपदेश जो डूबा हुआ है इल्म-ओ-हिकमत में ॥
 हकीमाना फिरासत की इसे तसवीर कह लीजे ।
 दमे-तखरीब गोया, पहलुए-तामीर कह लीजे ॥
 फिर इसके बाद सामिर ने नबर्द-ओ-जंग का नक्शा ।
 किया है पेश जिस अन्दाज़ और जिस ढंग का नक्शा ॥
 इसे सुनते ही खुल जाती हैं राहें, फहम-ओ-दानिश की ।
 किरण और तेज़ हो जाती है गोया नूर-ओ-ताविश की ॥
 मुवरिख ने न लेकिन, अहमियत दी इस फसाने को ।
 फसाना ही समझ कर, उसने ज़हमत दी न खामे को ॥

रीता = खाली

हकीमाना फिरासत =
बहुत अकलमंदीनबर्द-ओ-जंग =
लड़ाई, युद्धफहम-ओ-दानिश =
समझबूझनूर-ओ-ताविश =
उजाला, रोशनी

ज़हमत = कष्ट

ब-असनादे-कुतुब =
सन्द और सुबूत के साथ

महाभारत और हम

यह सच है इस हिकायत पर, मुवरिख ने कभी ज़हमत ।
 न दी अपने कलम को, और न बख्शी इसको कुछ वक़्त ॥
 यकीनन सब ने इसको, एक फ़र्जी दास्ताँ समझा ॥
 बिला शक, दोशे-हक-बीनी पे, इक बारे-गिरा समझा ॥
 मगर अब हम इसे तारीख़ के जामे में लाएंगे ।
 गहन महताब में जो, लग चुका है वह छुड़ाएंगे ॥
 करेंगे पेश, इस अन्दाज़ से हम इस फसाने को ।
 कि जिस पर फ़ख़्र होगा आने वाले हर ज़माने को ॥
 मवाद इसका ब असनादे-कुतुब, सब मोतबर होगा ।
 हर इक बाब इसका पुर-तासीर होगा, बा-असर होगा ॥

असे सन کر محبت نغمہ عرفاں سناتی ہے
 دگر اس کے ہے آپیں خوبصورت باب اک گیتا
 جو ناشائستگی سے پاک ہے بکواس سے ریتا
 دیا اپدیش جو ڈوبا ہوا ہے علم و حکمت میں
 حکیمانہ فراست کی اسے تصویر کہہ لیجیے
 پھر اس کے بعد سامر نے نبرد و جنگ کا نقشہ
 کیا ہے پیش جس انداز اور جس ڈھنگ کا نقشہ
 اسے سنتے ہی کھل جاتی ہیں راہیں فہم و دانش کی
 کرن اور تیز ہو جاتی ہے گویا نور و تابش کی
 مورخ نے نہ لیکن اہمیت دی اس فسانے کو
 فسانہ ہی سمجھ کر اسے زحمت دی نہ خامے کو

مہا بھارت اور ہم

یہ سچ ہے اس حکایت پر مورخ نے کبھی زحمت
 نہیں اپنے قلم کو اور نہ بخشی اس کو کچھ وقعت
 یقیناً سب نے اس کو فرضی داستان سمجھا
 بلا شک دوش حق بینی پر یہ اک بار گراں سمجھا
 مگر اب ہم اسے تاریخ کے جامے میں لائیں گے
 گہن مہتاب میں جو لگ چکا ہے وہ چھڑائیں گے
 کریں گے پیش اس انداز سے ہم اس فسانے کو
 کہ جس پر فخر ہوگا آنے والے ہر زمانے کو

مواد اسکا بہ اسناد کتب سب معتبر ہوگا

ہر اک باب اسکا پرتاثر ہوگا با اثر ہوگا

علا، خال، ہتی

نسلیں کا سلسلہ

راجہ بھرت کی نسل شانتی تک

مہابھارت کے جس قصے کی اک عالم میں شہرت ہے
یہی ہندوستان تاریخ عالم کے فسانے میں
یہاں اک نسل کھتری سے کوئی حاکم تھا پُر عظمت
اسی کی پشت نسل اب نسلِ سات تک گزری
تو اس کی نسل سے اک بہتر خوش طالع ہوا پیدا
پھر اس کی نسل سے جو لوگ بیٹھے تخت شاہی پر
ہو اس خاندان سے بہتر چھٹیوں بار پھر پیدا

وہی جیوے اول کہ جس کا نام گنگا تھا
وہی کی کوکھ سے پھر بھیشم اس جگہ میں ہوئے آپن

وہی کی کوکھ سے پھر بھیشم اس جگہ میں ہوئے آپن
مہابھارت میں جو کردار آئے سامنے کھل کر

مہابھارت میں جو کردار آئے سامنے کھل کر
کسی بھی زاویے سے دیکھئے اس صاحبِ دل کو

کسی بھی زاویے سے دیکھئے اس صاحبِ دل کو
ہمیشہ نشہ ایشار ہیں سرشار رہتے تھے

ہمیشہ نشہ ایشار ہیں سرشار رہتے تھے
غرض اس دور میں وہی معزز پارسا ہستی

غرض اس دور میں وہی معزز پارسا ہستی
خدا شاہد! کہیں ہم کو نظر آتی نہیں کوئی

خدا شاہد! کہیں ہم کو نظر آتی نہیں کوئی
شانم کی فریفتگی اور خودداری

شانم کی فریفتگی اور خودداری
برائے سیر، راجہ شانتونو اک دن چلے گھر سے

برائے سیر، راجہ شانتونو اک دن چلے گھر سے
اپنا اک اک حسینہ ماہرو ان کو نظر آئی

اپنا اک اک حسینہ ماہرو ان کو نظر آئی
یہ مہوش نازیں تھی ایک ماہی گیر کی دختر

یہ مہوش نازیں تھی ایک ماہی گیر کی دختر
علا گنگا ندی۔ جو شیبو جی کے سراپے منہ روپ دھارن کر کے بھاگ دتی تھی پر آئی۔ وہاں راجہ شانتونو اسے دیکھ کر

علا گنگا ندی۔ جو شیبو جی کے سراپے منہ روپ دھارن کر کے بھاگ دتی تھی پر آئی۔ وہاں راجہ شانتونو اسے دیکھ کر
فریفتہ ہو گئے اور شادی کا پیغام دیا۔ گنگا نے اس پیغام کو اس شرط کے ساتھ منظور کیا کہ میں جو بھی کام کروں گی آپ دخل نہ دیں گے

فریفتہ ہو گئے اور شادی کا پیغام دیا۔ گنگا نے اس پیغام کو اس شرط کے ساتھ منظور کیا کہ میں جو بھی کام کروں گی آپ دخل نہ دیں گے
شانم نے یہ شرط منظور کر لی اس کے بعد گنگا کو کچھ دیگر بڑے سات لڑکے پیدا ہوئے اس نے ان ساتوں کو دریا میں بہا دیا۔ جب اسے

شانم نے یہ شرط منظور کر لی اس کے بعد گنگا کو کچھ دیگر بڑے سات لڑکے پیدا ہوئے اس نے ان ساتوں کو دریا میں بہا دیا۔ جب اسے
اٹھواں بچہ بھیشم نام کا پیدا ہوا تو گنگا نے چاہا کہ اسے بھی دریا میں بہا دے مگر راجہ نے اسے روکا اس پر وہ ناراضی سے اندر دھان ہو کر کھینچ چلی گئی

اٹھواں بچہ بھیشم نام کا پیدا ہوا تو گنگا نے چاہا کہ اسے بھی دریا میں بہا دے مگر راجہ نے اسے روکا اس پر وہ ناراضی سے اندر دھان ہو کر کھینچ چلی گئی
اور بھیشم کو راجہ شانتونو نے پرورش کیا۔ بھیشم کا تلفظ - भीष्म

جیوے-اوبل =
پہلی پللی

جاوینا = پنگال، کسی
بھی اور سے

کولفٹ = مومبوت

مومممر = بوڑھا-وڈا
والا

شانم کی فریفتگی اور خودداری

برائے سیر، راجہ شانتونو اک دن چلے گھر سے
بہت ہی نیک تھی، کردار اس کا صاف ستھرا تھا

بہت ہی نیک تھی، کردار اس کا صاف ستھرا تھا
کہ جب کا بھینٹ اور ایشار میں بیٹا ہے کل جیون

کہ جب کا بھینٹ اور ایشار میں بیٹا ہے کل جیون
نظر آتے ہیں صرف ان بھیشم ہی ان سب میں افضل تر

نظر آتے ہیں صرف ان بھیشم ہی ان سب میں افضل تر
نمونہ پائیکے اخلاق کا اس سن مردِ کامل کو

نمونہ پائیکے اخلاق کا اس سن مردِ کامل کو
ہزاروں کلفتیں غیروں کی اپنی جاں پہ سہتے تھے

ہزاروں کلفتیں غیروں کی اپنی جاں پہ سہتے تھے
غرض اس دور میں وہی معزز پارسا ہستی

غرض اس دور میں وہی معزز پارسا ہستی
خدا شاہد! کہیں ہم کو نظر آتی نہیں کوئی

خدا شاہد! کہیں ہم کو نظر آتی نہیں کوئی
شانم کی فریفتگی اور خودداری

شانم کی فریفتگی اور خودداری
برائے سیر، راجہ شانتونو اک دن چلے گھر سے

برائے سیر، راجہ شانتونو اک دن چلے گھر سے
اپنا اک اک حسینہ ماہرو ان کو نظر آئی

اپنا اک اک حسینہ ماہرو ان کو نظر آئی
یہ مہوش نازیں تھی ایک ماہی گیر کی دختر

یہ مہوش نازیں تھی ایک ماہی گیر کی دختر
علا گنگا ندی۔ جو شیبو جی کے سراپے منہ روپ دھارن کر کے بھاگ دتی تھی پر آئی۔ وہاں راجہ شانتونو اسے دیکھ کر

۱) گنگا ندی جو شیبو جی کے سراپے منہ روپ دھارن کر کے بھاگ دتی تھی پر آئی۔ وہاں راجہ شانتونو اسے دیکھ کر
فریفتہ ہو گئے اور شادی کا پیغام دیا۔ گنگا نے اس پیغام کو اس شرط کے ساتھ منظور کیا کہ میں جو بھی کام کروں گی آپ دخل نہ دیں گے

شانم نے یہ شرط منظور کر لی اس کے بعد گنگا کو کچھ دیگر بڑے سات لڑکے پیدا ہوئے اس نے ان ساتوں کو دریا میں بہا دیا۔ جب اسے

اٹھواں بچہ بھیشم نام کا پیدا ہوا تو گنگا نے چاہا کہ اسے بھی دریا میں بہا دے مگر راجہ نے اسے روکا اس پر وہ ناراضی سے اندر دھان ہو کر کھینچ چلی گئی

اور بھیشم کو راجہ شانتونو نے پرورش کیا۔ بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

بھیشم کا تلفظ - भीष्म

मतसे गंद और सत्यवती भी नाम था उसका ।
फक्त धर्मात् में कष्टी को खेना काम था उसका ॥

वह कन्या धर्म पुत्री थी, हरिदास इक मछरे की ।
वह कन्या ! जोत थी ठीमर के हृदय के अन्धरे की ॥

सुन्दरता में वह गोया, अप्सरा से बढके सुन्दर थी ।
यकीनन चश्मे-शायर में, वह रशके माह-ओ-नय्यर थी ॥

फिर इसके बाद राजा ने निहायत शौक-ओ-रागत से ।
दिया पैगाम ठीमर को, उसे सत्य की निसबत से ॥

मछरे ने लगादी शर्त, इस पैगाम को सुनकर ।
मैं कन्या दान ! तुमको दूंगा, लेकिन एक वदे पर ॥

कि इस पुत्री से जो भी पुत्र हो महाराज अब उत्पन ।
वही सम्राट कहलाए, सभाले वह ही सिंहासन ॥

यह शर्तें-नारवा जिस दम सुनी खुदार राजाने ।
बड़ी सखती से इसको, कर दिया इनकार राजा ने ॥

मगर बिस्तर पे उनको रात भर मुतलक न नींद आई ।
कटी उस माहरू की याद ही में शब की तनहाई ॥

चश्म = जॉव
शायर = कवि
माह = चन्द्रमा
नय्यर = सूरज

मुतलक = जरा भी

भीष्म का ईसार

वज़ीरों ने जो देखी सुबह को, राजा की यह हालत ।
हकीकत की नज़र आई उन्हें कुछ और ही सूरत ॥

(१) सत्यवती (२) भीष्म ने हरिदास के पास जाकर पिता के निमित्त कन्या की याचना की तब हरिदास ने कहा मैं कन्या आप को तो दे सकता हूँ परन्तु आपके पिता को नहीं दूँगा, क्योंकि आप ज्येष्ठ पुत्र हैं इस कारण आप पुत्र को तो राज्य मिल सकता है किन्तु राजा के पुत्र होने पर उस को राज्य नहीं मिल सकता । भीष्म ने कहा मैं राज्य और विवाह कुछ न करूँगा ॥ पुष्ठ १२ महाभारत भाषा ज्वाला प्रसाद जी मिश्र मुरदाबादी ।

مستے گزاور ستیہ دتی بھی نام تھا اسکا
فقط دھرات میں کشتی کو کھینا کام تھا اسکا
وہ کنیا دھرم پترى تھی ہری داس اک مچھیرے کی
وہ کنیا! جوت تھی ڈھیر کے ہرے کے اندھیرے کی
سند تائیں وہ گویا البسرا سے بڑھکے سندھ تھی
یقیناً چشم شاعر میں وہ رشک باہر تیسر تھی
پھر اسکے بعد راجہ نے نہایت شوق و رغبت سے
دیا پیغام ڈھیر کو اسے ستیہ کی نسبت سے
مچھیرے نے لگا دی شرط اس پیغام کو سنکر
میں کنیا دان! بسکو دو گ لیکن ایک وعدہ پر
کہ اس پترى سے جو بھی پتر ہو مہر آج اب اتین
وہی سمرٹ کہلائے سنبھلے وہ ہی سنبھاس
یہ شرط نارا واجد سمجھنی خود دار راجہ نے
بڑی سختی سے اسکو کر دیا انکار راجہ نے

مگر بستر پہ انکورات بھر مطلق زمین داتی

کئی اس ماہر کی یاد ہی میں شب کی تنہائی

بھیشم کا ایثار

وزیروں نے جو دیکھی صبح کو راجہ کی یہ حالت
حقیقت کی نظر آئی انہیں کچھ اور ہی صورت

۳) بھیشم نے ہریداس کے پاس جا کر پیتا کے نیتھ کنبھا کی یاचना کی تب ہریداس نے کہا میں کنبھا آپ کو تو دے سکتا ہوں پرنتو آپ کے پیتا کاں نہی دؤگا، کبھی آپ جیہٹ پتر ہیں اس کاراں آپ پتر کو تو راجہ مل سکتا ہے کینتو راجا کے پتر ہونے پر اس کو راجہ نہی مل سکتا۔ بھیشم نے کہا میں راجہ اور ویاہ کوہ نہ کرؤگا!! پوٹ ۱۲ مہا بھارت भाषा जवाला प्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद ॥

ستیه دتی

سبھی چھوٹے بڑے حیران تھے اب کیا کیا جائے
تمنائے دلی اب کس طرح راجہ کی برائے

خبر اُڑتی ہوئی پھر بھیشم بھی کان تک پہنچی
پتا کی کیفیت سن کر پتا ہو گئے مضطر
اٹھے فوراً! چلے گھر سے، پھیرے سے ملے جا کر
نچیرے سے کہا منظور ہے ہر شرط اب تیسری
چن دیا ہوں میں تجھ کو حکومت کی ہے کیا وقت
مری نظروں میں دولت اور توشہ کی ہے کیا وقت
ہے جب تک زندگی میری رہوں گا دور عورت سے
نہیں شادی کروں گا اور نہ رغبت ہوگی شہوت!

یہ سنتے ہی پھیرا ہو گیا راضی دل و جاں سے

رچایا بیاہ پھر ستیوتی کا خوب انداز سے

شانتن کی شادی اور رحلت چتر و چتر کا بیاہ

پتامہ کے پتائے خیر سے شادی رچا ڈالی
نتیجے میں تولد ہو گئے دو تخت کے وال
یہ شہزادے کہ جن میں ایک نام چتر رکھا تھا
جو شہزادہ تھا دوم نام نامی تھا و چتر اس کا
پھر اسکے بعد راجہ اس جہاں سے کر گئے رحلت
دو روزہ زندگی کی حقیقت سے پاکے فرصت

۱) چتر ۲) وچتر

سبھی छोटे बड़े हैरान थे, अब क्या किया जाए ।
तमन्नाएँ दिली अब किस तरह, राजा की बर आए ॥

खबर उड़ती हुयी फिर भीष्म के भी कान तक पहुँची ।
असर में- डूब कर मकबूलियत, इमकान तक पहुँची ॥

पिता की कैफियत सुन कर, पितामह हो गए मुजतर ।
उठे फौरन ! चले घर से, मछरे से मिले जा कर ॥

मछरे से कहा मंजूर है हर शर्त अब तेरी ।
कल्लू हासिल मैं सिंहासन न अब स्वाहिश है यह मेरी ॥

वचन देता हूँ मैं तुझको, हुकूमत की है क्या वकअत ।
मेरी नज़रों में दौलत और सरवत की है क्या वकअत ॥

है जब तक ज़िन्दगी मेरी, रहूँगा दूर औरत से ।
न मैं शादी करूँगा और न रगबत होगी शहवत से ॥

यह सुनते ही मछरा-हो गया राज़ी दिलो-जों से ।
रचाया ब्याह फिर सत्यवती का खूब अरमाँ से ॥

शान्तुन की शादी और रहलत चित्र विचित्र का ब्याह

पितामह के पिता ने खैर से शादी रचा डाली ।
नतिजे में तवल्लुद हो गए दो तख्त के वाली ॥

यह शहजादे कि जिन में, एक नामे 'चित्र' रखता था ।
जो शहजादा था दूबम नामे - नामी था 'विचित्र' उसका ॥

फिर उसके बाद राजा, इस जहाँ-से कर गए रहलत ।
दो रोज़ाह ज़िन्दगी की चपकलश से पा गए फुरसत ॥

कैफियत = हालत

तवल्लुद = पैदाईश

रहलत = मृत्यु

جوانی کی حسیں وادی میں جب ان شاہزادوں نے
 قدم رکھا تو چوہا پاؤں پھر رنگیں ارادوں نے
 پیار نے انہیں دیکھا جواں تو چل پڑے گھر سے
 لے آئے حریت کرکاشی کی دو کتیا سو سب سے
 انہیں کتیاؤں سے شادی رچا دی شاہزادوں کی
 جوانی کی مرادیں پھر برائیں نامرادوں کی
 اپنی شہزادیوں میں ایک کا تھا نام انبیکا
 جو دوشیزہ تھی ثانی اسکو کہتے تھے انبیکا

غرض اب ہر فریضے سے پیار پائے فرصت
 دل و جاں سے وہ اپنی ماں کی پھر کرنے لگے خدمت

بھیشم پیارہ کی خدمت اور چتر و چتر کی بدگمانی

پیارہ رات بھر ماتا کی خدمت میں ہی رہتے تھے
 گزر جاتی تھی بیداری میں شب تکلیف سہتے تھے
 حقیقت میں انہیں سوتیلی ماں پیار کافی تھا
 جگر میں درد، دل میں جذبہ ایثار کافی تھا
 مگر وہ دونوں شہزادے پیارہ کے طریقے پر
 خود اپنی ماں کے دشمن ہو گئے تھے بدگماں ہو کر
 انہیں شک تھا پیارہ اور ماتا رات میں چھپ کر
 گناہوں میں بسر کرتے ہیں اپنی زندگی اکشر
 اسی شک کی بنا پر ایک دن دونوں چلے گھر سے
 کہ چھپ کر دیکھ لیں دونوں کو چشمتی داگستر سے

اے بھیشم پیارہ، سو سب سے دو کتیا کے بجائے تین شہزادیوں کو جیت کر لائے تھے۔ جن میں ایک کا نام دوسری کا
 انبیکا اور تیسری کا انبیکا تھا۔ ہم نے طوالت کے خوف سے انبا کے واقعات کو نظم نہیں کیا۔

جوانی کی ہسیں وادی میں، جب ان شاہزادوں نے
 کدم رکھا تو چوہا پاؤں پھر رنگیں ارادوں نے

پیتامہ نے انہیں دیکھا جواں تو چل پڑے گھر سے
 لے آئے حریت کرکاشی کی دو کتیا سو سب سے

انہیں کتیاؤں سے شادی رچا دی شاہزادوں کی
 جوانی کی مرادیں پھر برائیں نامرادوں کی

اپنی شہزادیوں میں ایک کا تھا نام انبیکا
 جو دوشیزہ تھی ثانی اسکو کہتے تھے انبیکا

غرض اب ہر فریضے سے پیار پائے فرصت
 دل و جاں سے وہ اپنی ماں کی پھر کرنے لگے خدمت

भीष्म पितामह की खिदमत और चित्र विचित्र की बद - गुमानी

पितामह रात भर माता की खिदमत में ही रहते थे ।
 गुजर जाती थी बेदारी में शब, तकलीफ सहते थे ॥

हकीकत में उन्हें सौतेली माँ से प्यार काफी था ।
 जिगर में दर्द, दिल में जजबए-ईसार काफी था ॥

मगर वह दोनों शहजादे, पितामह के तरीके पर ।
 खुद अपनी माँ के दुश्मन, हो गए थे बद - गुमाँ होकर ॥

उन्हे शक था पितामह और माता रात में छुप कर ।
 गुनाहों में बसर करते हैं, अपनी जिंदगी अकसर ॥

इसी शक की बिना पर एक दिन दोनों चले घर से ।
 कि छिप कर देखलें दोनों को, चप्पे - दाद गुस्तर से ॥

१) भीष्म पितामह स्वयंवर से दो कन्या के बजाए तीन शहजादियों को जीत कर लाए थे जिन में एक का नाम अम्बा
 दुसरी का अम्बिका और तीसरी का अम्बालिका था । हम ने तवालात के खौफ से अम्बा के वाक्यात को नज़्म नहीं किया ।

फरीजा = कर्तव्य

खिदमत = सेवा

ईसार = त्याग

مگر منصف مزاج آنکھوں نے دیکھا جب یہ نظارا
نجل ہو کر نگاہیں جھک گئیں دل ہو گیا پارا
جہاں ماں کا تقدس تھا وہیں بیٹے کی الفت تھی
جہاں ممتا کا ساگر تھا وہیں اک مونِ خدمت تھی
پشیمانی کا یہ عالم کہ سکتے چھا گیا ان پر
گھڑی ایسی بھی آئی رہ گئے وہ منجھد ہو کر

کفّارۂ بدگمانی

ازالہ اس پشیمانی کا دونوں نے یہی سمجھا
کہ جو بھی فیصلہ اب بھیستم دیں گے آخری ہوگا
کسی سے بدگمانی، معصیت کی قسم اعلیٰ ہے
جہاں معصیت میں جرمِ تہمت سب بالا ہے
یتامہ نے کہا مشکل ہے اس تہمت کا کفارہ
چتا کی آگ ہے اک صرف اس ذلت کا کفارہ
یکفارہ کی مشکل قسم ہے جس پر عمل کرنا
چتا میں جل کے اب آساں نہیں، اس طرح مرنا
مگر وہ دونوں شہزادے یقیناً تھے جری ہمت
چتا میں رکھ ہو کر زندگی سے پاگئے فرصت
چتا میں دونوں شہزادوں کے جلنے کی خبر جسدِ
یتامہ کو ملی تو غم سے آنکھیں ہو گئیں بس نم
مصاحب اور وزیر ابھیستم اور ستے وتی سب نے
جھکایا اپنا اپنا سرِ سادھی پر عقیدت سے

۱) भीष्म जी ने कहा कि जो ज्येष्ठ भ्राता अथवा माता का वध करना विचारता है उसको हजार ब्रह्म हत्या का पाप लगता है। सुतरां वह सभी वृक्ष अथवा पीपल की खखोडल में प्रवेश कर अपने आप को दाह करे तब शुद्ध हो। "महाभारत भाषा पृष्ठ १४-ज्वाला प्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद।"

مگر مونسف میزاج آنکھوں نے دیکھا جب یہ نظارا
خجیل ہو کر نیگاہیں جھک گئی دل ہو گیا پارا
جہاں ماں کا تقدس تھا وہیں بیٹے کی الفت تھی
جہاں ممتا کا ساگر تھا وہیں اک مونِ خدمت تھی
پشیمانی کا یہ عالم کہ سکتے چھا گیا ان پر
گھڑی ایسی بھی آئی رہ گئے وہ منجھد ہو کر

کفّارۂ بدگمانی

इज़ाला इस पशेमानी का दोनों ने यही समझा ।
कि जो भी फैसला अब भीष्म देंगे आखरी होगा ॥
किसी से 'बदगुमानी' मासियत की किस्मे-आला है ।
जहाने-मासियत में जुर्म-तोहमत सब से बाला है ॥
पितामह ने कहा मुशकिल है, इस तोहमत का कफ़ारा ।
चिता की आग है इक सिर्फ, इस ज़िल्लत का कफ़ारा ॥
यह कफ़ारा, की मुशकिल किस्म है, जिसपर अमल करना ।
चिता में जल के अब आसाँ नहीं है इस तरह मरना ॥
मगर वह दोनों शहज़ादे यकीनन थे जरी हिम्मत ।
चिता में राख होकर ज़िन्दगी से पा गए फुरसत ॥
चिता में दोनों शहज़ादों के जलने की ख़बर जिसदम ।
पितामह को मिली तो ग़म से आँखें हो गई पुर नम ॥
मुसाहिब और विज़रा, भीष्म और सत्यवती सब ने ।
झुकाया अपना अपना सर, समाधि पर अकीदत से ॥

मुनजमिद = ठोस

इज़ाला = भुगतान

मासियत = इलजाम

कफ़ारा = प्रायश्चित

मुसाहिब = मित्र

१) भीष्म जी ने कहा कि जो ज्येष्ठ भ्राता अथवा माता का वध करना विचारता है उस को हजार ब्रह्म हत्या का पाप लगता है। सुतरां वह सभी वृक्ष अथवा पीपल की खखोडल में प्रवेश कर अपने आप को दाह करे तब शुद्ध हो। "महाभारत भाषा पृष्ठ २४ ज्वाला प्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद"

نسل منقطع کا حل

مگر اس اک نئی چنتا سے سارے لوگ حیراں تھے
 پتاہ کو متے گزرنے اک روز بلوایا
 کہ شہزادے تو دونوں مر گئے ہیں کیا کیا جائے
 مرانتا تو یہ ہے تم ہی بیٹھو تخت شاہی پر
 پتاہ نے کہا پرنگیا کو میں سے توڑوں گا
 کہا ستیہ وہی نے سلسلہ اس نسل کا آخر
 پتاہ پھر بہت سنجیدگی سے سوچ کر بولے
 کہ بیشک ویاس جی مہرا نے جو وید کے اندر
 اسی انداز سے اس مسئلہ کو حل کیا جائے
 کہ نسل منقطع کو اس طرح قائم رکھا جائے
 ہوئی ستیہ وہی خوش دید کے اشنوک کو شکر
 متبادل کی برائی سکوں پایا دل مضطر

۱) भीष्मजीने प्रतिज्ञा भंग के भय से विवाह और राज्य न किया तब सत्यवती ने कहा कि फिर कुल किस प्रकार रह सकता है! भीष्म जी बोले बांधवी से अथवा ब्राह्मणों के वीर्य से कुल रहता है ऐसा वेद में कहा गया है!

नस्ले-मुनकता का हल

मगर इस इक नई चिन्ता से सारे लोग हैराँ थे ।
 मुसाहिब मंत्री सत्यवती, सब ही परेशाँ थे ॥
 पितामह को मतसे गंदा ने इक रोज़ बुलवाया ।
 बड़ी संजीदगी से नस्ल के बारे में फ़रमाया ॥
 कि शहजादे तो दोनों मर गए हैं क्या किया जाए ।
 बताओ नस्ल को अब किस तरह बाकी रखा जाए ॥
 मेरा मंशा तो यह है, तुम ही बैठो तख्ते-शाही पर ।
 न दो सन्यास को तरजीह, देखो कजकुलाही पर ॥
 पितामह ने कहा प्रतिज्ञा को मैं न तोड़ूँगा ।
 बला से, "कुल" मिटे, इकरार का दामन न छोड़ूँगा ॥
 कहा सत्यवती ने सिलसिला इस नस्ल का आखिर ।
 चलेगा किस तरह, तुम ही करो, कुछ फैसला आखिर ॥
 पितामह फिर बहुत संजीदगी से सोच कर बोले ।
 पहुँचकर इक नतीजे पर मतानत से दहन खोले ॥
 कि बेशक व्यास जी महाराज ने जो वेद के अन्दर ।
 लिखा है नस्ल और इस भसअले के ज़िम्न में खुल कर ॥
 इसी अन्दाज़ से इस भसअले को हल किया जाए ।
 कि नस्ले-मुनकता को इस तरह कायम रखा जाए ॥
 हुई सत्यवती खुश वेद के श्लोक को सुनकर ।
 तमन्ना दिल की बर आई, सुकूँ पाया दिले-मुजतर ॥

संजीदगी = गंभीरता

भसअला = समस्या

भीष्मजीने प्रतिज्ञा भंग के भय से विवाह और राज्य न किया तब सत्यवती ने कहा कि फिर कुल किस प्रकार रह सकता है भीष्मजी बोले बांधवी से अथवा ब्राह्मणों के वीर्य से कुल रहता है । ऐसा वेद में कहा गया है ॥

مہرشی ویاس جی کی تشریف آوری اور شرف قبولیت

پھر اسکے بعد اس نے ویاس جی کو یاد فرمایا
برخوشنودی رشی مہراج اپنا درش دکھلائے
چرن چھو کر انہیں عزت سے پھر آسن پہ بٹھلایا
کے مہراج دونوں شاہزادے شدھاب ہو کر
مگر اب نگر ہے نسل بھرت کیسے رہے قائم
شر والا! اگر خود آپ ہی منظور فرمالیں
بڑی حسرت بڑے ارمان کیساتھ ان کو بلوایا
نہایت شان سے صدر جہاں تشریف لے آئے
زبان پر حرف مطلب اس نے فوراً اس طرح لایا
ہوئے یکینٹھ واکیں ان کے حق میں تھیں ہی بہتر
بتاؤ اپنے زخموں پر رکھیں ہم کس طرح مرہم
نہایت ہی خوشی ہوگی جو اس مشکل کو حل کر دیں

سنی ستے دتی کی التجا مہراج نے جدم
کیا سو نکالا اس کو ویاس نے ہو کر خوش و خرم

۲) سत्यवती और भीष्म के दीन होकर प्रार्थना की कि हे भगवान ! चित्र
विचित्र की भार्याओं से आप सन्तान उत्पन्न कीजिये तब वेद व्यास जीने
स्वीकार किया !! "महाभारत भाषा पृष्ठ १५ प. ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद !!"

महर्षि व्यास जी की तशरीफ आवरी और शर्फ-कुबूलियत

फिर उसके बाद उसने व्यास जी को याद फरमाया ।
बड़ी हसरत, बड़े अरमान के साथ उनको बुलवाया ॥

हसरत = लालसा

ब खुशनुदी ऋषि महाराज अपना दर्श दिखलाए ।
निहायत शान से सदमरहबा तशरीफ ले आए ॥

ब-खुशनुदी = खुशी
के साथ, प्रसन्नतासे

चरण छूकर उन्हे इज्जत से, फिर आसन पे बिठलाया ।
जबों पर हर्फ-मतलब उसने फौरन इस तरह लाया ॥

कि ऐ महाराज दोनों शाहजादे, शुद्ध अब होकर ।
हुए बैकुंठ बासी ! उन के हक में था यही बेहतर ॥

मगर अब फिर है, नस्ले-भरत कैसे रहे कायम ।
बताओ अपने जन्मों पर, रखे हम किस तरह मरहम ॥

शहेवाला ! अगर खुद आप ही मंजूर फरमायें ।
निहायत ही खुशी होगी जो इस मुश्किल को हल कर दें ॥

सुनी सत्यवती की इत्तिजा महाराज ने जिस दम ।
किया स्वीकार इसको व्यास जी ने होकर खुश-ओ-खुरम ॥

१) सत्यवती और भीष्म ने दीन होकर प्रार्थना की हे भगवान ! चित्र विचित्र की भार्याओं से आप सन्तान
उत्पन्न कीजिये, व्यास जी ने स्वीकार किया ॥ महाभारत भाषा पृष्ठ १५ ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद

فِرْجے-ہَسَنّا

دیا ماباد اُمبیکا کو فौरن اِجّنے-تنہاई |
مُنی کے تِج کو دِکھا تو وہ اس طرح گھبرائی |

کی فौरن اُؤخ اپنی بَند کرلی خُوف کے مارے |
ن تھے مَکسُوم مَیں اَنوارے-اِرفانی کے نَظّارے |

مُنیجی فیر اُسے رُت دان دِکر اِس تَرہ بولے |
کی تُوںکو پُتر تو ہوگا، مَگر ماژور اُؤخوں سے |

فیر اُسکے باء اُمبَالیکا بھی اِکانت مَیں آئی |
وہی مُشکِل اُسے بھی پِش جب آئی تو بَہارِی |

مُنی کے تِج سے پاؤدورن وہ ہوگی اِک دم |
تو بولے وِیاس جی اِس نار کا یہ دِکھ کر عَالَم |

کی تِرا پُتر اَب اِے سُنَدری پاؤدورن ہوگا |
ہَکِیَکَت مَیں نَہِیَف-اُؤ-جَار اُور لاغَر بَدَن ہوگا |

धृतराष्ट्र और पांडू की पैदाईश

ऋषि महाराज को रुखसत हुए गुजरी जब इक मुदत |
हुए दोनों से दो फरजन्द पैदा फिर हसी सूरत |

۱) प्रथम अम्बिका को एकांत में बुलाया जब अम्बिका से इन मुनि का तेज न सहा गया, और नेत्र मूंद लिये तब व्यास जीने इस को ऋतुदान देकर कहा कि तेरा पुत्र अंधा होगा इस के उपरान्त दूसरी बार अम्बालिका को बुलाया किंतु वह भी उनके तेज को न सह सकी और पांडूवरण हो गई तब उसे भी ऋतुदान देकर कहा कि तेरे पांडूवरण ही पुत्र उत्पन्न होगा ! महाभारत पृष्ठ १५ पं. ज्वाला प्रसादजी मिश्रा !

तेज = प्रकाश

मकसूम = बाँटा हुआ
अनवारے - اِرفانی =
ईश्वर کی روشنی کو
پہچاننا

نہیَف-اُؤ-جَار =
کمزور

فِرْضِ حَسَنَہ

دیا مابعد اُمبیکا کو فوراً اِذن تَنہائی |
مُنی کے تِج کو دِکھا تو وہ اس طرح گھبرائی |

کہ فوراً اُنکھ اپنی بَند کر لی خُوف کے مارے |
نہ تھے مَقسُوم مِیں اَنوارِ عِرفانی کے نَظّارے |

مُنیجی پَہرا سے رُت دان دِکر اِسطِرح بولے |
کہ تَھکِو سَتر تو ہوگا مَگر مَوزور اَنکھوں سے |

پَہرا کے بَد اِنبَالیکا بھی اِکانت مِیں آئی |
وہی مُشکِل اُسے بھی پِش جب آئی تو گَھبرائی |

مُنی کے تِج سے پاؤدورن وہ ہوگی اِک دم |
تو بولے وِیاس جی اِس نار کا یہ دِکھ کر عَالَم |

کہ تِرا پِتر اِے سُنَدری پاؤدورن ہوگا

حَقِیَقَت مِیں خُیَف وِزار اور لاغَر بَدَن ہوگا

دهرت راشٹر اور پانڈو کی پیدائش

رشی مہراج کو رخصت ہوئے گزری جب مدت |
ہوئے دونوں سے دو فرزند پیدا پھر میں صورت |

۲۰ تجلی، پرکاش

۱) प्रथम अंबिका को एकांत में बुलाया जब अंबिका से इन मुनि का तेज न सहा गया और नेत्र मूंद लिये तब व्यास जीने इस को ऋतुदान देकर कहा कि तेरा पुत्र अंधा होगा इस के उपरान्त दूसरी बार अंबालिका को बुलाया किंतु वह भी उनके तेज को न सह सकी और पांडूवरण हो गई तब उसे भी ऋतुदान देकर कहा कि तेरे पांडूवरण ही पुत्र उत्पन्न होगा ! महाभारत भाषा पृष्ठ १५ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा

جو اُمبیکا تھی اس سے دھرتی راشٹر اک پتر نابینا
 ہوا پیدا برائی سب کی جو حسرت تھی دیرینہ
 انبالیکا سے پانڈو نام کا لڑکا ہوا اسپن
 یہ چھوٹا تھا مگر اس نے سنبھالا راج اور شاسن
 پتارہ اور متسے گنداسب مست مرت تھے
 خدا کی مہربانی کے سبھی مرہون منت تھے
 پتارہ نے انہیں پالا بڑی ہی شان و شوکت سے
 کلیجے سے انہیں لپٹائے رکھتے تھے محبت سے
 بالآخر رفتہ رفتہ آگئی منزل جوانی کی
 جہاں سے ابتدا ہوتی ہے ہر رنگیں کہانی کی

دیرینہ = پورانی

مرہونے-میننت = اہسان
 تلو

رفتا - رفتا = آگے
 چل کر

دھرتی راشٹر کا بیاہ

بھرت کی نسل میں پھر ایک رنگین انقلاب آیا
 پتارہ تھوم اٹھے شاہزادوں پر شباب آیا
 خوشی کے ساتھ ان کو بس یہی اک فکر تھی گھرے
 کہ شہزادے لگا ہوں شہ گھڑی میں بیاہ کی پھرے
 پتارہ غرق رہتے تھے اسی فکر و تردد میں
 بسا تھا یہ خیال ان کے نفس کی آمد و شد میں
 لہذا ایک دن انکو کسی نے دی خبر آکر
 سیانی ہو چکی ہے والی گندھاری کی دستر
 پتارہ نے بڑے بیٹے کا پھر پیغام بھجوایا
 سبل نے جس سے گندھاری کا بر منظور فرمایا
 وہ گندھاری کہ جس نے جوت بھگتی کی جگائی تھی
 شری شکر سے تو پتروں کا جو درد ان لائی تھی

دھرتی = بدلاو

نفس = شواس

۱) سبل یعنی والی گندھار

جوانیکا تھی اس سے دھرتی راشٹر اک پتر نابینا
 ہوا پیدا برائی سب کی جو حسرت تھی دیرینہ
 انبالیکا سے پانڈو نام کا لڑکا ہوا اسپن
 یہ چھوٹا تھا مگر اس نے سنبھالا راج اور شاسن
 پتارہ اور متسے گنداسب مست مرت تھے
 خدا کی مہربانی کے سبھی مرہون منت تھے
 پتارہ نے انہیں پالا بڑی ہی شان و شوکت سے
 کلیجے سے انہیں لپٹائے رکھتے تھے محبت سے
 بالآخر رفتہ رفتہ آگئی منزل جوانی کی
 جہاں سے ابتدا ہوتی ہے ہر رنگیں کہانی کی

دھرتی راشٹر کا بیاہ

بھرت کی نسل میں پھر ایک رنگین انقلاب آیا
 پتارہ تھوم اٹھے شاہزادوں پر شباب آیا
 خوشی کے ساتھ ان کو بس یہی اک فکر تھی گھرے
 کہ شہزادے لگا ہوں شہ گھڑی میں بیاہ کی پھرے
 پتارہ غرق رہتے تھے اسی فکر و تردد میں
 بسا تھا یہ خیال ان کے نفس کی آمد و شد میں
 لہذا ایک دن انکو کسی نے دی خبر آکر
 سیانی ہو چکی ہے والی گندھاری کی دستر
 پتارہ نے بڑے بیٹے کا پھر پیغام بھجوایا
 سبل نے جس سے گندھاری کا بر منظور فرمایا
 وہ گندھاری کہ جس نے جوت بھگتی کی جگائی تھی
 شری شکر سے تو پتروں کا جو درد ان لائی تھی

۱) سبل یعنی والی گندھار

کرن جی کی پھوپھی پر تھ بوسوم کنتی

پتلمجی نے پانڈو کا بھی اک دن بیاہ ٹھہرا کر
مرالکبی کے دادا شور سین اک مرد عاقل تھے
انہیں کی تھی وہ دختر جس کا پر تھا اسم اول تھا
انہوں نے اپنی سند رکھیا کو اپنے جیون میں
کرشنا کی پھوپھی کو بیاہ آئے تھے بڑے کروفر
جری تھے پارسا تھے، آشنائے راز منزل تھے
شباب اس نازنین مہوش حسینہ کا مکمل تھا
بنار دھرم پتری دے دیا کنتی کو بچپن میں

پھر اسکے بعد کنتی بھوج نے معصوم پر تھ کا
بد لکر نام کنتی رکھ دیا مہوش حسینہ کا

خدمت کنتی پر درواسامنی کا عطیہ

اور اسکے بعد کنتی پر قیامت کا شباب آیا
حقیقت میں پری وش کا شباب گین زمانہ تھا
گئی بچپن کی شوخی اپنے والوں سے حجاب آیا
ادائیں سحرانہ تھیں تبسم کا فرانہ تھا

لے راجہ کنتی بھوج

کृष्ण جی کی فوفی پر ب-موسم کنتی

پیتامہ جی نے پاڈو کا بھی ایک دن بیاہ ٹھہرا کر
کृष्णा کی فوفی کو، بیاہ لے آئے ب-کروفر ॥

موراری جی کے دادا، شورشین ایک مہرے-اکیل تھے
جری تھے، پارسا تھے، آشنائے-راجے-مہنیل تھے ॥

انہی کی تھی وہ دختر جس کا "پر" ایسے-ابھل تھا
شباب اس نازنین مہوش حسینہ کا مکمل تھا ॥

انہوں نے اپنی سند رکھیا کو اپنے جیون میں
بنار دھرم پتری دے دیا کنتی کو بچپن میں ॥

پھر اسکے بعد کنتی بھوج نے معصوم پر تھ کا
بد لکر نام کنتی رکھ دیا مہوش حسینہ کا

ریدم تے-کنتی پر دوا سا مونی کا اتیا

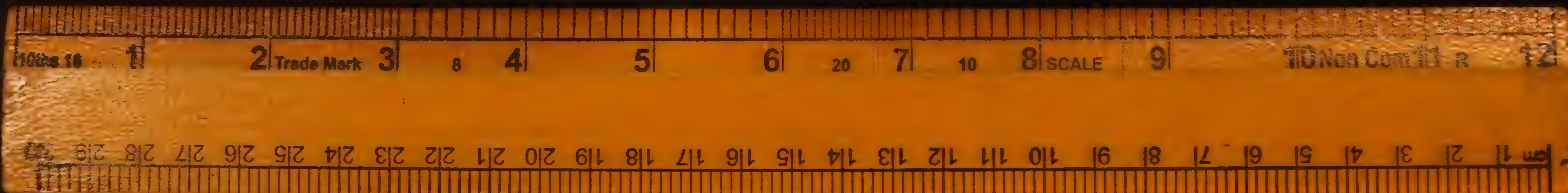
اور اسکے بعد کنتی پر قیامت کا شباب آیا
حقیقت میں پری وش کا شباب گین زمانہ تھا

گئی بچپن کی شوخی اپنے والوں سے حجاب آیا
ادائیں سحرانہ تھیں تبسم کا فرانہ تھا

لے راجہ کنتی بھوج

ب-کروفر = شانونوکت
کے ساتھ
اکیل = بھدیمان
آشنائے-راجے-مہنیل =
دنیایا دیکھ ہو

شباب = جوانی
ہیجاہ = لکڑا



۱۔ اسے اس سین میں دروہاسنی کے پاس خدمت پر
 ۲۔ رشی مہراج نے دیکھی جو گل اندام کی خدمت
 ۳۔ یمنتر زوداثر اتنا ہے جب بھی تو اسے پڑھ کر
 ۴۔ ترے پاس آئے فوراً تھک و کھلا سیکادہ درشن
 ۵۔ اک انجانی خوشی سے ہوگا آسودہ ترادامن

منتر کی آزمائش اور اس کا رد عمل

۱۔ فیر اس کے بعد کونتی اپنے گھر آئی بعد عجلت
 ۲۔ برائے امتحان ہے وہ منتر لب پہ لے آئی
 ۳۔ ادھر لکھا خیال آیا اُدھر وہ سامنے آئے
 ۴۔ ایک سویرہ کو دیکھ کر ڈرنے لگی کُنستی
 ۵۔ چھاب کیجے مہراج میں ہوں ایک اپرادھن
 ۶۔ کہا پھر سویرہ نے ہم یہاں جو آج آئے ہیں
 ۷۔ علاوہ اس کے فارغ ہو کے با عصمت رہو گی تم

مہا بھارت भाषा पृष्ठ १६ पं. ज्वाला प्रशादजी मिश्र

रियाजत = तपस्या

गुल अंदाम = फूल सा बदन,

मुजतर = वैचैन

बसद उजलत = बहुत जन्दी
 बादिले फरहत = खुशीसे

पए-नूर-ओ-तजल्ली = प्रकाश
 के साथ

बा असमत = पाक दामन

۱۔ مقرر کر دیا راجہ نے بھگتی اور ریاضت پر
 ۲۔ خوشی سے ایک منتر دیکھ لے جس صورت
 ۳۔ کریگی یا جس بھی دیوتا کی ہو کے وہ مضطر
 ۴۔ ترے پاس آئے فوراً تھک و کھلا سیکادہ درشن
 ۵۔ اک انجانی خوشی سے ہوگا آسودہ ترادامن

منتر کی آزمائش اور اس کا رد عمل

۱۔ دی منتر پڑھا ہے خوف ہو کر بادل فرحت
 ۲۔ پھر اس کے بعد سورج دیوتا کو دھیان میں لائی
 ۳۔ پئے نور و تجلی سور یہ تشریف لے آئے
 ۴۔ توتنی دست بستہ ہو کے پھر کرنے لگی کُنستی
 ۵۔ کیا تھا جاپ منتر کا پرکش کے فقط کارن
 ۶۔ یہ سار اکت صرف اک فرض کی خاطر اٹھائے ہیں
 ۷۔ ہمیشہ پاک و اطہر اور با عزت رہو گی تم

۱۔ دیکھو مہا بھارت بھاشا صفحہ ۱۶ = جوا اپر شاد جی منتر

یہ کہہ کر سورہ نے کر دیا کمستی کو بار آور
اور اسکے بعد واپس ہو گئے باحسن کروفر

ولادت کرن

ہوا کمستی کو جب پیدا تھی یافتہ لڑکا
تو فوراً آگیا کمستی کے دل میں خوف رسوائی
پھر اُس نے اپنے نور العین کو صندوق میں رکھ کر
چلا بہتا ہوا صندوق بھرا آہستہ آہستہ
ادھر اک سادھی اور اکی پتی دونوں گنگا پر
وہی صندوق انکے سامنے بہتا ہوا آیا
اُسے کھولا تو اس میں مہر کے مانند تابندہ
ادھی رتھ بے پیر تھا اسلئے اس کو محبت سے

پھر لے کے بعد اسکا کرن رکھا نام دونوں نے

پیام سرور ہو کر یوں خوشی کا جام دونوں نے

ویلا دتے - کর্ণ

ہوا کمستی کو جب پیدا تزللی یا فوتا لڑکا
کھچ کھول کے ساتھ اور 'سورج' کے تیز کے جیسا

تو فوراً آگیا کمستی کے دل میں خوف رسوائی
پھر اُس نے اپنے نور العین کو صندوق میں رکھ کر

چلا بہتا ہوا صندوق بھرا آہستہ آہستہ
ادھر اک سادھی اور اکی پتی دونوں گنگا پر

وہی صندوق انکے سامنے بہتا ہوا آیا
اُسے کھولا تو اس میں مہر کے مانند تابندہ

ادھی رتھ بے پیر تھا اسلئے اس کو محبت سے
پھر لے کے بعد اسکا کرن رکھا نام دونوں نے

پیام سرور ہو کر یوں خوشی کا جام دونوں نے
یہ کہہ کر سورہ نے کر دیا کمستی کو بار آور

اور اسکے بعد واپس ہو گئے باحسن کروفر
ولادت کرن

ہوا کمستی کو جب پیدا تھی یافتہ لڑکا
تو فوراً آگیا کمستی کے دل میں خوف رسوائی

پھر اُس نے اپنے نور العین کو صندوق میں رکھ کر
چلا بہتا ہوا صندوق بھرا آہستہ آہستہ

ادھر اک سادھی اور اکی پتی دونوں گنگا پر
وہی صندوق انکے سامنے بہتا ہوا آیا

اُسے کھولا تو اس میں مہر کے مانند تابندہ
ادھی رتھ بے پیر تھا اسلئے اس کو محبت سے

پھر لے کے بعد اسکا کرن رکھا نام دونوں نے
پیام سرور ہو کر یوں خوشی کا جام دونوں نے

با-ہوسے-کروفر = بہت
شان شاکت کے ساتھ

تزللی یا فوتا = ریشنی
پایا ہوا

خوف = ڈر

موت مہن = نیشیانت

تابیدا = چمکنے والا
رکشندا = چمکنے
والا
پیسر = لڑکا

مسرور = خوش

کونتی اور مادری سے راجا پاڈو کا بیاہ

یہ سب کچھ بتینے کے بعد پاڈو بھوپ کی شادی
علاوہ اسکے راجہ مندر کی اک خوب روختر
اسی کے ساتھ پاڈو نے رچالی دوسری شادی
غرض دو خوبصورت بیویوں کے آپ شوہر تھے
سلوک ان رانیوں کے ساتھ یکساں تھے برابر تھے

وای-سہد خیر-آ-فرہت
= رنجی اور شانتی کے
ساتھ
خوبصورت = سوندری
دورتر = پوتی

اکلیم = بڑا دین

اکلیم کا سمراٹ

نیزامہ-مطلق جب پاڈو کے جے - اکتدار آیا
تو ان کا پرچم-امنو-امو ہر سمت لہرایا
سنبھالا نظم و نسق ایسا کہ دنیا محو حیرت تھی
یہ سچ ہے چاروں جانب دم قدم سے تھی بہار انکے
مگر جوہی حکومت دوسروں کے ہاتھ میں آئی
فساد و فسق نے اس وقت لی ہر سمت انگڑائی

نیزامہ مطلق = دین کا
شاसन
جے اکتدار = حکومت
کی باغیہ
پرچم-امنو-امو =
شانتی کا ڈنڈا
نیزامہ-مطلق = اکتدار
رہنمائی = پوجا
فساد و فسق = گڈبڈ

۱) دھرتی کو انڈیا دیکھ کر بھی پیتامہ نے پاڈو کو راج دیا۔ وہ پاڈو دھرتی دینا میں اکتدار نیپو
ہوئے ہر دین یوڈیاؤں سہت شکار کو وں میں جاتے، انکے جیویوں کا وڈ کر پرسنن ہوتے تھے۔ ایسا کوئی دین
نہی ہوتا جس دین راجا شکار وکل کر پاپ سچیت نہی کرتے۔

کنتی اور مادری سے راجہ پاڈو کا بیاہ

یہ سب کچھ بتینے کے بعد پاڈو بھوپ کی شادی
علاوہ اسکے راجہ مندر کی اک خوب روختر
اسی کے ساتھ پاڈو نے رچالی دوسری شادی
غرض دو خوبصورت بیویوں کے آپ شوہر تھے
سلوک ان رانیوں کے ساتھ یکساں تھے برابر تھے

اکلیم کا سمراٹ

نیزامہ-مطلق جب پاڈو کے جے - اکتدار آیا
تو ان کا پرچم-امنو-امو ہر سمت لہرایا
سنبھالا نظم و نسق ایسا کہ دنیا محو حیرت تھی
یہ سچ ہے چاروں جانب دم قدم سے تھی بہار انکے
مگر جوہی حکومت دوسروں کے ہاتھ میں آئی
فساد و فسق نے اس وقت لی ہر سمت انگڑائی

۱) دھرتی کو انڈیا دیکھ کر بھی پیتامہ نے پاڈو کو راج دیا۔ وہ پاڈو دھرتی دینا میں اکتدار نیپو
ہوئے ہر دین یوڈیاؤں سہت شکار کو وں میں جاتے، انکے جیویوں کا وڈ کر پرسنن ہوتے تھے۔ ایسا کوئی دین
نہی ہوتا جس دین راجا شکار وکل کر پاپ سچیت نہی کرتے۔

ابھی تو دورِ راجہ پانڈو کے حالات کو سنئے
گلِ سوری کو صحنِ گلشنِ تارِ سخن سے چنئے

حکایت جو ہمارے سامنے اس ضمن میں آئی
مہرشی دیاس کی سچ پو پھنچے ہے خامہ فرسائی

راجہ پانڈو پر کیندم مُنی کا سراپ

بیاں کرتے ہیں یوں اس داستاں کو ویشاپین جی
کہ راجہ پانڈو اک دن کھیلنے بن میں شکار آئے
ہرن کے روپ میں کیندم مُنی اُس روز اُس بن میں
ہرن کو دیکھ کر پانڈو نے ایسا تیر اک مارا
کیا نفرین یہ کہ کیندم مُنی نے پانڈو راجہ پر
وٹیفوز وجیت کا جب بھی چاہے گا ادا کرنا
سراپ ان کا سنا پانڈو تو اپنے من میں گھبرائے
سنہاس چھوڑ کر مادن کے پر بت پر چلے آئے

اس واقعہ کو دوسری جگہ یوں بیان کیا گیا ہے کہ کیندم مُنی اپنی جنس تبدیل کر کے جنگل کی دوسری ہرنیوں کے ساتھ بہار
کر رہے تھے کہ اتنے میں راجہ پانڈو نے انہیں بان مار کر زخمی کر دیا۔ پھر انہوں نے راجہ پانڈو کو سراپ دیا کہ جب تو اسری گن کر گیا
ای سسے مچلے گا۔ اس پر کار کے سراپ سے پانڈو کو اتنی تکلیف ہوئی۔

ابھی تو دورِ راجہ پانڈو کے حالات کو سنئیے
گولے سوری کو سہنے گولشہ-تاریخ سے چونیے ۱۱

ہیکاہت جو ہمارے سامنے اس جیمم میں آئی
مہرشی ویاہ کی سچ پوچھیے ہے خاما فرسائی ۱۱

راجا پاڈھ پر کیندم مُنی کا شراپ

بیاں کرتے ہیں یوں اس داستاں کو ویشاپین جی
کہ ایک دن راجا جمنے جی سے بولے یوں گسائی جی

کی راجا پاڈھ ایک دن خیلنے بن میں شکار آئے
پوے سید افگنی سہرا میں وہ مر دانا وار آئے ۱۱

ہرن کے روپ میں کیندم مُنی اُس روز اُس بن میں
پوے تفریہ مہوے - گشت تھے سہرا کے دامن میں ۱۱

ہرن کو دیکھ کر پاڈھ نے ایسا تیر ایک مارا
لگا کیندم مُنی کو فیر تو ان کا چڑھ گیا پارا ۱۱

کیا نفرین یہ کہ کیندم مُنی نے پاڈھ راجا پر
ادا جی جین کا ہک کر نہیں سکتا تُو جیون ہر ۱۱

وٹیفوز وجیت کا جب بھی چاہے گا ادا کرنا
مکددر میں تیرے لیکھ جا آئے اُس روز کا مرنا ۱۱

شراپ ان کا سنا پاڈھ تو اپنے من میں دھراے
سیناسن خوڈ کر "مادن" کے پربت پر چلے آئے ۱۱

اس واقعہ کو دوسری جگہ یوں بیان کیا گیا ہے کہ کیندم مُنی اپنی جنس تبدیل کر کے جنگل کی دوسری ہرنیوں کے ساتھ بہار
کر رہے تھے کہ اتنے میں راجا پاڈھ نے انہیں بان مار کر زخمی کر دیا۔ پھر انہوں نے راجا پاڈھ کو سراپ دیا کہ جب تو اسری گن کر گیا
ای سسے مچلے گا۔ اس پر کار کے سراپ سے پاڈھ کو اتنی تکلیف ہوئی۔

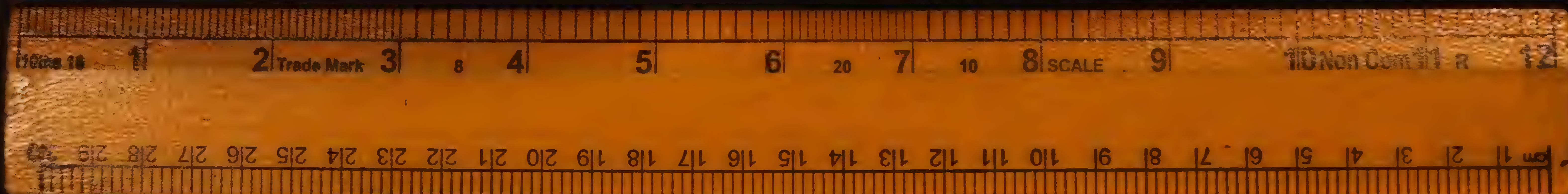
خامہ فرسائی =
لکھن

پوے سید افگنی =
شکار خیلنے کے لیے

نفرین = شراپ

وٹیفوز وجیت =
پتلی سے سمبندھ

پربت = پربت



راجہ پانڈو کا آدیش

وہاں پھر وہ رشی مہینوں کے منڈل میں ہو شامل عبادت اور ریاضت کی ہوئی طے بیسوں منزل
پھر اس کے بعد فوراً اپنی پتی سے کہا ! جاؤ کسی بھی دیوتا سے بار آور ہو کے تم آؤ
کیا کنتی نے فوراً ان کے اس آدیش کا پالن وہی منتر پڑھا اور دھرم کا کرنے لگی سمرن
ایک دھرم "دیوتا" غائبانہ طور سے آئے متناطی انداز سے فی الفور بر لائے

ہوئے پیدائیدھشتر تو صد آکاش سے آئی

یہ دھشتر سے جگت میں دھرم کی ہوگی پذیرائی

ایک سو ایک کوروں کیساتھ دریودھن کی پیدائش

ہوئی آکاش والی جب یہ دھشتر ہو گئے پیدا اپنی کالوں میں گندھاری نے اک تین کیا کُتباً

۱) اسکے उपरांत भीष्म को राज्य सौपं दोनों स्त्रियों सहित गंध मादन पर्वत को चले गये और वहाँ ऋषियों की संगति से संतोष को प्राप्त हो शत धृण पर्वत पर तप करने लगे और कुन्ती से कह दिया कि तुम देवता अथवा ऋषि से संतान उत्पन्न करो। तब कुन्ती ने दुर्वासा मुनि के दिये मंत्र से धर्म को बुलाया पुत्र उत्पन्न किया उस काल आकाशवाणी हुई कि यह पुत्र युधिष्ठिर नामक मातमीन धर्म ही है !!

२) आसमानी आवाज

३) यह आकाशवाणी सुन गर्भवती गंधारी ने पेट को कुटकर एक तूंबा उत्पन्न किया सो उस तंबू से भगवान वेदव्यास जी की आज्ञानुसार सूदम रूप सौ (१००) पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई तब अलग अलग धृत के कुंड में रखकर पालन किया यही दुर्योधनादि शत पुत्र हुए और दुशाला नामक कन्या हुई !! महाभारत भाषा पृष्ठ १७ "ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद"

४) एक कदू नुमा शकल

राजा पांडू का आदेश

वहाँ फिर वह ऋषि मुनियों के मंडल में हुए शामिल।
इबादत और रियाजत की हुई ते वीसयों मंजिल।।

फिर इसके बाद फौरन अपनी पत्नी से कहा ! जाओ।
किसी भी देवता से बार आवर हो के तुम आओ।।

किया कुन्ती ने फौरन उन के इस आदेश का पालन।
वही मंतर पढ़ा और धर्म का करने लगी स्मरण।।

यकायक धर्म "देवा" गायवाना तौर से आए।
तमन्ना बातिनी अंदाज़ से फिलफौर बर लाए।।

हुए पैदा 'युधिष्ठिर' तो सदा आकाश से आई।
युधिष्ठिर से जगत में धर्म की होगी पज़ीराई।।

रियाजत = तपस्या

गायवाना = गुप्त रीती से
बातिनी = भीतरी

पज़ीराई = मानना, स्वीकार
करना

एक सौ एक कौरवों के साथ दुर्योधन की पैदाईश

हुई आकाशवाणी जब युधिष्ठिर हो गए पैदा।
उन्ही कालों में गंधारी ने इक उत्पन्न किया 'तुम्बा'।।

१) इसके उपरांत भीष्म को राज्य सौपं दोनों स्त्रियों सहित गंध मादन पर्वत को चले गये और वहाँ ऋषियों की संगति से संतोष को प्राप्त हो शत धृण पर्वत पर तप करने लगे और कुन्ती से कह दिया कि तुम देवता अथवा ऋषि से संतान उत्पन्न करो। तब कुन्ती ने दुर्वासा मुनि के दिये मंत्र से धर्म को बुलाया पुत्र उत्पन्न किया उस काल आकाशवाणी हुई कि यह पुत्र युधिष्ठिर नामक मातमीन धर्म ही है !!

२) आसमानी आवाज

३) यह आकाशवाणी सुन गर्भवती गंधारी ने पेट को कुटकर एक तूंबा उत्पन्न किया सो उस तंबू से भगवान वेदव्यास जी की आज्ञानुसार सूदम रूप सौ (१००) पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई तब अलग अलग धृत के कुंड में रखकर पालन किया यही दुर्योधनादि शत पुत्र हुए और दुशाला नामक कन्या हुई !! महाभारत भाषा पृष्ठ १७ "ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद"

४) एक कदू नुमा शकल

جب اس تبے سے اک سو ایک بچے ہو گئے اُپتن
تو انکو گھسی کے سو کوٹروں میں رکھا اور کیا پویشن
تھا ان پتروں میں دیو دھن ہی سب اول و اکبر
جولنے بھائیوں میں سب تھا شہر زور و طاقتور

ادھر جس وقت گندھاری نے اک تبا کیا اسپن
پون کے دیو کو کُنتی نے اس جانب کیا سُمرن

بھیم سین اور ارجن کی ولادت

پون کے دیوتا پھر بھیم جیسے دیو پسیر کو
گئے تولید فرما کر وہ اک مرد دلاور کو
ہوئی پھر دیوانی مرف سے اک بھیم اس قابل
کہ جس کو بل ہزاروں ہاتھیوں کا ہو گا اب حاصل
کہا جاتے کُنتی ایک دن اک شیر کے ڈر سے
جو بیکر بھیم کو بھاگی تو بھیم آغوشِ مادر سے
پون کے دیو تکے مثل اس بچے میں تھی طاقت
گر ایسا کہتے زریزہ ریزہ ہو گئے پرست
تو ارجن غائب نہ کوکھ میں اسکی چلا آیا
پھر کے بعد اک دن اندر کو کُنتی نے بلوایا

۱) جس کال دُریو دھن उत्पन्न हुआ उसी समय कुन्ती ने पवन से भीम को उत्पन्न किया उस का जन्म होने पर भी देववाणी हुई कि यह भ्रातृभक्त दस हजार हाथियों का बल धारण करेगा अनन्त कुन्ती व्याघ्र के भय से उस भीम पुत्र को गोद में लेकर उठी सो यह गोद में से गिर पड़े इस के गिरने से कितने ही पर्वत चूर्ण हो गये। इस कारण इनका यथार्थ भीम नाम हुआ। इस के उपरांत कुन्ती ने इन्द्र को बुलाकर अर्जुन नामक पुत्र उत्पन्न किया उसके जन्म होते समय इन्द्रादि सम्पूर्ण देवताओं ने आकर पुष्प वृष्टि करी और आकाशवाणी हुई कि यह बालक बेरियों का नाश करने में इन्द्र के समान होगा !! "महाभारत भाषा पृष्ठ १७ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद"

अव्वल = पहला
अकबर = बड़ा

विलादत = पैदाईश

भीम सेन और अर्जुन की विलादत

पवन के देवता, फिर भीम जैसे देव पैकर को।
गए तौलीद फरमाकर वह इक मर्दे - दिलावर को।।

हुई फिर देववाणी सिर्फ है इक भीम इस काबिल।
कि जिसको बल हज़ारों हाथियों का होगा अब हासिल।।

कहा जाता है कुन्ती एक दिन इक शेर के डर से।
जो लेकर भीम को भागी तो भीम आगोशे-मादर से।।

गिरा ऐसा कि कितने रेज़ा रेज़ा हो गए पर्वत।
पवन के देवता के मिस्त इस बच्चे में थी ताकत।।

फिर इसके बाद इक दिन "इन्द्र" को कुन्ती ने बुलवाया।
तो अर्जुन गायवाना कोख में उसकी चला आया।।

आगोशे-मादर = माँ की
गोद से
रेज़ा रेज़ा = चूरा चूरा

गायवाना = पोशीदा,
छुपा हुआ

१) जिस काल दुर्योधन उत्पन्न हुआ उसी समय कुन्ती ने पवन से भीम को उत्पन्न किया उस का जन्म होने पर भी देववाणी हुई कि यह भ्रातृभक्त दस हजार हाथियों का बल धारण करेगा अनन्त कुन्ती व्याघ्र के भय से उस भीम पुत्र को गोद में लेकर उठी सो यह गोद में से गिर पड़े इस के गिरने से कितने ही पर्वत चूर्ण हो गये। इस कारण इनका यथार्थ भीम नाम हुआ। इस के उपरांत कुन्ती ने इन्द्र को बुलाकर अर्जुन नामक पुत्र उत्पन्न किया उसके जन्म होते समय इन्द्रादि सम्पूर्ण देवताओं ने आकर पुष्प वृष्टि करी और आकाशवाणी हुई कि यह बालक बेरियों का नाश करने में इन्द्र के समान होगा !! "महाभारत भाषा पृष्ठ १७ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद"



یہ سچ ہے دیر ارجن کی ولادت باسعادت پر
مثلاً بھیم تھا آکاشش وانی کا وہی منظر
صد آکاش سے آتی تھی یہ ہے شیر دل ارجن
کہ اس بچے میں ہوں گے اندر کی مانند لاکھوں گن

یہ اپنے بیروں کا ناش کر ڈالے گا اک جھین میں

کبھی دشمن کو پیٹھ اپنی دکھائیگا نہ یہ دن میں

کنتی کی مہربانی سے مادری کی گود بھرنا

پھر کے بعد راجہ پانڈو کی رنگین پھلواری
ہوئی شاداب تر کہتے ہیں اسکو رحمت باری
چنانک ایک دن راجہ کے من میں یہ خیال آیا
بلا کر مہربان کنتی کو اپنے پاس بٹھلایا
اور اس کے بعد راجہ نے کہا اے جان من کنتی
مری اچھاپے کر پائے تری اے گلبدن کنتی
اگر یہ مادری بھی بار آور بجھ سے بن جائے
مٹے سنجان کا غم میرے دل کو بھی قرار آئے
سُنی راجہ سے جب کنتی نے یہ باتیں تو خوش ہو کر
بٹھا کر مادری کو سونے اُس نے پڑھا منتر

۱. تین پوتوں کو دیکھ کر پانڈو نے کنتی سے کہا کہ تیری کृپا سے مادری بھی پوتہ بنتی ہوگی تو اچھا ہے۔ تب کنتی نے یہ منتر جپ کر کے کہا کہ کسی بھی دےوی دےوتا کو سمرن کرے یہ سون مادری نے اشوینی کماروں کو سمرن کیا ان کے دو پوتے اوتپنن ہوئے جن کا نام نکول اور سہدےو تھا !!

”مہا بھارت भाषा पृष्ठ १७ ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद“

सज्जदत = सोभाग्य

सदा आकाश से आती थी यह है शेर दिल अर्जुन।
कि इस बच्चे में होंगे इन्द्र की मानिन्द लाखों गुण॥

यह अपने बैर्यों का नाश कर डालेगा इक छन में।
कभी दुश्मन को पीठ अपनी दिखाएगा न यह रन में॥

कुन्ती की मेहरबानी से माद्री की गोद भरना

फिर इसके बाद राजा पांडू की रंगीन फुलवारी।
हुई शादाब - तर !! कहते हैं इसको रहमते-वारी॥

अचानक एक दिन राजा के मन में यह ख्याल आया।
बुला कर मेहरबाँ कुन्ती को अपने पास बिठलाया॥

और उसके बाद राजा ने कहा ऐ जाने मन कुन्ती।
मेरी इच्छा है, 'कृपा से तेरी ऐ गुलबदन कुन्ती॥

अगर यह माद्री भी बार आवर तुझ से बन जाए।
मिटे "सन्तान" का गम, मेरे दिल को भी करार आए॥

सुनी राजा से जब कुन्ती ने यह बातें तो खुश होकर।
बिठा कर माद्री को सामने उसने पढ़ा मन्तर॥

रहमते-वारी = भगवान
की दया

१) तीन पुत्रों को देखकर पांडू ने कुन्ती से कहा कि तेरी कृपा से माद्री भी पुत्रवती होवे तो अच्छा है। तब कुन्ती ने यह मंत्र जप माद्री से कहा किसी देवी देवता को स्मरण करो यह सुन माद्री ने अश्विणी कुमारों को स्मरण किया उन के दो पुत्र उत्पन्न हुए जिन का नाम निकुल और सहदेव था !! "महाभारत भाषा पृष्ठ १७ ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद।

وہ منتر پڑھ کے کنتی نے کہا اے مادری برہن
تو مجھے جیسے دےوہا کی آرزو ہو کر اُسے سمن
کیا پھر اسٹونی دیوؤں کو اسنے یاد با فرست
وہ فوراً آگئے فریاد سننے ہی بایں خلت
ہوئے پھر مادری کو اس طرح دوخبر و فرزند
نکل، سہیلو، جیسے خوبصورت جنگجو فرزند
یہ ہشت، بھیم، ارجن اور نکل سہیلو سب ملکر
ہوئے ہیں پانچ بھائی رعب تھا جن کا ہزاروں

پانڈو کا وظیفہ زوجیت اور اثر لفرین کدم اور اسرارے-نفرین کندم

ایک عرصہ بعد راجہ پانڈو نے اٹھکیسی کرتے
جہاں بچوں کو اپنے آگے شوقیا کرتے
بہت ہی خوش ہوئے ان بچوں کو پاس بلوایا
کیا جی بھر کے انکو پیار اور سینے سے لپٹایا
یہ سب کچھ کیف زرا ہنگام سے تھا، خوب تر عالم
یہ عالم کر رہا تھا نفس کو انکھنستہ سپہم
اچانک ایسے عالم میں وہاں پھر اداری آئی
دستی رت، پیام مرگ راجہ کے لئے لائی
زور دہرے تھے اس شہوت فرزا عالم سے وہ اتنا
ابھرتی خواہشیں اتنی دباتے تھے انہیں جتنا

وہ منتر پڑھ کے کنتی نے کہا اے مادری برہن
تو مجھے جیسے دےوہا کی آرزو ہو کر اُسے سمن
کیا پھر اسٹونی دیوؤں کو اسنے یاد با فرست
وہ فوراً آگئے فریاد سننے ہی بایں خلت
ہوئے پھر مادری کو اس طرح دوخبر و فرزند
نکل، سہیلو، جیسے خوبصورت جنگجو فرزند
یہ ہشت، بھیم، ارجن اور نکل سہیلو سب ملکر
ہوئے ہیں پانچ بھائی رعب تھا جن کا ہزاروں

پانڈو کا وظیفہ زوجیت اور اثر لفرین کدم

اک عرصہ بعد راجہ پانڈو نے اٹھکیسی کرتے
جہاں بچوں کو اپنے آگے شوقیا کرتے
بہت ہی خوش ہوئے ان بچوں کو پاس بلوایا
کیا جی بھر کے انکو پیار اور سینے سے لپٹایا
یہ سب کچھ کیف زرا ہنگام سے تھا، خوب تر عالم
یہ عالم کر رہا تھا نفس کو انکھنستہ سپہم
اچانک ایسے عالم میں وہاں پھر اداری آئی
دستی رت، پیام مرگ راجہ کے لئے لائی
زور دہرے تھے اس شہوت فرزا عالم سے وہ اتنا
ابھرتی خواہشیں اتنی دباتے تھے انہیں جتنا

۱. پانچ پوتوں کی باللیکا کو دیکھ کر پانڈو کو اظہار حاصل ہوا۔ کچھ کالوپرانت
بانت شرتو میں دن کی شہما دیکھ پانڈو کاماتور ہو مادی سے رمنہ کرنے لگو۔ اسی سمی شاپ
کا فلت پایا اظہار مروتو کو پراپت ہو۔

”مہا بھارت भाषा पृष्ठ १७ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद“

मंतर = मंत्र

खुल्लत = प्रेम, मित्रता

फरजन्द = पुत्र, बेटा

शोखियाँ = चंचल पन

कैफ-जा-हंगाम =
उनशाला वक्त शहवत
अंगीकृता पैहम = वासना
भरा

जखुद-रफता = खोया हुआ

१) पान्च पुत्रों की बाललीला को देखकर पान्डू को उपत्यंत प्राप्त हुआ। कुछ कालोपरान्त वसंत ऋतु में वन की शोभा
देख पान्डू का कातुर हो माद्री से रमण करने लगे। उसी समय श्राप का फलपाया अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हुये।
”महाभारत भाषा पृष्ठ १७ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद“

बिलआखिर रह गए शहवत के हाथों बनके कठपुतली।
वही कर गुजरे जिसका उनको अन्देश था जीतेजी।।
असर नफरीने-किन्दम ने वहीं पर अपना दिखलाया।
बनामे-शाह पैगामे-अजल परलोक से आया।।
सिधारे लोक से पान्डू मअन परलोक की जानिब।
श्राप आखिर ऋषि महाराज का उनपर हुआ गालिब।।

शहवत = वासेना

नफरीन = श्राप
अजल = मौत

राजा पान्डू के साथ माद्री का सती होना

हुई राजा की जब रहलत तो बिरहन माद्री बोली।
बहुत ही दुख भरे अन्दाज़ में अपनी ज़बाँ खोली।।
पति को 'उत्स था मुझ से, पति को मुझ से रागबत थी।
मुझे भी इश्क था उन से, मुझे भी उन से उलफ़त थी।।
उन्हें परलोक में भी चैन अब मुझ बिन न आएगा।
बिन उनके अबतो ऐ कुन्ती, जिया मुझ से न जाएगा।।
उधर परलोक में स्वामी का चित मुझ में लगा होगा।
न मैं पहुँची तो उनकी आत्मा को दुख बड़ा होगा।।
लेहाज़ा प्यारी कुन्ती बालकों का तुम करो पोषण।
गमन करती हूँ, स्वामी संग तज कर अपना मैं जीवन।।
यह कहकर वह अग्न में कर गई प्रवेश वे खटके।
भला कबतक वह खाती बेवगी के दुख भरे झटके।।
चिता में बैठ कर खुद अपने तन को भस्म कर डाला।
हुई रखसत फिर उसकी रह सूर आलमे-बाला।।

रहलत = मृत्यु

उत्स = मुहब्बत
इश्क = प्रेम

आलमे-बाला = परलोक

१) माद्री ने कुन्ती से कहा कि इन पुत्रों का तुम पालन करो क्योंकि मुझ में स्वामी का प्रेम अधिक था। सो मेरे बिना इन को परलोक में भी सुख न मिलेगा इस कारण मैं भी इन के संग गमन करती हूँ। इस प्रकार कह कर माद्री ने पति के संग अग्नि में प्रवेश किया।।

बालाअरहे गئے शہوت کے ہاتھوں بنکے کٹھ پتلی
وہی گزرے جسکا انکو اندیشہ تھا جیتے جی
اثر نفرین کندم نے وہیں پر اپنا دکھ لایا
بنام شاہ پیغام اجل پر لوک سے آیا
سدھارے لوک سے پانڈو معاً پر لوک کی جانب
سرآپ آخر رشی مہراج کا انسپد ہوا غالب

راجہ پانڈو کے ساتھ مادری کا ستی ہونا

ہوئی راجہ کی رحلت تو برہن مادری بولی
بہت ہی دکھ بھرے انداز میں اپنی زبان کھولی
میں کو اُنس تھا مجھ سے، پتی کو مجھ سے رعبت تھی
مجھے بھی عشق تھا اُن سے، مجھے بھی اُن سے اُلفت تھی
انہیں پر لوک میں بھی چین اب مجھ میں نہ آئے گا
بن انکے اب تو کنفی جیسا مجھ سے نہ جائے گا
ادھر پر لوک میں سوائی کا چیت مجھ میں لگا ہوگا
نہیں پہنچی تو انکی آمت کو دکھ بڑا ہوگا
لہذا بیماری کنفی بالکوں کا تم کرو پوشن
گمن کرتی ہوں، سوائی سنگ تاج کراپا میں جیون
یکہر وہ اگن میں گر گئی پر دیش بے کھٹکے
بھلا کب تک وہ کھاتی بیوگی کے دکھ بھر بھٹکے
جتائیں بیٹھ کر خود اپنے تَن کو بھسّم کر ڈالا
ہوئی رخصت پھر اسکی روح سوئے عالم بالا

۱. مادری نے कुन्ती कि इन पुत्रों का तुम पालन करो क्योंकि मुझ में स्वामी का प्रेम अधिक था।
सो मेरे बिना इन को परलोक में भी सुख न मिलेगा इस कारण मैं भी इन के संग गमन करती हूँ।
इस प्रकार कह कर माद्री ने पति के संग अग्नि में प्रवेश किया !!

کونتی اور پانچوں پانڈवों کی واپسی

فیر اُسکے باءِ ہی سارے شَرَن وِاسی مُنِی مِلکَر۔
هُجُورے-پانڈوؤں آئے پورے-پورسِش بَسَد مُجُتَر۔

دِلَاسا پانچوں پانڈو اور کونتی کو دیا سب نے۔
شَرَن مَیں اُپنَے، پانچوں بَالکو کو لَے لیا سب نے۔

هُجُورے-پانڈو کو تیرہ رُجِ دُنیا سَے۔
تو اُن کو ساِث لَےکر کُوه سَے سارے رُشی اُترے۔

پهُنچکر، بَیِشم کو سب نے سنا دِستَانِ غَم۔
مَہَل مَیں بَیخ گئی رُدا دَے-گَم سُنکر سَفَے-ماتَم۔

پیتامہ شام تَک روتے رَہے راجا کی رَہلَت پَر۔
اَلَم دِین بَہر رَہا بارے-گِراؤں بَنکر تَبیَیَت پَر۔

گَرُج دُچار دِین مَیں مِٹ گیا راجا کا گَم دِل سَے۔
مَگر کونتی نے اُپنَے گَم پَے کَابُ پَایا مُشِکِل سَے۔

پیتامہ نے فیر اُپنی جَورے-نِیگَرانی بَسَد اُہَسَن!!!۔
کِیا ہَمراہ سَو پُتروں کَے، پانڈو گَن کا بَی پُوشَن۔

هُجُورے = سَوا مَیں
پورے-پورسِش = پورے کَے
لِیَے

کُوه = پَہاڑ

اَلَم = خَود، دُ:خ
بارے-گِراؤں = بَاری بَوج

بَسَد اُہَسَن = اُچَھے
تَریکَے سَے

با دے-مُگ پانڈو دھرتِ راشٹر تَختِ شَاہی پَر تَرتِے-شاہی پَر

هُکُومت ہِستَنا کَی چُورے، پانڈو مَیں لَے اُخر۔
دُکُومت ہِستَنا کَی چُورے، پانڈو مَیں لَے اُخر۔

۱) یوگواسی مُنیوں نے تیرہوے دِین پانچوں پُتروں سَہِیت کونتی کو بَیِشم کَے پاس لَایا پانڈو کا سَپُورَن وُتتَانت کَہا
یہ با ت سُنکر اُنت:پُور سَہِیت بَیِشم اُتَیَنت رُدن کِیا اُور فیر اُنکا سَپُورَن پُرت کَرم کَرا یا اُننَتر بَیِشم
دُتَراشٹر کَے سَو اُور پانڈو کَے پانچ پُتروں کا سَمان بَا و سَے پالَن کَرنَے لَگَے! "مَہا بَہارت بَاشا پُٹ ۱۷ جَوالا پُرسا دَجی مِشِرا مُرا دا بَاد"۔

کونتی اور پانچوں پانڈوؤں کی واپسی

پُہرا کَے بَہی سارے شَرَن وِاسی مُنی مِلکَر۔
دِلَاسا پانچوں پانڈو اور کونتی کو دیا سب نے۔

شَرَن مَیں اُپنَے پانچوں بَالکو کو لَے لیا سب نے۔
تو اُن کو ساِث لَےکر کُوه سَے سارے رُشی اُترے۔

پُہرا کَے بَہی سارے شَرَن وِاسی مُنی مِلکَر۔
دِلَاسا پانچوں پانڈو اور کونتی کو دیا سب نے۔

شَرَن مَیں اُپنَے پانچوں بَالکو کو لَے لیا سب نے۔
تو اُن کو ساِث لَےکر کُوه سَے سارے رُشی اُترے۔

شَرَن مَیں اُپنَے پانچوں بَالکو کو لَے لیا سب نے۔
تو اُن کو ساِث لَےکر کُوه سَے سارے رُشی اُترے۔

شَرَن مَیں اُپنَے پانچوں بَالکو کو لَے لیا سب نے۔
تو اُن کو ساِث لَےکر کُوه سَے سارے رُشی اُترے۔

شَرَن مَیں اُپنَے پانچوں بَالکو کو لَے لیا سب نے۔
تو اُن کو ساِث لَےکر کُوه سَے سارے رُشی اُترے۔

بَہر گ پانڈو دھرتِ راشٹر تَختِ شَاہی پَر

هُکُومت ہِستَنا کَی چُورے، پانڈو مَیں لَے اُخر۔
دُکُومت ہِستَنا کَی چُورے، پانڈو مَیں لَے اُخر۔

۱) یوگواسی مُنیوں نے تیرہوے دِین پانچوں پُتروں سَہِیت کونتی کو بَیِشم کَے پاس لَایا پانڈو کا سَپُورَن وُتتَانت کَہا
یہ با ت سُنکر اُنت:پُور سَہِیت بَیِشم اُتَیَنت رُدن کِیا اُور فیر اُنکا سَپُورَن پُرت کَرم کَرا یا اُننَتر بَیِشم
دُتَراشٹر کَے سَو اُور پانڈو کَے پانچ پُتروں کا سَمان بَا و سَے پالَن کَرنَے لَگَے! "مَہا بَہارت بَاشا پُٹ ۱۷ جَوالا پُرسا دَجی مِشِرا مُرا دا بَاد"۔

وٹھی ابلہ لاک کی اک موج جس سے مضطرب ہو کر
ب-دیکھت روکنا چاہا مگر مہراج کا جواہر ۱۱

سروں کے گچھوں میں ٹپکا تو انکے دیرینہ کے کارن
پے صید انگنی اس وقت راجہ شانتسن آئے

پاؤ-سید افغانی اس وقت راجا شانتونو آئے
وہیں جंगل میں دو مولود لاوارس پڑے ۱۱

دیا سے دل بھرا آیا بالکوں کی کیمپرسی پر
رکھا کتیا کا کرپی نام کرپا پسترا رکھا

کرپ نے بان و دیا ایک شکستہ مان سے سیکھا
وہ اپنی بان و دیا میں مکمل ماہر فن تھے

ہوئی جب بھیشم پر ظاہر یہ کرپا کی صلاحیت
پھر انکو بان و دیا کو روں پانڈو کے کھانے پر

وہ اپنی بان و دیا میں مکمل ماہر فن تھے
دلاور تھے جری تھے جنگجو تھے شیر انگن تھے

تفقد خرواد سے کیا ان کو عطیہ خلیت
پتارہ نے کیا امور کامل مطمئن ہو کر

یہ سب شہزادے کرپا چاریہ سے درس لیتے تھے
ثبوت اپنی صلاحیت کا ہر موقع پہ دیتے تھے

یہ سب شہزادے کृपाचार्या سے درس لیتے تھے
سبوت اپنی صلاحیت کا ہر موقع پہ دیتے تھے ۱۱

موجترب = بے چین

پاؤ-سید افغانی =
شکار کے لیے
مولود = ابھی پیدا ہوا
بچے

شہر افغان = شہر کو
مارنے والا

تفقد خرواد =
خواتین داری
خلیت = شاہی دست

مأمور = مکرر

بہت روکنا چاہا مگر مہراج کا جواہر
وہیں سے اک کمار اور اک کمار ہو گئے تین

وہیں جنگل میں دو مولود لاوارس پڑے پائے
اٹھا کر شانتسن لے آئے اُن دونوں کو اپنے گھر

حیات آخری تک ان کو سینے سے لگا رکھا
جوانی میں یمن اپنے پتا سر دھان سے سیکھا

دلاور تھے جری تھے جنگجو تھے شیر انگن تھے
تفقد خرواد سے کیا ان کو عطیہ خلیت

پتارہ نے کیا امور کامل مطمئن ہو کر
یہ سب شہزادے کرپا چاریہ سے درس لیتے تھے

ثبوت اپنی صلاحیت کا ہر موقع پہ دیتے تھے
یہ سب شہزادے کृपाचार्या سے درس لیتے تھے

سبوت اپنی صلاحیت کا ہر موقع پہ دیتے تھے
یہ سب شہزادے کृपाचार्या سے درس لیتے تھے ۱۱

یہ سب شہزادے کृपाचार्या سے درس لیتے تھے
سبوت اپنی صلاحیت کا ہر موقع پہ دیتے تھے ۱۱

دشمنی کی پہلی منزل

دشمنی
کی
پہلی منجیل



دشمنی کی پہلی منزل

بچپن کی شوخیاں

مگر ان شاہزادوں میں تھا سب کھیم طاقتور لڑائی میں پیٹھ دیتا تھا سب کوروں کو ایڑ
بہت ہی تیز تھے وہ سطوت اور نگ کے فن میں بڑے شاق پانڈو ہو گئے تھے جنگ کے فن میں
کسی دن کھیلنے وقت اک شجر پر کور سب چڑھ کر بہت ہی فوقیت جتلا رہے تھے اپنی بڑھ بڑھ کر
اچانک کھیم بھی اس پیڑ کے نیچے چلا آیا شرارت کا وہ اک طوفان اپنے دل میں کھلایا
ایک کردہ بھی جا بیٹھا شجر کی ایک ٹہنی پر ہلایا پیڑ کو اس زور سے وہ بے جگر ہو کر
ٹپاٹپ اک کے بعد اک گر پڑے پھر کور اوپر سے کسی کا پاؤں ٹوٹا، ہاتھ اکھڑانوں بہا سر سے
ادھر دیکھی جو درلودھن نے کوروں کی تیالت ہوئی پانڈو کی جانب سے سب انتہا نفرت

یہیں سے اک خصومت کی ہوئی بس ابتداء میں

قدم کوروں نے رکھا دشمنی کی پہلی منزل میں

دشمنی کی پہلی منزل

بچپن کی شوخیاں

مگر ان شاہزادوں میں تھا سب کھیم طاقتور
لڑائی میں پیٹھ دیتا تھا سب کوروں کو ایڑ

بہت ہی تیز تھے وہ سطوت اور نگ کے فن میں
کسی دن کھیلنے وقت اک شجر پر کور سب چڑھ کر

اچانک کھیم بھی اس پیڑ کے نیچے چلا آیا
شرارت کا وہ اک طوفان اپنے دل میں کھلایا

ایک کردہ بھی جا بیٹھا شجر کی ایک ٹہنی پر
ٹپاٹپ اک کے بعد اک گر پڑے پھر کور اوپر سے

ادھر دیکھی جو درلودھن نے کوروں کی تیالت
ہوئی پانڈو کی جانب سے سب انتہا نفرت

یہیں سے اک خصومت کی ہوئی بس ابتداء میں
قدم کوروں نے رکھا دشمنی کی پہلی منزل میں

بھرتی = اورنگ = بادشاہی
مہاشاک = ماہر

شجر = پہڑ
فوقیت = شہر

ٹھنی = ڈالی

خوسمت = بھرتا، دشمنی

جہر سے جہر کا مرنے

رہا کرتا تھا دیودھن اسی منکر و تجسس میں
بلا آخر مل گیا موقع اُسے بدلہ چکانے کا
پھر اس کے بعد دیودھن کی مکاری ہوئی ظاہر
مکمل بخودی جب چھا گئی اُس دیش کے مودک سے
سپر دآب ہو کر بھیم اس بستی میں جا پہنچا
عجب منظر تھا ہیبت ناک۔ انہی اُسکو ڈستے تھے
مگر ناگوں کے ڈسنے کا اثر اُلٹا نظر آیا
واقعہ اسکی یہ تھی بھیم نے مودک کی صورت میں
وہ سم الغار ہی تھا بے گماں اس بیچ میں حائل
کہ جس نے زہر انہی کو کیا تھا اس طرح زائل

مکاری، لے زہر سے لڈو ع جوان

زہر سے زہر کا مرنے

رہا کرتا تھا دیودھن اسی منکر و تجسس میں
بلا آخر مل گیا موقع اُسے بدلہ چکانے کا
پھر اس کے بعد دیودھن کی مکاری ہوئی ظاہر
مکمل بخودی جب چھا گئی اُس دیش کے مودک سے
سپر دآب ہو کر بھیم اس بستی میں جا پہنچا
عجب منظر تھا ہیبت ناک۔ انہی اُسکو ڈستے تھے
مگر ناگوں کے ڈسنے کا اثر اُلٹا نظر آیا
واقعہ اسکی یہ تھی بھیم نے مودک کی صورت میں
وہ سم الغار ہی تھا بے گماں اس بیچ میں حائل
کہ جس نے زہر انہی کو کیا تھا اس طرح زائل

وہ سم الغار ہی تھا بے گماں اس بیچ میں حائل

کہ جس نے زہر انہی کو کیا تھا اس طرح زائل

مکاری، لے زہر سے لڈو ع جوان

فیکرو تجمس = سوچ،
خوج
خوسمات = دھمکی
تسملوس = مکاری،

سوپر دآب = دریا کے
ہوالے

افڈ = سانپ،

تیریاک = جہر کا توڑ

سمماتل-فار = سبکیا

ناگ راجہ کی مہمان نوازی اور بھیم کی واپسی

بوجوگی سے مسال مہار ہے، سونے میں آتا ہے۔
ہمیشہ جہر کو بس جہر ہی سے مارا جاتا ہے۔

یقیناً بھیم کی اس ضمن میں ایسی ہی کیفیت
رہی ہوگی جیسی تو رہ گئی زندہ وہ خوش قسمت

پھر اس کے بعد ان زہریلے ناگوں کا جو راجہ تھا
وہ راجہ بھیم کے نانا کا دیرینہ شناسا تھا

پرائی میتر تائی کے سبب پھر بھیم کو امرت
پلایا اور نواسوں کی طرح رکھا بصدر شفقت

وہاں کافی دنوں تک وہ رہا پھر مہماں بن کر
جہاں اس نے گزارے عیش میں صبح و مسایکسر

ادھر پانڈو پریشاں تھے تلاش بھیم میں ہر سو
ادھر پانڈو پریشاں تھے تلاش بھیم میں ہر سو

مگر گھی کے دیے کو اپنے منڈل میں جلاتے تھے
بجالتے تھے خوشی سے شادیائے گیت کاتے تھے

دلاؤ بھیم کو رہتے ہوئے گزری جب اک مدت
بصد عز و وقار اس کو کیا راجہ نے پھر نصرت

وہ گھر آیا تو پانڈو اور کنتی کا ہتھایہ منظر
خوشی کے آنسوؤں کے دیپ تھے غمناک پلکوں پر

دروہ بھیم کی پہنچی خبر ہر سمت بدل بھریں
کہ واپس بھیم آیا ہے ہوا چرچا یہ گھریں

خبر سنتے ہی کور و گن ہوئے اس طرح فاکستر
کہ جیسے برق لہرا کر گری ہوئی کے منڈل پر

کے فیکٹ = حالت،

شاکت = دیا،
سہا انوہی

شادمانہ = باجے

بسد-ہجڑو-وکار =
شان-او-شاکت کے ساتھ

وہرہ = آنا،

واکستہ = جلا کر
راک ہونا،
وہرہ = بجلی

ناگ راجہ کی مہمان نوازی اور بھیم کی واپسی

بزرگوں سے مثل مشہور ہے سننے میں آتا ہے
ہمیشہ زہر کو بس زہر ہی سے مارا جاتا ہے

یقیناً بھیم کی اس ضمن میں ایسی ہی کیفیت
رہی ہوگی جیسی تو رہ گئی زندہ وہ خوش قسمت

پھر اس کے بعد ان زہریلے ناگوں کا جو راجہ تھا
وہ راجہ بھیم کے نانا کا دیرینہ شناسا تھا

پرائی میتر تائی کے سبب پھر بھیم کو امرت
پلایا اور نواسوں کی طرح رکھا بصدر شفقت

وہاں کافی دنوں تک وہ رہا پھر مہماں بن کر
جہاں اس نے گزارے عیش میں صبح و مسایکسر

ادھر پانڈو پریشاں تھے تلاش بھیم میں ہر سو
ادھر پانڈو پریشاں تھے تلاش بھیم میں ہر سو

مگر گھی کے دیے کو اپنے منڈل میں جلاتے تھے
بجالتے تھے خوشی سے شادیائے گیت کاتے تھے

دلاؤ بھیم کو رہتے ہوئے گزری جب اک مدت
بصد عز و وقار اس کو کیا راجہ نے پھر نصرت

وہ گھر آیا تو پانڈو اور کنتی کا ہتھایہ منظر
خوشی کے آنسوؤں کے دیپ تھے غمناک پلکوں پر

دروہ بھیم کی پہنچی خبر ہر سمت بدل بھریں
کہ واپس بھیم آیا ہے ہوا چرچا یہ گھریں

خبر سنتے ہی کور و گن ہوئے اس طرح فاکستر
کہ جیسے برق لہرا کر گری ہوئی کے منڈل پر

خبر سنتے ہی کور و گن ہوئے اس طرح فاکستر
کہ جیسے برق لہرا کر گری ہوئی کے منڈل پر

ऋषि भारद्वाज سے द्रोणाचार्य کی पैداईش

द्रोणाचार्य کی مورتسار अब दासताँ सुनिए।
ऋषिजी व्यास का इस ज़िम्न में यह है बयों सुनिए॥

ज़िम्न = सिलसिला

भारद्वाज इक मुनि का वीर्य जिनको देखकर टपका।
वह थी इक अपसरा "घर ताची" जिसका नामे नामी था॥

फिर उन के वीर्य को इक दोने में रक्खा गया जिस दम।
हुए इस से द्रोणा जैसे पैदा आलिमो-जैगम॥

आलिमो-जैगम = विद्वान
और शेर

द्रोणा शस्त्र विद्या सीखे खुद अपने पिताजी से।
मुकम्मल तौर से वाक़िफ़ हुए इस فن की खूबी से॥

अश्वत्थामा की पैदाईश और राजा द्रौपद की प्रतिज्ञा

फिर उस के बाद ही इक शुभ घड़ी में खैरो-खूबी से।
द्रोणा की हुई शादी कृप की बाजी कृपी से॥

उन्हें कृपी से कुछ दिन बाद इक लड़का हुआ उत्पन्न।
था जिसका नाम "अश्वत्थामा" जो था प्यार का मख़ज़न॥

मख़ज़न = कोश

द्रोणा एक परशूराम माहिर से बसद मुश्किल।
धनुर्वेद आप ने खुफ़िया तरीक़े से किया हासिल॥

अलावा इस के परशूराज का बेटा द्रौपद भी।
धनुर्वेद आया पढने भारद्वाज स्थान पर जूँ ही॥

वहीं आख़िर द्रोणा और द्रौपद की शनासाई।
हुई ऐसी के दोनों बन गए आपस में फिर भाई॥

शनासाई = जान
पहचान

رشی بھر دو اوج درونہ چاریہ کی پیدائش

درونہ چاریہ کی مختصر اب داستاں سینے
رشی جی ویاس کا اس ضمن میں یہ ہے بیاں سینے

بھر دو اوج اک مہی کا ویر یہ جن کو دیکھ کر ٹپکا
وہ تھی اک آپس اگھرتاچی جس کا نام زبانی تھا

پھر ان کے ویر یہ کو اک دو نے میں رکھا گیا جسد
ہوئے اس سے درونہ جیسے پیدا عالم ضیفم

درونہ ستر و دیا سیکھے خود اپنے پتا جی سے

مکمل طور سے واقف ہوئے اس فن کی خوبی سے

اشتوتھاما کی پیدائش اور راجہ دروپد کی پر تگیا

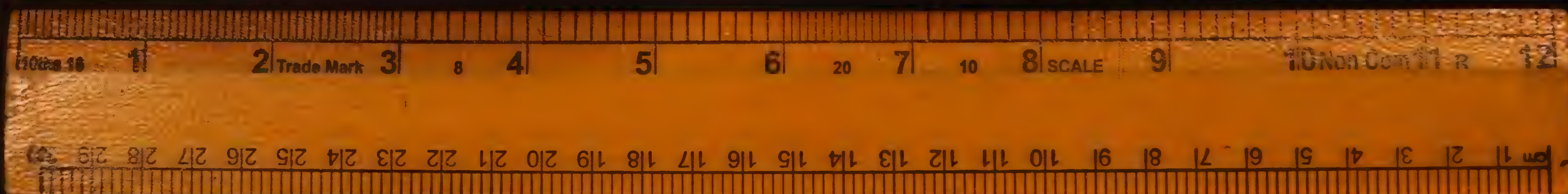
پھر اس کے بعد ہی اک شب گھڑی میں خیر و خوبی
درونہ کی ہوئی شادی کرپ کی باجی کرپی سے

انہیں کرپی سے کچھ دن بعد اک لڑکا ہوا اپن
تھا جس کا نام اشتوتھاما جو تھا پیار کا مخزن

درونہ ایک پرشورام، مہار سے بصد شکل
دھنر وید آپ نے خفیہ طریقے سے کیا حاصل

علاوہ اس کے پرشوراج کا بیٹا دروپد بھی
دھنر وید آیا پرھنے بھر دو اوج استھان پر جوں ہی

وہیں آفسر درونہ اور دروپد کی شناسائی
ہوئی ایسی کہ دونوں بن گئے آپس میں پھر بھائی



درونا سے دروپد نے کہا اک روز خوش ہو کر
کہیں جس وقت راجہ بن کے بیٹھوں گا سنبھاسن پر
تہیں اس وقت آدھا ملک اُدھی سلطنت ہوگا
یہ ہے پر تگیا میری اسے اک دن سنبھوگا

مشعلِ امید

وچن دیئے کو اک عرصہ ہوا راجہ دروپد کو
مگر غربت درونہ کی ادھر پہنچی تھی اک حد کو
خیال آیا دروپد کا اسے پھر ایسے عالم میں
دل پڑ رہے ہیں اک تازگی سی آگئی دم میں
درونا مشعلِ امید لیکر یوں چلے گھر سے
کہ اترے بوجھ و وعدہ کا دروپد بھوپ کے سر سے

وہاں پہنچے تو دربار سے خبر کی اپنے آنے کی

گھڑی آئی پرانی آشنائی آزمائے کی

درونا چاریہ کی مایوسی

مگر وہ وعدہ شاہی بھی کیا پورا ہو جائے
وہ آخر دوستی کیسی وفا کی جس میں بوائے
دروپد نے بھی اپنی آخرش پر تگیا توڑی
مثال اک بے وفائی کی زمانے کیسے چھوڑی

سلطنت = حکومت

مشاہلے - اُممید

وچن دینے کو اک عرصہ ہوا راجہ دروپد کو
مگر غربت درونا کی ادھر پہنچی تھی اک حد کو

خیال آیا دروپد کا اسے پھر ایسے عالم میں
دل پڑ رہے ہیں اک تازگی سی آگئی دم میں

درونا مشعلِ امید لیکر یوں چلے گھر سے
کہ اترے بوجھ و وعدہ کا دروپد بھوپ کے سر سے

وہاں پہنچے تو دربار سے خبر کی اپنے آنے کی
گھڑی آئی پرانی آشنائی آزمائے کی

درونا چاریہ کی مایوسی

مگر وہ وعدہ شاہی بھی کیا پورا ہو جائے
وہ آخر دوستی کیسی وفا کی جس میں بوائے

دروپد نے بھی اپنی آخرش پر تگیا توڑی
مثال اک بے وفائی کی زمانے کیسے چھوڑی

اُرسی = جڑمانا

دیلے - پسمردا = مرثیہ
دین

آشنائی = میزبانی

آخرش = آخرکار

کہاں کی سلطنت آدھی کہاں کی دولت و ثروت
کہاں کی سالتنات آدھی، کہاں کی دولت-آو-سرکوت۔
گریب اپنا ساموہ لےکر چلے آئے بایں نفرت

دروہ چاریہ واپس ہوئے سینے میں غم لیکر
دروہ چاریہ واپس ہوئے سینے میں غم لیکر
دل پر شوق میں اپنے ڈروہ کا ستم لیکر

دروہ پھر قریب ہوتا آئے اسی بن میں
دروہ پھر قریب ہوتا آئے اسی بن میں
جہاں کھیلا کرتے تھے کورو پاندو اپنے بچپن میں

وہیں بس اک کنوئیں میں گیند دانی گر گئی جا کر
وہیں بس اک کنوئیں میں گیند دانی گر گئی جا کر
کہ جس سے سارے بالک ہو گئے آزدہ و مضطر

ہوسنے-ہیکمات اور مہل تک رسائی

دروہ چاریہ کی کام آئی پھر وہاں حکمت
دروہ چاریہ کی کام آئی پھر وہاں حکمت
نیکالی گیند اس ترکیب سے سب کو ہوئی حیرت

خبر دی بالکوں نے بھیشتم کو اس مرد عاقل کی
خبر دی بالکوں نے بھیشتم کو اس مرد عاقل کی
بیاں دانائیاں کی آشنائے لاری منزل کی

پتہ نامہ نے دروہ کی سنی دانائیاں جس دم
پتہ نامہ نے دروہ کی سنی دانائیاں جس دم
دروہ چاریہ کے پاس پہنچے پھر خوش و خرم

ہوئے یوں ملتے اے ارض عالم کے عظیم انسان
ہوئے یوں ملتے اے ارض عالم کے عظیم انسان
ہے رزم و بزم کی دولت سے آسودہ تر ادا

تلکد کاشرف تو بخش دے اب شاہزادوں کو
تلکد کاشرف تو بخش دے اب شاہزادوں کو
عطا افغان رزم و بزم کر دے، بے ارادوں کو

دروہ نے پھر ان کی التیج منظور فرمائی
دروہ نے پھر ان کی التیج منظور فرمائی
انہیں قسمت بیاباں سے محل میں کھینچ کر لائی

بڑے خیفکت = شرمیندا

آزاد-آو-موجتر =
وداس و بے چین

مردے-آکیل = اکمل مند
آدمی

تلکد = شگیدی
افغان = ہونر، فن کی
جما

کہاں کی سلطنت آدھی کہاں کی دولت و ثروت
کہاں کی سلطنت آدھی کہاں کی دولت و ثروت
غریب اپنا سامنہ لیکر چلے آئے بایں نفرت

دروہ چاریہ واپس ہوئے سینے میں غم لیکر
دروہ چاریہ واپس ہوئے سینے میں غم لیکر
دل پر شوق میں اپنے ڈروہ کا ستم لیکر

دروہ پھر قریب ہوتا آئے اسی بن میں
دروہ پھر قریب ہوتا آئے اسی بن میں
جہاں کھیلا کرتے تھے کورو پاندو اپنے بچپن میں

وہیں بس اک کنوئیں میں گیند دانی گر گئی جا کر
وہیں بس اک کنوئیں میں گیند دانی گر گئی جا کر
کہ جس سے سارے بالک ہو گئے آزدہ و مضطر

دروہ نے پھر ان کی التیج منظور فرمائی
دروہ نے پھر ان کی التیج منظور فرمائی
انہیں قسمت بیاباں سے محل میں کھینچ کر لائی

حسنِ حکمت اور محل تک رسائی

دروہ چاریہ کی کام آئی پھر وہاں حکمت
دروہ چاریہ کی کام آئی پھر وہاں حکمت
نیکالی گیند اس ترکیب سے سب کو ہوئی حیرت

خبر دی بالکوں نے بھیشتم کو اس مرد عاقل کی
خبر دی بالکوں نے بھیشتم کو اس مرد عاقل کی
بیاں دانائیاں کی آشنائے لاری منزل کی

پتہ نامہ نے دروہ کی سنی دانائیاں جس دم
پتہ نامہ نے دروہ کی سنی دانائیاں جس دم
دروہ چاریہ کے پاس پہنچے پھر خوش و خرم

ہوئے یوں ملتے اے ارض عالم کے عظیم انسان
ہوئے یوں ملتے اے ارض عالم کے عظیم انسان
ہے رزم و بزم کی دولت سے آسودہ تر ادا

تلکد کاشرف تو بخش دے اب شاہزادوں کو
تلکد کاشرف تو بخش دے اب شاہزادوں کو
عطا افغان رزم و بزم کر دے، بے ارادوں کو

دروہ نے پھر ان کی التیج منظور فرمائی
دروہ نے پھر ان کی التیج منظور فرمائی
انہیں قسمت بیاباں سے محل میں کھینچ کر لائی

فنِ جنگ و جدل کی تربیت

محل عیش و طرب کے ساز و سماں سے مزین تھا
 درو نہ کو ردوں پانڈوکو دہا یوں درس دیتے تھے
 وہیں کچھ دوسرے دانشوں کے مشہزادے بھی اگر
 گدایہ میں ہوئے چالاک کافی جھیم و درلودن
 نکل شمشیر بازی میں ہزاروں میں یگانہ تھا
 پھشمہ دوسرے سہد یوں فن شہسوار ی میں
 مگر اس کے علاوہ بھی، جوئے بازی کا اک فن تھا
 انھیں ویروں میں تھا اک کرن بھی یکتا ہزاروں میں
 یہ سارے سوار ما تھے، اور سبھی اک سے اک ٹھہ کر

ہر اک گوشہ متاعِ علم اور حکمت کا مخزن تھا
 سحر سے شام تک محنت کراتے مشق لیتے تھے
 کیا کرتے تھے حاصل ان سے رزم و نرم کے فوہر
 مگر یہ دونوں تھے اک دوسرے کی جان کے دشمن
 نہ تھا اس کا کوئی ثانی وہ یکتائے زمانہ تھا
 جواب اپنا نہ رکھتے تھے وہ دونوں ہوشیاری میں
 پھشمہ کا دماغ اس فن سے بھی قدرے مزین تھا
 درخشاں چاند مہجس طرح انجم کی قطار نہیں
 مگر اک دیرا رجن تھا جوان سب میں تھا بڑھ چکر

یوڈیٹیر نے کمال فن ہنر والوں کو دکھلایا
 اقامت-انسان سے فیر ہدیا-آ-تہسین بھی پایا ۱۱
 فیر اسکے باد ہی مہدوں میں آفہم-آ-دورین
 یہ دونوں ویر تھے ایک دوسرے کی جان کے دشمن ۱۱
 دیکھا خوب پھر دونوں نے جو ہرگز آہن کے
 گدا یدھ میں بڑے چالاک اور مشاق تھے دونوں
 گداؤں کے تصادم سے معانجگاریاں بھڑکتیں
 اور ان کے ساتھ دونوں یوڈوں کی قسمیں لگتیں
 غرض وہ لڑتے لڑتے موت کا کرنے لگے سودا
 کہ لائق ہو گیا تھا جس سے ان کی جان کو خطرہ
 درونہ نے انہیں جب اس طرح لڑتے ہوئے دیکھا
 شراروں کو دہان گرز سے بھڑکتے ہوئے دیکھا
 تو کی محسوس فوراً دشمنی دونوں جوانوں کی
 کہ جس سے زندگی خطرے میں تھی ان پہلوانوں کی
 معاذ زندہ سوت تھا نا کو میدان میں بھیجا
 لڑائی روکنے کو، اس کو اس طوفان میں بھیجا
 گیا سمجھانے اس سوت ان کو جو تھے ہوش سے غافل
 چٹاں کی طرح ان کے پیچ میں وہ ہو گیا حائل
 بڑی مشکل سے دونوں پہلوان میدان سے لوٹے
 گدا کا ندھے پہ رکھ کر فاتحانہ شان سے لوٹے
 پھر اس کے بعد ارجن شیر کی مانند بل کھاتا
 کہاں تھا مے ہوئے میدان میں آیا تیر برسا نا
 دکھایا اس نے ہر اک زاویے سے پھر کمال اپنا
 نمایاں کر دیا دنیا پہ فن کا مثال اپنا
 کبھی پاتال میں گھستا کبھی آکاش میں جاتا
 کبھی پورب کبھی پچم کبھی اتر میں اہر ساتا

لے گرز

کمالے-فن = ہنر کا
 کتب

شورہ-آفاک =
 دُور-دُور تک مہا ہر

فجرند = پور

فاتہانا شان =
 فیجیتا کے سمان

یوڈیٹیر نے کمال فن ہنر والوں کو دکھلایا
 اقامت-انسان سے فیر ہدیا-آ-تہسین بھی پایا ۱۱
 فیر اسکے باد ہی مہدوں میں آفہم-آ-دورین
 یہ دونوں ویر تھے ایک دوسرے کی جان کے دشمن ۱۱
 دیکھا خوب پھر دونوں نے جو ہرگز آہن کے
 گدا یدھ میں بڑے چالاک اور مشاق تھے دونوں
 گداؤں کے تصادم سے معانجگاریاں بھڑکتیں
 اور ان کے ساتھ دونوں یوڈوں کی قسمیں لگتیں
 غرض وہ لڑتے لڑتے موت کا کرنے لگے سودا
 کہ لائق ہو گیا تھا جس سے ان کی جان کو خطرہ
 درونہ نے انہیں جب اس طرح لڑتے ہوئے دیکھا
 شراروں کو دہان گرز سے بھڑکتے ہوئے دیکھا
 تو کی محسوس فوراً دشمنی دونوں جوانوں کی
 کہ جس سے زندگی خطرے میں تھی ان پہلوانوں کی
 معاذ زندہ سوت تھا نا کو میدان میں بھیجا
 لڑائی روکنے کو، اس کو اس طوفان میں بھیجا
 گیا سمجھانے اس سوت ان کو جو تھے ہوش سے غافل
 چٹاں کی طرح ان کے پیچ میں وہ ہو گیا حائل
 بڑی مشکل سے دونوں پہلوان میدان سے لوٹے
 گدا کا ندھے پہ رکھ کر فاتحانہ شان سے لوٹے
 پھر اس کے بعد ارجن شیر کی مانند بل کھاتا
 کہاں تھا مے ہوئے میدان میں آیا تیر برسا نا
 دکھایا اس نے ہر اک زاویے سے پھر کمال اپنا
 نمایاں کر دیا دنیا پہ فن کا مثال اپنا
 کبھی پاتال میں گھستا کبھی آکاش میں جاتا
 کبھی پورب کبھی پچم کبھی اتر میں اہر ساتا

لے گرز

غرض اس نے بہ اندازِ گراہی صلاحیت
دکھائی اس طرح حسیتِ زدہ سب ہو گئی فطرت

کرن کی آمد

پھر اس کے بعد ہی یک لخت میدان سے ذرا ہٹ کر
ہوا ما بعد ہی فوراً فضا میں رعد سا گڑکا
یہ سچ ہے اختلاجی کیفیت سب پر مہوئی طاری
یہ طوفان رنگ بھومی کی طغیانی بڑھتا ہوا آیا
یہ لہجہ ترسینہ گامہ بسیار کو پایا
یہ ایک دیکھتے کیا ہیں کوچ کسٹل کیے دھار
دیہ لوگوں نے اس کو راستہ آیا وہ میدان میں
پھر اس کے بعد ارجن کی طرح اس نے ہزار اپنا
گرج اٹھی، کہ جیسے رہ گیا ہوا سماں پھٹ کر
کہ جس سے سارے لوگوں کا کلیجہ زور سے دھڑکا
پسینہ خوف سے فی الفور جسموں سے ہوا جاری
بہ ہر لمحہ ترسینہ گامہ بسیار کو پایا
بہادر کرن کھم کو ٹھونکتا آتا ہے فیصل انگن
قدم اویسی کو پنچا خدمتِ استاذِ دیشاں میں
دکھایا اور عوام الناس پر ڈالا اثر اپنا

حرکتِ درلودھن پر بھیم وارجن کا مشتعل ہونا

جود لودھن نے دیکھا کرن جیسے مرد میدان کو
تو بلوایا بڑی تکریم سے شیریںستاں کو

گرچہ اس نے ب-اندازے-دیگر اپنی صلاحیت
دیکھا ہے اس طرح ہیرت-جدا سب ہو گئی خلیقت

کرن کی آمد

فیر اس کے بعد ہی یک لخت میدان سے ذرا ہٹ کر
ہوا ما بعد ہی فوراً فضا میں رعد سا گڑکا
یہ سچ ہے اختلاجی کیفیت سب پر مہوئی طاری
یہ طوفان رنگ بھومی کی طغیانی بڑھتا ہوا آیا
یہ لہجہ ترسینہ گامہ بسیار کو پایا
یہ ایک دیکھتے کیا ہیں کوچ کسٹل کیے دھار
دیہ لوگوں نے اس کو راستہ آیا وہ میدان میں
پھر اس کے بعد ارجن کی طرح اس نے ہزار اپنا
گرج اٹھی، کہ جیسے رہ گیا ہوا سماں پھٹ کر
کہ جس سے سارے لوگوں کا کلیجہ زور سے دھڑکا
پسینہ خوف سے فی الفور جسموں سے ہوا جاری
بہ ہر لمحہ ترسینہ گامہ بسیار کو پایا
بہادر کرن کھم کو ٹھونکتا آتا ہے فیصل انگن
قدم اویسی کو پنچا خدمتِ استاذِ دیشاں میں
دکھایا اور عوام الناس پر ڈالا اثر اپنا

حرکتِ درلودھن پر بھیم وارجن کا مشتعل ہونا

جود لودھن نے دیکھا کرن جیسے مرد میدان کو
تو بلوایا بڑی تکریم سے شیریںستاں کو

خلیقت = جنات

یک لخت = اچانک

اختلاجی کیفیت =
غیر عادی کی حالت

بیساریاں = بہت،
اधिक

قدم-بوسی = پیر
چومنا
اوام-اونااس =
آام جناتا

شیر-نہستائیں = جنگل
کا شہر

تفکک و اور رواداری کا منظر خوب دکھلایا
 اور اس کے بعد اس کو پیار سے آسن پہ بٹھلایا
 بڑی دریادلی سے اس نے چپاوی حکومت کو
 یہ کردی بنام کرن موروثی ولایت کو
 یہ حرکت ساری درلودھن کی مبنی تھی شرارت پر
 کیا تھا کرن کو قابض جو آبائی ولایت پر
 یہ دیکھا ہم دارمن نے تو غوراً مشتعل ہو کر
 کانیں ہتھام کر دونوں اٹھے آسن سے بل کھا کر
 جو درلودھن نے دیکھی جشن کی بدلی ہوئی حالت
 تو اس کی بھی شجاعت کی پھر دکھی رگ غیرت
 و صفت اور بان لیکر وہ بھی اٹھا اپنے آسن سے
 کہ دکھا کر شجاعت، داد پائے دوست دشمن سے
 مگر غوراً غروب مہر کا پیمانہ آہنچیا
 اجالاکم ہو امید اس سے، وقت شام آہنچیا
 اور اس کے بعد چھائی تیرگی جب رنگ بھوی پر
 تو واپس ہو گئے دونوں دلوں میں دشمنی لیکر

گرو دشنا

دروہ نے پھر اک دن اپنے شاگردوں کو بلوایا
 مخاطب ہوئے اس نے اس طرح ارشاد فرمایا
 بنیادان و دیادے کے میں نے ہی تمہیں دانا
 مگر اب تک گرو کا حق ملا ہے اور نہ نذرانہ
 کرو تم اپنے سر سے بار ہلکا دشنادے کر
 نوازا میں نے تم کو علم و فن اور کلپنا کے کر
 ملے چپا پوری

تفکک و اور رواداری کا منظر خوب دکھلایا

ہیبا = کوئی چیز کمی کے نام کر دینا
 موریسی ویلا یات = باپ دادا کی حکومت

موشن ڈل = گوسے میں भर کر

شوجا ات = بھادوری

تیرگی = اندھیرا

موشا تیب = संबोदय

नजराना = दक्षिणा

गुरु दक्षिणा

द्रोणा ने फिर इक दिन अपने शगिर्दों को बुलवाया।
 मुखतिब हो के उस ने इस तरह इरशाद फरमाया।।
 बनाया दान विद्या दे कर, मैं ने ही तुम्हें दाना।
 मगर अब तक गुरु का हक् मिला है और न नजराना।।
 करो तुम अपने सर से बार हल्का दक्षिणा देकर।
 नवाज़ा मैं ने तुम को इल्मो-फन और कल्पना देकर।।

१. चम्पा पूरी

یہ سن کر سارے شہزادے لہجہ عجز و ادب بولے
کی جو بھی آپ چاہیں دشنام لگیں، وہ ہم دیں گے

گرو کو یاد تھی اب تک دروید کی ریاکاری
ہوئی تھی دورِ ماضی میں جو ان کے ساتھ غذائی

درو نے کہا پنچال راجہ کو پکڑ لاؤ
پھنسا کر قوس گردن میں اسے تم کھینچے آؤ

یہی ہے دشنام سیری یہی ہے میرا اندازہ !!

دروید کو پکڑ لاؤ دکھاؤ شانِ مردانہ

خیر بدھو گھر کو آئے

یہ سن کر گھیر لی کوروں نے سیمپھر دروید کی
مگر پنچال نے کی ناکہ بندی ایسی سرحد کی

کہ جس سے پیش قدمی رک گئی ان کی بہ صورت
دکھائی یوں تو سب نے خوب اپنی جرات و ہمت

مگر ممکن نہ تھا پنچال ان سے زیر ہو جانا
گروہ گرگ آکر ان کے آگے شیر ہو جاتا

وہی آخر ہوا امید تھی جو بات ہونے کی
دستاویر کے لٹنے کی اور غفلت کے کھونے کی

دکھائی پشت پھر تالین کے شیروں نے میدان سے
ہٹے، ہنکر فو پکڑ ہوئے رفتارِ طوفاں سے

پاکر جان بھاگ آئے دروید کی قلمرو سے

شکستِ فاش تھی یہ جنگ کے آئینی پہلو سے

بوسدہ ڈجڑو-اَدب =
بہت ادب کے ساتھ

ریاکاری = مکاری

کوس = کمان

خیر سے بھڑو گھر کو آئے

یہ سن کر گھر لے لی کوروں نے سیمپھر دروید کی
مگر پنچال نے کی ناکہ بندی ایسی سرحد کی

کی جس سے پش قدمی رک گئی ان کی بہ صورت
دکھائی یوں تو سب نے خوب اپنی جرات و ہمت

مگر ممکن نہ تھا پنچال ان سے زیر ہو جانا
گروہ گرگ آکر ان کے آگے شیر ہو جاتا

وہی آخر ہوا امید تھی جو بات ہونے کی
دستاویر کے لٹنے کی اور غفلت کے کھونے کی

دکھائی پشت پھر تالین کے شیروں نے میدان سے
ہٹے، ہنکر فو پکڑ ہوئے رفتارِ طوفاں سے

پاکر جان بھاگ آئے دروید کی قلمرو سے
شکستِ فاش تھی یہ جنگ کے آئینی پہلو سے

پش قدمی = بڑھتے قدم
بہر سورت =
ہر حال میں

وکار = شانوں شاکت،

پشت = پیٹ

کلم-رے = राज्य

भीम और अर्जुन की जुरअत आजमाई

اب اس کے بعد جرات آزمائی پر کمر بستہ
انہیں راجہ دروید کو جواب جنگ دینا تھا
اسلحہ ہو کے پیچھے سرحد نیچال میں پانڈؤ
پا جنگ وجدل کا اس طرح نیچال میں طوفان
غرض فوج دروید پھر فتنہ کے گھاٹ پہنچی
چلو فرصت ہوئی وہ لوگ سے پر لوگ چاہی

کمر بستا = کمر باندھ
ہو گیا
برسرے-پیکار = لڑائی
پر تیار
بر جستا = تیار
موسللہ = ہتھیار بند
میدانہ-وگا = رणभूमि
हथ = क्लामत
فنا = मृत्यु

شکست خوردہ راجہ دروید ورنہ چاریہ کے حضور میں

اب اس کے بعد جرات آزمائی پر کمر بستہ
انہیں راجہ دروید کو جواب جنگ دینا تھا
اسلحہ ہو کے پیچھے سرحد نیچال میں پانڈؤ
پا جنگ وجدل کا اس طرح نیچال میں طوفان
غرض فوج دروید پھر فتنہ کے گھاٹ پہنچی
چلو فرصت ہوئی وہ لوگ سے پر لوگ چاہی

اب اس کے بعد جرات آزمائی پر کمر بستہ
انہیں راجہ دروید کو جواب جنگ دینا تھا
اسلحہ ہو کے پیچھے سرحد نیچال میں پانڈؤ
پا جنگ وجدل کا اس طرح نیچال میں طوفان
غرض فوج دروید پھر فتنہ کے گھاٹ پہنچی
چلو فرصت ہوئی وہ لوگ سے پر لوگ چاہی

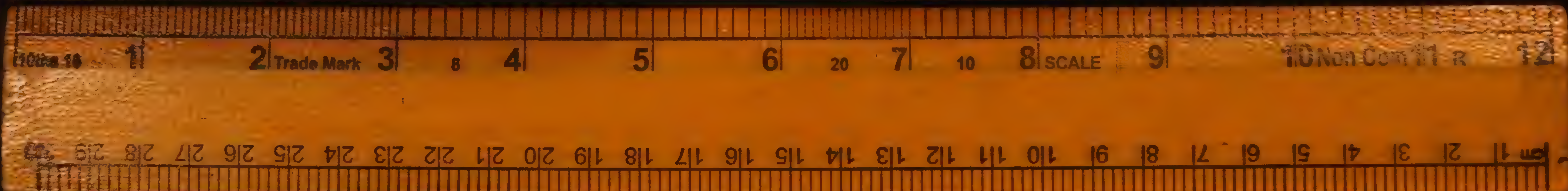
برکت = भाग्य
हलका गिरफ्त = पकड़
गर्दन-फायक = उंची
गर्दन
हलकूम = गला

भीम और अर्जुन की जुरअत आजमाई

اب اس کے بعد جرات آزمائی پر کمر بستہ
انہیں راجہ دروید کو جواب جنگ دینا تھا
اسلحہ ہو کے پیچھے سرحد نیچال میں پانڈؤ
پا جنگ وجدل کا اس طرح نیچال میں طوفان
غرض فوج دروید پھر فتنہ کے گھاٹ پہنچی
چلو فرصت ہوئی وہ لوگ سے پر لوگ چاہی

شکست خوردہ راجہ دروید ورنہ چاریہ کے حضور میں

اب اس کے بعد جرات آزمائی پر کمر بستہ
انہیں راجہ دروید کو جواب جنگ دینا تھا
اسلحہ ہو کے پیچھے سرحد نیچال میں پانڈؤ
پا جنگ وجدل کا اس طرح نیچال میں طوفان
غرض فوج دروید پھر فتنہ کے گھاٹ پہنچی
چلو فرصت ہوئی وہ لوگ سے پر لوگ چاہی



گرج پंचال राजा को वह यूँही खींच कर लाया।
 इसी हालत में उस्ताजे-जमाँ के पास पहुँचाया।
 द्रोणा ने उसे जिस वक्त देखा ऐसी हालत में।
 कमी महसूस की फिर अपनी देरीना कदूरत में।
 द्रोणा ने मुखातिब हो के यूँ राजा से फरमाया।
 तुझे यह आज का दिन तेरी बद-अहदी ने दिखलाया।
 अभी कुछ वक्त है प्रतिज्ञा का अपनी कर पालन।
 बचा ले दागे-बद-अहदी से नादाँ अपना तू दामन।
 नहीं तो आने वाली नस्त लानत तुझ पे भेजेगी।
 तेरा जिस वक्त नाम आएगा दुनिया तुझ पे थूकेगी।
 द्रौपद ने सुना तो दिल पे इक संगे-गिराँ रखकर।
 हुकूमत निष्फ देदी जब करके अपने सीने पर।
 मगर दिल में खलिश बाकी रही पंचाल के ताहम।
 ब-बातिन दुश्मनी रखी, बजाहिर बन गया हमदम।

उस्ताजे - जमाँ =
 जगत गुरु
 देरीना = पुरानी
 कदूरत = दुश्मनी

नस्त = पीढ़ी

बातिन = छिपा हुआ
 बजाहिर = खुले
 तौर पर

बगावत का खतरा

द्रौपद की शिकस्ते-फाश और पान्डव की नुसरत ने।
 लगा दी आग सी कौरों के मंडल में कदूरत ने।
 अलावा इसके प्रजा को भी पान्डव ही से उलफत थी।
 अवाम-उन्नास को हद्दे-अकीदत तक मोहब्बत थी।
 इधर जनता की उलफत और उधर उन की सलाहियत।
 बढ़ादी और, इन दोनों ने उन की कद्र और वकअत।
 मगर अब इक नई चिन्ता से दुर्योधन परेशाँ था।
 उसे पान्डव की जानिब से बगावत का भी इमकाँ था।

शिकस्ते-फाश =
 खुली हुई हार

उलफत = प्यार, प्रेम

غرض پنجال راجہ کو وہ یوں ہی کھینچ کر لایا
 درونہ لے ا سے جس وقت دیکھا ایسی حالت میں
 درونہ نے مخاطب ہو کے یوں راجہ سے فرمایا
 ابھی کچھ وقت ہے پر تمگیا کا اپنی کرپالن
 نہیں تو آنے والی نسل لعنت تجھ پہ بھیجے گی
 دروید نے سنا تو دل پہ اک سنگ گراں رکھ کر
 اسی حالت میں استاذِ زماں کے پاس پہنچایا
 کئی محسوس کی پھر اپنی دیرینہ کدورت میں
 تجھے یہ آج کا دن تیسری بد عہدی نے دکھلایا
 بچائے داغ بد عہدی سے ناداں اپنا تو دامن
 ترا جس وقت نام آئے گا دنیا تجھ پہ تھو کے گی
 حکومت نصف دیدی جبر کر کے اپنے سینے پر

مگر دل میں خلش باقی رہی پنچال کے تاہم
 بیاطن دشمنی رکھی، بظاہر بن گیا ہمدم

بغاوت کا خطرہ

دروید کی شکستِ فاش اور پانڈو کی نصرت نے
 لگادی آگ سی کوروں کے منڈل میں کدورت نے
 علاوہ اس کے پیرجا کو بھی پانڈو ہی سے الفت تھی
 عوام الناس کو حسدِ عقیدت تک محبت تھی
 ادھر جنتا کی الفت اور ادھر ان کی صلاحیت
 بڑھادی اور ان دونوں نے ان کی قدر اور وقت
 مگر اب اک نئی چنتا سے درویدھن پریشاں تھا
 اسے پانڈو کی جانب سے بغاوت کا بھی امکان تھا

کی پاڈو اب کہیں جنتا کی شد اور اپنی قوت پر
بغاوت کر کے قبضہ ہی نہ کر لیں اس حکومت پر

ساژیو - کورواں

خیاں اس قسم کا آتے ہی درلودھن نے سر ہو کر
کیا فی الفور آمادہ پیتا کو اپنے سازش پر

انوکھا وار والید کے تہسوت سے کیا اس نے
چلی اک شاطرانہ چال فوراً بر ملا اس نے

خوشی سے دہ پھر اپنے پیتا کے سامنے آیا
کہ پاڈو شہر کے باہر میں منہ مان لکھوایا

پروچن کو بلا کر اس نے سازش میں کیا شارل
جو معماری کے فن میں تھا بہت ہشیار اور قابل

اُسے وارن وئی میں اک محل ایسا بنانے پر
کیا مامور درلودھن نے اپنا فن دکھانے پر

محل ہو بانس اور شہتیر کی بنیاد پر قائم
ہر اک حصہ ہو اس کا بس مرے ارشاد پر قائم

پروچن نے دکھایا اپنا فن رال اور پٹ سن
ملا ایسا درو دیو اور چھت پر لک و روغن

کہ ادنیٰ سے شرارے آگ کا وہ شعلہ بھڑکائیں
محل کے ساتھ جس میں پاڈو اس بھی جل کے رہ جائیں

محل بھٹا وقتی معمار کا شہکار معماری
پروچن کی فہم تامل سے جاہل تھی ہشیاری

مکمل ہو چکا جب یہ مکان تو اس نے نخلت سے
خبر پہنچائی درلودھن کو ظالم نے شرارت سے

لک = لاکھ، یعنی نہایتی کمزور کا اگاں -

فیل فائر = فائر
آمادا = راجی

تہسوت = دھوا
شاتیرانا = چالاک کی سے

معماری = घर बनाने का
کام
فن = ہونر

شہتیر = لکڑی کی
بلیٹیاں

لک = لاکھ یا
نہایتی کیڑوں کا
وگاں

شرارہ = چنگاری

شہکار = ہونر مندی
کا نمونہ



پانڈوؤں کا اخراج

ہوا تعمیرالواں سے بہت مسرور درلودھن
کھا اپنے پیتا سے بادب یوں چوم کر دامن ۱۱
محل تو بن گیا ہے آپ آگے حکم فرمائیں
کہ پانڈو چھوڑ دیں یہ شہر، اور وارن وتی جائیں
دیا پانڈو کو فوراً حکم پھر راجہ نے جانے کا
کہ تھا پہلے سے سارا بند و بست ان کو بسانے کا
یہ پھر بھیم، ارجن اور نکل سہیل سب مل کر
ملے کرپہ، دروند، اور پیتا امہ سے جہشیم تر
چرن چھو کر ادب سے ہو گئے استادہ سب بھائی
اجازت مانگ کر لوٹے تو سب کی آنکھ بھرتی
پلے وارن وتی کی سمت اور چھوڑا دیار اپنا
پلٹ کر دیکھتے جاتے تھے گھر اپنا دیار اپنا
یہ ہر لمحہ قدم منزل کی جانب بڑھتے جاتے تھے
فرار زمین منزل پہ پانڈو چڑھتے جاتے تھے

سازش کا انکشاف اور تفحص سرنگ

اچانک مل گئے ان کو وڈرجی راہ میں آکر
کیا آگاہ پھیل سے دشت کوہ وکاح میں آکر
انگ لے جلے، کہہ دی راز کی باتیں یہ پیشہ پڑ سے
فریب آمیز درلودھن کی سب گھاتیں یہ پیشہ پڑ سے

ہےواں = محل
مسرور = مسرور

استادا = خڑا ہوا

دیار = نگر
ب ہر لکھا = ہر
لکھا،
فراجے-جینا-آ-منجیل
= منجیل کی بولندی
پر

انکشاف = ہمد
تفہ-ہوسے-سورگ =
سورگ کا خوندنا،

دشت-کوہو-کاہ =
دور جنگل اور پہاڑ

اچانک مل گیا ان کو ویدورجی راہ میں آکر
کیا آگاہ چل سے دشت-کوہو-کاہ میں آکر ۱۱
اتلگ لے جا کے، کھدی راج کی باتیں یوڈیٹیر سے
فرےب آامےج دیرودھن کی سب غاتیں یوڈیٹیر سے ۱۱

یوधिष्ठیر نے سنا جب کورواں کا فعل شیطانی
 کہا اس نے کہ اب او سر سے اونچا ہو گیا پانی
 مگر پھر بھی تحمل کا نہ دامن ہاتھ سے چھوڑا
 قدم بڑھتے رہے منزل کی جانب رخ نہیں موڑا
 یوधिष्ठیر میں تھی اس فتنے سے بچنے کی صلاحیت
 سرفتنہ کھیلنے کی اسے معلوم تھی حکمت
 لیا رستے سے اس نے ایک کارِ حضر کا ماہر
 سرنگیں کھودنے کے فن میں تھا جو سیت شاہر
 چلے منزل بہ منزل راہ طے کرتے ہوئے پانڈو
 قدم آگے بڑھاتے ڈگ پڑ گ بھرتے ہوئے پانڈو
 غرض اک روز پانڈو منزل مقصود پر پہنچے
 بایں بہت تھیلی پر لیے وہ اپنا سر سنبھلے

فیل = کام/کار

تھمٹول = ڈھیر
 رخص = سیت/دیشا

فیلنا = ڈھیر
 دیکھنا = گور
 ہفر = سوراخ کھودنے کا
 کام

منزلے مکسود = جہاں
 پہنچنے کا ارادہ ہو

پروچن اور بھیلنی کی ناکامی

پروچن نے کیا پھر بڑھ کر استقبال پانڈو کا
 دکھایا اس نے پھر خاطر اوضاع کا حسیں منظر
 مگر پانڈو بھی اس سے کم نہ تھے چالاک اور شاہر
 چناغہ رہتے رہتے ان کو کافی دن وہاں بیٹے
 اس عرصہ میں سرنگ آفر بہت خفید طریقے سے
 مکمل ہو چکی تھی حسن و خوبی اور سلیقے سے

دستکوبال = مہاگن
 دیکھنا = منوہر
 دیکھنا = منوہر
 دیکھنا = منوہر

ہیات-او-جیست =
 زندگی کی باجی

یوधिष्ठیر نے سنا جب کورواں کا فعل شیطانی
 کہا اس نے کہ اب او سر سے اونچا ہو گیا پانی
 مگر پھر بھی تحمل کا نہ دامن ہاتھ سے چھوڑا
 قدم بڑھتے رہے منزل کی جانب رخ نہیں موڑا
 یوधिष्ठیر میں تھی اس فتنے سے بچنے کی صلاحیت
 سرفتنہ کھیلنے کی اسے معلوم تھی حکمت
 لیا رستے سے اس نے ایک کارِ حضر کا ماہر
 سرنگیں کھودنے کے فن میں تھا جو سیت شاہر
 چلے منزل بہ منزل راہ طے کرتے ہوئے پانڈو
 قدم آگے بڑھاتے ڈگ پڑ گ بھرتے ہوئے پانڈو
 غرض اک روز پانڈو منزل مقصود پر پہنچے
 بایں بہت تھیلی پر لیے وہ اپنا سر سنبھلے

پروچن اور بھیلنی کی ناکامی

پروچن نے کیا پھر بڑھ کر استقبال پانڈو کا
 دکھایا اس نے پھر خاطر اوضاع کا حسیں منظر
 مگر پانڈو بھی اس سے کم نہ تھے چالاک اور شاہر
 چناغہ رہتے رہتے ان کو کافی دن وہاں بیٹے
 اس عرصہ میں سرنگ آفر بہت خفید طریقے سے
 مکمل ہو چکی تھی حسن و خوبی اور سلیقے سے

ادھر موقع طلب اب تک پروین تھا ستم پرور
مگر ارمان اس کے دل ہی دل میں رہ گئے گھٹ کر
کہ اک دن اتفاقاً اس جگہ اک بھیلی آئی
جو اپنے پانچ بیٹوں کو بھی اپنے ساتھ تھی لائی
کہا جاتا ہے وہ عورت بھی اس ساڑی میں شامل
جو مکاری میں یکتا اور عیاری میں کامل تھی
مگر ان سارے بدبختوں کو ایوان کے جلانے کا
نہ موقع مل سکا مطلق محل کی خاک اڑانے کا
یہ شہر نے ادھر سوچا کہ اچھا وقت آیا ہے
مجھے بھگون کی لیلانے یہ موقع دلایا ہے
کریں پہلے نہ کیوں ان سے لگا دوں آگ ایوان کہ
محل کے ساتھ کر دوں بھسم ان سب بچن جاں کو

یہ سب کچھ سوچ کر شب میں لگا دی آگ ایوان میں
سُرنگی راہ سے پھر چل دیئے پاڈو بیاباں میں

لاکھ کا محل تودہ خاک کی صورت میں

سحر نے اک تختہ کاسماں لوگوں کو دکھلایا
محل کو خاک کے تودہ کی صورت میں پڑ پایا
جلی لاشیں پڑی پانی گئیں انبار کے نیچے
ملی تھیں سات لاشیں تودہ دیوار کے نیچے
یہ لاشیں دیکھ کر لوگوں نے سمجھا مر گئے پاڈو
یقیناً عالم فانی سے رحلت کر گئے پاڈو
خبر قصبے کے لوگوں نے یہ درپو دھن کو پہنچائی
محل کے ساتھ کتنی اور پانچوں جل گئے بھائی

مؤکا تلہ = مہم
کی پریشا
سیتہ پرہر = جلالہ

یکتا = اکتلا
کامیل = مادیہ

شہ = رات

لاکھ کا محل تودہ-آ-خاک کی سورت میں

سہر نے اک تھہر کا سماں لوگوں کو دکھلایا
محل کو خاک کے تودہ کی سورت میں پڑ پایا
جلی لاشیں پڑی پانی گئیں انبار کے نیچے
ملی تھیں سات لاشیں تودہ-آ-دیوار کے نیچے
یہ لاشیں دیکھ کر لوگوں نے سمجھا مر گئے پاڈو
یقیناً عالم فانی سے رحلت کر گئے پاڈو
خبر قصبے کے لوگوں نے یہ درپو دھن کو پہنچائی
محل کے ساتھ کتنی اور پانچوں جل گئے بھائی

تودہ-آ-خاک = رات
کا ڈہر

سہر = سہرا
تھہر = آشہر



مٹی ہے ریخہ جس وقت درلودن بد اختر کو
خوشی سے جھوم اٹھا اور اونچا کر لیا سر کو

پانڈویاں میں

محل کو پھونک کر نکلے سرنگی راہ سے پانڈو
چلے مجبور ہو کر اپنی عشرت گاہ سے پانڈو
ہوئے روپوش احمر کار جنگل اور بیاباں میں
بسیہ کر لیا کوہ و دمن میں دشت ویراں میں
وطن سے دور ہو کر بن گئے تھے آج صحرائی
معتدر نے بعد افسوس ان سے خاک چھنوائی

تھا قلب بھیم احساس معنویت سے بہت گہرا
وہ اپنی بے بسی اور کمپرسی پر بھتا سرگرداں

حسین ٹکراؤ

کئی دن بعد انہیں اک رکشش دشت میں دیکھا
تو اس کے منہ سے پانی لم آدم کیلئے چھوٹا
کیا جب اشتہائے لم آدم نے اسے مضطر
معا اس نے کہا خواہر سے اپنی دشت میں جا کر
فلاں جانب گروہ آدمی نے ڈیرا ڈالا ہے
پکڑ لایا کو، انساں بھی کیسا ترنوالا ہے

میلی ہے یہ خبر جس وقت دُریو دمن بد-اکثر کو
خوشی سے جھوم اٹھا اور اُچھا کر لیا سر کو

پانڈو بیاہاں میں

مہل کو فوک کر نیکلے سُرنگی راہ سے پانڈو
چلے مجبور ہو کر اپنی دُشرت گاہ سے پانڈو

ہوئے روپوش آخیرکار جنگل اور بیاہاں میں
بسیہ کر لیا کوہ - دمن میں دشت ویراں میں

وطن سے دور ہو کر بن گئے تھے آج صحرائی
معتدر نے بعد افسوس ان سے خاک چھنوائی

تھا قلب بھیم احساس معنویت سے بہت گہرا
وہ اپنی بے بسی اور کمپرسی پر بھتا سرگرداں

ہسین ٹکراو

کئی دن بعد انہیں اک رکشش دشت میں دیکھا
تو اس کے منہ سے پانی، لہمہ-آدم کے لیے چھوٹا

کیا جب اشتہائے لم آدم نے اسے مضطر
معا اس نے کہا خواہر سے اپنی دشت میں جا کر

فلاں جانب گروہ آدمی نے ڈیرا ڈالا ہے
پکڑ لایا کو، انساں بھی کیسا ترنوالا ہے

بد-اکثر = بد-اکثر

دُشرت گاہ = آسرام کی
جگہ

روپوش = چھپے
کوہ = پہاڑ
دمن = میدان
دشت = جنگل
ویراں = سونمان
معتدر = भाग्य

قلب = دِل/دِہ
س-د = کھٹ/تکلیف
گيریاں = روتا हुआ
کسم پورسی = वेसहारा
پن سر گرداں = परेशान

لہمہ-آدم = انسان
کا ماس

دُشرت گاہ = भूक
معتدر = बेचैन

یہ سن کر وہ وہاں پہنچی جہاں پانڈو کا ڈیرا تھا
 ستم کشتہ پریشاں مال کا جس جا بسیرا تھا
 نظر اس کی پڑی یک لخت پہلے بھیم کے اوپر
 وہاں سے جب ہئی تولی نگاہ بھیم سے ٹکڑ
 نگاہوں کا قصداً پیار کا پیغام لے آیا
 نظر پلٹی تو دل میں اک انوکھا درد پایا
 نظر کا تیر پہلی ہی نظر میں کر گیا گھائل
 کلجہ اپنا اپنا تھا کام کر بس رہ گئے بیکل
 حسین نکراؤ کا آخر نتیجہ بھی حسین نکلا!
 بشکل ازدوج زلیست عشرت آؤں نہ نکلا

جوش غیرت اور مقابلہ بھیم و راکشش

ادھر تاخیر خواہ سے تھا کافی رکشش میراں
 کبھی غصہ اسے آتا کبھی ہوتا وہ سرگرداں
 بالآخر خود ہی پیچ و تاب وہ کھاتا ہوا پہنچا
 جہاں پانڈو تھے اس جا گزر لہراتا ہوا پہنچا
 بہن کو بھیم کے پہلو میں جب بیٹھا ہوا پایا
 امانت کا ہوا احساس اور غمیتیرے اکسایا
 گدا لے کر وہ چھپتا بھیم جیسے نیل انگن پر
 کیا بھیر پور پہلا وار اس نے اپنے دشمن پر
 بدل کر پتیرا اس نے گدا کو گرز پر روکا
 اچانک وار کرنے پر نہ اس کو بھیم نے ٹوکا

سیتام کھٹا = یوگیت
 کی ماری

یک لخت = اچانک

نیگاہوں کا تساؤم =
 آراؤں کا ملینا

دشارت = آناوند
 آفگین = شاہان

جوشے-گہرت اور موقابلا بھیم-او-راکشس

ادھر تاخیر خواہ سے تھا کافی رکشش میراں
 کبھی غصہ اسے آتا کبھی ہوتا وہ سرگرداں
 بالآخر خود ہی پیچ و تاب وہ کھاتا ہوا پہنچا
 جہاں پانڈو تھے اس جا گزر لہراتا ہوا پہنچا
 بہن کو بھیم کے پہلو میں جب بیٹھا ہوا پایا
 امانت کا ہوا احساس اور غمیتیرے اکسایا
 گدا لے کر وہ چھپتا بھیم جیسے نیل انگن پر
 کیا بھیر پور پہلا وار اس نے اپنے دشمن پر
 بدل کر پتیرا اس نے گدا کو گرز پر روکا
 اچانک وار کرنے پر نہ اس کو بھیم نے ٹوکا

تاخیر خواہ = بھین
 کے آنے میں دیر
 ہرے = آناوند

فیل آفگین = ہاتھی کو
 پھاڑنے والا

دیکھاई اجمو-پامردی کی ایسی شان دونوں نے |
 لڑائی وہ لڑی جس میں لڑادی جان دونوں نے |
 گدائیں جب بھی نکراتیں فضا میں جھنڈا نہیں |
 دماغ و قلب کی جتنی گتیں سننا نہیں |
 کبھی تو لوٹ کر گنگوڑے گرتے گرز آہن کے |
 کبھی جھڑتے شرابے ایسے جیسے پھول ایندھن کے |
 وہ ہم پلے تھے دونوں اور چوٹیں تھیں برابر کی |
 سرسید ان گلی تھی آج بازی جان اور سر کی |
 یکایک راکشش نے جوش میں یوں پیستہ بدلا |
 سبک دستی سے کاوا دیکے پشیم پر آیا |
 وہیں سے ضرب اک ایسی لگائی بھیم کے سر پر |
 مگر اچھا پڑا اُس کا یہ مہلک وار معفر پر |
 بہت کافی تھا یہ چرکا ہی اُس شینہ پستان کو |
 اک انجانے میں دعوت دی گئی ہو ویسے طوفان کو |
 بھجھو کا بن کے وہ غصے میں پلٹا پستہ بدلا |
 بدل کر پستہ اس راکشش سے لے لیا بدلہ |
 کیا اک ایسا مہلک وار اُس نے گرز آہن کا |
 کہ سر سے دوڑ بھیجا جا پڑا معفر و دشمن کا |

مگر دم بھر رہا ساکت وہ اک تصویر کی مانند

اور اس کے بعد فوراً گر پڑا شہتیر کی مانند

پانڈوؤں کی صحراوردی اور ویاس جی کا روشن

یہ صحرا پانڈوؤں نے اب اپنی اقامت گاہ کو چھوڑا |
 زمیں کو راکشش کی، دشت کوہ و کاہ کو چھوڑا |

موتک دھستی = ہلکے ہاتھ سے

موہلیک = جاننے والا
 میغفر = لوتے کا ٹوپ

شیرے نیرستیاں = جنگل کا شہر

مانیند = جیسا

اکامت گاہ = رہنے کی جگہ

پانڈوؤں کی صحرا نوردی اور ویاس جی کا روشن

یہ صحرا پانڈوؤں نے اب اپنی اقامت گاہ کو چھوڑا |
 زمیں کو راکشش کی، دشت کوہ و کاہ کو چھوڑا |

سفر کرنے سے پہلے اپنا حلیہ اس طرح بدلا
کیا اب پہچاننا مشکل تھا چہرہ اس طرح بدلا

سفر کرتے رہے وہ بے ارادہ دشت و صحرائیں
یونہی پھرتے رہے وہ پاسبانہ دشت و صحرائیں

سفر کی سختیوں سے جان عاجز آگئی سب کی
طبیعت اس مسلسل جہد سے گھبرا گئی سب کی

جو دیکھا بھیم نے سب ہو گئے ہیں چور اب تھک کر
سکت باقی نہیں چلنے کی ان کے جسم کے اندر

تو ماتا کو بٹھایا پشت پر اور دو کو کندھوں پر
چلا سہ لڑکوں کو خوش ہو کے اپنی گود میں لے کر

دیا پھر پانڈو کو ویاس جی نے راہ میں درشن
کہا تم چیکر پوری گزرا دینا اب جیون

دشت و صحرا = میدان
اور جंगل
पा-पियादा = नंगे पांव
जहद = मेहनत

भीम का ईसार

गए वह "चक्र पुरी" भेस में खासे ब्राह्मण के।
वहाँ इक ब्राह्मण के घर रहे महमान वह बन के॥

उसी नगरी के बाहर इक दैत्य हैकल का डेरा था।
कि जिसका नाम 'बक' था और जंगल में बसेरा था॥

नगर वासी दैत्य को बारी बारी इक मनुष्य देकर।
तबाही से बचाए रखा था बसती का हर इक घर॥

जहाँ मेहमान थे पांडव उसी के घर की बारी थी।
हवासे-ब्राह्मण पर बेहशीए-मृग तारी थी॥

यह आलम देखकर कुन्ती का दिल भी गम से भर आया।
ब्राह्मण मेजबानों को उसने फिर यह कह के समझाया॥

मुकुन्दर में जो लिखा है वही अब पेश आएगा।
तेरे फरजन्द के बदले में मेरा भीम जाएगा॥

मुकुन्दर = भाग्य
फरजन्द = पुत्र

سفر کرنے سے پہلے اپنا حلیہ اس طرح بدلا
کہ اب پہچاننا مشکل تھا چہرہ اس طرح بدلا

سفر کرتے رہے وہ بے ارادہ دشت و صحرائیں
یونہی پھرتے رہے وہ پاسبانہ دشت و صحرائیں

سفر کی سختیوں سے جان عاجز آگئی سب کی
طبیعت اس مسلسل جہد سے گھبرا گئی سب کی

جو دیکھا بھیم نے سب ہو گئے ہیں چور اب تھک کر
سکت باقی نہیں چلنے کی ان کے جسم کے اندر

تو ماتا کو بٹھایا پشت پر اور دو کو کندھوں پر
چلا سہ لڑکوں کو خوش ہو کے اپنی گود میں لے کر

دیا پھر پانڈو کو ویاس جی نے راہ میں درشن
کہا تم چیکر پوری گزرا دینا اب جیون

بھیم کا ایشار

گئے وہ چیکر پوری بھیس میں خلسے برہمن کے
وہاں اک برہمن کے گھر رہے مہمان وہ بن کے

اسی نگری کے باہر اک دنت ہیکل کا ڈیرا تھا
کہ جس کا نام "بک" تھا اور جنگل میں بسیرا تھا

نگرو اسی دنت کو باری باری اک منٹ دیکر
تباہی سے بچائے رکھا تھا بستی کا ہر اک گھر

جہاں مہمان تھے پانڈو اسی کے گھر کی باری تھی
حواس برہمن پر تہہ شہی رگ طاری تھی

یہ عالم دیکھ کر کتنی کا دل بھی غم سے بھرا
برہمن میسر باں کو اس نے پھر یہ کہہ کے بھجایا

مقدر میں جو لکھا ہے وہی اب پیش آئے گا
تو فرزند کے بدلے میں میرا بھیم جائیگا



کرو تیار بھوجن اور بتاؤ وہ جگہ چل کر
جہاں لینے بلیدان آتا ہے وہ راکشش خود سر

بھوکا भीम

गरज फिर गाँव वाले भीम के हमराह सब आए।
जहाँ वह राक्षस था, उस का भोजन साथ में लाए।।
जगह बतला के वापस हो गए सब एक ही छन में।
फ़क़त इक भीम तन्हा रह गया सहारा के दामन में।।
रखा था सामने ही राक्षस का रौगनी खाना।
कि इस खाने की खुशबू ने बनाया उसको दीवाना।।
कई दिन से न खाया था, बहुत भूका था फील अफ़ग़न।
वह खुद ही बैठ कर उसकी जगह करने लगा भोजन।।
वह था मसरूफ़ खाने में कि इतने, में दैत्य आया।
जब उस ने अपना खाना भीम को खाते हुए पाया।।
तो गुस्से में भभूका बन के फौरन भीम पर अपटा।
कभी घूसों से की खातिर तवाजे और कभी लपटा।।
मगर इक भीम था, जो खाना खाने से न बाज़ आया।
कि जिस की वजह से वह और भी गुस्से में झुंझलाया।।
फिर उसके बाद बरसाने लगा वह भीम पर पत्थर।
वह पत्थर गिर रहे थे भीम के नज़दीक धरती पर।।
यह सब होता रहा इस पर भी उस ने दम नहीं मारा।
तो फिर उस राक्षस का और भी कुछ चढ़ गया पारा।।
उखाड़ा इक तनावर पेड़ उस ने सीख-पा होकर।
चला उस पेड़ ही से मारने को वह खफ़ा होकर।।

खुद सर = जिंदगी

हमराह = साथ

रौगनी = घी में तला हुआ

भूका = भूखा

खातिर तवाजे =
मेहमान
नवाजी

सीख-पा = पिछले
पैरो पर खड़ा होनेवाला

کرو تیار بھوجن اور بتاؤ وہ جگہ چل کر
جہاں لینے بلیدان آتا ہے وہ راکشش خود سر

بھوکا भीम

غرض پھر گاؤں والے بھیم کے ہمراہ سب آئے
جہاں وہ راکشش تھا اس کا بھوجن ساتھ میں لائے
جگہ بتلا کے واپس ہو گئے سب ایک ہی چھن میں
فقط اک بھیم تنہا رہ گیا صحرا کے دامن میں
رکھا تھا سامنے ہی راکشش کا روغنی کھانا
کہ اس کھانے کی خوشبو نے بنایا اس کو دیوانہ
کئی دن سے نہ کھایا تھا بہت بھوکا تھا فیل افگن
وہ خود ہی بیٹھ کر اس کی جگہ کرنے لگا بھوجن
وہ تھا مصروف کھانے میں کہ اتنے میں دُرت آیا
جب اس نے اپنا کھانا بھیم کو کھاتے ہوئے پایا
تو غصے میں بھوکا بن کے فوراً بھیم پر چھیٹا
کبھی گھونسوں سے کی خاطر تو مٹا اور کبھی لپٹا
مگر اک بھیم تھا جو کھانا کھانے سے نہ باز آیا
کہ جس کی وجہ سے وہ اور بھی غصے میں جھنجھلایا
پھر اس کے بعد برس لے لگا وہ بھیم پر پتھر
وہ پتھر گر رہے تھے بھیم کے نزدیک دھرتی پر
یہ سب ہوتا رہا اس پر بھی اُس نے دم نہیں مارا
تو پھر اُس راکشش کا اور بھی کچھ چڑھ گیا پارا
اٹھا اک تناور سیڑ اس نے تیخ پیا ہو کر
چلا اس سیڑ ہی سے مارنے کو وہ خفا ہو کر

بھیم اور راکشش کا مقابلہ

بس اتنے میں لو فرصت پانچا تھا بھیم بھوجن
جھٹکنا جھاڑنا وہ گرد اٹھا اپنے واس سے
بڑھا پھر راکشش اک شور و نہنگامہ بپا کرنا
شجر کو دیکے چکر نعرہ ہائے عدسا بھرنا
قریب بھیم آکر پیڑ سے حملہ کیا اس پر
ادھر کم ٹھونک کر پھر بھیم بھی بس پل پڑا سپر
شجر کا دار خالی دیکے بدلا پیترا اپنا
بدل کر پیترا پھر بھیم اس انداز سے اچھلا
کہ اس کے ہاتھ ہی میں آگئی اس پیڑ کی االی
پھر اس کے بعد کیا تھا، دست دشمن رہ گیا خالی
شجر نو آچکا تھا بھیم کے مضبوط ہاتھوں میں
خیال آیا نہ گزرے وقت اب بیکار بالوں میں

شجر کو پھینک کر جھپٹا تو اس کو سانس نہ پایا
ملا یا ہاتھ اور کم ٹھونک کر چوڑے پر آیا

نوٹ: اس واقعہ کی حقیقت صرف اتنی ہے کہ بھیم اور راکشش میں مقابلہ ہوتا ہے اور بھیم راکشش کو ایسا پٹختا ہے

کہ وہ جاتا ہے۔ کشتی کے داؤں بیچ اضافی ہیں محض واقعہ کو دلچسپ بنانے کیلئے لکھے گئے ہیں۔ مزید

भीम और राक्षस का मुकाबला

फुरसत = छुटकारा,
मुक्ति,

नारा हाए रादसा =
विजली का कड़का

बस इतने में तो फुरसत पा चुका था भीम भोजन से।
झटकता झाड़ता वह गर्द, उठठा अपने दामन से।।

बढ़ा फिर राक्षस इक शोरो-हंगामा बपा करता।
शजर को देके चक्कर नारा-हाए रादसा भरता।।

करीबे-भीम आकर पेड़ से हमला किया उस पर।
झर खम ठोंक कर फिर भीम भी बस पिल पड़ा उस पर।।

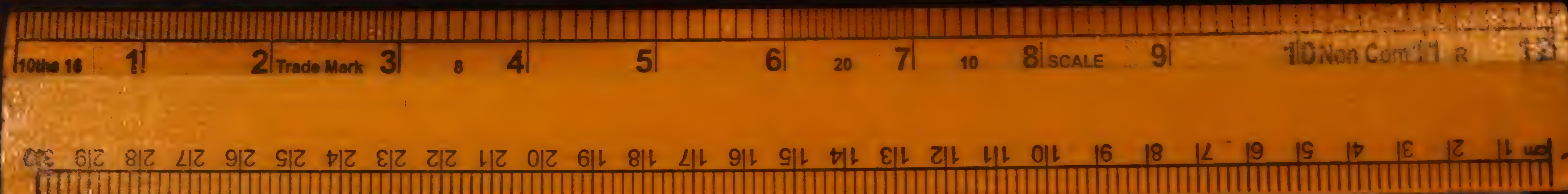
शजर का वार खाली देके बदला पैतरा अपना।
बदल कर पैतरा फिर भीम इस अंदाज़ से उछला।।

कि इसके हाथ ही में आगई उस पेड़ की डाली।
फिर उसके बाद क्या था ? दस्ते-दुश्मन रह गया खाली।।

शजर तो आचुका था भीम के मज़बूत हाथों में।
खयाल आया न गुजरे वक़्त अब बेकार बातों में।।

शजर को फेंक कर झपटा तो उसके सामने पाया।
मिलाया हाथ और खम ठोंक कर चौ डंडे पर आया।।

इस वाक्य की हकीकत सिर्फ़ इतनी है कि भीम और राक्षस में मुकाबला होता है। और भीम राक्षस को ऐसा पटखता है कि वह मर जाता है। कुश्ती के दावें पेच इजाफी है। महज़ वाक्य को दिलचस्प बनाने के लिए लिखे गए हैं। फ़रोग



کوشتی کے داوے پہچ

مجنن گردن پہ اس کے تھاپ دی اور خییچ کر دیکھا
 بتوتا دے کے ایک ہلکا سا، دستی خییچنا چاہا ۱۱
 مگر یہ بھیم کی کوشش نہ مطلق کام جب آئی
 تو فوئن ایک ہونر نے جھن میں لے لی اس کے اگڑائی ۱۱
 مگر وہ راکشش بھی کم نہ تھا ہتیار اور شاطر
 فوئن-کوشتی کا ایک چالاک لڑکھٹا تھا اور ماہر ۱۱
 ابھی تک بھیم کا اک داوے پر ہی زور تھا سارا
 اچھر مدد-مکابیل نے کلا جنگ اس طرح مارا ۱۱
 بجلت جھک کے پہلے ہاتھ ڈالنا ناگ کے اندر
 کماں کرنا ہوا سر نک وہ لایا بھیم کو آخر ۱۱
 مگر فوئن میں سے توڑ کر دی، ماہر فن نے
 پھر اس کے بعد پوڑ پوڑے پہ دونوں جھوٹ کر آئے
 کبھی انٹھی لگائی اور کبھی کھینچا کسی نے پٹ
 کبھی ماری کسی نے ان میں سے دھوبی پچھاڑیسی
 کہ منکے ریڑھ کے ڈھیلے پڑے اور پڑیاں چٹخیں
 یونہی ہوتی رہی زور آزمائی دونوں شیروں میں

مجنن = فوئن

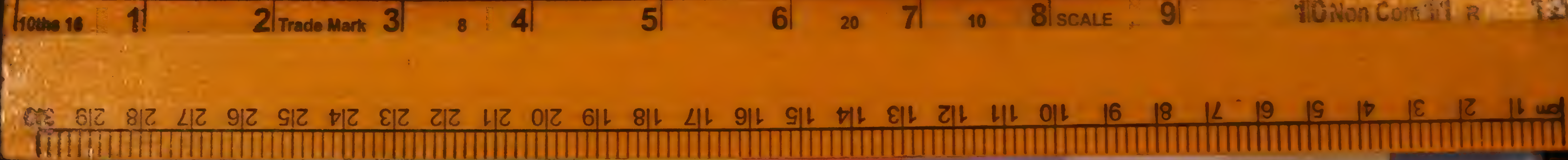
موتلک = کینکول

شاطر = چالاک

بوزجنت = تہی کے ساتھ

کشتی کے داوے پہچ

مجاگردن پہ اس کے تھاپ دی اور خییچ کر دیکھا
 بتوتا دے کے ایک ہلکا سا دستی کھینچنا چاہا
 مگر یہ بھیم کی کوشش نہ مطلق کام جب آئی
 تو فوئن ایک ہونر نے زمین میں لی اس کے اگڑائی
 مگر وہ راکشش بھی کم نہ تھا ہتیار اور شاطر
 فوئن کشتی کا اک چالاک لڑکھٹا تھا اور ماہر
 ابھی تک بھیم کا اک داوے پر ہی زور تھا سارا
 اچھر مدد مقابل نے کلا جنگ اس طرح مارا
 بجلت جھک کے پہلے ہاتھ ڈالنا ناگ کے اندر
 کماں کرنا ہوا سر نک وہ لایا بھیم کو آخر
 مگر فوئن میں سے توڑ کر دی، ماہر فن نے
 پھر اس کے بعد پوڑ پوڑے پہ دونوں جھوٹ کر آئے
 کبھی انٹھی لگائی اور کبھی کھینچا کسی نے پٹ
 کبھی ماری کسی نے ان میں سے دھوبی پچھاڑیسی
 کہ منکے ریڑھ کے ڈھیلے پڑے اور پڑیاں چٹخیں
 یونہی ہوتی رہی زور آزمائی دونوں شیروں میں



یکایک بھیم نے پھر ایسی ماری بھر کے ملتان کی
کماں کھا کر گرائیں سر کے بل وہ دشمن جانی
کہ گرتے ہی سر اس کا اک بڑے پتھر سے ٹکرایا
اور اس کے بعد اس کم بخت کا بھیجا نکال آیا
کچھ عرصہ بعد راکشس نے اپنا دم توڑا
نسکت آہ بھرتا عالم فانی سے منہ موڑا

آلہ-فانی = ختم
ہو جانے والی دنیا

بھیم کی واپسی اور مشورے

مراجب راکشس تو بھیم بھی خست ہوا بن سے
خوشی سے قص کرتا جھوٹا صحرا کے دامن سے
دہ گھرا آیا تو اس کو دیکھ کر سب خوش ہوئے بھائی
مے فرط محبت سے خوشی سے آنکھ بھرائی
پھر اس کے بعد شفق والدہ سے اپنی وہ بولا
بہت ہی راز دارانہ طریقے سے دہن کھولا
زیادہ دن کسی بھی اک جگہ رکن نہیں بہتر
مرامشا ہے ہم آباد ہوں پنجپال میں جا کر
خیال بھیم سے سب متفق ہو کر بھر فرمت
طے منزل بہ منزل جانب پنجپال باعجلت

۱۔ پانڈو نے یہ سفر ۱۶ (سولہ) دن میں طے کیا۔ مہا کو، کولال کے گھر چھوڑ کر پانچوں بھائی سوئے میں پہنچے

مرا جب راکشس تو بھیم بھی رخصت ہوا بن سے
خوشی سے رکش کرتا بھماتا سہرا کے دامن سے

وہ घर آیا تو उस को देखकर सब खुश हुए भाई।
मिले फर्ते-मोहब्बत से, खुशी से आँख भर आई।

फिर उसके बाद मुशफिक वालिदा से अपनी वह बोला।
बहुत ही राजदाराना तरीके से दहन खोला।

ज्यादा दिन किसी भी इक जगह रुकना नहीं बेहतर।
मेरा मंशा है हम आबाद हों पंचाल में जाकर।

खयाले-भीम से सब मुत्तफिक हो कर बसद फरहत।
चले मंजिल व मंजिल जानिबे-पंचाल बा-उजलत।

रुखसत = विदा होना

पांडव ने यह सफर १६ (सोला) दिन में तै किया। मों को, "कुलाल" के घर छोड़ कर पाँचों भाई स्वयंवर में पहुँचे।



سوگند

یعنی

جشن انتخاب شوہر

स्वयंवर

यानी जश्न
इन्तेखाबे-शौहर



سر جِ مِیْنِ پَنچال مِں سویَں وَر کی تَیاریاں

اِک اُرسی با دِ پاڈِو سرحدِ پَنچال مِں پھُڄے |
خوشی سِے کار-گاہِ نِک-اُو-فُڄ-فَال مِں پھُڄے ||
اُسی دِن شہر مِں راجا دِرو پَد نِے بَڙی اُجَمَت |
دِیا تَر تِی ب شہرِ کُڄلَا مِں جَشنِے-با-بَر کَت ||
نِشا ت-اُو-کَہ مِں ڈُبا دُا ہر اِک مَنجَر تَا |
بہُت ہِی شُ ب غِڈی مِں راج کُنیا کا سَویَں وَر تَا ||
وہاں ہر دِش سِے جانا بَڑ شہر اُکے کُے تَہ |
تَمَنّا اُڄوں کا جِو تُو فَا ن اُپنِے دِل مِں لَآ تَہ ||
کُڄر کِے سا تَہ راجِے ادر جہا راجِے تَہ مَکُں |
لَگا تَا با قَرنِیہ سارے راجاؤں کا سَہا سَن ||
دِہیں کُچھ بَرہن اِک سَمَت بَٹھ تَہ جاناؤں پَر |
اُنہیں کِے سا تَہ پاڈِو بَہی راجِے تَہ جاناؤں پَر ||
دِرو تَہ، کَر شَن، کَر پَہ ادر پَتا مَہ، کَر ن دِرو دِہن |
سَہی تَشرِیف فرما تَہ بَٹھائے اِک اک آ سَن ||

اُرسی = مَرد دت
کار گاہِ نِک-اُو-فُڄ-فَال = مَرد دت
-فَال = سَویَں وَر کا
شُ ب سَیان

نِشا ت-اُو-کَہ = خوشی
اُور نِشا

جَونا جَ = جانا سِے خَولنے
والے

ہُسنِے-پَنچالِی کا کَل مِی اُکس

ی کایک اِک جانی ب سِے سَہا مِے بَرک لَہرا دِ |
خِیرا مِے نا جَ فرما تَہ دُا اِک نا جَ نِی آ دِ ||

بَرک = بَی جلی
نا جَ نِی = کُنیا

۱) پَنچال نَگر کا دُوسرا نام

سَری مِں پَنچال مِں سَوی مَہ کی تَیاریاں

اِک عَمر بَی پانڈو سَری پَنچال مِں جَہنچے |
نوشی سِے کار گاہِ نِک و سَری خِ فال مِں جَہنچے
اُسی دِن شہر مِں راجِے دِرو پَد نِے با عَظمت |
دِیا تَر تِی ب شہرِ کُڄلَا مِں جَشنِے با بَر کَت
نَشا ط و کِیف مِں ڈُبا ہوا ہر اِک مَنظر تَہ |
بہُت ہِی شَہ جَ گُٹھی مِں راج کُنیا کا سَوی مَہ تَہ
وہاں ہر دِش سِے جانا بَڑ شہر اُکے کُے تَہ |
تَمَنّاؤں کا جِو طو فَا ن اُپنِے دِل مِں لَکے تَہ
کُڄر کِے سا تَہ راجِے ادر جہا راجِے تَہ مَکُں |
لَگا تَا با قَرنِیہ سارے راجاؤں کا سَہا سَن
دِہیں کُچھ بَرہن اِک سَمَت بَٹھ تَہ جاناؤں پَر |
اُنہیں کِے سا تَہ پاڈِو بَہی راجِے تَہ جاناؤں پَر
دِرو تَہ، کَر شَن، کَر پَہ ادر پَتا مَہ، کَر ن دِرو دِہن |
سَہی تَشرِیف فرما تَہ بَٹھائے اِک اک آ سَن

حُسنِ پَنچالِی کا قَل مِی عَکس

ی کایک اِک جانب سِے سَہا مِں بَرق لَہرا دِ |
خِرام نا ز فرما تَہ ہوے اِک نا ز نِی آ دِ
سَری پَنچال نَگر کا دُوسرا نام

لچکتی چال، مستانا ریش میں سیکڑوں فتنے
مچل کر رہ گئے عشاق کے سینوں میں لکنتے

خیرامے-ناز سے پامال تھا لالا کا پیرا ہن
ہیناई پا سے، فڑیے-مخملی یا اور شولا جن

درخشائے-آریجے-گولگڑی پہ بول خواہ ہو گس
وہ کجلائی ہوئی آنکھیں تھیں یا پتلا ہوا سب دو

خامیہ طاقت ابرو روزن تو سین میحسانہ
لب لعل کی قاشوں میں دردناں کی تابانی

جبین صوفشاں پر شمع گل رنگ کیا کہنے
سرشتہ مشک و عنبر فام زلفوں کا وہ بل کھانا

ہلکتی سانس کا وہ زیر دم تو بہ شکن توبہ
وہ پیکر جس کا قامت شاخ گل سزم و نازک تھا

بشان درباری، لے کے درمالا برہم جرم
دروپد کینیا وہ شہرہ آفاق پنچالی

مہکتی سانس کا وہ جہر-آو-بم توبا شیکن توبا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

وہ پیکر جس کا قامت شاخ گل سزم و نازک تھا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

بشان درباری، لے کے درمالا برہم جرم
دروپد کینیا وہ شہرہ آفاق پنچالی

مہکتی سانس کا وہ جہر-آو-بم توبا شیکن توبا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

وہ پیکر جس کا قامت شاخ گل سزم و نازک تھا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

بشان درباری، لے کے درمالا برہم جرم
دروپد کینیا وہ شہرہ آفاق پنچالی

उष्णाक = प्रेमियों

खरामे नाज़ = गर्व की चाल

हिनई पा = मेहंदी लगे पैर

फड़ें मुखमली = मुखमल

की ज़मीन

शोला जून = आग की तरह

लाल

दरखशाँ आँजें गुलगूँ पे चाल

खाए हुए गेसू = चमकने

हुए लाल गालों पर बिखरी

हुई बालों की लटे

खमीदा ताके अबू रोज़ने-

कौसेने मैखाना = कमान की

तरहा भवे, जैसे शराब खाने

की खिड़कियाँ

लबेलाली की काशों में दुरे

दनदों की ताबानी = लाल

होटों के दरमियान मोती

समान चमकते हुए दांत

जबीने जौ फिशों पर

कशकए-गुलरंग = चमकते

माथे पर फूल के रंग का

टिका

सरिस्ता = गुन्घा हुआ

मुख व अंबर = सुगंध

जेर व बम = ऊँच नीच

पैकर = पुतला

कामत = कद

शाखेगुल = फूल की डाली

हरगाम = हर कदम

ब रोबे-हुस्न = सुन्दरता का

दबदबा

لچکتی چالِ مستانہ روش میں سینکڑوں فتنے
خرام ناز سے پامال محبت لالہ کا پیرا ہن

درخشاں عارض ملکوں پہ بل کھائے ہوئے گیسو
وہ کجلائی ہوئی آنکھیں تھیں یا پتلا ہوا سب دو

خمیدہ طاقت ابرو روزن تو سین میحسانہ
لب لعل کی قاشوں میں دردناں کی تابانی

جبین صوفشاں پر شمع گل رنگ کیا کہنے
سرشتہ مشک و عنبر فام زلفوں کا وہ بل کھانا

ہلکتی سانس کا وہ زیر دم تو بہ شکن توبہ
وہ پیکر جس کا قامت شاخ گل سزم و نازک تھا

بشان درباری، لے کے درمالا برہم جرم
دروپد کینیا وہ شہرہ آفاق پنچالی

مہکتی سانس کا وہ جہر-آو-بم توبا شیکن توبا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

وہ پیکر جس کا قامت شاخ گل سزم و نازک تھا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

بشان درباری، لے کے درمالا برہم جرم
دروپد کینیا وہ شہرہ آفاق پنچالی

مہکتی سانس کا وہ جہر-آو-بم توبا شیکن توبا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

وہ پیکر جس کا قامت شاخ گل سزم و نازک تھا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

بشان درباری، لے کے درمالا برہم جرم
دروپد کینیا وہ شہرہ آفاق پنچالی

مہکتی سانس کا وہ جہر-آو-بم توبا شیکن توبا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

وہ پیکر جس کا قامت شاخ گل سزم و نازک تھا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

بشان درباری، لے کے درمالا برہم جرم
دروپد کینیا وہ شہرہ آفاق پنچالی

مہکتی سانس کا وہ جہر-آو-بم توبا شیکن توبا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

وہ پیکر جس کا قامت شاخ گل سزم و نازک تھا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

بشان درباری، لے کے درمالا برہم جرم
دروپد کینیا وہ شہرہ آفاق پنچالی

مہکتی سانس کا وہ جہر-آو-بم توبا شیکن توبا
مسامیری-گولے-رخسار اور چاہے-جکون توبا

स्वयंवर की शर्त और शैह-जोरों के हौसले

वही थी वाम पर गरदिश में इक लटकी हुई मछली।
रखी थी सामने ही इक कमाँ फौलाद की भारी॥
द्रौपद ने लगा रखी थी शर्त ऐसी स्वयंवर की।
कि हिम्मत ही न बढ़ती थी किसी मर्दे-दिलावर की॥
सरे-महफिल दिखाए कौन आकर तीर अंदाजी।
निशाना चप्पे-माही को, बना कर जीत ले बाजी॥
यकीनन आजमाईश थी वहाँ हर मर्दे-रामी की।
इक ऐसे शब्द भेदी सूरमा नामी-गरामी की॥
वहाँ थे बीसियों ऐसे कि जिनके दिल में जुरअत थी।
निशाना मारने के फन में कुदरत और महारत थी॥
मगर हिम्मत न होती थी कि उठ कर सामने आएँ।
सरे-दरबार, जौहर तीर अन्दाजी के दिखलाएँ॥
मगर दोचार दस ऐसे भी थे जो हौसला करके।
उठे आसन से अपने क़ल्ब में यह वलवला भरके॥
कि हम शैह-जोर हैं, कौसे-गिराँ को हम उठाएँगे।
यकीनन चप्पे माही को निशाना हम बनाएँगे॥

वाम = खिड़की
गरदिश = घुमती हुई

आजमाईश = परीक्षा
रामी = तीरअंदाज

कुदरत = काबू
महारत = हुनरमंदी

क़ल्ब = दिल
वलवला = साहस
शैह-जोर = वलवान

सूरमाओं की जोर आजमाई

यह करके फैसला इक नौजवाँ फिर सामने आया।
तमन्नाए विसाले-जाने-जाना-ना ने उकसाया॥
ब हसरत जाएजा लेकर उठाया कौसे-आहन को।
दिया हँसने का मौका आप उस ने अपने दुश्मन को॥

कौसे आहन = लोहे की
कमान

सोभिर की شرط اور شہ زوروں کے حوصلے

دہیں تھی بام پر گردش میں اک لٹکی ہوئی پھولی
درود پنے لگا رکھی تھی شرط ایسی سوभिर کی
سر محفل دکھائے کون اک ترسیر اندازی
یقیناً آزمائش تھی وہاں ہر مرد راجی کی
وہاں تھے بیسیوں ایسے کہ جنکے دل میں جرات تھی
مگر ہمت نہ ہوتی تھی کہ اٹھ کر سامنے آئیں
مگر دو چار دس ایسے بھی تھے جو حوصلہ کر کے
کہ ہم شہ زور ہیں قوس گراں کو ہم اٹھائیں گے
رکھی تھی سامنے ہی اک کمان فولاد کی بھاری
کہ ہمت ہی نہ بڑھتی تھی کسی مرد دلاور کی
نشانہ چشم باہی کو بنا کر حیت لے بازی
اک ایسے شہید بھیدی سورمانا می گرامی کی
نشانہ مارنے کے فن میں قدرت اور ہمت تھی
سر دربار جو ہر ترسیر اندازی کے دکھلائیں
اٹھے آسن سے اپنے قلب میں یہ دلاور بھر کے
یقیناً چشم باہی کو نشانہ ہم بنائیں گے

سورماؤں کی زور آزمائی

یہ کر کے فیصلہ اک نوجواں پھر سامنے آیا
بہسرت جائزہ لے کر اٹھایا قوس آہن کو
تنائے وصال جانِ جانانہ نے اُکسایا
دیا ہنسنے کا موقع آپ اس نے اپنے دشمن کو



کماؤں کو جب ہڈی مٹلک نہ جوبش اس دلاور سے
پشہماں ہو کے آخیر لٹ آیا وہ سب سے

فیر کے بعد اٹھا دوسرا اک نامور راجی
بہ شکل قوس آہن کو وہ تھوڑا سا اٹھا پایا

فعل ہو کر تھوڑا پس وہاں سے قیل تن راجی
پھر اس کے بعد لے اک سے اک بڑھ کر جواں تہت

مگر انجام عزم و جرات و ترکیب یہ نکلا
کوئی جوبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا

کماں اٹھ بھی گئی جوں توں کسی اک نبت اور سے
اگر قسمت سے کوئی قوس آہن کو پڑھا پایا

مگر انجام عزم و جرات و ترکیب یہ نکلا
کوئی جوبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا

کماں اٹھ بھی گئی جوں توں کسی اک نبت اور سے
اگر قسمت سے کوئی قوس آہن کو پڑھا پایا

مگر انجام عزم و جرات و ترکیب یہ نکلا
کوئی جوبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا

کماں اٹھ بھی گئی جوں توں کسی اک نبت اور سے
اگر قسمت سے کوئی قوس آہن کو پڑھا پایا

مگر انجام عزم و جرات و ترکیب یہ نکلا
کوئی جوبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا

بھیم کی تقریر

ہوئے ناکام واپس جب وہ سارے آہنی پیکر
دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر

دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر
دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر

دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر
دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر

دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر
دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر

جوبش = ہلنا/دھنکنا
کرنے

سدر = سینا

چمے-ماہی = مچھلی کی
اویں

پیشماں ہو کے آخر لٹ آیا وہ سب سے
بڑھامت کماں جرات سے فوراً ہنر راجی

پسینہ جس کے کارن اس کے ماتھے پر جھلک آیا
کیا پھر تھوڑے قوس آہن کو وہ تھوڑا سا اٹھا پایا

فعل ہو کر تھوڑا پس وہاں سے قیل تن راجی
پھر اس کے بعد لے اک سے اک بڑھ کر جواں تہت

مگر انجام عزم و جرات و ترکیب یہ نکلا
کوئی جوبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا

کماں اٹھ بھی گئی جوں توں کسی اک نبت اور سے
اگر قسمت سے کوئی قوس آہن کو پڑھا پایا

مگر انجام عزم و جرات و ترکیب یہ نکلا
کوئی جوبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا

کماں اٹھ بھی گئی جوں توں کسی اک نبت اور سے
اگر قسمت سے کوئی قوس آہن کو پڑھا پایا

مگر انجام عزم و جرات و ترکیب یہ نکلا
کوئی جوبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا

کماں اٹھ بھی گئی جوں توں کسی اک نبت اور سے
اگر قسمت سے کوئی قوس آہن کو پڑھا پایا

مگر انجام عزم و جرات و ترکیب یہ نکلا
کوئی جوبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا

بھیم کی تقریر

ہوئے ناکام واپس جب وہ سارے آہنی پیکر
دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر

دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر
دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر

دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر
دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر

دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر
دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں کے پیکر

उचٹتی सी نجر फिर भीम ने चारों तरफ डाली।
 नजर आई न मसनद सूरमाओं से उसे खाली॥
 किया फिर हाजरीने-बज्म-रंगी से खिताब उस ने।
 अनोखे ढंग से तकरीर की इक ला जवाब उसे ने॥
 पुकारा क्षत्रियों के कारनामों और गुजाअत को।
 उभारा उन की जुरअत को, दिलाया जोश गैरत को॥
 कहा उसने कि ऐ चखे-गुजाअत के महो-अंजुम।
 तुम्हें क्या सांप ने सूचा है, क्यों बैठे हो यूँ गुम सुम॥
 उठो, आओ, दिखाओ ऐ जवाँ मरदो जवाँ मरदी।
 तुम्हारे कल्ब-फौलादी में किस ने बुजदिली भरदी॥
 बताओ तो, हुए हैं किस लिए बाजू तुम्हारे शल।
 कहाँ छोड़ आए अपनी ताकतें तुम, क्या हुआ कस बल॥
 तुम्हारी वह हमैयत, और गैरत, क्या हुई आखिर।
 वह देरीना गुजाअत और जुरअत क्या हुई आखिर॥
 वही तुम हो जो कल तूफान का रुख मोड़ देते थे।
 गरूरे-मौजे-बहरे-बेकरों को तोड़ देते थे॥
 तुम्हारी ठोकरोں में थी बुलंदी कोह-सारों की।
 तुम्हारे पाँव पर कल तक जबी थी चाँद तारों की॥
 कहाँ है सूरमा असलाफ की वह दास्तों आखिर।
 बताओ क्या हुए वह किस्सए-तेग-ओ-सना आखिर॥
 मैं तुम से पूछता हूँ इसकदर क्यों बौखलाए हो।
 नहीं है तुम में जब دم-खम तो क्यों मैदों में आए हो॥
 तुम्हें रोका न क्यों आखिर तुम्हारे उन मुशीरों ने।
 यहाँ आने दिया किस वास्ते तुम को वज़ीरों ने॥
 सरे मैदों पशेमानी से अब नज़रें चुराते हो।
 क्यों अपने खानदों के नाम पर बट्टा लगाते हो॥
 उठो जाओ पहन लो साड़ियाँ अब है यही बेहतर।
 न बैठो बुजदिलों की तरह अब तुम इन मचानों पर॥

हाजरीने = उपस्थित

गरूरे-मौजे-बहरे-बेकरों
 = विशाल समुद्र की
 लहरों का धमन
 कोहमारों = पहाड़ों

असलाफ = प्राचीन काल के लोग

چٹتی سی نظر پھر بھیم نے چاروں طرف ڈالی
 کیا پھر حاضرین بزم رنگیں سے خطاب اس نے
 پکارا چھتریوں کے کارناموں اور شجاعت کو
 کہا اس نے کہ اے چرخ شجاعت کے مدِ نجم
 اٹھو اُدھکاؤ اے جواں مرد و جواں مردی
 بتاؤ تو بے ہمتی کس لئے بازو تمہارے شل
 تمہاری وہ حمیت اور غیرت کیا ہوئی آخر
 وہی تم ہو جو کل طوفان کا رخ موڑ دیتے تھے
 تمہاری ٹوکروں میں تھی بلندی کوہ سارو کی
 کہاں ہے سورا اسلاف کی وہ داستانِ آخر
 میں تم سے پوچھتا ہوں اس قدر کیوں بول کھلا کہ
 تمہیں روکا نہ کیوں آخر تمہارے ان مشیروں
 سر میاں پشیمانی سے اب نظریں چراتے ہو
 اٹھو جاؤ پہن لو ساریاں اب ہے یہی بہتر
 نظر آئی نہ مسند سوراؤں سے اُسے خالی
 انوکھے ڈھنگ سے تقریر کی اک لاجواب اس نے
 اُبھارا ان کی جرأت کو دلیا جوش غیرت کو
 تمہیں کیا ساپ کے سونگھائی گویں بیٹھے ہویں گم
 تمہارے قلب فولادی میں کس نے بزدلی بھری
 کہاں چھوڑ آئے اپنی طاقتیں تم، کیا ہو کس بل
 وہ دیرینہ شجاعت اور جرأت کیا ہوئی آخر
 غرور میں بحر سب کراں کو توڑ دیتے تھے
 تمہارے پاؤں پر کل تک جیس تھی چاند تارو کی
 بتاؤ کیا ہوئے وہ قصہ تیغ و سنانِ آخر
 نہیں تم میں جب دم خم تو کیوں میاں میں آئے ہو
 یہاں آنے دیا کس واسطے تم کو وزیروں
 کیوں اپنے خاندان کے نام پر تہہ لگاتے ہو
 نہ بیٹھو بزدلوں کی طرح اب تم ان چٹانوں پر

یہ تو یہ چوڑیاں ہیں ان کو سینو اور گھر جاؤ
رہو اب چیلونوں کی چھاؤں میں باہر نہ تم آؤ
اگر کچھ شرم ہے تم میں تو پھر کیسی پشیمانی
کہ چلو بھر بہت کافی ہے مرنے کے لئے پانی

خطابت کا نیا اسلوب

یہ کہہ کر بھیم نے تفسیر کے انداز کو بدلا
پکڑ کر بازوئے آرجن کو بولا یہ برہمن ہے
ادھر دیکھو ادھر اے بزدلو کیوں سر جھکائے ہو
یہی دیکھو نشانہ چشم باہی کو بنائے گا
یہاں لیکن جلیل المرتبت کچھ ہستیاں بھی ہیں
نہیں ہے باخدا رے سخن ان کی طرف میرا
دروہ اور پیامہ قابل توقیر و عظمت ہیں
سب ان کی حریفی کا یہاں پیدا نہیں ہوتا
وہ اس عالم میں اس قوس گراں کو کیوں اٹھائیں گے
انہیں خود بھی گراں ہو گا حریف نوجوان بنا
یہاں موجود ہیں انکے علاوہ شیام توارہی

خطیبانہ اداسے اپنی پھیر آواز کو بدلا
مگر تم سب دانشمند ماہرے خوش فہم
حیلے برہمن کے سامنے کیوں منہ چھپائے ہو
تمہارے کالے منہ پر اور بھی کالک لگائے گا
گلا دیں جو پہاڑوں کو کچھ ایسی بھلیاں بھی ہیں
نہیں نے ان کی عظمت اور اتہاس سے منہ پھیرا
ضعیف العمر ہیں پھر بھی علمدار شجاعت ہیں
سو بکھر کے تقابل کی جسارت کا نہیں ہوتا
پشیمانی کا وہ خود کو نشانہ کیوں بنائیں گے
ضعیفی کے زمانے میں مذاق دوستاں بنا
یقیناً خوبصورت نوجواں ہیں کرشن گردھاری

خیتاوت کا نیا اسلوب

یہ کہہ کر بھیم نے تفسیر کے انداز کو بدلا
پکڑ کر بازوئے آرجن کو بولا یہ برہمن ہے
ادھر دیکھو ادھر اے بزدلو کیوں سر جھکائے ہو
یہی دیکھو نشانہ چشم باہی کو بنائے گا
یہاں لیکن جلیل المرتبت کچھ ہستیاں بھی ہیں
نہیں ہے باخدا رے سخن ان کی طرف میرا
دروہ اور پیامہ قابل توقیر و عظمت ہیں
سب ان کی حریفی کا یہاں پیدا نہیں ہوتا
وہ اس عالم میں اس قوس گراں کو کیوں اٹھائیں گے
انہیں خود بھی گراں ہو گا حریف نوجوان بنا
یہاں موجود ہیں انکے علاوہ شیام توارہی

خیتاوت = دروازے کا
پردہ

تکریر = भाषण
खतीबाना अंदा = उपदेश
देने के अंदाज में

जलील-उल-مرتबत =
आदरणीय पुरुष

तैकीर अजमत = बड़ाई
और आदर
जईफ-उल्-उम्र = बहुत
बुढ़ा
सबब = कारण



مگر وہ ایک عورت کے لئے اب اسقدر زحمت -
 کہ جب سولہ ہزار اور ایک سو کل آٹھ استریاں
 یہ زحمت وہ اٹھائے جس کو خواہش ہو ضرورت ہو
 مگر اس وقت اس جشن نشاط و کیف آگس میں
 وہ دیکھو وہ ہے بیٹھا بے حیا کورونے مثل میں
 بتائے کرن کس بندہ نے آخر تجھ کو اگس یا
 یہاں بیٹھا ہوا کانوں کے کندل کو ہلاتا ہے
 حیا ہوتی اگر تجھ میں زمیں میں گر ٹپا ہوتا

کرن کی جوابی تقریر

بتاؤ تو اٹھائیں بے ضرورت کس لئے کلفت
 ہیں انکے پاس تو کیوں اور یوں درد کا سماں
 جو محو رہا ہو جس کی شہوانی طبیعت ہو
 ہے شامل کرن جیسا سو شہوانی قایل میں
 بھگوئے اور بزدل سورما تہ زور کے دل میں
 نہ تعجب بازوں میں تیرے دم تو کیوں یہاں یا
 یہ کندل سچ بتا کیا تجھ کو غیرت بھی دلاتا ہے
 خزاں کے سوکھے پتوں کی طرح تو جھڑک گیا ہوتا

کرن کی جوابی تقریر

سنی جب کرن نے یہ طنزیہ تقریر دشمن سے
 کہا اس نے کہ اب تو بند کر مہفوات کو اپنی
 بھری محفل میں لگا کر اگیا ہے میری غیرت کو
 نہ بزدل ہوں نہ بزدل دوستوں کا ساتھ دیتا ہوں
 سہ دیکھو ہمارا بھارت بھاشا

جہمات = کھٹ
 کولفٹ = تکنیکی

خواہش = ڈھنڈا

خیزاں = پتھڑ کی خیز

تہجیا = چھبنے والی



मुझे ताना न दे तू बुजदिली का मुझ में हिम्मत है।
 मेरे मजबूत पंजों में, बड़ी कुव्वत है ताकत है॥
 अगर चाहूँ तो जबड़ा चीर डालूँ शेर-शरजह का।
 जवाब आसाँ है मेरे पास तेरे तर्जे-हरजह का॥
 पहाड़ों को कुचल देने की मुझ में अब भी कुव्वत है।
 तेरे जैसों को चुटकी में मसल देने की ताकत है॥
 यह कह कर कर्ण अखिर जानिबे-कौसे-गिराँ लपका।
 बिफर कर शेर की मानिन्द वह मर्दे-जरी अपटा॥
 यकायक ज़मज़मा खेज़ एक जानिब से सदा उठ्ठी।
 फ़जाए-जशने-रंगी नगमगी से गुनगुना उठ्ठी॥
 नज़र यकवारगी उस समत उठ्ठी अहले-महफिल की।
 जिधर से ज़मज़मा रेज़ी हुई थी माह कामिल की॥
 खिरामे-नाज़ फ़रमाते हुए पंचाल की दुखतर।
 करीबे-कौस आई माह पैकर गैरते-नय्यर॥
 मुख़ातिब कर्ण से होकर कहा यूँ बे-हिजाब उस ने।
 किया अंदाज़े-शाहाना तमासुक से खिताब उस ने॥
 जो गैरत तुझ में हो, तीरो-कमाँ से दूर ही रहना।
 न छूना बान को कौसे-गिराँ से दूर ही रहना॥
 तू है इक नुतफ़ए-बे-अस्त, तेरी इस क़दर हिम्मत।
 स्वयंवर के पवित्र स्थान पर आने की यह ज़ुरअत॥
 किसी हालत में भी इसका तुझे तो हक़ न था हासिल।
 यकीनन तू शरीके जशन होने के न था काबिल॥
 यह सुनते ही गिरी इक कर्ण पर बिजली सी लहरा कर।
 घड़ों पानी सरे-दरबार गोया पड़ गया उस पर॥
 पसीना मारे गैरत के निकल आया सरे-मैदाँ।
 नज़र आने लगी थी ज़िन्दगी से मौत उसे आसाँ॥
 हुआ वापस वहाँ से वह, हुई बेहद पशेमानी।
 न इज़ज़त पर कभी उसके फिरा था इस तरह पानी॥

जानिबे-कौसे गिराँ =
 भारी कमान की ओर

ज़मज़मा खेज़ = मधुर
 संगीत

हक़ = अधिकार

जेहे طغنه ندے تو بز دلی کا جھمیس بہت ہے
 اگر چاہوں تو جبراً چیسے ڈالوں شیرِ شرزہ کا
 پہاڑوں کو کچل دینے کی جھمیس اب بھی قوت ہے
 یہ کہہ کر کرّانِ آخر جانبِ قوسِ گراں لپکا
 یکایک زمرہ خیر ایک جانب سے صدا اٹھی
 نظریکِ بارگی اس سمت اٹھی اہلِ محفل کی
 خرامِ ناز فرماتے ہوئے پنجال کی دختر
 فاطمہ کرّان سے ہو کر کہا یوں بے حجاب سے
 جو غیرت تجھ میں ہو، تیرو کماں سے دُور ہی رہنا
 تُو ہے اک لفظِ بے اصل تیری اس قدر بہت
 کسی حالت میں بھی اسکا تجھے تو حق نہ تھا حاصل
 یہ سنتے ہی گری اک کرّان پر بجلی سی لہرا کر
 پسینہ مائے غیرت کے نکل آیا سرِ میداں
 ہوا واپس وہاں سے وہ ہوئی بے حد پشیمانی
 مرے مضبوط پنوں میں بڑی قوت ہے طاقت ہے
 جواب آساں ہے میرے پاس تیرے طرزِ مرزہ کا
 ترے جیسوں کو کچل دینے کی طاقت ہے
 پھر کر شیر کی مانند وہ مردِ جری جھپٹا
 فضا کے بشنِ رخسِ نغمی سے گنگنا اٹھی
 جدھر سے زمرہ ریزی ہوئی تھی ماہِ کامل کی
 قریبِ قوسِ آئی ماہِ پیکرِ غیرتِ نیر
 کیا اندازِ رشتہ بانہ تھامسک سے خطاب سے
 نہ چھو نابان کو قوسِ گراں سے دُور ہی رہنا
 سو بھر کے پوچھتا استعان پر آنے کی یہ جرأت
 یقیناً تو شریکِ جیشن ہونے کے نہ تھا قابل
 گھوڑوں پانی سردِ دربار گویا پڑ گیا اس پر
 نظر آنے لگی تھی زندگی سے موت اسے آساں
 نہ عزت پر کبھی اسکے پھر تھا اس طرح پانی

ہوا سے کرن جیسے سورما کی گردنِ فائق !!!
جھکی ایسی کہ دوبارہ نہ اٹھنے کے رہی لائق

ارجن کی کامیاب تیر اندازی

ہوا واپس وہاں سے کرن ارجن کی باری تھی
کما تھی تیر تھا اور اس کی اپنی پختہ کاری تھی
نظر اک بار ڈالی جانبِ مسند نشیں اس نے
کسا پچکا کر کا اور چڑھالی آستیں اس نے
بڑھایا ہاتھ، تھامی قوس پھر مردِ دل اور نے
اٹھایا ایک ہی جھٹکے میں اس کو نجات آور نے
چڑھائی قوس اس کے بعد وہ پنوں کے بل بیٹھا
یہی بیٹھ ہی بیٹھ اس طرح پہلو بدل بیٹھا
کہ اس کا ایک گھٹنا تک گیا اس طرح دھرتی پہ
کہ بس بجز نگ جی بیٹھے ہوں جیسے گرز کو لیکر
وہیں بیٹھے ہوئے اس نے کہاں میں تیر کو جوڑا
نماں کھینچی نسانہ باندھ کر پھر تیر کو چھوڑا
کہاں سے تیر چھوڑا اور اُدھر بیٹھا نشانے پر
ہنر دکھلا دیا ارجن نے اپنا وقت آنے پر

ورملا کی رسم

نشانہ لگتے ہی کوروں کے تلوں سے زین نکلی
اُدھر سب کے لبوں اک صلے آفریں نکلی
اُدھر گھنٹیاں م کے لب پر تبسمِ رقص فرماتھا
اُدھر فرطِ پشیمانی سے سر کو روں کا نیچا تھا

ارجن کی کامیاب تیر-اندازی

ہوا سے کرن جیسے سورما کی گردن-فایک !!!
جھکی ایسی کہ دوبارہ نہ اٹھنے کے رہی لائق !!!
نظر اک بار ڈالی جانبِ مسند نشیں اس نے
کسا پٹکا کمر کا، اور چڑھالی آستیں اس نے
بڑھایا ہاتھ، تھامی قوس، فیر مہرے-دلاور نے
اٹھایا ایک ہی جھٹکے میں، اس کو بخت-آور نے
چڑھائی قوس اس کے بعد وہ پنوں کے بل بیٹھا
یہی بیٹھ ہی بیٹھ اس طرح پہلو بدل بیٹھا
کہ اس کا ایک گھٹنا تک گیا اس طرح دھرتی پہ
کہ بس بجز نگ جی بیٹھے ہوں جیسے گرز کو لیکر
وہیں بیٹھے ہوئے اس نے کہاں میں تیر کو جوڑا
نماں کھینچی نسانہ باندھ کر پھر تیر کو چھوڑا
کہاں سے تیر چھوڑا اور اُدھر بیٹھا نشانے پر
ہنر دکھلا دیا ارجن نے اپنا وقت آنے پر

ورملا کی رسم

نشانہ لگتے ہی کوروں کے تلوں سے زین نکلی
اُدھر سب کے لبوں سے ایک صدا-آفریں نکلی !!!
اُدھر غنشیام کے لب پر تبسمِ رقص فرماتھا
اُدھر فرطِ پشیمانی سے سر کو روں کا نیچا تھا

فایک = اٹھی ہوئی

پورٹاکاری = ہنرمندی

مسن نہ نہی = آراستن
پر بٹھے ہوئے لوگ

بخت-آور = भाग्य वान

تبسمِ رقص فرما =
ہوٹوں پر ہنسی کا ناچ
فرتے-پشیمانی = खेद

رہا کچھ دیر تک غوغا صلاے داد دتیس کا
خوشی سے ایک طبقہ مجھوم اٹھا جشن رنگیں کا

ہوا پھر غفلت اشرف کا کچھ شور کم آخر

دروپد کینیا وہ ماہ و شش پنچال کی دختر

قریب ارجن کے قورٹا ناز فرماتی ہوئی پسپھی

نجیدہ تھیں جو پلکیں اٹھ گئیں بخوف سی ہو کر

ابھی شونی تبسم کی تمایاں تھی حسین لب سے

بشکل قوس درمالا تھی اسکے ہاتھیں اب تک

انہیں تھیں قوس کے مانند اوپر مرمیں باہیں

ہوئے مہبوت دونوں اس طرح سکے سا طاری تھا

منگاہوں کے فسوں نے کائنات ہوش کو ٹوٹا

کہ ارجن کے دہان خشک سے بے وقت تھرا کر

نوشی سے ایک طبقہ مجھوم اٹھا جشن رنگیں کا

دروپد نے اشرف سے کیا پھر مدعا ظاہر

بڑھی ہاتھوں میں درمالا لے انوار کی سپیکر

بڑی ہی دلربائی سے وہ شرماتی ہوئی پسپھی

نظر ٹھرائی دونوں کی تبسم اگیا لب پر

کہ قورٹا مرمیں باہیں تھیں اک حسن اغرب سے

رخ ارجن پہ تبسم ہا ہوش مرکور تھی بے شک

منگاہوں دلوں تک کھل گئی تھیں پیار کی راہیں

زبے ہوشی کا عالم تھا نہ وقت ہوشیاری تھا

طلسم سرخوشی ان کا اچانک اس طرح ٹوٹا

سبک کر ایک آم سر دیکھی دل سے گھبرا کر

ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے

ادھر ہینا دی پنچپالی نے درمالا محبت سے

ہوا فیر مہفیلے-اشراف کا کچھ شور کم آخر
دروپد نے اشارے سے کیا فیر مہفیلے-اشراف کا کچھ شور کم آخر

دروپد کینیا وہ ماہ و شش پنچال کی دختر
قریب ارجن کے قورٹا ناز فرماتی ہوئی پسپھی

نجیدہ تھیں جو پلکیں اٹھ گئیں بخوف سی ہو کر
ابھی شونی تبسم کی تمایاں تھی حسین لب سے

بشکل قوس درمالا تھی اسکے ہاتھیں اب تک
انہیں تھیں قوس کے مانند اوپر مرمیں باہیں

ہوئے مہبوت دونوں اس طرح سکے سا طاری تھا
منگاہوں کے فسوں نے کائنات ہوش کو ٹوٹا

کہ ارجن کے دہان خشک سے بے وقت تھرا کر
ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے

ادھر ہینا دی پنچپالی نے درمالا محبت سے
ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے

ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے
ادھر ہینا دی پنچپالی نے درمالا محبت سے

ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے
ادھر ہینا دی پنچپالی نے درمالا محبت سے

ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے
ادھر ہینا دی پنچپالی نے درمالا محبت سے

ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے
ادھر ہینا دی پنچپالی نے درمالا محبت سے

ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے
ادھر ہینا دی پنچپالی نے درمالا محبت سے

ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ جلتے
ادھر ہینا دی پنچپالی نے درمالا محبت سے

گایا = شور
سداے داد-او-تہسیں
= مبارک باد کی
آوازیں

مہفیلے اشراف =
آدرشیہ پوروں کا
مہل
ماہ و شش = چاند کی
مانند

خمدیہ = مڑی ہوئی
تہسوم = ہنسی
لب = ہونٹ
ہنسی لب = ہنسنے والی
مرمری باہے = سونے
مرمر کے سفید پتھر
کی طرح ہنسنے والی
وہش کے کوس = کمان
کے جیسا
رہ = چہرا
چشمہ-ماہ و شش = چاند
سی کینیا کی آواز
مرکوز = جڑی ہوئی
فوس، تیلسم = جادو
مبھوس = ہلکا ہلکا



کौरवوں اور क्षत्रیوں کا راجا د্রौپد پر ہملا

یہاں پڑتے ہی مالا شیر دل ارجن کی گردن میں
بھڑک کر رہ گیا شولا، دیماس-آو-کلبے-دشمن میں ۱۱

اسے اپنی ہتک محسوس کی چھتری جوانوں نے
اہانت اور ایک تہیہن سمجھی پہلوانوں نے ۱۱

کیہ چھتری کے مقابل حیت لے اک بہن باری
نہیں ہرگز نہیں یہ تو دروید کی شرارت ہے ۱۱

دروید سے لیا جائے گا اب تو انتقام اس کا
یہ کہہ کر کوہ چھتری اور سارے سورما مل کر ۱۱

جو دیکھی اس طرح کی تقسیم اور ارجن نے کیفیت
اٹھا رہا اک تناور سپر فورٹیم نے بڑھ کر ۱۱

پڑا گھسان کا رن سیکڑوں مارے گئے رستم
شری گھنشیام نے ماحول کی دیکھی جو یہ حالت ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

ہتک = اطمینان
اہانت، تہیہن =
وہجائی

دنتیکام = بدلتا
سفرہ اے-ہستی = جگ،
دنییا

ہیمایات = سہاویات

تدبھور = اکلہمندی
تفککھور = ویاچار
آشتی = دوستی، میترتا

کورؤں اور چھتریوں کا راجہ دروید پر حملہ

یہاں پڑتے ہی مالا شیر دل ارجن کی گردن میں
بھڑک کر رہ گیا شولا، دیماس-آو-کلبے-دشمن میں ۱۱

اسے اپنی ہتک محسوس کی چھتری جوانوں نے
اہانت اور ایک تہیہن سمجھی پہلوانوں نے ۱۱

کیہ چھتری کے مقابل حیت لے اک بہن باری
نہیں ہرگز نہیں یہ تو دروید کی شرارت ہے ۱۱

دروید سے لیا جائے گا اب تو انتقام اس کا
یہ کہہ کر کوہ چھتری اور سارے سورما مل کر ۱۱

جو دیکھی اس طرح کی تقسیم اور ارجن نے کیفیت
اٹھا رہا اک تناور سپر فورٹیم نے بڑھ کر ۱۱

پڑا گھسان کا رن سیکڑوں مارے گئے رستم
شری گھنشیام نے ماحول کی دیکھی جو یہ حالت ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے سن تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور فکر سے ۱۱

پانڈوں کی واپسی اور ماں کا حکم

ہوئے سب سورا داپس مقامِ جشنِ رنگیں سے
پلے پانڈو وہاں سے دختر پنچال کو لے کر
پہنچ کر دی صدا پھر پانڈوں نے بابِ خانہ پر
کہ اک تحفہ دروید کے محل سے ہم جو پاتے ہیں
صدا پانڈو کی جس دم کان میں کنتی کے یہ آئی
یہ جلد کیا سنا رجن کے دل پر لگ گیا بے بالا
یہ ایسا تحفہ ہے ماما، جو بانٹا جا نہیں سکتا
تمہارا لیکن اک اک شبید پارِ آن ہے سن
سر تسلیم خم ہے ماں تمہارے حکم کے آگے
بچا کر دامنوں کو شعلہ ہائے جنگ آگین سے
خوشی سے جھومتے گاتے ہوئے پہنچے وہ اپنے گھر
کہ ماما کھول دو دروازہ اور دیکھو یہاں آکر
اُسے ماما تمہاری خدمتِ اقدس میں لائے ہیں
کہا کنتی نے اس کو بانٹ لیں پس میں سب بھائی
پکارا ہائے ماں، بن دیکھ تم نے کیا یہ کہہ ڈالا
یہ جیو! اپن ہے جو تقسیم میں اب نہیں سکتا
تمہاری بات کا پالن ہے، پالتہاں کا پالن
ہمارا بھاگ مکن ہے اسی اک وجہ سے جاگے

بکھیتی زو بسین

شری گفشیام نے پھر کے سب لوگوں کو سمجھایا
تو پانڈو نے خوشی کیساتھ پنچالی کو اپنا یا

ہوئے سب سورا داپس مقامِ جشنِ رنگیں سے
پلے پانڈو وہاں سے دختر پنچال کو لے کر
پہنچ کر دی صدا پھر پانڈوں نے بابِ خانہ پر
کہ اک تحفہ دروید کے محل سے ہم جو پاتے ہیں
صدا پانڈو کی جس دم کان میں کنتی کے یہ آئی
یہ جلد کیا سنا رجن کے دل پر لگ گیا بے بالا
یہ ایسا تحفہ ہے ماما، جو بانٹا جا نہیں سکتا
تمہارا لیکن اک اک شبید پارِ آن ہے سن
سر تسلیم خم ہے ماں تمہارے حکم کے آگے
بچا کر دامنوں کو شعلہ ہائے جنگ آگین سے
خوشی سے جھومتے گاتے ہوئے پہنچے وہ اپنے گھر
کہ ماما کھول دو دروازہ اور دیکھو یہاں آکر
اُسے ماما تمہاری خدمتِ اقدس میں لائے ہیں
کہا کنتی نے اس کو بانٹ لیں پس میں سب بھائی
پکارا ہائے ماں، بن دیکھ تم نے کیا یہ کہہ ڈالا
یہ جیو! اپن ہے جو تقسیم میں اب نہیں سکتا
تمہاری بات کا پالن ہے، پالتہاں کا پالن
ہمارا بھاگ مکن ہے اسی اک وجہ سے جاگے

یکجہتی-ا-جئین

ش्री घनश्याम ने, फिर आके सब लोगों को समझाया।
तो पांडव ने खुशी के साथ पंचाली को अपनाया।।

शोला हाए जंगेआगी =
युद्ध की आग में

सदा = आवाज़
बाबे-खाना = घर के
दरवाजे पर

अहसन = उत्तम

सरे तसलीम खम =
आदेश के आगे शीघ्र
सुकाना

ب شيرکت منسلک پانچوں ہوئے پھر ایک عورت سے
بنا دیا۔ بھاریاں مائیں کی طاعت سے

ہر اک دن ایک اک بھائی بھائی بھائی اور رغبت
کیا کرتا رہا آباد اپنا مجلہ عشرت

نمبر گوش دروید تک جب اس عنوان کی پہنچی
نہایت ہی طائر رنج کے سامان کی پہنچی

ہم تن غرق ہو کر وہ غم کے طوفاں میں
لگی بیٹھے بٹھائے آگ کے قلب فرحان میں

کہ اتنے میں مہر شعی و یاس جی نے دشن کھلایا
یہ شدنی اور ہونی ہے یہ کہہ کر اسکو سمجھایا

بشیرکت = مین

ہما تن = سر سے پیر تک

جواڑے - جوجین

سنا دیا واقعہ اس ضمن میں مہراج نے اسکو
سنا دیا داستان شہسوار، شہسوار نے اسکو

کہ پادرو اور شکر مہرے پر لے اک بیاباں میں
نشا و کیف کے گل چن رہے تھے اپنے دایاں میں

کہ اتنے میں انہوں نے کام دھینو کو وہاں بکھا
کہ جس کے ساتھ تھا، وہاں ایک جتھ پانچ بیلوں کا

کہا پارو نے ہنس کر کیا تجھے غیرت نہیں آتی
جو بیلوں کیسا آئے سچا پھرتی ہے کھلاتی

یہ شکر گاہ بولی مجھ پر کیوں سنتی ہوائے خوشبو
کہ اگلے خیم میں تم پر بھی یہ وقت آئیگا بنو

بنو گی بھاریہ اس وقت تم بھی پانچ مردوں کی
مہمیت تم کو بھی سہنی پڑیگی پانچ مردوں کی

ملا یہ شہسوار لے یہ پانچوں کی بھاریہ (بیوی) ہوگی۔ یہ شکر راجہ دروید شوک ساگر میں ڈوب گئے تب ان کا سندھیمہ دور کرنے
کے لئے تری کا بیجہ جانی ویدو یاس جی حاضر ہوئے۔ کہ شکر راجہ دروید یہ سب نام ایک ہی آدمی کے ہیں۔ سب پانچ کا مختلف۔ ایک
لے بیوی بیوی پانچ بیلوں کے سنگام دھینو کو دیکھ کر پانی نہیں تباہ دھینو نے شکر پانچ مردوں کی بھاریہ ہوئی (دیکھو بھاریہ)

۱) یوٹیلٹیر بولے یہ پانچوں کی بھاریاں (بیوی ہوگی) یہ سونکر راجہ دروید شوک ساگر میں ڈوب گئے تب ان کا سندھیمہ دور کرنے
کے لئے تری کا بیجہ جانی ویدو یاس جی حاضر ہوئے۔ کہ شکر راجہ دروید یہ سب نام ایک ہی آدمی کے ہیں۔ سب پانچ کا مختلف۔ ایک
لے بیوی بیوی پانچ بیلوں کے سنگام دھینو کو دیکھ کر پانی نہیں تباہ دھینو نے شکر پانچ مردوں کی بھاریہ ہوئی (دیکھو بھاریہ)

ب شيرکت منسلک پانچوں ہوئے پھر ایک عورت سے
بنا دیا۔ بھاریاں مائیں کی طاعت سے

ہر اک دن ایک اک بھائی بھائی بھائی اور رغبت
کیا کرتا رہا آباد اپنا مجلہ عشرت

نمبر گوش دروید تک جب اس عنوان کی پہنچی
نہایت ہی طائر رنج کے سامان کی پہنچی

ہم تن غرق ہو کر وہ غم کے طوفاں میں
لگی بیٹھے بٹھائے آگ کے قلب فرحان میں

کہ اتنے میں مہر شعی و یاس جی نے دشن کھلایا
یہ شدنی اور ہونی ہے یہ کہہ کر اسکو سمجھایا

جواڑے - جوجین

سنا دیا واقعہ اس ضمن میں مہراج نے اسکو
سنا دیا داستان شہسوار، شہسوار نے اسکو

کہ پادرو اور شکر مہرے پر لے اک بیاباں میں
نشا و کیف کے گل چن رہے تھے اپنے دایاں میں

کہ اتنے میں انہوں نے کام دھینو کو وہاں بکھا
کہ جس کے ساتھ تھا، وہاں ایک جتھ پانچ بیلوں کا

کہا پارو نے ہنس کر کیا تجھے غیرت نہیں آتی
جو بیلوں کیسا آئے سچا پھرتی ہے کھلاتی

یہ شکر گاہ بولی مجھ پر کیوں سنتی ہوائے خوشبو
کہ اگلے خیم میں تم پر بھی یہ وقت آئیگا بنو

بنو گی بھاریہ اس وقت تم بھی پانچ مردوں کی
مہمیت تم کو بھی سہنی پڑیگی پانچ مردوں کی

ملا یہ شہسوار لے یہ پانچوں کی بھاریہ (بیوی) ہوگی۔ یہ شکر راجہ دروید شوک ساگر میں ڈوب گئے تب ان کا سندھیمہ دور کرنے
کے لئے تری کا بیجہ جانی ویدو یاس جی حاضر ہوئے۔ کہ شکر راجہ دروید یہ سب نام ایک ہی آدمی کے ہیں۔ سب پانچ کا مختلف۔ ایک
لے بیوی بیوی پانچ بیلوں کے سنگام دھینو کو دیکھ کر پانی نہیں تباہ دھینو نے شکر پانچ مردوں کی بھاریہ ہوئی (دیکھو بھاریہ)

۱) یوٹیلٹیر بولے یہ پانچوں کی بھاریاں (بیوی ہوگی) یہ سونکر راجہ دروید شوک ساگر میں ڈوب گئے تب ان کا سندھیمہ دور کرنے
کے لئے تری کا بیجہ جانی ویدو یاس جی حاضر ہوئے۔ کہ شکر راجہ دروید یہ سب نام ایک ہی آدمی کے ہیں۔ سب پانچ کا مختلف۔ ایک
لے بیوی بیوی پانچ بیلوں کے سنگام دھینو کو دیکھ کر پانی نہیں تباہ دھینو نے شکر پانچ مردوں کی بھاریہ ہوئی (دیکھو بھاریہ)

تیشہ-شکر اور برہما ہتیا

یہ سنکر پڑ گیا فق اس کا چہرہ خوف کے مارے
دیتے-شکر پہ بھی تیشہ شکر کے چلنے لگے آریے۔

جہاں پر شکر کے آثار ان کے ہو گئے ظاہر
پاں درمیاں وہ فیر پشہ برہما پھوچے بیل آخیر۔

سونا یا کیستا-آ-گم ان سے، جب پارو کا شکر نے
سدا دک "خبر" کے جیسی دی، فیر ان کے پانچویں سر نے۔

جواب اس طرح کا سنتے ہی شکر جی کو طیش آیا
یہ-شکر بڑھا، اور ان کے سر کو قطع کر لایا۔

چپک کر رہ گیا سر، قطع ہو کر ہاتھ میں ان کے
یہ دست-آ-سر رہے ہیں فیر، ہمیشہ ساتھ میں ان کے۔

چھڑائے سے نہ دست شکر سے سر چھوٹا کسی صورت
لڑاؤ سے نہ دست شکر سے سر چھوٹا کسی صورت۔

جتن یوں تو کئے لاکھوں کہ پائیں سر چھوٹا
مگر شکر کے آگے چل سکا ان کا نہ کچھ یارا۔

تیشہ = شکر

جہاں = جہاں
پاں درمیاں = پانچویں کے
لینے

کٹنا = کاٹنا

دست = ہاتھ

شکر = ہونی

پاپ سے مکتی پانے کا حل اور پاڈوں سے دڑپدی کا بیاہ

بیل آخیر ہتیا سے پڑھا شکر نے بتا تو ہی
کی ہوگی کیسے مکتی پاپ سے، اب کہہ جارا تو ہی۔

کہا ہتیا نے اٹھا رہزار اکٹونی، سینا کا
پلاؤ خون تو اس پاپ سے پاؤ گے چھوٹا۔

اکٹونی = اکٹونی

۱) ایک کرخت سی آواز۔

طیش شکر اور برہما ہتیا

یہ سنکر پڑ گیا فق اس کا چہرہ خوف کے مارے
دل شکر پہ بھی تیشہ شکر کے چلنے لگے آریے۔

جہاں پر شکر کے آثار ان کے ہو گئے ظاہر
پاں درمیاں وہ پشہ برہما پھوچے بیل آخیر۔

سونا یا قصہ غم ان سے جب پاؤ کا شکر نے
صدا اکٹونی کی جیسی دی پھرنے پانچویں سر نے۔

جواب اس طرح کا سنتے ہی شکر جی کو طیش آیا
یہ شکر بڑھا، اور ان کے سر کو قطع کر لایا۔

چپک کر رہ گیا سر، قطع ہو کر ہاتھ میں ان کے
یہ دست دس رہے ہیں پشہ برہما ہتیا میں ان کے۔

چھڑائے سے نہ دست شکر سے سر چھوٹا کسی صورت
برہما ہتیا سے پھرنے ان کو مل سکی فرصت۔

جتن یوں تو کئے لاکھوں کہ پائیں سر چھوٹا
مگر شکر کے آگے چل سکا ان کا نہ کچھ یارا۔

پاپ سے مکتی پانے کا حل اور

پاڈوں سے دڑپدی کا بیاہ

بیل آخیر ہتیا سے پڑھا شکر نے بتا تو ہی
کہ ہوگی کیسے مکتی پاپ سے اب کہہ ذرا تو ہی۔

کہا ہتیا نے اٹھا رہزار اکٹونی، سینا کا
پلاؤ خون تو اس پاپ سے پاؤ گے چھوٹا۔

۱) ایک کرخت سی آواز۔

کیا شیبو جی نے دوپہر جنگ میں دُعدنوں پہلے کا
 کہ دوپہر کے لئے دُشتونے دیدی آگیا آخر
 علاوہ اس کے پارو روپ پنچالی کا دھار گئی
 درو پنے ہر ششی دیاس کی یہ گفتگو سنکر
 پھر کے بعد پانچوں پانڈوؤں کا اپنی دفتر سے

پانڈو کو جیندا دیکھ کر درو دھن کا کُرو دھ

گر جی اس طرح رہتے رہتے گزری انکو اک مدت
 خبر اس بات کی جس وقت درو دھن کے پاس آئی
 اسی کے ساتھ درو دھن بھی تحقیقات کی خاطر
 وہاں جب پانڈوؤں کو اس نے جیتا جاگتا دیکھا
 خبر چھوٹی ملی تھی آگ میں پانڈو کے جلنے کی
 وہ لوٹ آیا نہایت جوش اور غصے میں بل کھا کر
 خجالت سے پیشانی سے اور غیرت سے مہنچلا کر

۱) درو پدی کا بیاہ پانچ دنوں تک رہا کیونکہ رोजانا एक एक भाई से द्रौपदी ब्याही गयी। (महाभारत भाषा पृष्ठ ३२)

सरे-तसलीम खम =
 मुका हुआ सर

पाए तहकीक = खोज और
 जानकारी के लिये
 जमाअत = टोली दल

खिजालत = शर्म

मलास طرح موقع ہاتھ سے سر کو چھڑانے کا
 یہ تیرا روپ ہو گا پانڈوؤں کی شکل میں ظاہر
 وہ جیون پانچ پتیسوں سنگ پھر اپنا گزائے گی
 سر تسلیم اپنا ستم کیا دل پر رکھا پتھر
 درو پنے رچا یا بیٹا اتر باراک سر سے

پانڈو کو زندہ دیکھ کر درو دھن کا کُرو دھ

غرض اس طرح رہتے رہتے گزری انکو اک مدت
 خبر اس بات کی جس وقت درو دھن کے پاس آئی
 اسی کے ساتھ درو دھن بھی تحقیقات کی خاطر
 وہاں جب پانڈوؤں کو اس نے جیتا جاگتا دیکھا
 خبر چھوٹی ملی تھی آگ میں پانڈو کے جلنے کی
 وہ لوٹ آیا نہایت جوش اور غصے میں بل کھا کر
 خجالت سے پیشانی سے اور غیرت سے مہنچلا کر

۱) درو پدی کا بیاہ پانچ دنوں تک رہا کیونکہ رोजانا एक एक भाई से द्रौपदी ब्याही गयी। (महाभारत भाषा पृष्ठ ३२)

دुरیودھن کی کدورت پر راجا کو فیکر

یہ سارا واکیا پانڈو کا دیرودھن نے گھر جا کر
کہا اپنے پیتا سے اس طرح غصے میں بل کھا کر
وجود پانڈوں کا خاں سادل میں کھٹکتا ہے
نہیں ہے مجھ میں تاب صبرا اور برشت کی قوت
پتائے جب میں اس قسم کی فرزند سے باتیں
درد نہ چار یہ اور ہمیشہ کو فوراً ہی بلوایا

خوار = کاٹے

بھیشم پیتامہ کا مشورہ

پیتامہ نے سنی سب گفتگو ان کی متانت سے
خاطب ہو کے دیرودھن سے بولے بے جھک ہو کر
حقیقت ہیکہ اس سین میں دلوں میں خوش رہتا
مگر انسان وہی ہے جو تدبر اور فراست سے
تفاصلے فرد بھی ہے یہی پانڈو کو بلوایا

گفتگو = باتیں

تکا جڑاؤ-خیرد = اکتل
کی بات

دیرودھن کی کدورت پر راجہ کو فیکر

یہ سارا واکیا پانڈو کا دیرودھن نے گھر جا کر
کہا اپنے پیتا سے اس طرح غصے میں بل کھا کر
وجود پانڈوں کا خاں سادل میں کھٹکتا ہے
نہیں ہے مجھ میں تاب صبرا اور برشت کی قوت
پتائے جب میں اس قسم کی فرزند سے باتیں
درد نہ چار یہ اور ہمیشہ کو فوراً ہی بلوایا

بھیشم پیتامہ کا مشورہ

پیتامہ نے سنی سب گفتگو ان کی متانت سے
خاطب ہو کے دیرودھن سے بولے بے جھک ہو کر
حقیقت ہیکہ اس سین میں دلوں میں خوش رہتا
مگر انسان وہی ہے جو تدبر اور فراست سے
تفاصلے فرد بھی ہے یہی پانڈو کو بلوایا

وہ لیکن تم سے پانچوں کم نہیں جرأت میں طاقتیں
وہ ہر میدان میں بیشک تم سے بڑھ کر میں یا میں
ملاوہ کے خود میں کرشن ان کی خیر خواہی پر
یہ سنکر ہوش درلودھن کو آیا خوابِ غفلت سے
کیا منظور ان کا مشورہ لیکن کدورت سے

ناراد مونی کا ویधान اور سومبرا کا اگوا

بولا کر پانڈوؤں کو بکشا دی جاگیر راجا نے
دیکھا دی خولک اور دیکھلا س کی تسویر راجا نے
ہوئے آباد کھانڈو بن میں پانڈو اور پنچالی
کچھ عرصہ بعد ہی ناراد مونی جی ان کے پاس آئے
بنایا بھاریہ کے سنگ وچرن کا ودھان ایسا
مگر ارجن نے اک دن جب اصول باہمی توڑا
بہت کچھ واقعات اس دور میں ارجن کو پیش آیا
سومبرا کرشن اور بلدیو جی دونوں کی بھگنی تھی
مگر گھنشیام نے بلدیو جی کو بات سمجھائی
بہت کہ سن کے راضی ہو گئے وہ پھر تو باری
مگر گھنشیام نے بلدیو جی کو بات سمجھائی
بہت کہ سن کے راضی ہو گئے وہ پھر تو باری

مستکبیل = مہیش

جہج = دھج

۱) اندر پرتھ، مہیچو دا دھلی کا پورانا نام

۲) ناراد مونی نے آپس میں ہتھیار کا کام رکھنے کے لیے ایک قانون بنایا تھا جس کے تحت ہر ایک کو کسی دوسرے سے توڑنا تھا۔ (مہا بھارت)

وہ لیکن تم سے پانچوں کم نہیں جرأت میں طاقتیں
وہ ہر میدان میں بیشک تم سے بڑھ کر میں یا میں
ملاوہ کے خود میں کرشن ان کی خیر خواہی پر
یہ سنکر ہوش درلودھن کو آیا خوابِ غفلت سے
کیا منظور ان کا مشورہ لیکن کدورت سے

ناراد مونی کا ودھان اور سومبرا کا اگوا

دکھائی خلق اور اخلاص کی تصویر راجہ نے
وہیں اک اندر نامی شہر کی بنیاد بھی ڈالی
سنائی داستان ایسی کہ جوان کو بھی راس آئے
کہ مستقبل میں یک جہتی کا ہو جائے نشان او پنچا
تو اس پر ادھ میں بارہ برس تک اس گھر چھوڑا
سومبرا کو کرشن ناجی کے ایما سے بھوکا لایا
اس اگوا سے شری بلدیو کو تکلیف پہنچی تھی
کہ ارجن بھی تو آخر بھیشم کا پوتا ہے اگوائی
جنم اور دان لیکر خودی پہنچے کرشن گردھائی

مگر گھنشیام نے بلدیو جی کو بات سمجھائی
بہت کہ سن کے راضی ہو گئے وہ پھر تو باری
مگر گھنشیام نے بلدیو جی کو بات سمجھائی
بہت کہ سن کے راضی ہو گئے وہ پھر تو باری

अभिमन्यु की पैदाइश

इधर अर्जुन सुभद्रा को जब अपने घर में ले आया।
इसे फिर अपनी माता और पंचाली से मिलवाया।।

सुभद्रा ने कहा फिर थाम कर दामाने-पंचाली।
कनीजे-कमतरीं समझें मुझे ऐ मलका-ए-आली।।

सुभद्रा के इस अन्दाजे-सुखन में खाकसारी थी।
मोहब्बत थी, खुलूस-ओ-खुल्क था और बुर्दबारी थी।।

यह सुनते ही द्रौपद कन्या ने अपने सीने से।
उसे लिपटा लिया बढ़ कर मोहब्बत के करीने से।।

कहा उसने कि जब तुम कृष्ण जी की खास खाहिर हो।
तो ऐ प्यारी सुभद्रा तुम भी इक मेरी बहन फिर हो।।

सुभद्रा को कुछ अरसा बाद इक लड़का हुआ उत्पन्न।
अभिमन्यु था उस का नाम जो था प्यार का मखजन।।

श्री घनश्याम और अर्जुन ने अपनी विद्या सारी।
अभिमन्यु को सिखलादी, हुनरमंदी-ओ-हुशयारी।।

जवाँ होकर अभिमन्यु अकेला सब पे सर-बर था।
यह अर्जुन और श्री घनश्याम के जैसा दिलावर था।।

कनीजे-कमतरीं =
नौकरानी
मलका ए आली =
महारानी

पान्डव की बीवियाँ

अलावा इसके पंचाली को भी पान्डव से मुस्तहसन।
हुए थे पाँच कुल बेटे अललतरतीब यूँ उत्पन्न।।

सिखाया वीर अर्जुन ने फने-जंग-ओ-जदल उन को।
हुए मशशाक् काफी, मिल गया मेहनत का फल उन को।।

फने जंग-ओ-जदल =
लड़ाई का गुर
मशशाक् = माहिर

१) युधिष्ठिर से प्रति युद्ध, भीम से शूर्त सूवम अर्जुन से श्रवति कीर्ती सहदेव से श्रवति कर, नकुल से शतायक।
यह पांचो बेटे पांच भाईयोसे द्रौपदी को हुवे।

अभिमन्यु की पैदाइश

अधर अर्जुन सुभद्रा کو جب اپنے گھر میں لے آیا
سبھدرانے کہا پھر مہتمام کر دامن پنجالی
سبھدرانے اس انداز سخن میں خاکساری تھی
یہ سنتے ہی دروید کنیا نے اپنے سینے سے
کہا اس نے کہ جب تم کرشن جی کی خاص خواہر ہو
سبھدرانے کو کچھ عرصہ بعد اک لڑکا ہوا آپن
شری گھنشیام اور ارجن نے اپنی ودیا ساری
جواں ہو کر ابھینو کی سب پر سربر تھا
اسے پھر اپنی ماما اور پنچالی سے ملوایا
کینز کمترین سمجھیں مجھے اے ملکہ مالی
محبت تھی، خلوص و خلق تھا اور بردباری تھی
اسے پٹایا بڑھ کر محبت کے قرینے سے
تو اے پیاری سبھدرانے بھی اک میری بہن پھر ہو
ابھینو تھا اس کا نام جو بخت پیار کا خزن
ابھینو کو سکھلا دی ہنرمندی و ہشیاری
یہ ارجن اور شری گھنشیام کے جیاد دلاور تھا

پانڈو کی بیویاں

علاوہ اسکے پنجالی کو بھی پانڈو سے مستحسن
ہوئے تھے پانچ کل بیٹے علی الترتیب یوں تپن
سکھایا ویر ارجن نے فن جنگ و جدل ان کو
ہوئے مشاق کافی مل گیا محنت کا پھل ان کو
۱) یوڈیستیر سے پرتی یوڈھ، بھیم سے شورت سوام ارجن سے شرت کیرتی کہ سہید سے شرتی کرشہ بھل سے شتایک۔
یہ پانچوں بیٹے پانچ بھائیوں سے درویدی کو ہوئے۔



فیر उसके बाद पाँचों ने अलग एक एक औरत से ।
रचाया ब्याह अपने वक्र-ओ-अजमत और जजालत से ॥
युधिष्ठिर ने हसीं बिनते-गवाहन से स्वयंवर में ।
रचाया ब्याह ले आया वह इक खुशीद को घर में ॥
हुआ पैदा पिसर फिर "योद्ध" नामी उस हसीना से ।
निहायत नेक सीरत माहरू उस बा क्रीना से ॥
फिर उसके बाद काशी देश के राजा की दुस्तर से ।
रचाया ब्याह अपना भीम ने इक रखे-नय्यर से ॥
थो जिस का नाम काली, उस से इक लड़का हुआ उत्पन्न ।
उसी का नाम था "सरवांग" गोया था वह कुल्लारण ॥
नकुल ने अपनी, चेदी राज की बेटी "करेनिव" से ।
जो की शादी, हुआ "निर्मित" उत्पन्न घर में फिर उसके ॥
फिर इसके बाद की सहदेव ने दोमन्त की दुस्तर ।
स्वयंवर में रचाया ब्याह, लाया उसको अपने घर ॥
था जिसका नाम "विज्या" जो बला की खूबसूरत थी ।
सरापा नूर-ओ-नगमा थी, मुजस्सम इक लताफत थी ॥
हुआ उस को तवल्लुद तालेवर इक खूबर फरजन्द ।
जिगर गोशा, अगर वह माँ का था, तो बाप का दिलबन्द ॥
गरज यह चारों बच्चे अपने नाना की हुकूमत पर ।
हुए फायज़, जवाँ होकर बशाने-नाज़-ओ-करो फर ॥

वक्र-ओ-अजमत और
जजालत = बड़ापन

माहरू = चंद्रमा या मुंदर

नय्यर = सूरज

कुल्लारण = घर का
चिराग

तवल्लुद = पैदा
तालेवर = भाग्यवान

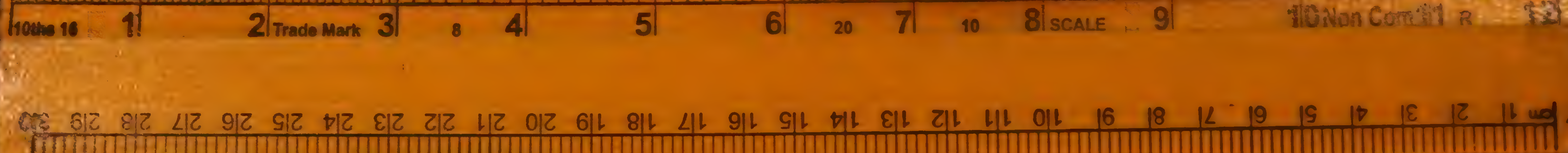
अग्नि देवता की बद हजमी

किसी मौके पे खाण्डव बन में अर्जुन और मुरलीधर ।
विराजे थे कि अग्नि देवता ने उस जगह आकर ॥
कहा अब तो बिगड़ कर रह गया है हाजमा मेरा ।
इसी कारण हुआ है फिर से इस बन में मेरा फेर ॥

पहर के बाद पाँचों ने अलग एक एक औरत से ।
रचाया ब्याह अपने वक्र-ओ-अजमत और जजालत से ॥
युधिष्ठिर ने हसीं बिनते-गवाहन से स्वयंवर में ।
रचाया ब्याह ले आया वह इक खुशीद को घर में ॥
हुआ पैदा पिसर फिर "योद्ध" नामी उस हसीना से ।
निहायत नेक सीरत माहरू उस बा क्रीना से ॥
फिर उसके बाद काशी देश के राजा की दुस्तर से ।
रचाया ब्याह अपना भीम ने इक रखे-नय्यर से ॥
थो जिस का नाम काली, उस से इक लड़का हुआ उत्पन्न ।
उसी का नाम था "सरवांग" गोया था वह कुल्लारण ॥
नकुल ने अपनी, चेदी राज की बेटी "करेनिव" से ।
जो की शादी, हुआ "निर्मित" उत्पन्न घर में फिर उसके ॥
फिर इसके बाद की सहदेव ने दोमन्त की दुस्तर ।
स्वयंवर में रचाया ब्याह, लाया उसको अपने घर ॥
था जिसका नाम "विज्या" जो बला की खूबसूरत थी ।
सरापा नूर-ओ-नगमा थी, मुजस्सम इक लताफत थी ॥
हुआ उस को तवल्लुद तालेवर इक खूबर फरजन्द ।
जिगर गोशा, अगर वह माँ का था, तो बाप का दिलबन्द ॥
गरज यह चारों बच्चे अपने नाना की हुकूमत पर ।
हुए फायज़, जवाँ होकर बशाने-नाज़-ओ-करो फर ॥

अग्नि देवता की बद हजमी

किसी मौके पे कहां दुबन में अर्जुन और मुरलीधर ।
विराजे थे कि अग्नि देवता ने उस जगह आकर ॥
कहा अब तो बिगड़ कर रह गया है हाजमा मेरा ।
इसी कारण हुआ है फिर से इस बन में मेरा फेर ॥



تو مہاری ہی مدد سے دور ہوگی میری بدھمی
گیرانی ختم ہوگی تو، تپیش بڑھ جاوے گی میری ۱۱

ن جانے میں کتنی بار چاہا اس بن کو
جلا کر بھسم کر دے، روند دے سہرا کے دامن کو ۱۱

کی اسکی آگ سے ہی ٹھیک میرا ہضم ہو گا
گیرانی ختم ہوگی بکلی کا خاتمہ ہو گا ۱۱

مگر اس بن کے باشی اور سارے کشش بل کر
بھجادیے ہیں جب اٹھتا ہے کوئی شعلہ مضطر

کرو رکشا میری اسے ویرا رجن شیا م بنواری
نہ ہوگی گرتیش اسنوں تو گھر کرے گی بیماری

شولا-موجتر =
بڑھتی آگ

رکشا

یہ بیپا سنکے ارجن اور کنہیا جی نے فرمایا
تیری بے چارگی سن کر ہمارا دل بھی بھر آیا ۱۱

مگر کیسے کریں رکشا تیری ہم ایسے موقع پر
ن ہو جب ساآ سامانے-وگا، تو ہم لڑے کیوں کر ۱۱

یہ سن کر اس نے اک تھ چار بیض رنگ کے گھونٹے
دئے تھے ترکش پرچم اور اس کے ساتھ کچھ کوٹے

کوچ کیسا تھ ارجن کو دیا گاڈیو وٹش اس نے
کھلا وہ اس کے اس نے شیا م جی کو حربہ کاری

پھر اس کے بعد اگنی دیو ارجن اور مری دھر
مقال تھے کہ کھانڈو بن کو کر دیں آج خاکستر

سامانے وگا = لڑائی کے
ہتھیار

ہر با-آ-کاری =
ہتھیار

تہا ری ہی مدد سے دور ہوگی میری بدھمی
گرا نی ختم ہوگی تو، تپیش بڑھ جائے گی میری

نہ جانے میں کتنی بار چاہا اس گھنے بن کو
جلا کر بھسم کر دوں روز دوں صحر کے دامن کو

کہ اسکی آگ سے ہی ٹھیک میرا ہضم ہو گا
گرا نی ختم ہوگی بے کلی کا خاتمہ ہو گا

مگر اس بن کے باشی اور سارے کشش بل کر
بھجادیے ہیں جب اٹھتا ہے کوئی شعلہ مضطر

کرو رکشا میری اسے ویرا رجن شیا م بنواری
نہ ہوگی گرتیش اسنوں تو گھر کرے گی بیماری

رکشا

یہ بیپا سنکے ارجن اور کنہیا جی نے فرمایا
تیری بے چارگی سن کر ہمارا دل بھی بھر آیا

مگر کیسے کریں رکشا تیری ہم ایسے موقع پر
ن ہو جب ساآ سامانے-وگا، تو ہم لڑے کیوں کر

یہ سن کر اس نے اک تھ چار بیض رنگ کے گھونٹے
دئے تھے ترکش پرچم اور اس کے ساتھ کچھ کوٹے

کوچ کیسا تھ ارجن کو دیا گاڈیو وٹش اس نے
کھلا وہ اس کے اس نے شیا م جی کو حربہ کاری

پھر اس کے بعد اگنی دیو ارجن اور مری دھر
مقال تھے کہ کھانڈو بن کو کر دیں آج خاکستر

بहुत سے देवता और इन्द्र थे, खुद भी शरीके-जंग।
हुए थे काफिये उनके मगर इस मारका में तंग।।
मचा था एक हाहा कार खाण्डव बन की घरती पर।
हर इक शै जुज्वे-आतिश बन गई शोला-फिशों होकर।।
अचानक निकला मय दानव भड़कते शोला जारों से।
कहा मुझ को शरण में लो, बचालो इन शरारों से।।
श्री घनश्याम के कहने पर, अर्जुन ने उसे बढ कर।
शरण में ले के अपने, कर दिया उपकार इक उस पर।।

जुज्वे-आतिश = आग का
दिसा

शरारों = बिगारयों

तोहफा-ए-मय दानव

श्री घनश्याम, अर्जुन और मय दानव ने फिर मिल कर।
किया जमना के तट पर योग खाण्डव बन के खंडन पर।।
खयाल इक रोज मय दानव के दिल में इस तरह आया।
कि मैं पान्डव के कारण आग में जलने नहीं पाया।।
अब इस एहसाँ का सर, से बार मैं अपने उतारूँगा।
हुजूरी में बतौर-खास कुछ नजरें गुजारूँगा।।
यह सोचा और गमन होकर गया बिन्दु सरोवर पर।
वहाँ से तीन चीजें, इन्द्र नगरी को चला लेकर।।
इक उन में शंख था और दूसरा था गुर्जे-फौलादी।
सभा तयार करने की थी सुवम एक सामग्री।।
यह तोहफाजात बख्शी इस तरह पान्डव को उलफत से।
कि पहला शंख बख्शा, वीर अर्जुन को मोहब्बत से।।
फिर उसके बाद हेकल भीम को उसने गदा बख्शी।
दिवर उसके युधिष्ठिर को, सभा की देदी सामग्री।।

खयाल = विचार

हुजूरी = सेवा

بہت سے دیوتا اور اندر تمہے خود بھی شریک جنگ
ہوئے تمہے قافیے لکے مگر اس معرکہ میں تنگ
مچا تھا ایک ہاہا کار کھانڈو بن کی دھرتی پر
ہر اک شے جزو آتش بن گئی شعلہ فشاں ہو کر
اچانک نکلا میدا نو بھڑکے شعلہ زاروں سے
کہا مجھ کو شرن میں لو، بچا لو ان شراروں سے
شری گنیشام کے کہنے پر ارجن نے اسے بڑھ کر
شرن میں لے کے اپنے کر دیا اپکار اک اس پر

تحفہ میدا نو

شری گنیشام ارجن اور میدا نو نے پھر مل کر
کیا جمنے کے تٹ پر لوگ کھانڈو بن کے کھنڈک
خیال اک روز میدا نو کے دل میں اس طرح آیا
کہ میں پانڈو کے کارن آگ میں جلنے نہیں چاہتا
اب اس احساں کا سر سے بار میں اپنے اتاروں گا
مضوری میں بطور حسرت اس کچھ ندریں گزاروں گا
یہ سوچا اور گمن ہو کر، گسیا بندوسر دہر پر
وہاں سے تین چیزیں اندر نگری کو چلا لے کر
اک ان میں ششک تھ اور دوسرا تھا گرز فولادی
بسماتیار کرنے کی تھی سوم ایک سا مگری
یہ تحفہ جات بخشے اس طرح پانڈو کو الفت سے
کہ پہلا ششک تخت ویرا جن کو محبت سے
پھر اس کے بعد مہیکل بسم کو اس نے گد بخشی
دگر اس کے یہ مشنر کو سبھا کی دیدی سا مگری

سلسلہ
اجسوفی گیارہ

सिलसिला-ए
राजसूय यज्ञ



ناردمنی کا مشورہ اور راجسوتی گیت

کسی دن پانڈوں کو درش ناردمنی نے دکھلایا وہاں کی دیکھ کر شو بھائی دھسترن کو بھی بلوایا
کہا ناردمنی نے یوں یہ دھسترن سے برنج و عشم تجھے اسکی خبر بھی ہے کہ پانڈو کا ہے کیا عالم
بھلے مانس، ادھر دنیا میں تو خوشیاں منا لے اُدھر انکو نرک میں دکھ بہت پہنچایا جاتا ہے
یہ شو بھائی اس سبھکی دیکھ کر دل میرا روتا ہے غلاب اُن پر ادھر برکوک میں صد حیف ہوتا ہے
یہ سنتے ہی یہ دھسترن ہو گیا آرزوہ و مضطر بہت پردرد لہجہ میں کہا اس نے بہ چشم تر
منی جی اب کوئی ترکیب چھکارے کی بتلائیں کہ جس سے ہم پتا کو اس مصیبت سے چھڑکائیں
کہا ناردمنی نے راجسوتی گیت سے مشکل اسی صورت میں حل ہوگی، ملیگی جین کی منزل
یہ دھسترن نے کہا ترکیب کیا ہے گین کر نیکی ہمیں بتلائیں حکمت اس سمندر سے ابھرنے کی
منی نے گیت کرنے کی اُسے ترکیب بتلائی
بڑے ہی مخلصانہ طور سے ہر بات سمجھائی

ناردمنی کا مشورہ اور راجسوتی گیت

کिसی دن پانڈوں کو درش ناردمنی نے دکھلایا۔
وہاں کی دیکھ کر شو بھائی دھسترن کو بھی بلوایا۔

کہا ناردمنی نے یوں یہ دھسترن سے برنج و عشم
تجھے اسکی خبر بھی ہے کہ پانڈو کا ہے کیا عالم۔

بھلے مانس، ادھر دنیا میں تو خوشیاں منا لے
اُدھر انکو نرک میں دکھ بہت پہنچایا جاتا ہے۔

یہ شو بھائی اس سبھکی دیکھ کر دل میرا روتا ہے
غلاب اُن پر ادھر برکوک میں صد حیف ہوتا ہے۔

یہ سنتے ہی یہ دھسترن ہو گیا آرزوہ و مضطر
بہت پردرد لہجہ میں کہا اس نے بہ چشم تر۔

منی جی اب کوئی ترکیب چھکارے کی بتلائیں
کہ جس سے ہم پتا کو اس مصیبت سے چھڑکائیں۔

کہا ناردمنی نے راجسوتی گیت سے مشکل
اسی صورت میں حل ہوگی، ملیگی جین کی منزل۔

یہ دھسترن نے کہا ترکیب کیا ہے گین کر نیکی
ہمیں بتلائیں حکمت اس سمندر سے ابھرنے کی۔

منی نے گیت کرنے کی اُسے ترکیب بتلائی
بڑے ہی مخلصانہ طور سے ہر بات سمجھائی۔

آلَم = حالت

اُجّاب = کھٹ/دُکھ

آجُردا = اُداس
مُجتر = بے چین
چمّے تر = آسُ بُری
آلَم

ہِکَمَت = تَرکیب



راجسوتی گیکہ کا طریقہ

وہ بولے راجسوتی گیکن سے ہوتی ہے حل مشکل اسی ترکیب سے ہوتا ہے قرب ایزدی حاصل
 طریقہ راجسوتی گیک کرنے کا ہے یہ ادلی جلا کر آتش انبوہ یعنی شعلہ بالا
 پھر اس میں غلہ و میوہ علاوہ عنبر و روغن کیا جائے پھر ان سب کو سپرد شعلہ روشن
 علاوہ اسکے ثانی گیکن کرنے کی ہے یہ صورت خزینه ہائے ہفت اقلیم کر کے جمع با عزت

منائے جشن ان سارے لوازم سے اگر کوئی
 تو ہو سکتی ہے ثانی گیک کی پھر آرزو پوری

پانڈو کے حوصلے اور تقسیم کار

پھر اسکے بعد ہی سب بھائیوں نے فرط عجلت سے بنایا ایک منصوبہ سلیقے اور لیاقت سے
 کہا ارجن نے میں لنکا سے سونائیکے آونگا نکل بولا کہ اب پاتال سے منڈپ میں لاؤنگا
 کہا سہدیو نے میں کرشن جی کو دوار کا جا کر یہاں لے آؤنگا فوراً انھیں حالات سمجھا کر

راجسوی یجن کا तरीکا

وہ بولے راجسوی یجن سے ہوتی ہے حل مشکل اسی ترکیب سے ہوتا ہے کورے-ऐजदी हासिल ॥

तरीका राजसूय यज्ञ करने का है यह ऊला ।
 जला कर आतिशे-अनबोह यानी शोला-ए-बाला ॥

फिर इस में गुल्ला-ओ-मेवा अलावा अंबर-ओ-रौगन ।
 किया जाए फिर उन सबको सिपुर्दे-शोला-ए-रौशन ॥

अलावा इसके सानी यज्ञ करने की है यह सूरत ।
 खजीना हाए हफ्त अकलीम करके जमआ बा इज्जत ॥

मनाए जश्न इन सारे लवाजिम से अगर कोई ।
 तो हो सकती है सानी यज्ञ की फिर आरजू पूरी ॥

पांडव के हौसले और तकसीमे-कार

फिर इसके बाद ही सब भाइयों ने फर्ते-उजलत से ।
 बनाया एक मनसूबा सलीके और लियाकत से ॥

कहा अर्जुन ने मैं लंका से सोना लेके आऊँगा ।
 नकुल बोला कि अब पाताल से मंडप मैं लाऊँगा ॥

कहा सहदेव ने मैं कृष्ण जी को, द्वारका जा कर ।
 यहाँ ले आऊँगा फौरन, उन्हे हालात समझा कर ॥

कूर्वे-ऐजदी = इश्वर की
 दया और क्षमा

ऊला = पहला
 आतिशे-अनबोह = बहुत
 बड़ी आग
 अंबर = खुशबु
 रौगन = घी और तेल

खजीना हाए हफ्त
 अकलीम = सात राज्यों
 के खजाने

लवाजिम = सामग्री

मनसूबा = योजना

کہا پھر بھیم نے میں سارے راجاؤں کو لاؤنگا جو قیدی ہیں جراسندھ کے انھیں جا کر چھڑاؤنگا
 یدھشٹر نے کہا میں آج ستیہ دھرم کا مہمن
 کرونگا کام دھنیو کے لئے باخلت و احسن

یوگنی سے جنگ و صلح

جب اپنی اپنی کہہ کر ہو گئے خاموش سب بھائی پھر اسکے بعد ہی ذہن یدھشٹر میں یہ بات آئی
 کہ پہلے کرشن جی کو دوار کا سے کوئی لے آؤ پھر اگلے مشورہ سے یگ کا سب کام نمٹاؤ
 یہ سن کر جل پڑا سہدیو سمت شیا م بنواری کہ اسکے ساتھ ہی تشریف لائیں کرشن گر دھاری
 ملی سہدیو کو پھر راہ اک یوگنی خود سر بھینکر روپ سے لڑنے پہ آمادہ ہوئی جم کر
 ہوئی دونوں میں جنگ ایسی نہ یہ جیتی نہ وہ ہارا سوائے صلح کے آپس میں دونوں کو نہ تھا یارا
 برائے دوستی سہدیو کو پھر اُس نے خوش ہو کر
 کروڑوں روپ میں تبدیلی قیمت کا بخشا اور

علیگیہ

کہا फिर भीम ने मैं सारे राजाओं को लाऊंगा।
 जो कैदी है जरासंध के, उन्हें जाकर छुड़ाऊंगा।।

युधिष्ठिर ने कहा मैं आज सत्य धर्म का स्मरण।
 करूंगा काम धेनू के लिए वा खुल्लत-ओ-अहसन।।

योगिनी से जंग-ओ-सुलाह

जब अपनी अपनी कहकर हो गए खामोश सब भाई।
 फिर उसके बाद ही जहने-युधिष्ठिर में यह बात आई।।

कि पहले कृष्ण जी को द्वारका से कोई ले आओ।
 फिर उनके मशविरे से यज्ञ का सब काम निमटाओ।।

यह सुनकर चल पड़ा सहदेव समेत-श्याम बनवारी।
 कि उसके साथ ही तशरीफ लाएँ कृष्ण गिरधारी।।

मिली सहदेव को फिर राह में इक योगिनी खुद सर।
 भयंकर रूप से लड़ने पे आमादा हुई जम कर।।

हुई दोनों में जंग ऐसी, न यह जीती न वह हारा।
 सिवाए सुलह के आपस में दोनों को न था यारा।।

बराए دوستी, सहदेव को फिर उसने खुश होकर।
 करोड़ों रूप में तबदिली-हय्यत का बखशा वर।।

खामोश = चुप
 जहन = दिमाग

खुद सर = अड़यल

सिवाए सुलह = मिलाप
 के अलावा

سہدیو اور یادوں سے جنگ اور شری گھنٹام کی صلح و صفائی

وہاں سے وہ نکل کر دوار کا پہنچا بہر صورت
وہاں بھی پیش آئی جنگ کی اسکو وہی حالت
پاے پیکار یادو سامنے چھپیں کر ڈر آئے
غرور و تمکنت کے ساتھ شہزوری پر اتر گئے
اسی انداز سے سہدیو نے بھی روپ پھر بدلا
ہوا طرفین کی جانب سے حملہ خوب زوروں کا
بہت مارے گئے اس جنگ میں یادو سر میدان
بھیانک ایک منظر تھا بپا تھا موت کا طوفان
شری گھنٹام نے ماحول کی دیکھی جو یہ حالت
بہت سمجھا کر سب کو میدان سے کیا نصیحت

قول اور وردان

پھر اسکے بعد ہی سہدیو سے بولے یہ ٹرلی دھر
میں تجھے سے خوش ہوا، تو مانگے اب مجھے کوئی ڈر
کہا سہدیو نے میں بھی ہوا پرستیں اے بھگوت
کہ مجھے بھی کوئی در آپ مانگیں اب مہا بلونت
کہا گھنٹام نے اچھا تو پھر اظہار کر اس کا
نہ یادوں سے لڑوں گا میں کبھی، اقرار کر اس کا
کیا سہدیو نے گھنٹام سے وعدہ نہ لڑنے کا
دیا وردان خوش ہو کر نہ آپس میں جھگڑنے کا
عہ وردان کا محقق بمعنی قول و قرار عہ خوش
عہ کرشن جی کے عزیز واقارب اور خاندان ملے

سہدےو اور یادوؤں سے جنگ اور

شری घनश्याम की सुलह व सफाई

वहाँ से वह निकल कर द्वारका पहुँचा बहर सूरत।
वहाँ भी पेश आई जंग की उसको वही हालत।।
पाए पैकार यादव सामने छप्पन करोड आए।
गुस्स-ओ-तमकनत के साथ शहजोरी पे इतराए।।
इसी अंदाज से सहदेव ने भी रूप फिर बदला।
हुआ तरफ़ेन की जानिब से हमला खूब जोरों का।।
बहुत मारे गए इस जंग में यादव सरे-मैदों।
भयानक एक मंजर था, बपा था मौत का तूफ़ान।।
श्री घनश्याम ने माहौल की देखी जो यह हालत।
बहुत समझा मना कर सब को मैदों से किया रखसत।।

कौल और वरदान

फिर इसके बाद ही सहदेव से बोले यह मुरलीधर।
मैं तुझ से खुश हुआ, तू माँग ले अब मुझ से कोई वर।।
कहा सहदेव ने, मैं भी हुआ प्रसन्न ऐ भगवत।
कि मुझ से भी कोई वर आप माँगें अब महाबलवंत।।
कहा घनश्याम ने अच्छा तो फिर इजहार कर इसका।
न यादवों से लड़ूंगा मैं कभी, इकरार कर इसका।।
किया सहदेव ने घनश्याम से वादा न लड़ने का।
दिया वरदान खुश होकर, न आपस में झगड़ने का।।

पाए पैकार = युद्ध के
लिए
गुस्स = घमद
तमकनत = दबदबा,
शानो-शौकत

सरे मैदों = रणभूमि

इजहार = प्रकट करना
इकरार = मानना
१) मुखपफुफ = संक्षिप्त
२) अजीज = दोस्त
२) अकारिब = कुरिबी
मित्र

१) वरदान का मुखपफुफ बमानी कौल व करार २) कृष्णजी के अजीज व अकारिब और खानदान वाले

کہا سہیلو نے، میں آپ بھی وردان اب مجھکو
 کہ ہم سب بھائیوں کو زندگی بھر شام بنواری
 کیا گھنٹام نے، سہیلو سے وعدہ اعازت کا
 کہ سہیلو نے سرکار میں لینے کو آیا ہوں
 یہ شہر اور پانڈو منتظر ہیں آپ کے سجن
 چلے چلے یہاں اندر نگری اب تو میں ہو بہن
 وہاں اب یگ کاسب، نظم اے گھنٹام کرنا ہے
 لہذا آپ ہی کے مشورے سے کام کرنا ہے

جرے-انوبوہ

یہ سنکر دوار کا سے چل پڑے پھر شام بنواری
 پھر اسکے بعد ارجن اور شری گھنٹام جی ملکر
 قریب بحر پہنچے اور کیا ہنمان کا درشن
 وہاں سے دولت و ثروت کا اک انبار لے آئے
 یہ شہر نے کبھی دیکھی نہ تھی اتنی بڑی دولت
 خوشی سے جھوم کر بولایا ہے بھگوان کی قدرت

اگر لاف و کرم =
 مہاراجا

اگر لاف = پناہ دینا
 اکران = مدد، کرا

اگر لاف = پناہ

اگر لاف = پناہ
 اکران = مدد، کرا

اگر لاف = پناہ

ب-دو شامی = کٹنا کے
 لاف

مالو جڑ = دھن، دولت
 کرور = گد

دور = موٹی
 سیمو-جڑ = دھن، دولت

دکھائیں ایسی الطاف و کرم کی شان اب مجھکو
 مدد دینے کا وعدہ کیجئے اے کرشن گرو دھاری
 مصیبت اور پریشانی میں امداد و اعانت کا
 سفر کا دکھ فقط اک آپ کی خاطر اٹھایا ہوں
 یہ شہر اور پانڈو منتظر ہیں آپ کے سجن
 چلے چلے یہاں اندر نگری اب تو میں ہو بہن
 وہاں اب یگ کاسب، نظم اے گھنٹام کرنا ہے
 لہذا آپ ہی کے مشورے سے کام کرنا ہے

نر انوبوہ

یہ سنکر دوار کا سے چل پڑے پھر شام بنواری
 پھر اسکے بعد ارجن اور شری گھنٹام جی ملکر
 قریب بحر پہنچے اور کیا ہنمان کا درشن
 وہاں سے دولت و ثروت کا اک انبار لے آئے
 یہ شہر نے کبھی دیکھی نہ تھی اتنی بڑی دولت
 خوشی سے جھوم کر بولایا ہے بھگوان کی قدرت

فقط اک ملک لنکا سے ملا ہے جبکہ مال اتنا
تو باقی اور ملکوں سے ملے گا مال و زر کتنا
یہ بایں سوچکر وہ اپنے دل میں خوب شاداں تھا
زیرِ انبوہ سے اس کا دماغ و قلب فرحان تھا

تسخیرِ ہفت اقلیم

یہ مشہر نے کہا گنہشام سے کیا کام کرنا ہے
بتاؤ گے کا کیا نظم دل آرام کرنا ہے
کہا گنہشام نے تسخیرِ ہفت اقلیم باقی ہے
نظامِ حکمرانی میں ابھی ترسیم باقی ہے
یہ مشہر نے یہ سنکر بھائیوں کو اپنے بلوایا
انھیں تسخیرِ ہفت اقلیم پر مامور فرمایا
کہا اس نے کہ تم سب پھیل جاؤ سارے عالم میں
کمی آنے نہ پائے اب تمہارے عزمِ محکم میں
چلے پھر بھیم ارجن اور نکل سہیلو سب بھائی
قدم بڑھ بڑھکے اُنکے چومتا تھا اوجِ دارائی
کوئی مصر و راکش اور کوئی ایران تک پہنچیا
کوئی افغان و بابل اور کوئی یونان تک پہنچیا
کوئی ان میں سے برما چین اور جاپان میں آیا
بہر جادو ہر منزل جہان رنگ و بو پایا
مُسخر کر لیا پھر سب نے ملکر ارضِ عالم کو
جھکایا ساری دنیا کے شہنشاہوں کے پرچم کو
ملائے تاب و سیمیں لے کے وہ لوٹے غنیمت میں
نہایت شان سے داخل ہوئے اپنی ولایت میں
پھر اس مالِ غنیمت کو اکٹھے کر کے پانڈو نے
بجائے خوب ملکر شادیاں اور نقارے

تسخریہ-ہفت اقلیم

یوڈیشیر نے کہا غنیشام سے کیا کام کرنا ہے
بتاؤ یج کا کیا نظم، دل آرام کرنا ہے
کہا غنیشام نے تسخریہ-ہفت اقلیم باقی ہے
نیجام-ہوکم-رانی میں ابھی ترسیم باقی ہے
یوڈیشیر نے یہ سنکر بھائیوں کو اپنے بولوا یا
انھیں تسخریہ-ہفت اقلیم پر مامور فرمایا
کہا اس نے کہ تم سب پھیل جاؤ سارے عالم میں
کمی آنے نہ پائے اب تمہارے عزمِ محکم میں
چلے پھر بھیم ارجن اور نکل، سہیلو سب بھائی
کدام بڑھ بڑھکے انکے، چومتا تھا اوجِ دارائی
کوئی افغان-او- بابل اور کوئی ایران تک پہنچا
کوئی مصر و راکش اور کوئی یونان تک پہنچا
کوئی ان میں سے برما، چین اور جاپان میں آیا
بہر جادو، بہر مہر جہان-رنگ-او-بو پایا
مُسخر کر لیا فیر سب نے ملکر ارجے-آلہم کو
شکا یا ساری دنیا کے شہنشاہوں کے پرچم کو
تلائے تاب-او-سیمی لے کے وہ لوٹے گنیمت میں
نیہایت شان سے داخل ہوئے اپنی ولایت میں
فیر اس مالِ غنیمت کو اکٹھے کر کے پانڈو نے
بجائے خوب ملکر شادیاں اور نقارے

شادی = خوش
فرہی = پرسن
جرے-انبوہ = بہت
جدا دھن
تسخریہ-ہفت اقلیم =
سات راجوں کو ویکر
کرنا

نیجام-ہوکم-رانی =
راج کا شامن

آلہم = جگ
اُجمے-مہکم = مہجوت
یرا دا

اوج = اُچاई
داراई = بادشاہی

مُسخر کر = ویکری کر
لیا ارجے-آلہم =
ساری پٹھی

تلائے-تاب و سیمی =
سونا اور چاندی
ویلا یات = راج
مالے-گنیمت = لُٹ کا
مال

माले-गनीमत का जाएजा

फिर इसके बाद ही घनश्याम जी ने फतहो-नुसरत का।
 लिया अच्छी तरह से जाएजा, माले-गनीमत का।।
 फकत मुल्के-जरासंग रह गया था फतह होने से।
 बचा था शाह जिसका, मौत के पहलू में सोने से।।
 कहा घनश्यामजी ने, है जरासंग का निशाँ जब तक।
 न होगा यज्ञ, बाकी उसकी है उसी-रवाँ जबतक।।
 मिटाओ पहले बढ़कर सफहा-ए-हस्ती से नाम उसका।
 बढ़ो, और मुन्तकिल परलोक में, कर दो मकाम उसका।।
 यह सुनकार भीम-ओ-अर्जुन और जनाबे कृष्ण गिरधारी।
 जरासंगी हुक्मत में हुए दाखिल ब दुशवारी।।
 बदलकर ले लिया था भेस तीनों ने ब्रह्मण का।
 हिफाजत शर्त थी चूँके, वतन था एक पुर-फन का।।
 इधर राजा जरासंग ने, फकत जादू की ताकत से।
 लिया कारे-निगहबानी तहय्युर खेज कुव्वत से।।
 कुछ ऐसी हड्डियाँ आवेजाँ करदी, बावे-ऐवाँ पर।
 कि जो दुश्मन हो मेरा, सामने आजाए वह खुल कर।।
 इसी कारण श्री घनश्याम, अर्जुन, भीम ने मिलकर।
 महल की तोड़दी दीवार, और दाखिल हुए अंदर।।

फतहो-नुसरत = विजय
 माले-गनीमत = प्राप्त
 वन
 जाएजा = निरक्षण

कारे-निगहबानी =
 चौकशी कार्य
 तहय्युर = आश्चर्य
 बावे-ऐवाँ = महल के
 द्वार

आरजू-ए-जंग

गरीबों को जहाँ राजा जरासंग दान करता था।
 खुशी से झोलियाँ हर रोज़ मोहताजों की भरता था।।

१) यह लफ्ज़ जरासन्ध है लेकिन शरी ज़रूरत के लिए जरासंग इस्तेमाल किया गया है।

माल गनीमत का جائزه

पहरा के बाद ही गनश्याम जी ने फतह औरत का
 फकत मुल्क जरासंग रह गया था फतह होने से
 कहा गनश्याम जी ने है जरासंग का नशा जब तक
 न होगा यज्ञ बाकी उसकी है उसी रवाँ जब तक
 मिटाओ पहले बढ़कर सफहा-ए-हस्ती से नाम उसका
 बढ़ो और मुन्तकिल परलोक में कर दो मकाम उसका
 यह सुनकार भीम-ओ-अर्जुन और जनाबे कृष्ण गिरधारी
 जरासंगी हुक्मत में हुए दाखिल ब दुशवारी
 बदलकर ले लिया था भेस तीनों ने ब्रह्मण का
 हिफाजत शर्त थी चूँके वतन था एक पुर-फन का
 इधर राजा जरासंग ने फकत जादू की ताकत से
 लिया कारे-निगहबानी तहय्युर खेज कुव्वत से
 कुछ ऐसी हड्डियाँ आवेजाँ करदी बावे-ऐवाँ पर
 कि जो दुश्मन हो मेरा सामने आजाए वह खुल कर
 इसी कारण श्री घनश्याम अर्जुन भीम ने मिलकर
 महल की तोड़दी दीवार और दाखिल हुए अंदर

आरजू-ए-जंग

गरीबों को जहाँ राजा जरासंग दान करता था
 खुशी से झोलियाँ हर रोज़ मोहताजों की भरता था
 १) यह लफ्ज़ जरासन्ध है लेकिन शरी ज़रूरत के लिए जरासंग इस्तेमाल किया गया है

وہیں خیرات لینے کیلئے یہ لوگ آ بیٹھے
 بالآخر دان لے لے کر برہمن اٹھ گئے سارے
 جراسنگ نے کہا کیوں، کیلئے بیٹھے ہو تم آخر
 وہ بولے اے مہاراجہ جراسنگ ہو کر ہم پر
 ہماری اک تمنا ہے اگر پوری وہ ہو جائے
 کہاراجہ نے میں اس بات کا اظہار کرتا ہوں
 کہ گنیشام نے راجہ جراسنگ کو سر میداں
 لڑائی کے لیے تیار ہو، بس ہے یہی ارماں

جواب جراسنگ

یہ سن کر ہنس پڑا وہ، اور بولا خیر نادانو
 مگر تم نے لڑائی کے لئے پاپڑ یہ کیوں بیدلا
 اگر ایسے بھی تم مجھ سے لڑائی کے لئے کہتے
 لڑائی سے مجھے انکار کب ہے شوق سے آؤ
 لڑائی چاہتے ہو تو لڑو، تم مجھ سے دیوالو
 یہ بچوں جیسی ہٹ اور جھیل کپٹ کا کھیل کیوں کھیلا
 تو کیا اپنے ارادے میں کبھی ناکام تم بہتے
 لڑو اور لڑ کے اپنی ہمت مردانہ دکھلاؤ

وہیں خیرات لینے کیلئے یہ لوگ آ بیٹھے
 بالآخر دان لے لے کر برہمن اٹھ گئے سارے
 جراسنگ نے کہا کیوں، کیلئے بیٹھے ہو تم آخر
 وہ بولے اے مہاراجہ جراسنگ ہو کر ہم پر
 ہماری اک تمنا ہے اگر پوری وہ ہو جائے
 کہاراجہ نے میں اس بات کا اظہار کرتا ہوں
 کہ گنیشام نے راجہ جراسنگ کو سر میداں
 لڑائی کے لیے تیار ہو، بس ہے یہی ارماں

جوابے-جراسنڈ

یہ سن کر ہنس پڑا وہ، اور بولا خیر نادانو
 مگر تم نے لڑائی کے لئے پاپڑ یہ کیوں بیدلا
 اگر ایسے بھی تم مجھ سے لڑائی کے لئے کہتے
 لڑائی سے مجھے انکار کب ہے شوق سے آؤ
 لڑائی چاہتے ہو تو لڑو، تم مجھ سے دیوالو
 یہ بچوں جیسی ہٹ اور جھیل کپٹ کا کھیل کیوں کھیلا
 تو کیا اپنے ارادے میں کبھی ناکام تم بہتے
 لڑو اور لڑ کے اپنی ہمت مردانہ دکھلاؤ

مہ پارے = چاندما کے
 ٹوکے

کرسم = دیا

تمننا = کامنا

سارے-میدان = رणभूमि

خیر نادانوں = अच्छا
 मुखों

मगर तुम ने तो अपनी, बुज़दिली की इत्तेहा कर दी।
महल की तोड़कर दीवार, दिखलाई है ना मर्दी॥
चलो अच्छा किया तुम ने, बहुत अच्छा किया तुमने।
है कितना जोर तुम में, यह भी अब दिखला दिया तुमने॥
मगर लड़ने से पहले, यह कहो तुम कौन हो क्या हो।
कहाँ से आए हो, क्या नाम है, किस रण के योद्धा हो॥

कृष्णजी का इरशाद

यह सुनकर श्यामजी बोले, यह अर्जुन वह दिलावर है।
कि जिस ने फतह पाई इन्द्र पर, शेर-गजन्कर है॥
जला कर जिसने खाण्डव बन को, पल में भस्म कर डाला।
स्वयं वर में जिसे पहनाई पंचाली ने वर माला॥
मुझे पहचान मैं हूँ कृष्ण, जिसने कंस को मारा।
दिलेरी का मेरी देखा है, इस दुनियाँ ने नज़ारा॥
मेरे बाद इस जगह जो तीसरा है, फील अफ़ग़न है।
है जिसका नाम-नामी भीम, जो फौलाद-ओ-आहन है॥
बहुत से राक्षस की, चीर डाली छतियाँ जिस ने।
चबा डाली हैं शेराने-वगा की, हड्डियाँ जिसने॥
अब इनमें से जरासंग किस से लड़ने का इरादा है।
तेरी टक्कर का मौजू कौन, तीनों में ज्यादा है॥

शेर-गजन्कर =
दहाड़ना शेर

मौजू = बराबर का

जरासंध का मुकर्रर इज़हारे- खयाल

यह सुनते ही मतानत से, जरासंग ने दहन खोला।
निहायत पुर असर अंदाज़ में, वह इसतरह बोला॥

मतानत = गंभीरता
दहन = मूंह

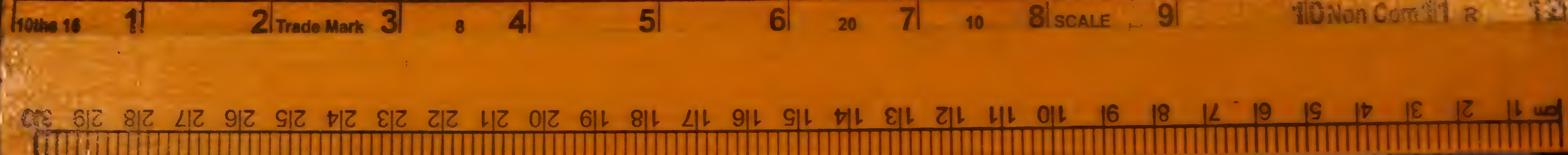
मगर तमने तो अपनी बزدली की انتेहा कर दी
महल की तोड़कर दीवार दिखलाई है ना मर्दी
चलो अच्छा किया तुम ने बहुत अच्छा किया तुमने
है कितना जोर तुम में यह भी अब दिखला दिया तुमने
मगर लड़ने से पहले यह कहो तुम कौन हो क्या हो
कहाँ से आए हो क्या नाम है किस रण के योद्धा हो

करशन जी का इरशाद

ये सुकरश्याम जी बोले ये अर्जुन दे दलावर है
जला कर जिसने खाण्डव बन को पल में भस्म कर डाला
मुझे पहचान मैं हूँ कृष्ण जिसने कंस को मारा
दिलेरी का मेरी देखा है इस दुनियाँ ने नज़ारा
मेरे बाद इस जगह जो तीसरा है फील अफ़ग़न है
है जिसका नाम-नामी भीम जो फौलाद-ओ-आहन है
बहुत से राक्षस की चीर डाली छतियाँ जिस ने
चबा डाली हैं शेराने-वगा की हड्डियाँ जिसने
अब इनमें से जरासंग किस से लड़ने का इरादा है
तेरी टक्कर का मौजू कौन तीनों में ज्यादा है

जरासंग का मुकर्रर इज़हारे- खयाल

ये सुनते ही मतानत से जरासंग ने दहन खोला
निहायत पुर असर अंदाज़ में वह इसतरह बोला



किं पे वालक, किजन कहता है, तेरा नाम है अर्जुन।
 दिगर इसके है तुझ में उद्य के मानिन्द वायो गुण॥
 अगरचे तूही अर्जुन है, तो लड़ने की न कर वृत्रभन।
 न दे उठनी जवानी में, तू अपनी मान सो दावन॥
 यह दोनों जो तेरे साथी है, वह मक्कार ओ-पुन फन है।
 तुझे मरवाना मुझ से चाहने है, तेरे दुश्मन है॥
 हे मेरा मर्षाविग यह इन की बातों में न तू आना।
 चढ़ा देगे तुझे अथ भेट पर, यह है वर दाना॥
 अभी तो खेलने रवाने के दिन है तेरे पे नादाँ।
 उधर तू आ गया है, माँ उधर होगी तेरी हैराँ॥
 है अथ भी वक्त, पे नादान बच्चे, जित न कर घर जा।
 खबर तुझ को नहीं है खैर-ओ-जर की, वे खबर घर जा॥
 अगरचे तल्लू में भी तल्लूतर है गुफ्तगू मेरी।
 मगर यह सोच, क्या लड़ने के काविल उम्र है तेरी॥
 मैं बच्चों को हमेशा ही, नजर अंदाज करता हूँ।
 जो हम-पल्ला है उन से, जंग का आगाज करता हूँ॥
 भला बच्चों के आगे, कोई जौहर कैसे दिखलाए।
 बराबर की जो चोटें हों, तो लड़ने में मजा आए॥
 यहाँ अथ बच गए हैं सिर्फ, तेरे बाद दो दुश्मन।
 मगर इनमें से है डक कृष्ण, जो शांतिर है और पुर-फन॥
 चता पे श्याम, क्यों तू बारहा लड़ने को आता है।
 दिया कर छल रुपट, फिर बुजदिली से भाग जाता है॥
 मुझे खुद भी हया आती है डक कायर से लड़ने को।
 मगर डक तू है, जो हर बार आता है अगड़ने को॥
 नहीं है तू भी इस काविल, अभी पे बुजदिले-दौराँ।
 कि तू मेरे मुकाविल टिक सके, आकर सरे-मैदाँ॥
 अथ इसके बाद सिर्फ डक भीम ही रहता है इस काविल।
 कि जिस से आज लड़ने में खुशी होगी मुझे हासिल॥

हैराँ = परेशान

खैर-ओ-जर = अच्छा

गुग

तल्लू = कल्लू

आगाज = युद्ध

बारहा = हमेशा

बुजदिले-दौराँ =
कायर

कह लै बालक कश्न कहलै है, तिरनाम है अर्जुन।
 अर्जुन तो ही अर्जुन है, तो लड़ने की न कर जरात
 ये दोनों जो तेरे साथी हैं, वे मक्कार ओ-पुन फन हैं।
 है मेरा मशहूर ये, अन्की बातों में न तू आना
 अबी तो किल्ले लहाने के दिन हैं तिरने लै नादाँ
 है अब भी वक्त अलै नादान बच्चे मन्द न कर घर जा
 अर्जुन से भी तल्लूतर है गुफ्तगू मेरी
 मगर यह सोच, क्या लड़ने के काविल उम्र है तेरी
 मैं बच्चों को हमेशा ही, नजर अंदाज करता हूँ
 जो हम-पल्ला है उन से, जंग का आगाज करता हूँ
 भला बच्चों के आगे, कोई जौहर कैसे दिखलाए
 बराबर की जो चोटें हों, तो लड़ने में मजा आए
 यहाँ अथ बच गए हैं सिर्फ, तेरे बाद दो दुश्मन
 मगर इनमें से है डक कृष्ण, जो शांतिर है और पुर-फन
 चता पे श्याम, क्यों तू बारहा लड़ने को आता है
 दिया कर छल रुपट, फिर बुजदिली से भाग जाता है
 मुझे खुद भी हया आती है डक कायर से लड़ने को
 मगर डक तू है, जो हर बार आता है अगड़ने को
 नहीं है तू भी इस काविल, अभी पे बुजदिले-दौराँ
 कि तू मेरे मुकाविल टिक सके, आकर सरे-मैदाँ
 अथ इसके बाद सिर्फ डक भीम ही रहता है इस काविल
 कि जिस से आज लड़ने में खुशी होगी मुझे हासिल

وہ ہے میرے برابر کا میں ہوں اسکے برابر کا وہی اک سورما رہ گیا ہے میری فکر کا

گرز آہنی کے جوہر

یہ کہہ کر اٹھ گیا راجہ جراسنگ چھوڑ کر آسن
اور اس میں سب گدا اک بھیم کو دیدی، دلاور نے
اور اسکے بعد دونوں سرد میدان شہر کے باہر
پہنچ کر دیکھ بھنی پر ہوئے استاودہ لڑنے پر
گدا لے کر بڑھا راجہ جراسنگ بھیم کی جانب
بہادر بھیم معمولی تو لڑ دیا نہ تھا کوئی
جراسنگ کے اچانک وار پر گھبرا کے رہ جاتا
بدل کر پنیتر افور یا خود کو دشمن سے
اب اسکے بعد باری بھیم کی تھی وار کرنے کی
کئے پھر بے تحاشہ پے پے سات آٹھ وار ایسے
کہ جسے رات میں جگنو فضا میں جھلکتے ہوں

وہیں منگو الیں فوراً دو گدائیں دیکھ کے کارن
دکھائی شان آئیں دغا کی مرد سر پر نے
گدا لے کر چلے خود میں ونازاں شہر کے باہر
نظر آتے تھے دونوں سورما آمادہ لڑنے پر
رہا مابعد پہلا وار کرنے میں وہی غالب
وہ اک فنکار تھا جاٹ اور پوریا نہ تھا کوئی
جو ضرب گرز پر سر ٹھیکیت، تھرا کے رہ جانا
نکل آیا وہ مثل تیر اسکی ضرب سے سن سے
نہ مہلت بھیم نے دی اسکو ذرہ بھر بھرنے کی
جھڑے ہیں خند و خال گرز سے برقی و شر ایسے
ہزاروں دھپ گویا جلتے بجھتے ٹمٹماتے ہوں

وہ ہے میرے برابر کا میں ہوں اسکے برابر کا وہی اک سورما رہ گیا ہے میری فکر کا

گورجے-آہنی کے جواہر

یہ کہہ کر اٹھ گیا راجہ جراسنگ چھوڑ کر آسن
اور اس میں سب گدا اک بھیم کو دیدی، دلاور نے
اور اسکے بعد دونوں سرد میدان شہر کے باہر
پہنچ کر دیکھ بھنی پر ہوئے استاودہ لڑنے پر
گدا لے کر بڑھا راجہ جراسنگ بھیم کی جانب
بہادر بھیم معمولی تو لڑ دیا نہ تھا کوئی
جراسنگ کے اچانک وار پر گھبرا کے رہ جاتا
بدل کر پنیتر افور یا خود کو دشمن سے
اب اسکے بعد باری بھیم کی تھی وار کرنے کی
کئے پھر بے تحاشہ پے پے سات آٹھ وار ایسے
کہ جسے رات میں جگنو فضا میں جھلکتے ہوں

وہیں منگو الیں فوراً دو گدائیں دیکھ کے کارن
دکھائی شان آئیں دغا کی مرد سر پر نے
گدا لے کر چلے خود میں ونازاں شہر کے باہر
نظر آتے تھے دونوں سورما آمادہ لڑنے پر
رہا مابعد پہلا وار کرنے میں وہی غالب
وہ اک فنکار تھا جاٹ اور پوریا نہ تھا کوئی
جو ضرب گرز پر سر ٹھیکیت، تھرا کے رہ جانا
نکل آیا وہ مثل تیر اسکی ضرب سے سن سے
نہ مہلت بھیم نے دی اسکو ذرہ بھر بھرنے کی
جھڑے ہیں خند و خال گرز سے برقی و شر ایسے
ہزاروں دھپ گویا جلتے بجھتے ٹمٹماتے ہوں

آہنی-آہنی = آہنی
آہنی-آہنی = آہنی

آہنی-آہنی = آہنی
آہنی-آہنی = آہنی

آہنی-آہنی = آہنی
آہنی-آہنی = آہنی

غرض دونوں ہی شہزادی میں یکساں زمانہ تھے ہنرمندی میں اور حد تھے، دلیری میں یگانہ تھے
گدا آپس میں ٹکراتے تو کرکڑ کا رعد سا ہوتا گر جتے بادلوں کی گرد گردا ہٹ سے سوا ہوتا
فضائیں کانپ اٹھتی تھیں گداؤں کے دھمکے سے پہاڑوں کے جگر پھٹتے تھے گرزوں کے جھمکے سے

بالا غر لڑتے لڑتے ضربے گرز گراں لڑے

مگر بہت نہ لڑی اور نہ اچھے حوصلے چھوڑے

ملٹھ پٹھ کے جوہر یعنی

کشتی کے داؤں پیچ

گدا کو چھوڑ، آمادہ ہوئے وہ ہاتھ پائی پر کہ جیسے ساند ڈوٹکرائیں بے حد مشتعل ہو کر
صدائے ٹھوکنے کی بار بار اٹھتی تھی میدان سے بہم دست و گریباں تھے وہ پورے عزم و ایقان سے
کبھی گردن پہ وہ اک دوسرے کی تھاپ دیتے تھے اسی انداز سے پھر جائزہ قوت کا لیتے تھے
وہیں سے ٹانگ کوئی مارنے کی سمت تھا مائل کوئی پیٹ کھینچنے کی کر رہا تھا سستی لا حاصل
کسی نے کھینچ کر دستی، مکر کو زور سے گانٹھا مگر ہاتھوں کا حلقہ چیر کر، کوئی نکل بھاگا
کبھی کوئی یکا یک لڑتے لڑتے گر پڑا نیچے وہیں سے ڈھیکلی کھا کر وہ آیا، پیٹھ کے پیچھے

مگر جہاں دونوں ہی جاد جادری سے بھرتا تھا جمانا ہے۔
دھنر مادی سے بھرتا ہے، دینہری سے بھرتا ہے۔

مدا آپس میں دھرتا ہے، تو کھاتا راد یا کھاتا۔
مگر جہاں جادری کی مگر مگر مگر سے بھرتا ہے۔

مگر جہاں جادری کی مگر مگر مگر سے بھرتا ہے۔
مگر جہاں جادری کی مگر مگر مگر سے بھرتا ہے۔

مگر جہاں جادری کی مگر مگر مگر سے بھرتا ہے۔
مگر جہاں جادری کی مگر مگر مگر سے بھرتا ہے۔

مल्लयुद्ध के जौहर यानी कुश्ती के दाँव पेंच

مدا کو چھوڑ، آمادہ ہوئے وہ ہاتھ پائی پر کہ جیسے ساند ڈوٹکرائیں بے حد مشتعل ہو کر
صدائے ٹھوکنے کی بار بار اٹھتی تھی میدان سے بہم دست و گریباں تھے وہ پورے عزم و ایقان سے

کبھی گردن پہ وہ اک دوسرے کی تھاپ دیتے تھے اسی انداز سے پھر جائزہ قوت کا لیتے تھے
وہیں سے ٹانگ کوئی مارنے کی سمت تھا مائل کوئی پیٹ کھینچنے کی کر رہا تھا سستی لا حاصل

کسی نے کھینچ کر دستی، مکر کو زور سے گانٹھا مگر ہاتھوں کا حلقہ چیر کر، کوئی نکل بھاگا
کبھی کوئی یکا یک لڑتے لڑتے گر پڑا نیچے وہیں سے ڈھیکلی کھا کر وہ آیا، پیٹھ کے پیچھے

مدا کو چھوڑ، آمادہ ہوئے وہ ہاتھ پائی پر کہ جیسے ساند ڈوٹکرائیں بے حد مشتعل ہو کر
صدائے ٹھوکنے کی بار بار اٹھتی تھی میدان سے بہم دست و گریباں تھے وہ پورے عزم و ایقان سے

کبھی گردن پہ وہ اک دوسرے کی تھاپ دیتے تھے اسی انداز سے پھر جائزہ قوت کا لیتے تھے
وہیں سے ٹانگ کوئی مارنے کی سمت تھا مائل کوئی پیٹ کھینچنے کی کر رہا تھا سستی لا حاصل

کسی نے کھینچ کر دستی، مکر کو زور سے گانٹھا مگر ہاتھوں کا حلقہ چیر کر، کوئی نکل بھاگا
کبھی کوئی یکا یک لڑتے لڑتے گر پڑا نیچے وہیں سے ڈھیکلی کھا کر وہ آیا، پیٹھ کے پیچھے

مدا کو چھوڑ، آمادہ ہوئے وہ ہاتھ پائی پر کہ جیسے ساند ڈوٹکرائیں بے حد مشتعل ہو کر

صدائے ٹھوکنے کی بار بار اٹھتی تھی میدان سے بہم دست و گریباں تھے وہ پورے عزم و ایقان سے

کبھی گردن پہ وہ اک دوسرے کی تھاپ دیتے تھے اسی انداز سے پھر جائزہ قوت کا لیتے تھے

وہیں سے ٹانگ کوئی مارنے کی سمت تھا مائل کوئی پیٹ کھینچنے کی کر رہا تھا سستی لا حاصل

کسی نے کھینچ کر دستی، مکر کو زور سے گانٹھا مگر ہاتھوں کا حلقہ چیر کر، کوئی نکل بھاگا

کبھی کوئی یکا یک لڑتے لڑتے گر پڑا نیچے وہیں سے ڈھیکلی کھا کر وہ آیا، پیٹھ کے پیچھے

مدا کو چھوڑ، آمادہ ہوئے وہ ہاتھ پائی پر کہ جیسے ساند ڈوٹکرائیں بے حد مشتعل ہو کر

صدائے ٹھوکنے کی بار بار اٹھتی تھی میدان سے بہم دست و گریباں تھے وہ پورے عزم و ایقان سے

کبھی گردن پہ وہ اک دوسرے کی تھاپ دیتے تھے اسی انداز سے پھر جائزہ قوت کا لیتے تھے

وہیں سے ٹانگ کوئی مارنے کی سمت تھا مائل کوئی پیٹ کھینچنے کی کر رہا تھا سستی لا حاصل

کسی نے کھینچ کر دستی، مکر کو زور سے گانٹھا مگر ہاتھوں کا حلقہ چیر کر، کوئی نکل بھاگا

کبھی کوئی یکا یک لڑتے لڑتے گر پڑا نیچے وہیں سے ڈھیکلی کھا کر وہ آیا، پیٹھ کے پیچھے

مدا کو چھوڑ، آمادہ ہوئے وہ ہاتھ پائی پر کہ جیسے ساند ڈوٹکرائیں بے حد مشتعل ہو کر

صدائے ٹھوکنے کی بار بار اٹھتی تھی میدان سے بہم دست و گریباں تھے وہ پورے عزم و ایقان سے

کبھی گردن پہ وہ اک دوسرے کی تھاپ دیتے تھے اسی انداز سے پھر جائزہ قوت کا لیتے تھے

وہیں سے ٹانگ کوئی مارنے کی سمت تھا مائل کوئی پیٹ کھینچنے کی کر رہا تھا سستی لا حاصل

کسی نے کھینچ کر دستی، مکر کو زور سے گانٹھا مگر ہاتھوں کا حلقہ چیر کر، کوئی نکل بھاگا

کبھی کوئی یکا یک لڑتے لڑتے گر پڑا نیچے وہیں سے ڈھیکلی کھا کر وہ آیا، پیٹھ کے پیچھے

کبھی نیچے کوئی لا کر مستاً خوب دھرتی پر |
 کبھی گردن سجد دیتا تھا کوئی گھٹنا رکھ کر |
 کوئی ان میں سے ساندی کھینچ کر گھسا لگاتا تھا |
 کبھی تنگ آ کے پورے پوش میں مونڈے چڑھاتا تھا |
 کوئی فوراً نکلتا سر کی فلتی کھاکے نیچے سے |
 اچانک ڈال دیتا جانگے میں ہاتھ پیچھے سے |
 بالآخر لڑتے لڑتے دونوں چوڑے ہڈے پہ پھر آئے |
 ہنر کے پتیرے اک دوسرے کو خوب دکھائے |
 اچانک خوبصورت دواں مارا بھیم نے اُس پر |
 جراسنگ چاروں شانے چیت گرا پھر سامنے آکر |
 پک کر بھیم فوراً چڑھ گیا یوں اسکے سینے پر |
 ہو جیسے شیر آمادہ لہو گردن کا پسینے پر |
 مگر فوراً جراسنگ زور فطری اور طاقت سے |
 پلٹ کر ہو گیا پٹ اپنی دیرینہ مہارت سے |
 اُسے پھر خوب رسا پھل گئے تھے ہاتھ پیر اسکے |
 جراسنگ جیسا شیطان دھیل اک پڑتا بغیر اسکے |

غروب مہرنگ یوں دھڑپک ہوتی رہی آخر

مگر اک دوسرے کو زیر کرنے سے رہے قاصر

شہادتِ بھیم میں تنزلِ نزل

دسا تیر و غامیس یہ بھی تھا دستور اک بہتر |
 لڑائی بند ہو جاتی تھی سورج ڈوب جانے پر |
 غروب مہر پر دونوں جواں لڑنے سے باز آئے |
 پلٹ کر رنگ بھومی سے نشانِ فخر و ناز آئے |

کبھی نیچے کوئی لا کر مستاً خوب دھرتی پر |
 کبھی گردن سجد دیتا تھا کوئی گھٹنا رکھ کر |
 کوئی ان میں سے ساندی کھینچ کر گھسا لگاتا تھا |
 کبھی تنگ آ کے پورے پوش میں مونڈے چڑھاتا تھا |
 کوئی فوراً نکلتا سر کی فلتی کھاکے نیچے سے |
 اچانک ڈال دیتا جانگے میں ہاتھ پیچھے سے |
 بالآخر لڑتے لڑتے دونوں چوڑے ہڈے پہ پھر آئے |
 ہنر کے پتیرے اک دوسرے کو خوب دکھائے |
 اچانک خوبصورت دواں مارا بھیم نے اُس پر |
 جراسنگ چاروں شانے چیت گرا پھر سامنے آکر |
 پک کر بھیم فوراً چڑھ گیا یوں اسکے سینے پر |
 ہو جیسے شیر آمادہ لہو گردن کا پسینے پر |
 مگر فوراً جراسنگ زور فطری اور طاقت سے |
 پلٹ کر ہو گیا پٹ اپنی دیرینہ مہارت سے |
 اُسے پھر خوب رسا پھل گئے تھے ہاتھ پیر اسکے |
 جراسنگ جیسا شیطان دھیل اک پڑتا بغیر اسکے |

سباتے-بھیم میں تزلزل

دسا تیر و غامیس یہ بھی تھا دستور اک بہتر |
 لڑائی بند ہو جاتی تھی سورج ڈوب جانے پر |
 غروب مہر پر دونوں جواں لڑنے سے باز آئے |
 پلٹ کر رنگ بھومی سے نشانِ فخر و ناز آئے |

گھٹنا-مہر = مہر کا
 دھیلنا
 جیر = پھاٹک

دسا تیر و غامیس = یوں
 کا قانون

لےھا جڑا یوں ہی مےداں مےں، وہ روجانا نیکلےتے یے۔
 سھر سے شام تک، کوشتی کے داوے پےچ چلےتے یے۔
 وہ سترتائیس دین تک، دھر پٹک کرتے رہے یوں ہی۔
 نئیجا آخیرش، نیکلا ن اتنے روج مےں کوئی۔
 تو سترتائیس دین ملے یوڈھ سے بھیم گھرا کر۔
 تو سترتائیس دین ملے یوڈھ سے بھیم گھرا کر۔
 جراسنگ سے تو اب شنگھرش کی جرات نہیں بھیں۔
 لڑوں اس فیل پیکر سے، نہیں طاقت نہیں بھیں۔
 یہی عالم رہا تو میں یقیناً مارا جاؤں گا۔
 کسی صورت سے بھی میں زیر اسکو کر پادنگا۔
 جواب دے چکی ہے میری بہت اور مری قوت۔
 بچائیں آپ اس شیطان سے مجھ کو بہر صورت۔

श्री कृष्ण की रहनुमाई और दावें पेंच के गुर

श्री घनश्यामजी ने गौर से उसकी सुनी बातें।
 बताई फिर उन्होंने, उसको गुर की बात और घातें।
 वह बोले हौसले से काम ले ऐ भीम फरजाने।
 हमेशा खेलते हैं शमा की लौ से ही परवाने।
 हवादिस में अमल और जुहद ही, मर्दों का जौहर है।
 जो सीना चीर कर मौजों का निकले वह शनावर है।
 यह मैं भी जानता हूँ, है जरासंग आहनी पैकर।
 दिलेरी और शैह ज़ोरी में वह तुझसे नहीं कमतर।
 मगर वह कल तेरे हाथों ही रण में मारा जाएगा।
 कृष्ण का जाम तू ही कल, उसे जाकर पिलाएगा।

आखिरश = अन्त में

वा दिले-मुजतर = वेचैन
दिल

फरजाने = बुद्धिमान

हवादिस = संकट
जुहद = कोशिश
जौहर = शान
शनावर = तैराक

कजा = मृत्यु

لہذا یوں ہی میدان میں وہ روزانہ نکلتے تھے۔
 سحر سے شام تک کشتی کے داؤں پیچ چلتے تھے۔
 وہ ستائیس دن تک دھڑپنگ کرتے رہے یوں ہی۔
 نتیجہ آخرش نکلا نہ اتنے روز میں کوئی۔
 تو ستائیسویں دن ملے یوڈھ سے بھیم گھرا کر۔
 شری گھنیشام سے کہنے لگیوں بادل مضطر۔
 جراسنگ سے تو اب شنگھرش کی جرات نہیں بھیں۔
 لڑوں اس فیل پیکر سے، نہیں طاقت نہیں بھیں۔
 یہی عالم رہا تو میں یقیناً مارا جاؤں گا۔
 کسی صورت سے بھی میں زیر اسکو کر پادنگا۔
 جواب دے چکی ہے میری بہت اور مری قوت۔
 بچائیں آپ اس شیطان سے مجھ کو بہر صورت۔

شری کرشن کی رہنمائی اور داؤں پیچ کے گرو

شری گھنیشام جی نے غور سے اسکی سننی باتیں۔
 بتائیں پھر انہوں نے اسکو گرو کی بات اور گھاتیں۔
 وہ بولے حوصلے سے کام لے اے بھیم فرزانے۔
 ہمیشہ کھیلے تھے شمع کی لوسے ہی پردانے۔
 حوادث میں عمل اور جہد ہی مردوں کا جوہر ہے۔
 جو سینہ چیر کر موجوں کا نکلے وہ شناور ہے۔
 یہ میں بھی جانتا ہوں، ہے جراسنگ آہنی پیکر۔
 دلیری اور شہہ زوری میں وہ تجھ سے نہیں کمتر۔
 مگر وہ کل تیرے ہاتھوں ہی رن میں مارا جائیگا۔
 قضا کا جام تو ہی کل اُسے جا کر پلائے گا۔

وہ کل تیرا مقابل بنے جب آئے سر میداں اُسے تو کھینچ کر نیچے ہی لے آنا بہر امکاں
پھر اس کے بعد اپنی ٹانگ اس کی ٹانگ پر رکھ کر
پکڑ کر چیر دینا درمیاں سے نیچے سے اوپر

جرا سنگ کیفر کردار تک

اسی شب کی سحر نے بھیم کو بخشی تو انا ئی
طلوع شمس کی پہلی کرن کے ساتھ میداں میں
جرا سنگ بھی ادھر میدان میں نہ ٹھونک کر آیا
طا کر ہاتھ، بایاں ہاتھ رکھا اس کی گردن پر
مگر اس کی یہ کوشش رائیگاں گزری بہر صورت
پھر اس کے بعد دونوں جٹ گئے زور آزمائی پر
ہنراک دوسرے پر کر رہے تھے دونوں بڑھ چڑھ
یونہی لڑتے ہوئے پھر دیر گزری دلیروں کو
دلیران و غا کی بے نتیجہ جنگ نے آخر

جرا سंध कैफरे-किरदार तक

उसी शब की सहर ने, भीम को बख्शी तवानाई।
नए सिर से इरादों में, फिर उसके पुख्तगी आई।।
तुलू-शम्स की पहली किरण के साथ मैदों में।
लगादी भीम ने इक जस्त आतिश खेज़ तूफ़ों में।।
जरासंग भी इधर मैदान में खम ठोक कर आया।
बदलकर पैतरा झपटा, तो उस को सामने पाया।।
मिला कर हाथ, बायाँ हाथ रखा उस की गर्दन पर।
झकोला देके इक टंगा लगाया, जोश में आकर।।
मगर उसकी यह कोशिश रायगों गुज़री बहर सूरत।
न बरती भीम ने ज़र्रा बराबर इस समय गफलत।।
फिर इसके बाद दोनों जुट गए जोर आजमाई पर।
जमाना शशदर-ओ-हैरान था, उन की लड़ाई पर।।
हुनर इक दूसरे पर, कर रहे थे दोनों बढ़ चढ़कर।
फने-कुश्ती का उनकी, खुल रहा था एक इक जौहर।।
यूँही लड़ते हुए फिर, दोपहर गुज़री दिलेरों को।
अभी तक कोई ज़क, पहुँची न थी उन दोनों शेरों को।।
दिलेराने-वगा की बे नतीजा जंग ने आखिर।
श्री घनश्याम को खामोश रहने से किया कासिर।।

मुकाबिल = शत्रु
बहर इमकाँ = जहा नक
सभव हो सके

درمیاں = बीच

تولوع-شمس = سورج کا
نیکالنا
جست = छलांग

راयگों = बेकार

शशदर व हैरान =
आश्चर्य, चकित

ज़क = हानि

कासिर = मजबूर



دیکھا ہی پھر انہوں نے بھیسم کو دانا ئی و حکمت
دیکھا ہی پھر انہوں نے بھیسم کو دانا ئی و حکمت
وہیں سے اک شجر کی شاخ کو توڑا بصد عجلت

پھر اسکو بھیسم کے آگے شری گھنشیام نے چیرا
پھر اسکو بھیسم کے آگے شری گھنشیام نے چیرا
تعب سے نگاہ و چشم اس کی رہ گئی خیر

وہ سب یاد آگئیں فوراً ہی انکی رات کی باتیں
وہ سب یاد آگئیں فوراً ہی انکی رات کی باتیں
بتائی تھیں انہوں نے جس قدر گری اسے گھاتیں

بہادر بھیسم اسکے بعد ہی غم ٹھونک کر اٹھا
بہادر بھیسم اسکے بعد ہی غم ٹھونک کر اٹھا
لگایا کہہ کے یا بجرنگ اک ہیبت اثر نعرہ

ابھی اس نعرہ ہیبت اثر کا شور و ہنگامہ
ابھی اس نعرہ ہیبت اثر کا شور و ہنگامہ
ہوا تھا کم نہ ذرہ بھر کہ اٹھا بخت کا خامہ

لکھا فرمان رحلت اسنے یوں راہ بجرانگ کا
لکھا فرمان رحلت اسنے یوں راہ بجرانگ کا
رہا بجرنگ کا میدان میں نام و نشان او پنا

لگی تھی ساتھ ہی نعرہ کے اسکی ٹھیک ملتان
لگی تھی ساتھ ہی نعرہ کے اسکی ٹھیک ملتان
یہ چونکہ بھیسم کا تھا ازبودہ داؤں لا ثانی

نہ بچ پایا ہنر کی ضرب سے وہ ماہر خوش فن
نہ بچ پایا ہنر کی ضرب سے وہ ماہر خوش فن
گر پھر چاروں شانے پوت جرانگ پیکر آہن

پیکر کر جادو چا بھیسم نے اس فتنہ ساماں کو
پیکر کر جادو چا بھیسم نے اس فتنہ ساماں کو
زیں پر چاروں جانب خوب گر لڑ دشمن جاں کو

اور اسکے بعد اس نے اس طرح اک ٹانگ کو پکڑا
اور اسکے بعد اس نے اس طرح اک ٹانگ کو پکڑا
بیکر کر ٹانگ، دولوں آہنی پنجنوں میں پھر جکڑا

پھر اپنا پیر اسکی دوسری اک جانگھ پر رکھ کر
پھر اپنا پیر اسکی دوسری اک جانگھ پر رکھ کر
بیکر رخ چیر ڈالا درمیاں سے بھیسم نے کھیر

اسی رانہ جرانگ کی رہائی

جرانگ فیل تن کا جٹہ خاک سر میداں دوپارہ ہو کے خاک و خون میں ہوتا رہا غلطان

دانا ئی و حکمت =
ہوشیاری، نالہ کی

تاج جڑ = آجڑ
نیگاہ = دیکھنا
بشم = بے شمار
خیر = خیر

جوسا-آ-خاک =
مٹی کا بدن
دوپارا = دو ٹکڑے

دیکھا ہی پھر انہوں نے بھیسم کو دانا ئی و حکمت
دیکھا ہی پھر انہوں نے بھیسم کو دانا ئی و حکمت
وہیں سے اک شجر کی شاخ کو توڑا بصد عجلت

پھر اسکو بھیسم کے آگے شری گھنشیام نے چیرا
پھر اسکو بھیسم کے آگے شری گھنشیام نے چیرا
تعب سے نگاہ و چشم اس کی رہ گئی خیر

وہ سب یاد آگئیں فوراً ہی انکی رات کی باتیں
وہ سب یاد آگئیں فوراً ہی انکی رات کی باتیں
بتائی تھیں انہوں نے جس قدر گری اسے گھاتیں

بہادر بھیسم اسکے بعد ہی غم ٹھونک کر اٹھا
بہادر بھیسم اسکے بعد ہی غم ٹھونک کر اٹھا
لگایا کہہ کے یا بجرنگ اک ہیبت اثر نعرہ

ابھی اس نعرہ ہیبت اثر کا شور و ہنگامہ
ابھی اس نعرہ ہیبت اثر کا شور و ہنگامہ
ہوا تھا کم نہ ذرہ بھر کہ اٹھا بخت کا خامہ

لکھا فرمان رحلت اسنے یوں راہ بجرانگ کا
لکھا فرمان رحلت اسنے یوں راہ بجرانگ کا
رہا بجرنگ کا میدان میں نام و نشان او پنا

لگی تھی ساتھ ہی نعرہ کے اسکی ٹھیک ملتان
لگی تھی ساتھ ہی نعرہ کے اسکی ٹھیک ملتان
یہ چونکہ بھیسم کا تھا ازبودہ داؤں لا ثانی

نہ بچ پایا ہنر کی ضرب سے وہ ماہر خوش فن
نہ بچ پایا ہنر کی ضرب سے وہ ماہر خوش فن
گر پھر چاروں شانے پوت جرانگ پیکر آہن

پیکر کر جادو چا بھیسم نے اس فتنہ ساماں کو
پیکر کر جادو چا بھیسم نے اس فتنہ ساماں کو
زیں پر چاروں جانب خوب گر لڑ دشمن جاں کو

اور اسکے بعد اس نے اس طرح اک ٹانگ کو پکڑا
اور اسکے بعد اس نے اس طرح اک ٹانگ کو پکڑا
بیکر کر ٹانگ، دولوں آہنی پنجنوں میں پھر جکڑا

پھر اپنا پیر اسکی دوسری اک جانگھ پر رکھ کر
پھر اپنا پیر اسکی دوسری اک جانگھ پر رکھ کر
بیکر رخ چیر ڈالا درمیاں سے بھیسم نے کھیر

اسی رانہ جرانگ کی رہائی

جرانگ فیل تن کا جٹہ خاک سر میداں دوپارہ ہو کے خاک و خون میں ہوتا رہا غلطان

پچا تھا شور و غل کا ایک ہنگامہ رعیت میں اضافہ ہو رہا تھا دم بدم جوش و کدورت میں
مگر نصیام جی نباض عالم نے سیاست سے کیا ہیجان کو ٹھنڈا نہایت ہی فراست سے
اسیران جرسنگ نے بھی آخر مغلھی پائی نہ جانے کس قدر لمبی تھی اکی قید تنہائی

لہذا سب اسیران جرسنگ ہو گئے شاداں

اک عرصہ بعد پایاب کے کسوت نے درد کا درماں

گیکیہ کا جائزہ

ہوئے واپس وہ تینوں سور مارگ جرسنگ پر خوشی کے ساتھ پہنچے اندر نگری کامراں ہو کر
لیا اک بار سب نے جائزہ پھر گیگ کا، مل کر کہ باقی رہ گیا ہے کام آخر کتنا کس کے سر
نکل بولا کہ میں اب شیا م جی کے ساتھ جاتا ہوں اور ان کے ساتھ جاکر سورن منڈپ لیکے آتا ہوں
نکل اور شیا م جی ناگوں کی دنیا میں ہوئے داخل وہاں سے سورن منڈپ پھر انھوں نے نکال
فقط اب مسئلہ تھا کام دھینو جی کے آنے کا یہ ہمشہ نے لیا تھا آج ذمہ انھوں نے لے لیا

غرض پھر کام دھینو کا یہ ہمشہ نے کیا سمن

ہوا آسودہ جینکے دم قدم سے گیگ کا دامن

مچا تھا شور و غل کا ایک ہنگامہ رعیت میں
مگر نصیام جی نباض عالم نے سیاست سے کیا ہیجان کو ٹھنڈا نہایت ہی فراست سے

اسیران جرسنگ نے بھی آخر مغلھی پائی نہ جانے کس قدر لمبی تھی اکی قید تنہائی

لہذا سب اسیران جرسنگ ہو گئے شاداں
اک عرصہ بعد پایاب کے کسوت نے درد کا درماں

لہذا سب اسیران جرسنگ ہو گئے شاداں
اک عرصہ بعد پایاب کے کسوت نے درد کا درماں

یज्ञ کا جایزا

ہوئے واپس وہ تینوں سور مارگ جرسنگ پر خوشی کے ساتھ پہنچے اندر نگری کامراں ہو کر

لیا اک بار سب نے جائزہ پھر گیگ کا، مل کر کہ باقی رہ گیا ہے کام آخر کتنا کس کے سر

نکل بولا کہ میں اب شیا م جی کے ساتھ جاتا ہوں اور ان کے ساتھ جاکر سورن منڈپ لیکے آتا ہوں

نکل اور شیا م جی ناگوں کی دنیا میں ہوئے داخل وہاں سے سورن منڈپ پھر انھوں نے نکال

فقط اب مسئلہ تھا کام دھینو جی کے آنے کا یہ ہمشہ نے لیا تھا آج ذمہ انھوں نے لے لیا

غرض پھر کام دھینو کا یہ ہمشہ نے کیا سمن
ہوا آسودہ جینکے دم قدم سے گیگ کا دامن

رڈھت = جننت
کدورت = شغرت

شادوں = پرسن

جایزا = کیا گیا کام
کا ویورن

ہاسیل = प्राप्त

مساجلا = समस्या

آسودا = اظہاری

جشن کی آرائش اور یگی کا منظر

یوڈیٹیر انتظام جشن میں مصروف تھا ہم
نیشاتو-کےف میں، ڈوا ہوا تھا یگی کا عالم
ہزاروں گز کے رنگیں شامیانے رنگ بھومی پر
سجائے جارہے تھے، خوشنما تھے راہ-آ-بام-آ-در
سرشتہ تھیں زرو نقرہ کی آمیزش سے سب کپیاں
مزین کی گئیں ان میں در شہوار کی لڑیاں
ستونوں میں جڑائے جارہے تھے گوہر و نیلم
زمر دل اور مرجان شہیزوں میں تھے مدغم
نمونے اک سے اک زربفت پر تھے دستکاری کے
کئی شہکار تھے زرگر کے فن زنگاری کے
کسی جارشیم و کجواب کے پردے تھے آئیناں
چمکے تھے شامیانوں میں کہیں قالین اور دریاں
گلاب اور مشک و عنبر سے معطر شاہراہیں تھیں
زرو نقرہ کی آب و تاب سے خیرہ نگاہیں تھیں
ہر اک سو نغمہ داہنگ سے اک کیف چھایا تھا
فضائیں ساز و موسیقی نے اک جادو جگایا تھا
کہیں تھا ڈھیر سا لعل و جواہر اور دولت کا
نزدیک تھا کسی نے اسقدر انبار ثروت کا
کہیں تھا دود منداں اور کہیں تھا شعلہ روشن
کہیں تھا غلہ و میوہ کہیں عنبر کہیں روغن
عجب پر کیف و راحت بخش تھا اس یگی کا منظر
برابے تھے ہزاروں لوگ اُس جا کے اک بڑھکر

بام-آ-در = در
نیشاتو = گنڈا ہوا
آ-بام-آ-در = ملتا ہوا
مزین = سجانا
زرو-شہوار = بڑا
موتی
زربفت = جڑی کا
کپڑا
زرگر = سونار

مؤتتر = خوشبودار
جڑو-نوکرا = سونا
چوہی

لالو-جواہر = موتی

دود-سندل = چندن کا
دھواں



پاکدامن مہمانوں سے یज्ञ کی جینت

شریک جشن ہو کر جو وہاں مہماں پہنچے تھے
وہ اٹھیا سہی ہزار افلاک عالم کے ستارے تھے
مگر ان میں سے تھے خوشنشاں مہتاب کی مانند
گلستاں کے شگوفوں میں گل شادابی مانند
ہزاروں سمجھتوں میں چند ایسے پاک دامن تھے
کہ جن میں ویاس، ناراد، پیل، روتو اور چرمیون تھے
علاوہ اسکے پرشورام، ویشی ہونتر اور سوننت
بھراؤناج اور درچھچھند ابرہہ تھے سبھی بھگوت
مہرشی جینی، آست، کدرو اور پارشتر
رشی کشپ، وشنو آتم اور تھے دھوم جلوہ گر
منی ترقی مہرشی سونمتی، اسکے کتر اور گوتم
جہاں تھے رام شش، دیسن پان، مہسن عالم
وہاں موجود تھے انکے علاوہ شیام بنواری
درونہ، بھیشم، کرپہ، اسکے اک بڑے بھگوت اور اعلیٰ

شریک = उपस्थित
افلاک = آسمان =
آکاश کے تارے
جی-فشاں = चमकते हुये
महताब = चंद्रमा
मानन्द = समान
गुलिस्ताँ = बागीचा
शगूफے, गुले-शदाब =
कोमल फूल

यज्ञ की इजाजत

युधिष्ठिर ने बकुंदरे-मरतबा हर एक मेहमाँ को।
बिठाया मसनदे-जरी पे, सारे अहले इरफाँ को।।
अलग थीं मसनदे राजाओं की, और नौजवानों की।
बहादुर शाहजादों की, दिलावर पहेलवानों की।।

बकुंदरे-मरतबा = हर
व्यक्ति के सम्मान के
अनुसार
मसनदे-जरी = चमकती
गादी

پاکدامن مہمانوں سے یگ کی زینت

شریک جشن ہو کر جو وہاں مہماں پہنچے تھے
وہ اٹھیا سہی ہزار افلاک عالم کے ستارے تھے
مگر ان میں سے تھے خوشنشاں مہتاب کی مانند
گلستاں کے شگوفوں میں گل شادابی مانند
ہزاروں سمجھتوں میں چند ایسے پاک دامن تھے
کہ جن میں ویاس، ناراد، پیل، روتو اور چرمیون تھے
علاوہ اسکے پرشورام، ویشی ہونتر اور سوننت
بھراؤناج اور درچھچھند ابرہہ تھے سبھی بھگوت
مہرشی جینی، آست، کدرو اور پارشتر
رشی کشپ، وشنو آتم اور تھے دھوم جلوہ گر
منی ترقی مہرشی سونمتی، اسکے کتر اور گوتم
جہاں تھے رام شش، دیسن پان، مہسن عالم
وہاں موجود تھے انکے علاوہ شیام بنواری
درونہ، بھیشم، کرپہ، اسکے اک بڑے بھگوت اور اعلیٰ

درونہ، بھیشم، کرپہ، اسکے اک بڑے بھگوت اور اعلیٰ

یگ کی اجازت

یہ شہر نے بقدر مرتبہ مہر ایک مہماں کو
بٹھایا مسند زریں پہ سارے اہل عرفاں کو
الگ تھیں مسندیں راجاؤں کی اور نوجوانوں کی
بہادر شاہزادوں کی دلاور سپہ سالاروں کی



فیر اسکے بعد لوگوں نے یہ اندازِ خلوصانہ
 یوہیشتیر کو کیا فیر پش باری باری نجرانا ۱۱
 میلی رسم تحالف اور نذرانوں سے جب فرصت
 انہوں نے کھود ڈالا پرتھوی کو سورن کے ہل سے
 جلائیں سینکڑوں من لکڑیاں پھر اسیں چندن کی
 مکمل ہو چکا جب انتظامِ جشنِ بابرکت
 یوہیشتیر نے اجازت یگ کی دیدی بھرمت

خولوسانا = پرم
 یوہیشتیر
 نجرانا = بھانا

یج کا منجر

دیا انجام کار برتھا، یوہیشتیر نے بڑھ کر
 علاوہ اسکے جتنے بھی شری تھے یگ میں شامل
 کوئی رگ وید کے اشلوک پڑھ کر چپ کرنا تھا
 ہوئی تیشیں کروڑ اس یگ میں کل دیوتاؤں کی
 غرض ہوتا رہا یہ راجسوی یگ مدت تک
 رہی محدود لیکن رسم یہ رسم عبادت تک

یوہیشتیر کو کیا پش باری باری نذرانہ
 تو بلوائے گئے داس برہمن فوراً بایں عظمت
 بنایا کھنڈ منڈپ تیز دھاری داراک پھل سے
 بھرک کر ہو رہی تھی دم بدم لوتیز گلِ غن کی
 مکمل ہو چکا جب انتظامِ جشنِ بابرکت
 یوہیشتیر نے اجازت یگ کی دیدی بھرمت

یگ کا منظر

دیا انجام کار برتھا، یوہیشتیر نے بڑھ کر
 علاوہ اسکے جتنے بھی شری تھے یگ میں شامل
 کوئی رگ وید کے اشلوک پڑھ کر چپ کرنا تھا
 ہوئی تیشیں کروڑ اس یگ میں کل دیوتاؤں کی
 غرض ہوتا رہا یہ راجسوی یگ مدت تک
 رہی محدود لیکن رسم یہ رسم عبادت تک



ٹلک کی رسم اور گفٹام کی پوجا

اسی انداز سے کافی دنوں تک جشن پر غفلت وہاں ہوتا رہا یہ راجسوتی ایک بابرکت
دن آیا سو ما بھیشک کا تو خوش ہو کر یہ پیشہ بہادر بھیشم سے پھر گفتگو کی یوں مقرر
بتاؤ تو ٹلک کس کو لگے ہے کون اس قابل عبادت کس کی، کی جائے ذرا حل کیجئے مشکل
یہاں اُس دیوتا کی آج پوجا اور اطاعت ہو کہ جسکے پوجنے سے سب خداؤں کی عبادت ہو
پتاما نے یوں اپنی رائے کا اظہار فرمایا عبادت کا شری گفٹام جی کو اہل ٹھہرا یا
شری گفٹام جی کی شخصیت ہے صرف اس قابل کہ جنکے پوجنے سے سب کی ہوگی بندگی حاصل
یہ سنتے ہی یہ پیشہ نے شری گفٹام کی پوجا نہایت شان سے کی پیکر کرام کی پوجا

شری گفٹام کی پرستش پر ششوپال کا سنج پانا ہونا

ششوپال انکی پوجا دیکھ کر پہلے تو جھنجھلا یا پھر اسکے بعد غصے میں یہ پیشہ پر برس اٹھا
کہا اُس نے مجھے افسوس ہے تیری فراست پر ہنسی آتی ہے تیری بیوقوفی اور حماقت پر

تیلک کی رسم اور غنیشیام کی پوجا

اسی انداز سے کافی دنوں تک جشن پر اجماع تھا وہاں ہوتا رہا یہ راجسوتی ایک بابرکت
دن آیا سو ما بھیشک کا تو خوش ہو کر یہ پیشہ بہادر بھیشم سے پھر گفتگو کی یوں مقرر
بتاؤ تو ٹلک کس کو لگے ہے کون اس قابل عبادت کس کی، کی جائے ذرا حل کیجئے مشکل
یہاں اُس دیوتا کی آج پوجا اور اطاعت ہو کہ جسکے پوجنے سے سب خداؤں کی عبادت ہو
پتاما نے یوں اپنی رائے کا اظہار فرمایا عبادت کا شری گفٹام جی کو اہل ٹھہرا یا
شری گفٹام جی کی شخصیت ہے صرف اس قابل کہ جنکے پوجنے سے سب کی ہوگی بندگی حاصل
یہ سنتے ہی یہ پیشہ نے شری گفٹام کی پوجا نہایت شان سے کی پیکر کرام کی پوجا

شری غنیشیام کی پرستش پر شیشو پال کا سیکھنا ہونا

شیشو پال انکی پوجا دیکھ کر پہلے تو جھنجھلا یا پھر اسکے بعد غصے میں یہ پیشہ پر برس اٹھا
کہا اُس نے مجھے افسوس ہے تیری فراست پر ہنسی آتی ہے تیری بیوقوفی اور حماقت پر

گفٹام = گارناٹ

فیراسات = بুদ্ধی

موجہ تو ہمیشہ کے ادراک پر بھی شک گذرتا ہے
 ستم کی بات ہے سہیلو جیسے طفل کی بدھتی
 جہاں ہوں دیاس نارد اور شوا متر بھی حاضر
 کرشنا جیسے مورکھ اور چرواہے کی یہ عزت
 نہیں ہرگز نہیں، میں ضبط مطلق کر نہیں سکتا
 کسی بھی شکل میں پوجا کی حامی بھر نہیں سکتا
 اگر ہونے لگے دنیا میں جبر اور ہوں کی رقتیت
 تو پھر کرنے لگے ہر ذرہ دعوائے الوہیت

ششوپال کی پیدائش پر برہمنوں کی پیش گوئی

یہ سنکر بھیم غصے میں بھنبو کا بن گیا یکلخت
 گدا کو ہاتھ میں نیکر بھر کر تن گیا یکلخت
 یہ حالت بھیم کی جب ہمیشہ نے دیکھی تو سمجھایا
 حکیمانہ لب و لہجے میں یوں ارشاد فرمایا
 ہوا تھا جب ششوپال تو تھا شکل اور بدرو
 اور اسکی تین آنکھوں کے علاوہ چار تھے بازو
 یہ بچہ پیدا ہوتے ہی کچھ ایسا رعد سا کڑکا
 کہ سچے راکشش ہے جیسے یہ انسان کا لڑکا

ادراک = बुद्धि, अकल

تيفل = बच्चा

तौकीर, अजमत =
 महानता
 रक्षित = इज्जत
 सम्मान
 उलूहीयत = खुदाई
 यः लखत = अचानक

शिशुपाल की पैदाइश पर ब्राह्मणों की पेश गोई

यह सुनकर भीम गुस्से में भभूका बन गया यकलखत।
 गदा को हाथ में लेकर, बिफर कर तन गया यकलखत।।
 यह, हालत भीम की जब, भीष्म ने देखी तो समझाया।
 हकीमाना लबो-लहजे में यूँ, इरशाद फरमाया।।
 हुआ था जब शिशु पैदा, तो था बद शकल और बदरू।
 और उसकी तीन आँखों के अलावा चार थे बाजू।।
 यह बच्चा पैदा होते ही, कुछ ऐसा राद सा कड़का।
 कि सचमुच राक्षश है जैसे, यह इन्सान का लड़का।।



جب اس عیبت کا بچہ دیکھا اسکی غمزدہ ماں نے
تو بولوا کر برہمن سے کہا اس سوختہ جان نے
بتاؤ راجہ تم کھینچ کر اس کا ہے کیا کارن
بھوش میں کس طرح بیٹے گاؤ مولود کا بیون
گروہ برہمن نے بردباری اور ذہانت سے
کہا اس مسئلہ پر غور فرما کر متانت سے
کہ سارے ملک سے راجوں مہاراجوں کو بلواؤ
پھر انکی گود میں اس راکشش بچے کو بٹلاؤ
اگر بچے کے جسکی گود میں بھی بیٹھ جانے سے
دو بازو، اور سونچشم، اپنے آپ گر جائے
تو سمجھو اسکے ہاتھوں سے یہ بچہ مارا جائے گا

عزور خود سری کا اس جہاں میں پل پائیگا

شری کرشن کی جانب سے ششوپال کے سوا پر ادھ کی بخشش کا وعدہ

یہ سننے ہی ششوکو اسکی ماں نے سارے شاہوں کی
دیا آغوش میں زینت بناوہ سب کے باہوں کی
یہ بچہ جب شری گھنٹام کی آغوش میں آیا
تو فوراً چشم اور باہوں سپایا اسنے چٹکارا
ششوک کی ماں نے اپنے پتر کا جب دیکھا یہ منظر
کہا اپنے بھتیجے کرشن سے یوں ملتی ہو کر
تمہارے ہاتھ سے اے شیام بنواری اڑ بیٹا
مرے گا، برہمن کہتے ہیں، یہ تقدیر کا ہیٹا

ہےات = پورن
سورننا جی = دھکی

جاڈھا = جنم کوندلی

جہانن = اکرانمندی
متانن = گمیرتا

سوم چم = تیسری
اگر
خود سری = مہچھاچار

شری کृष्ण کی جانیب سے شیشوپال کے سوا اپراध کی بریخشا کا وادا

یہ سننے ہی ششوکو اسکی ماں نے سارے شاہوں کی
دیا آغوش میں زینت بناوہ سب کے باہوں کی
یہ بچہ جب شری گھنٹام کی آغوش میں آیا
تو فوراً چشم اور باہوں سپایا اسنے چٹکارا
ششوک کی ماں نے اپنے پتر کا جب دیکھا یہ منظر
کہا اپنے بھتیجے کرشن سے یوں ملتی ہو کر
تمہارے ہاتھ سے اے شیام بنواری اڑ بیٹا
مرے گا، برہمن کہتے ہیں، یہ تقدیر کا ہیٹا

آگوش = گود

مزلتجی = پراشی

مآفِ उसکی خواتین، کر کے اہسوںِ مہرے توں کر دو۔
 مہری ڈوہلی اتوہت کے، دیرے-شہوار سے بھر دو۔
 یہ سنکر شام نے اپنی پھوپھی سے ہنسنے فرمایا
 مگر اپنی زبیاں پر حرفِ آخر اس طرح لایا
 کہ سو پرادھ تک اسکو میں اپنے لطفِ احسن
 شکر دوں گانا تے داری کے دیرینہ بندھن سے
 مگر اس سے زیادہ میں نہ بخشونگا کسی مورت
 سزا پائیگا یہ اپنی خطاؤں کی بہر حال
 پتا نہ اتنا کہہ کر رک گئے اور بھیم سے بولے
 بہت آہستہ جیسے کوئی امرت کان میں گھولے
 کہ یہ مجرم شری کشنوکا ہے وہ خود نپٹ لیں گے
 نہ آؤ جوش میں تم، وہ اُسے خود ہی سزا دیں گے

شری گھنٹشام کے ہاتھوں ششوپال قضا کی گود میں

ششوپال انکی باتیں سنکے ایسا غیظ میں آیا
 اٹھا پھٹکا کر اور سانپ کی مانند بل کھایا
 کہا اسنے کہ پوجا کرنے اور کر دینے والوں کو
 میں اپنی اہلیت کی آگ میں سارے جیالوں کو
 ہوں کرتا ہوں چاہے بھیشم ہو یا کرشن سادہ بخت
 مسل سکنا ہوں میں پاندو کو چوہن کی طرح یک منت
 یہ کہہ کر اسنے فوراً ہی لگا دی جست آسن سے
 پھر کرتن گیا بد بخت ظالم بے رحم پن سے

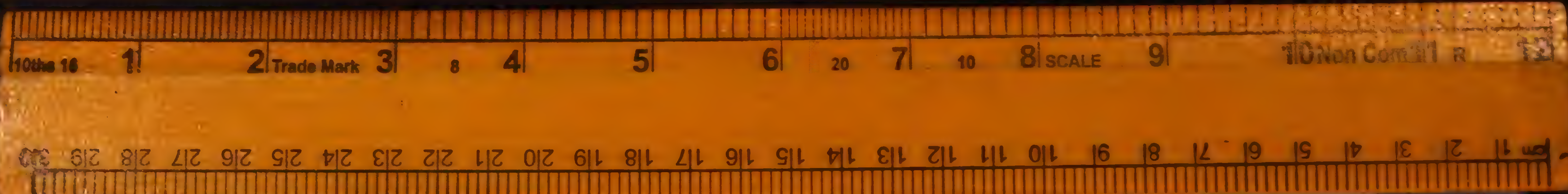
اتوہت = مہرہانی
 دیا
 دیرے-شہوار = دیر اور
 مہری

دیرینہ = پورنا

شری غنیشام کے، ہاتھوں شیشوپال کجا کی گود میں

شیشوپال انکی باتیں سنکے، ایسا گہج میں آیا
 اٹھا فٹکار کر، اور سانپ کی مانند بل کھایا
 کہا اس نے کی پوجا کرنے اور کر دینے والوں کو
 میں اپنی اہلیت کی آگ میں، سارے جیالوں کو
 ہوں کرتا ہوں چاہے، بھیشم ہو یا کرشن سادہ بخت
 ہوں کرتا ہوں چاہے، بھیشم ہو یا کرشن سادہ بخت
 یہ کہہ کر اسنے فوراً ہی لگا دی جست آسن سے
 پھر کرتن گیا بد بخت ظالم بے رحم پن سے

گہج = گھسٹا



خواتین سب سے اوپر ہو گئی تھیں اس ستمگر کی
 ہوئیں سوہان دل گستاخیاں مغرور خود سر کی
 کہا گشتام نے آخر بہ انداز شریفانہ
 کہ اسکی زندگی کا بھر گیا ہے آج پسیمانہ
 یہ کہہ کر شیاام بھاری نے اس شیطان کی جانب
 سو درشن چکر پھینکا جو تھا اپنی موت کا طالب
 قضا کی گود میں پہنچا سو درشن چکر سے آخر
 ملا چٹکارا ظالم کو جہان مکر سے آخر

یگ کے اختتام کا اعلان اور مخصوص مہمانوں کا رکن

ششوجب اس جہان رنگ و بو سے پاک فرمت
 تو پھر گشتام اور راجہ یدمشتر نے شفقت
 بٹھایا اسکے بیٹے کو بہ فرحت تخت شاہی پر
 نہ ڈالا ہاتھ دولت پر نہ اسکی کج کلا ہی پر
 نہایت شان و شوکت سے ہوا یہ جشن بابرکت
 کہ جس سے پاندوؤں کی بڑھ گئی توفیر اور عظمت
 یدمشتر نے کیا پھر اختتام جشن کا اعلان
 ہوتے واپس وہاں سے اک کے بعد آپ بھر بھی رہا
 مگر راجہ نے کچھ مخصوص مہمانوں کو رکوا دیا
 بوجہ رشتہ داری انکو کچھ دن اور ٹھہرایا

کہ جن میں تھے شری گشتام کوروں اور دیروں

انھیں روکنا پڑا دیرینہ رسم و راہ کے کارن

سوتانے = نا-گوار

تالیب = چاہنے والا

یج کے इखिताम کا اعلان اور مخصوس مہمانوں کا رکنا

شیشو جب اس جہان-رنگو-بو سے، پاگیا فخرست
 تو فیر غنشیام اور راجا یوधिष्ठिर نے بسد شफकृत
 بیٹایا اسکے بچے کو، ب فرحت تخت-شاہی پر
 نہ ڈالا ہاتھ دولت پر، نہ اسکی کجکولاہی پر
 نہایت شان-شوکت سے ہوا یہ جشن-بابرکت
 کہ جس سے پانڈوؤں کی بڑھ گئی توفیر اور عظمت
 یدمشتر نے کیا پھر اختتام جشن کا اعلان
 ہوتے واپس وہاں سے، اک کے بعد آپ بھر بھی رہا
 مگر راجہ نے کچھ مخصوص مہمانوں کو رکوا دیا
 بوجہ رشتہ داری انکو کچھ دن اور ٹھہرایا

शफकृत = रहम, दया

कजकुलाही = बादशाही

इखिताम = समाप्ती



سوژش شکر و حسد

یہ سچ ہے مہاں مسرور تھے اس یکے سے
مگر اک قلب درلودھن پہ بس چلتے رہے
حسد کی آگ میں ہر لمحہ وہ جلتا رہا یو نہیں
اُسے پانڈو کا جشن دلنشیں کھٹا رہا یو نہیں
یہ حسد کو سمجھا تیار کرنے کی جو ساگری
کسی احساں کے بدلے میں میداؤنے بخشی تھی
اسی محفل میں بیٹھا تھا یہ حسد ایک آسن پر
نظر کے سامنے تھا جشن شاہان کا ہر منظر
اسی عالم میں درلودھن سمجھا کی سمت جا پہنچا
قریب بزم مثل ماربل کھاتا ہوا پہنچا
دکھایا اپنا غصہ اُس نے پہلے پہرہ داروں پر
جو درباری پہ تھے ماموران خدمت گذاروں پر
پھر اس کے بعد یوں داخل ہوا دربار کے اندر
نگاہِ قہر سب پر ڈالنا آگے بڑھا خود سر

درلودھن کی حماقت اپنے عروج پر

بڑھا جو نہی مجلا فرش اک اُس کو نظر آیا
مگر اُس فرش پر دھوکا سراپ ریگ سا کھایا
اُسے اک چشمہ آبِ رواں سمجھا تھا درلودھن
اٹھایا اپنا کپڑا اس نے گھٹنے تک اسی کارن
وہاں پانی کہاں تھا وہ تو اک فرش مجلا تھا
کمال حسنِ صنائی تھا یا نظر دس کا دھوکا تھا

یہ سچ ہے مہماں مسرور تھے، اس یج سے سارے
مگر ایک کلبے-دوریوہن پہ، بس چلتے رہے آ رہے۔

حسد کی آگ میں ہر لمحہ وہ جلتا رہا یو نہیں
اُسے پانڈو کا جشن دلنشیں کھٹا رہا یو نہیں

یہ حسد کو سمجھا تیار کرنے کی جو ساگری
کسی احساں کے بدلے میں میداؤنے بخشی تھی

اسی محفل میں بیٹھا تھا یہ حسد ایک آسن پر
نظر کے سامنے تھا جشن شاہان کا ہر منظر

اسی عالم میں درلودھن سمجھا کی سمت جا پہنچا
قریب بزم مثل ماربل کھاتا ہوا پہنچا

دکھایا اپنا غصہ اُس نے پہلے پہرہ داروں پر
جو درباری پہ تھے مامور، ان خدیمت گزاریوں پر

پھر اس کے بعد یوں داخل ہوا دربار کے اندر
نگاہِ قہر سب پر ڈالنا آگے بڑھا خود سر

دیلنہشی = ہدایہ

میسلے-مار = سہ، ساپ
کی مانیند

دوریوہن کی ہیماکت اپنے زور پر

بڑھا جوں ہی مجلا فرش، ایک اُس کو نظر آیا
مگر اس فرش پر دھوکا، سراپے-رہا سا کھایا

اُسے ایک چشمہ آبِ رواں سمجھا تھا درلودھن
اٹھایا اپنا کپڑا اس نے گھٹنے تک اسی کارن

وہاں پانی کہاں تھا وہ تو ایک فرش مجلا تھا
کمال حسنِ صنائی تھا یا نظر دس کا دھوکا تھا

موجلتا = درپن جیسا
فہر

کمالے-ہوسنے-سناई =
کاریگری کا کمال

فیر اسکے بعد آگے بڑھا تو دیکھتا کیا ہے
 کیم فیرا تو دیکھتا کیا ہے
 قدم فوراً بڑھایا اس نے آگے بے خطر ہو کر
 مگر وہ بوکھلا کر جلد پانی سے نکل آیا
 غلام اور داسیاں ہنسنے لگے اسکی حاکم پر
 وہاں سے وہ بجلت چاہتا تھا بس نکل جانا
 بڑھاتی زی سے آگے سامنے دیوار تھی حائل
 پھر اسکے بعد کیا تھا؟ منظر حیرت نظر آیا
 فیر اسکے بعد کیا تھا؟ منظر حیرت نظر آیا
 فیر اسکے بعد کیا تھا؟ منظر حیرت نظر آیا

فیر-موجلتا = پانی
 یا دھواں سمان ہوا

آواز = پانی

ہوا = لہجہ

بے عزت = شہ

ہاڈل = خدی

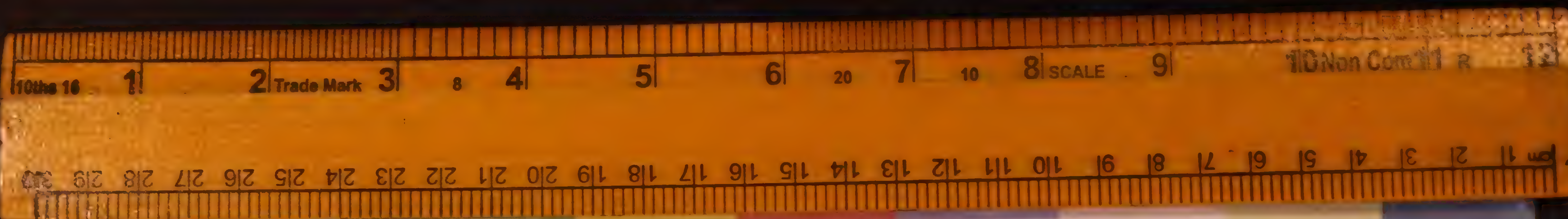
میجاہ-او-تنج کے نشتر

ہنسی اور قہقہوں کا چاروں جانب اٹھاٹھاٹ
 نکل سہیلو ارجن اور دلاور بھیم نے مل کر
 یہ ہنسنے جو دیو دھن کو دیکھا تو ترس آیا
 مگر گھنٹا کی شہ پر وہ ہنسنے سے نہ باز آئے
 کسی نے کہہ دیا اندھے کا اندھ ہے حقیقت میں
 ازل سے کور چشمی ہی لکھی ہے اسکی قسمت میں

پھر اسکے بعد آگے بڑھا تو دیکھتا کیا ہے
 کیم فیرا تو دیکھتا کیا ہے
 قدم فوراً بڑھایا اس نے آگے بے خطر ہو کر
 مگر وہ بوکھلا کر جلد پانی سے نکل آیا
 غلام اور داسیاں ہنسنے لگے اسکی حاکم پر
 وہاں سے وہ بجلت چاہتا تھا بس نکل جانا
 بڑھاتی زی سے آگے سامنے دیوار تھی حائل
 پھر اسکے بعد کیا تھا؟ منظر حیرت نظر آیا
 فیر اسکے بعد کیا تھا؟ منظر حیرت نظر آیا
 فیر اسکے بعد کیا تھا؟ منظر حیرت نظر آیا

مزل و طنز کے نشتر

ہنسی اور قہقہوں کا چاروں جانب اٹھاٹھاٹ
 نکل سہیلو ارجن اور دلاور بھیم نے مل کر
 یہ ہنسنے جو دیو دھن کو دیکھا تو ترس آیا
 مگر گھنٹا کی شہ پر وہ ہنسنے سے نہ باز آئے
 کسی نے کہہ دیا اندھے کا اندھ ہے حقیقت میں
 ازل سے کور چشمی ہی لکھی ہے اسکی قسمت میں



اسی انداز سے چاروں طرف سے اٹھا آوازہ بکھر کر رہ گیا جس سے خرد کا اسکی شیرازہ

ہزاروں پہنچ دھم کھاتا ہوا پلٹا عورت سے

وہاں سے بھاگ نکلا دیر درلودھن خجالت سے

راجہ پاندو کے نجات پانچ کی خوشخبری نارڈنی
کی پیشین گوئی

یہ مشہر سے وہ آخرین ملے واپس چلا آیا حسد کا ایک کالا داغ سینے میں چھپا لایا

پھر اسکے بعد ہی نارڈنی نے درش دکھلایا یہ مشہر سے مخاطب ہو کے یوں ارشاد فرمایا

مبارک ہو کہ تیرا اجسوتی گیت بابرکت ہو اب کامیاب و کامراں حیشی پر عظمت

پتا تیرے جہنم سے نکل کر پہنچے جنت میں لیا ایشور نے خوش ہو کر انھیں آغوش رحمت میں

طفیل گیت اب آساں ہوئی ہے انکی ہر مشکل رہ پر خار میں صد شکر ہے انکو ملی منزل

علاوہ اسکے اقلیم جہاں کی بادشاہت میں تو ہی سمرٹ کہلانے کے قابل ہے حقیقت میں

مگر بارہ برس کے بعد اس سرسبز مہرتی پر

ترے ہاتھوں قلم ہونے کروڑوں چھتریوں کے سر

یسی انداز سے، چاروں طرف سے اٹھا آوازہ
خیر کر رہ گیا جس سے، خیرد کا उसकी शीराजा ॥

हजारों पेचो-खम, खाता हुआ पलटा रुकत से।
वहाँ से भाग निकला वीर दुर्योधन खिजालत से ॥

राजा पांडू के नजात
पानेकी खुशखबरी और
नारद मुनि की पेशगोई

युधिष्ठिर से वह आर्य वन मिले वापस चला आया।
हसद का एक काला दाग सीने में छपा लाया ॥

फिर इसके बाद ही नारद मुनि ने दर्श दिखलाया।
युधिष्ठिर से मुरातिव होके यूँ इरशाद फरमाया ॥

मुबारक हो कि तेरा राजसूय यज्ञ वा वरकत।
हुआ है कामयाबो-कामराँ, यह जग्ने-पुर अजमन ॥

पिता तेरे जहन्नुम से निकल कर, पहुँचे जन्त में।
लिया ईश्वर ने खुश होकर, उन्हें आगोशे-रहमत में ॥

तुफैले-यज्ञ अब आसाँ, हुई है उनकी हर मुशकिल।
रहे-पुर-खार में सद शुक्र है, उनको मिली मजिल ॥

अलावा इसके अकलीमे-जहाँ की बादशाहत में।
तूही सम्राट कहलाने के काबिल है हकीकत में ॥

मगर बारह बरस के बाद, इस सरसब्ज धरती पर।
तेरे हाथों कलम होंगे करोड़ों क्षत्रियों के सर ॥

खिरद = युधि
शीराजा = चवन
पेचोखम = चकर और
वल
रुकत = गर्व
खिजालत = शर्म

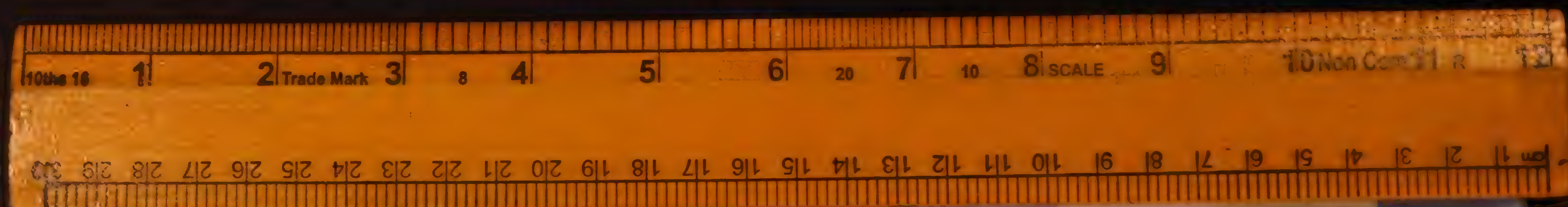
वा वरकत = शुभ
जग्ने-पुर अजमन =
मदान समारोह

आगोश = गोद

तुफैले-यज्ञ = यज्ञ के
कारण
रहे-पुरखार = कांटा
भरा मार्ग
अकलीमे-जहाँ =
जगज्य
सरसब्ज = हरी भरी

سلسلہ قماربازی

सिलसिला-ए
कुमार बाजी



دیودھن کی صحت پر حسد کا اثر

اور پانڈو کا سودہ تھا نقد عیش کے دامن
اثر سوزِ حسد کا پڑ رہا تھا اسکی صحت پر
حد اور دشمنی سے دن بدن ہوتا گیا لاغر
شکوئی کو خبر تھی اس لیے وہ ہو گیا مضطرب
بتایا مالِ دِریو دھنِ شکونی نے قرینے سے
اُدھر اندر ہی اندر چل رہا تھا قلبِ دِریو دھن
گراں ہوتا چلا تھا بار کدِ پیہمِ طبیعت پر
سبب اس ناتوانی کا نہ تھا ہر ایک پر ظاہر
اور اسکے بعد دِریو دھن کے والد سے ملا جا کر
کہ دِریو دھن حسد کی وجہ سے ہے تنگ جینے سے

دھرتی راشٹر کے سمجھانے پر
دریودھن کا جواب

یہ سنکر باپ نے فوراً ہی دریودھن کو بلوایا
سُنی باتیں مقدس باپ کی اس نے تانت سے
پتائی پسح ہے جو کچھ آپ نے ارشاد فرمایا
یہ پسح ہے میری ٹھوکر میں حکومت اور دولت ہے

दुर्योधन की सेहत पर हसद का असर

इधर पांडव का आसूदा था, नरुदे-पेश से दामन ।
उधर अन्दर ही अन्दर, जल रहा था कल्बे-दुर्योधन ।
असर सोजे-हसद का, पड़ रहा था उसकी सेहत पर ।
गिराँ होता चला था बारे-कद, पैहम तबीयत पर ।
हसद और दुश्मनी से दिन ब दिन होता गया लागि़र ।
सबब इस ना तवानी का, न था हर एक पर ज़ाहिर ।
शकुनी को ख़बर थी, इस लिए वह हो गया मुज़तर ।
और इसके बाद, दुर्योधन के वालिद से मिला जा कर ।
बताया हाले-दुर्योधन, शकुनी ने क़रीने से ।
कि दुर्योधन, हसद की वजह से है तंग जीने से ।

धृतराष्ट्र के समझाने पर दुर्योधन का जवाब

यह सुनकर बाप ने फौरन ही, दुर्योधन को बुलवाया।
निहायत प्यार से अपने, जिगर गोशा को समझाया।।
सुनी बातें मुकुन्दस बाप की, उस ने मतानत से।
बहुत पुर दर्द लहजे में कहा, लेकिन समाजत से।।
पिताजी सच है, जो कुछ आप ने इरशाद फरमाया।
पता सोजे-दरूँ का, आप ने लेकिन नहीं पाया।।
यह सच है मेरी ठोकर में, हुकूमत और दौलत है।
मैं अपने दृष्टमनों से दूर हूँ यह भी हकीकत है।।

आमुदा = भग हुआ
 नकदे-गेण = आनन्द,
 दामन = झोली
 कल्ब = हृदय
 मोजे-हमद = क्रोध की
 जनन
 गिरां = भारी
 वारे-कद पैहम = हमेशा
 कोघ का योज
 लागिर = कमज़ोर
 ना तयानी = कमज़ोरी
 मुजतर = बेचैन

जिगर गोशा = दिल का
दुकड़ा
मतानत = गंभीरता

मोजे-दरूँ = छिपी हुई
जलन

हकीकत = सत्य

مگر جو ہو چکی ہے راجسوی یک میں ذلت
اب اس توہین کہنے کی ہے مجھ میں کہاں طاقت
اچانک وہ مرد دھوکے سے گرنا آب کے اندر
اور اسکے بعد نیچائی کا ہنسنا میری دُرگت پر
وہ عالم یاد آتا ہے، تو مجھ کو ملک غیرت کے
پسینے چھوٹ جاتے ہیں خجالت اور زدامت کے
علاوہ اسکے ان کے پاس وہ انبار دولت کا
دہ اشیلے نشاط و کیف اور سامان عشرت کا
نہ جانے کتنے راجے اور مہاراجے یہ ہتھڑے
نوشادیں لگے تھے آج اس فتح مسخر کے
کہ جس کی یاد سے شعلہ بھڑک اٹھا پسینے میں
بغیر مال دنیا میں کہاں ہے لطف بیچنے میں

کدورت قلب کی معدوم ہوگی صرف یورش سے

یہ باتیں سن کے نابینا پتا بولے جت سے
کہ تو بھی یک کر پائندو کے جیسا شان شوکت سے
درد نہ، کرن، کرپا اور اسوت جیسے شیروں کا
نہیں ہے کوئی بھی نہ مقابل ان دیروز کا
انہیں مامور کر تسخیر ہفت اقلیم عالم پر
اسی ترکیب سے مال غنیمت تو فراہم کر
یہ سنکر بولادیر دھن کہ سچ ہیں آپ کی باتیں
مگر کس ملک سے لاؤنگا دولت اور سوغاتیں
کہ جب پائندو نے لے آئی ہے دولت لوٹ کر ساری
بچا ہے کیا بولے آئینے اپنے چاروں ہتھکاری
بغیر مال نہ کر کیا راجسوی یک ہے آساں
نہیں مکن نہیں اسکے سوا اب بٹن نورافشاں

مگر جو ہو چکی ہے راجسوی یک میں ذلت
اب اس توہین کہنے کی ہے مجھ میں کہاں طاقت
اچانک وہ مرد دھوکے سے گرنا آب کے اندر
اور اسکے بعد نیچائی کا ہنسنا میری دُرگت پر
وہ عالم یاد آتا ہے، تو مجھ کو ملک غیرت کے
پسینے چھوٹ جاتے ہیں خجالت اور زدامت کے
علاوہ اسکے ان کے پاس وہ انبار دولت کا
دہ اشیلے نشاط و کیف اور سامان عشرت کا
نہ جانے کتنے راجے اور مہاراجے یہ ہتھڑے
نوشادیں لگے تھے آج اس فتح مسخر کے
کہ جس کی یاد سے شعلہ بھڑک اٹھا پسینے میں
بغیر مال دنیا میں کہاں ہے لطف بیچنے میں

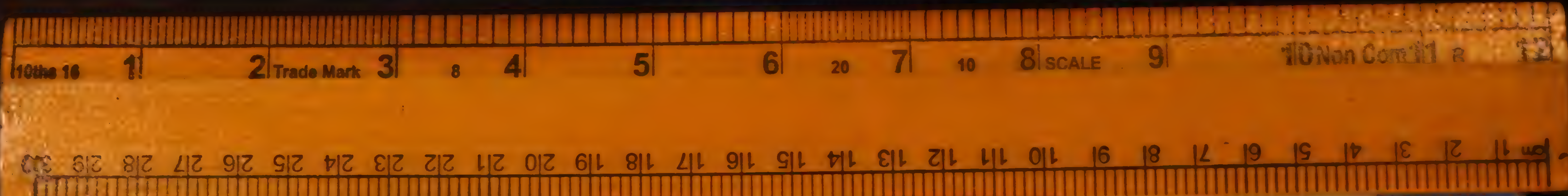
کدورت قلب کی مادوم ہوگی صرف یورش سے

یہ باتیں سن کے نابینا پتا بولے جت سے
کہ تو بھی یک کر پائندو کے جیسا شان شوکت سے
درد نہ، کرن، کرپا اور اسوت جیسے شیروں کا
نہیں ہے کوئی بھی نہ مقابل ان دیروز کا
انہیں مامور کر تسخیر ہفت اقلیم عالم پر
اسی ترکیب سے مال غنیمت تو فراہم کر
یہ سنکر بولادیر دھن کہ سچ ہیں آپ کی باتیں
مگر کس ملک سے لاؤنگا دولت اور سوغاتیں
کہ جب پائندو نے لے آئی ہے دولت لوٹ کر ساری
بچا ہے کیا بولے آئینے اپنے چاروں ہتھکاری
بغیر مال نہ کر کیا راجسوی یک ہے آساں
نہیں مکن نہیں اسکے سوا اب بٹن نورافشاں

ریختہ = شرفی
نیشانی = گولی
کی ترنگ
دھرت = انند
موسمیں = ریختہ
کرنے والا

مردہ = مکتوب
آسمان = سامنے، لہنے
والا

سوغاتیں = تحفہ،
تہنہ
ہتھکاری = دہشت



علاوہ اسکے اک راجہ کے جتنی کسی صورت
ہوا ہے اور نہ ہوگا، راجسوی گیت بابرکت
پتاجی اب سواک جنگ کے کوئی نہیں چارا
اہانت کا چلا کرتا ہے سینے پر مرے آرا
نہ ہوگی سرد آتش دشمنی کی رنگ وراثت سے
کہ ورت قلب کی معدوم ہوگی ضرور ش سے
تہتہ کر لیا ہے پانڈواں کو یس نہ چھوڑوں گا
انہیں نیچا دکھا کر ان کی خود بینی کو توڑوں گا
نہ ہوگی فتح جب تک اندر نگر کی سیر ہاتھوں سے
سکوں مجھ کو نہ آئیگا پتاجی ایسی باتوں سے

شکوئی کا مشورہ قمار بازی

شکوئی جیسا شاطر بھی وہیں موجود تھا اب تک
مگر اس وقت تک خاموش ہی بیٹھا تھا وہ بٹیک
وغاکی اسکی جب باتیں سنی تو اک خیال آیا
نہایت پیار سے پھر اس نے دیو دھن کو سمجھایا
کسی بھی حال میں تو فتح ان پر پانہیں سکتا
وغا میں ہم ساری کی تاب ان سے لائیں سکتا
خیال غام ہے پانڈو پہ یورش کی تری باتیں
اگر منظور ہو تو یس بتاتا ہوں تجھے گھاتیں
عمل میں میری گھاتیں تو اگر لایگا دیو دھن
تو آسانی سے تیرے ہاتھ مارا جائیگا دشمن
بہت آسان ہے ترکیب پانڈو کی تباہی کی
مٹا سکتا ہے ساری شان انکی کجکلاہی کی
اب انکو صرف چوٹ کھیلنے کی آج دعوت دے
وہ جی کو یہ ہتھکڑ کو بٹاتے کی اجازت دے
انہیں برباد کر دے پھل کپٹ سے چمت کر بازی
نہ کھیلنے پائے گا تیرا فریب قرعہ اندازی

اٹاوا اسکے ڈک راجا کے، جیتے جی کسی سورت
ہوا ہے اور نہ ہوگا، راجسوی یج یا ورکت
پیتا جی اب سواک جنگ کے کوئی نہیں چارا
اہانت کا چلا کرتا ہے، سینے پر مرے آرا
نہ ہوگی سرد آتش دشمنی کی رنگ وراثت سے
کہ ورت قلب کی معدوم ہوگی ضرور ش سے
تہتہ کر لیا ہے پانڈواں کو یس نہ چھوڑوں گا
انہیں نیچا دکھا کر ان کی خود بینی کو توڑوں گا
نہ ہوگی فتح جب تک اندر نگر کی سیر ہاتھوں سے
سکوں مجھ کو نہ آئیگا پتاجی ایسی باتوں سے

شکوئی کا مہاویرا-ع-کومار باجی

شکوئی جیسا شاطر بھی وہیں موجود تھا اب تک
مگر اس وقت تک خاموش ہی بیٹھا تھا وہ بٹیک
وغاکی اسکی جب باتیں سنی تو اک خیال آیا
نہایت پیار سے پھر اس نے دیو دھن کو سمجھایا
کسی بھی حال میں تو فتح ان پر پانہیں سکتا
وغا میں ہم ساری کی تاب ان سے لائیں سکتا
خیال غام ہے پانڈو پہ یورش کی تری باتیں
اگر منظور ہو تو یس بتاتا ہوں تجھے گھاتیں
عمل میں میری گھاتیں تو اگر لایگا دیو دھن
تو آسانی سے تیرے ہاتھ مارا جائیگا دشمن
بہت آسان ہے ترکیب پانڈو کی تباہی کی
مٹا سکتا ہے ساری شان انکی کجکلاہی کی
اب انکو صرف چوٹ کھیلنے کی آج دعوت دے
وہ جی کو یہ ہتھکڑ کو بٹاتے کی اجازت دے
انہیں برباد کر دے پھل کپٹ سے چمت کر بازی
نہ کھیلنے پائے گا تیرا فریب قرعہ اندازی

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

اٹاوا = اٹاوا

مہا = مہا

ناہنجار بیٹے کی ضد

کہا اندھے پتلے مشورہ سُکر شکوئی کا کسی ایفونی کا یہ شور ہے یا جسوئی کا
کسی صورت عمل پیرا نہ ہونا اس پر درلودھن کریگا دھرم کا یہ ناشائستہ دھرم کا دشمن
یہ سُکر ناخلف کہنے لگیوں باپ سے اپنے تماشہ دیکھئے اور دھرم کی باتیں الگ کھئے
میں دشمن کے لیے آخر کروں کیوں دھرم کا پالان کجب دشمن پر غلبہ کرے پانا ہے صدا حسن
مجھے اب آپ روکیں گے تو اپنی جان دیدوں گا کروں گا ہتیا اپنی، قضا کا جام پی لوں گا
جو دیکھا باپ نے اپنے جگر گوشہ کا یہ منظر کہ ضد اور دشمنی میں رہ گیا ہے عقل ہی کھو کر

تو دیدی باپ نے آخر اجازت اپنے بیٹے کو
مگر دل میں بُرا کہتے رہے قہر کے ہیٹے کو

دعوتِ قمار بازی کی منظوری

جُوئے کا جشن آخر طے ہوا دار الحکومت میں شکوئی کامراں تھا واقعی اپنی شرارت میں
دور کو اندر نگری مہر تو درلودھن نے بھجوا یا یہ شہر کو جوئے بازی کا جو پیغام دے آیا

نا ہنजार بے کی جید

کہا ارنیہ پیتا نے، مہاویرا سونکر شکونی کا۔
کیمی افسوئی کا، یہ مہاویرا ہے یا جونی کا۔
کیمی سونکر امان پیرا نہ ہونا ہم، یہ دُریوہن۔
کرے گا دھرم کا یہ ناہنجار، تیرے دھرم کا دشمن۔
یہ سونکر نا سونکر کھنے لگا یوں باپ سے اپنے۔
تاماغا دے گا، اور دھرم کی باتیں الگ کرے گا۔
میں دشمن کے لیے، آریہ، کھئے کئی دھرم کا پالان۔
کی جید دشمن پہ گالیاں، مگر سے پانا ہے صد اہسان۔
مجھے اب آپ روکیں گے، تو اپنی جان دیدوں گا۔
کھنگا ہتھا اپنی، کجا کا جام پی لوں گا۔
جو دے گا باپ نے اپنے، جیگر گوشہ کا یہ منظر۔
کی جید اور دشمنی میں، رہ گیا ہے عقل ہی کھو کر۔
تو دیدی باپ نے آخر اجازت اپنے بیٹے کو۔
مگر دل میں بُرا کہتے رہے، قہر کے ہیٹے کو۔

داوتے-کومار باجی کی منجوری

جُوئے کا جشن آخر طے ہوا دار الحکومت میں۔
شکوئی کامراں تھا، واقعی اپنی شرارت میں۔
دور کو اندر نگری مہر تو درلودھن نے بھجوا یا۔
یہ شہر کو جوئے بازی کا جو پیغام دے آیا۔

امان پیرا = امان
کیمی = کیمی

نا سونکر = سونکر

گالیاں = گالیاں
مگر = مگر
صد اہسان =
آریہ = آریہ
کجا = کجا

دار الحکومت =
گالیاں = گالیاں
کامراں = کامراں

پیغام = پیغام

یہ پیشتر کوئی جس وقت دیو دھن کی یہ دعوت سمجھیں اگئی اسکے، وہاں کی ساری کیفیت
 کہ یہ ظالم شکونی بے حیا خود سر کی سازش ہے اسی بدبخت ناہنجار کی سب جہد و کاوش ہے
 پس پردہ تلوت ہے شکونی اس شرارت میں نظر آتا ہے اس کا ہاتھ اس کا رُمالت میں
 وہ چوں کہ کتب اپنا پھینکنے میں خوب ماہر ہے جوئے بازی کے فن میں گماں گستاخاں ہے
 بالآخر چاروں بھائی اور یہ پیشتر چل پڑے گھر سے
 بلا خوف و خطر نکلے کفن باندھے ہوئے سر سے

ہنگامہ قمار بازی

کیا پھر بڑھ کے دیو دھن نے استقبال پانڈو کا نہایت مکر سے ہنس ہنس کے پوچھا مال پانڈو کا
 پھر اس کے بعد پانڈو کو حسیں ایوان میں ٹہرایا نقد اور رواداری کا منظر خوب دکھلایا
 شکونی اور دیو دھن تو فرس راہ ہوتے تھے کینز اور اس بھی ہمراہ خاطر خواہ ہوتے تھے
 جوئے بازی کی اسکے بعد اک ہنگامہ آرائی ہوئی ایسی کہ تخت بادشاہی تک کی بات آئی
 شکونی کتب اپنا پھینکنے میں خوب ماہر تھا
 یقیناً جیت جانا ویر دیو دھن کا ظاہر تھا

ع پھانسا

یوڈیٹیر کو میلی جیم وقت دُریو دھن کی یہ دعوت
 سمجھ میں آگئی اسکے، وہاں کی ساری کیفیت

کی یہ ظالم شکونی بے حیا خود سر کی سازش ہے
 اسی بدبخت ناہنجار کی سب جہد و کاوش ہے

پس پردہ تلوت ہے شکونی اس شرارت میں
 نظر آتا ہے اس کا ہاتھ اس کا رُمالت میں

وہ چوں کہ کتب اپنا پھینکنے میں خوب ماہر ہے
 جوئے بازی کے فن میں گماں گستاخاں ہے

بالآخر چاروں بھائی اور یہ پیشتر چل پڑے گھر سے
 بلا خوف و خطر نکلے کفن باندھے ہوئے سر سے

ہنگامہ-آ-کومار باجی

کیا فیر بڑھ کے دیو دھن نے، دستک بال پانڈو کا
 نہایت مکر سے، ہنس ہنس کے پوچھا مال پانڈو کا

پھر اس کے بعد پانڈو کو حسیں ایوان میں ٹہرایا
 نقد اور رواداری کا منظر خوب دکھلایا

شکونی اور دیو دھن تو فرس راہ ہوتے تھے
 کینز اور اس بھی ہمراہ خاطر خواہ ہوتے تھے

جوئے بازی کی اسکے بعد اک ہنگامہ آرائی
 ہوئی ایسی کہ تخت بادشاہی تک کی بات آئی

شکونی کتب اپنا پھینکنے میں خوب ماہر تھا
 یقیناً جیت جانا ویر دیو دھن کا ظاہر تھا

کے فیکٹ = ہالٹ

وہ ہوا = ہنگامہ

بدبخت = دُریو دھن

ناہنجار = بے حیا

تلوت = تلوت

رُمالت = رُمالت

گستاخاں = گستاخاں

کارے-جلا لٹ = کارے کے

کارے = کارے

کارے = کارے

کارے = کارے

بیلنا سرفیو-ختر = بیلنا

بیلنا سرفیو-ختر = بیلنا

بیلنا سرفیو-ختر = بیلنا

بیلنا سرفیو-ختر = بیلنا

نہایت = زیادہ

ہسیں پوائے = ہسیں پوائے

تفکک = تفکک

رواداری = رواداری

میزیتا = میزیتا

فرس-راہ ہونا = فرس-راہ ہونا

کیمی کے سواگت میں جُمن تک

مک جانا

کیمی = کیمی

ہمراہ = ہمراہ

خاتیر خواہ = خاتیر خواہ

ہنگامہ آرائی = ہنگامہ آرائی

چللاہٹ

جुہ کی دہی پر تختہ-شاہی کے ساتھ भाईयों और बीवी की भेंट

युधिष्ठिर ने बिलजगिर, यूँ तो हारी सलतनत सारी।
मगर फिर भी रहा मजबूत, और हिम्मत नहीं हारी॥

किया ताज-ओ-हुकूमत उसने, सब नजरे-कुमार अपना।
सिवाए सित्र-ए-तन, खो बैठा नादाँ तार तार अपना॥

फिर इसके बाद उसने जोश में एक एक भाई को।
लगाया दावँ पर, और हार बैठा हर फिदाई को॥

जुह के देवता पर, भेंट उस का चढ़ गया सब कुछ।
बचा विन्ने-द्रौपद, के सिवा, उस के न पास अब कुछ।

तो दुर्योधन, शिकन अपनी जर्बी पर डाल कर बोला।
बड़ी वेहूदगी से, भाइसा अपना दहन खोला॥

सलामत है अभी जाने-जिगर, पंचाल की दुस्तर।
जवानी के खजाने का, निहायत कीमती जौहर॥

लगादे दावँ पर, क्या देखता है रूप रानी को।
करूंगा जीत कर दो चंद, अपनी शादमानी को॥

यह सुनते ही क्रोधित होके, उसका चढ़ गया पारा।
लगाया दावँ पर, और दुस्तर-पंचाल को हारा॥

हुकमे-दुर्योधन

यह बाजी जीत कर, अंदाजे-शाहाना से दुर्योधन।
'परत' कामी से बोला, पाण्डवों की जान का दुश्मन॥

१) इस नाम का सही तलफुज 'परात कामी' है। शेरी ज़रूरत के लिए परत कामी इस्तेमाल किया है।

सलतनत = राज्य

नजरे-कुमार = जुह की
भेंट

सित्र-ए-तन = बदन के
कपडे

विन्ने-द्रौपद = द्रौपद की
पुत्री

शिकन = बल

जर्बी = माथे

दोचंद = अधिक से

अधिक

शादमानी = प्रसन्नता

جوئے کی دیوی پر تخت شاہی کے ساتھ بھائیوں اور بیوی کی بھینٹ

یہ مشتہر نے بالآخر یوں تو ہماری سلطنت ساری
مگر پھر بھی رہا مضبوط اور بہت نہیں ہماری

کیا تاج و حکومت اس نے سب تذکرہ اپنا
سوائے سترتن کھو بیٹھا ناداں تار تار اپنا

پھر اس کے بعد اس نے جوش میں ایک ایک بھائی کو
لگایا داؤں پر ہر بار بیٹھا ہر فدائی کو

جوئے کے دیوتا پر بھینٹ اس کا چڑھ گیا سب کچھ
بجائے دروید کے سوائے کے نہ پاس اب کچھ

تو دروید من شکن اپنی جبین پر ڈال کر بولا
بڑی بے ہودگی سے بھار سا اپنا دھن کھولا

سلامت ہے ابھی جان مگر پنچال کی دختر
جوانی کے خزانے کا نہایت قیمتی جوہر

لگافے داؤں پر کیا دیکھتا ہے روپانی کو
کردن گاجیت کر دو چن اپنی شادمانی کو

یہ سنتے ہی کر دو دھت ہو کے اس کا چڑھ گیا پارا
لگایا داؤں پر اور تختہ پنچال کو ہارا

حکم دروید من

یہ بازی جیت کر انداز شاہانہ سے دروید من
پرست کامی سے بولا پانڈو کی جان کا دشمن

یعنی یعنی پنچالی۔ نہ نہایت غصہ۔ تہ اس نام کا صحیح تلفظ پرات کامی ہے۔ شعری ضرورت کے لیے پرت کامی استعمال کیا ہے۔

کی پچالی کو فوراً حسب کے تولے آسے محفل
یہ سنکر اس نے پچالی کو فوراً داستان ساری
کہ میں محکوم ہوں اس میں خطا کچھ بھی نہیں میری
شکوئی کرن کے ہمراہ دیو دھن نے کھارن
یہ سنکر پرگئی وہ سوچ میں کچھ دیر کی خاطر

درویدی کے سوال پر پرات کامی کا جواب

خدا میں وہ نظر گارے ہوئے پھر اس طرح بولی
بہو پاندو کی اور پچال کے سمرٹ کی دختر
ذرا یہ تو بتا مجھ کو وہاں کتنے مقام ہیں
خبر دے مجھ کو کیا پاندو بھی ہیں اس جشن عشرتیں
کہا اس نے کہ ہاں موجود ہیں اس جا سمی سجن
کسی میں بھی نہیں اب دھرم اور ایمان کی باتیں
جہاں کاراجہ اندھا اور شکونی منتر می ہوگا
ملہ چراغ خاندان - ملہ منتری بمعنی صلاح کار اور نامح کے لئے گئے ہیں۔ ملہ منتری غلط عالم بمعنی دلدار بنا۔

۱) منتری بسمانی صلاح کار اور نامہ کے لئے گئے ہیں۔ ۲) منتری گولن-ول-آرام بسمانی بندھو جینا۔

سے-مہفیل = مہفیل
میں
ماہ وشن = چاندما جیسی
داستان = باتیں/ کथा
دینیا = دواई/ फग्याद
वसद जागी = बहुत रो ज
महकूम = नौकर/ गुलाम
खता = अपराध
अर्क आनुदा = भिगा
हुवा
खिजालत = लाज
जयी = माया

खता = ऊपर

मुकामिर = जुवागी

जशन इशरत = खुशी की
महफिल
मईयत = नेतृत्व

بغیر اس ماہ وشن کے اب تو جینا ہے مشکل
سنکر التجا کی، اس طرح اس نے بعد زاری
عرق آلودہ ہے خود ہی فحالت کجیں میری
بلایا ہے تمہیں چلے میں آیا ہوں اسی کارن
کہ میں اس آدمی کے کس طرح اور کیا کہوں آخر

درویدی کے سوال پر پرات کامی کا جواب

خدا میں وہ نظر گارے ہوئے پھر اس طرح بولی
بہو پاندو کی اور پچال کے سمرٹ کی دختر
ذرا یہ تو بتا مجھ کو وہاں کتنے مقام ہیں
خبر دے مجھ کو کیا پاندو بھی ہیں اس جشن عشرتیں
کہا اس نے کہ ہاں موجود ہیں اس جا سمی سجن
کسی میں بھی نہیں اب دھرم اور ایمان کی باتیں
جہاں کاراجہ اندھا اور شکونی منتر می ہوگا
ملہ چراغ خاندان - ملہ منتری بمعنی صلاح کار اور نامح کے لئے گئے ہیں۔ ملہ منتری غلط عالم بمعنی دلدار بنا۔



وہاں اب دھرم اور ایمان کا کیا کام ظاہر ہے
وہاں اب دھرم اور ایمان کا کیا کام ظاہر ہے

گہرے = گہرا

درویدی کا دربار میں جانے سے انکار

یہ باتیں سننے پچالی یہ بولی خیر کچھ بھی ہو
جہاں موجود ہوں اک بھیشم جیسے مرد قولادی
اب انکے سامنے کیا لاج اک ابل کی جاسیگی
علاوہ اسکے ان سے یہ بھی کہنا سیر تاباں
جو تمھیں دھرم ست بولے تو کہنا یہ بھی ہے ممکن
مگر پچالی کی دختر نہ اس غافل میں جاسیگی

نہیے-تاوا = بھگتا
مورج
شرف = پورج
گہرے = پورج
میشیہ = بھگتا
پاتک = گناہ

دورودھن کا پتہ و تاب

یہ سنکر اس نے دورودھن سے کہہ دی ساری کیفیت
تو اچھا آج وہ بھی ہے شتر غمزے پہ آمادہ
مگر تو پھر سے جا، اس کا ضروری ہے یہاں آنا
نہ آسانی سے آئے تو، اسے تو کھینچ کر لانا

لہجہ بھٹ

بڑے نیکو = گہرے کے
ماہ
شتر غمزے = شتر کے
نہیے
کونیجک = داسی
واہا = شراہ
کیر = گہرے

وہاں اب دھرم اور ایمان کا کیا کام ظاہر ہے
وہاں اب دھرم اور ایمان کا کیا کام ظاہر ہے

درویدی کا دربار میں جانے سے انکار

یہ باتیں سننے پچالی یہ بولی خیر کچھ بھی ہو
جہاں موجود ہوں اک بھیشم جیسے مرد قولادی
اب انکے سامنے کیا لاج اک ابل کی جاسیگی
علاوہ اسکے ان سے یہ بھی کہنا سیر تاباں
جو تمھیں دھرم ست بولے تو کہنا یہ بھی ہے ممکن
مگر پچالی کی دختر نہ اس غافل میں جاسیگی

دورودھن کا پتہ و تاب

یہ سنکر اس نے دورودھن سے کہہ دی ساری کیفیت
تو اچھا آج وہ بھی ہے شتر غمزے پہ آمادہ
مگر تو پھر سے جا، اس کا ضروری ہے یہاں آنا
نہ آسانی سے آئے تو، اسے تو کھینچ کر لانا

لہجہ بھٹ

کھتا اُمنے یہ سُن کر آپ جس عورت کے دیوہ ہوں
 پیتامہ ہوں خسر اور پانچوں پاندوہ کے شوہر ہوں
 باؤ تو لے سے کینچ کر کس دل سے لاؤں گا
 بھلا دارغ ملامت کس طرح منہ پر لگاؤں گا
 مجھے اب باز رکھیے باز آیا ایسی خدمت سے
 نہ کھیلیں آپ میرے دھرم اور میری شرافت سے
 یہ باتیں سُن کے دیوہ من ستم گر خوب جھنجھلایا
 بھری محفل سے اس کو دھکے دلو کر نکلو آیا
 پھر اپنے بھائی و نشان سے بولا خیر! تم جاؤ
 وہ جس صورت بھی آئے یہاں فوراً سے لاؤ

دُششاہن کی چیرا دستی

یہ سُن تے ہی چلا ابلیس کا ہمساژ دُششاہن
 کھتا اُس نے ہے داسی، مُنتازیر ہے تیرا دُریوہن
 وہیں تو پوچھ لینا چل کے سب کا دھرم ادا
 بس اتنا کہہ کے چھپا ماہوش کی سمت دُشاشن
 یہ حالت دیکھتے ہی خوف سا اک چھا گیا اُس پر
 نہ چھوٹا مجھ کو میرے جسم پر ہے صرف اک کپڑا
 مگر مرد و دیویوں نے کینے پن سے باز آتا
 رِجالت اور سِفلی پن وہ اپنا کیوں نہ دکھلاتا

دُریوہن - ملامت =
 شرافت کی بات

چیرا دستی = آکرمش

دُریوہن = شہنشاہ
 مُنتازیر = دُریوہن

ہے ج = ماہواری

رِجالت = کمی ناپن

یہ سُن تے ہی چلا ابلیس کا ہمساژ دُشاشن
 کھتا اُس نے ہے داسی، مُنتازیر ہے تیرا دُریوہن
 وہیں تو پوچھ لینا چل کے سب کا دھرم ادا
 بس اتنا کہہ کے چھپا ماہوش کی سمت دُشاشن
 یہ حالت دیکھتے ہی خوف سا اک چھا گیا اُس پر
 نہ چھوٹا مجھ کو میرے جسم پر ہے صرف اک کپڑا
 مگر مرد و دیویوں نے کینے پن سے باز آتا
 رِجالت اور سِفلی پن وہ اپنا کیوں نہ دکھلاتا

دُشاشن کی چیر دستی

یہ سُن تے ہی چلا ابلیس کا ہمساژ دُشاشن
 کھتا اُس نے ہے داسی، مُنتازیر ہے تیرا دُریوہن
 وہیں تو پوچھ لینا چل کے سب کا دھرم ادا
 بس اتنا کہہ کے چھپا ماہوش کی سمت دُشاشن
 یہ حالت دیکھتے ہی خوف سا اک چھا گیا اُس پر
 نہ چھوٹا مجھ کو میرے جسم پر ہے صرف اک کپڑا
 مگر مرد و دیویوں نے کینے پن سے باز آتا
 رِجالت اور سِفلی پن وہ اپنا کیوں نہ دکھلاتا



وینل آریخیر وہ مہل کی سمت، भागी खौफो-दहशत से।
अचानक वह भी दौड़ा, उसके पीछे फुर्ते-उजलत से।।
फुल दोचार लम्हे की तगो-दौ में उसे पकड़ा।
और अपने आहनी पंजों में, उस मासूम को जकड़ा।।
पकड़ कर बाल उसके खींचता, जालिम चला लेकर।
गुजरता था गुमाँ इस कणमकण से बस यही यकसर।।
कि उरयाँ माह वश पंचाल की दुस्तर न हो जाए।
गुवार आलूदा, असमत का कहीं गौहर न हो जाए।।

फुर्ते-उजलत = जीघता
में

कणमकण = खींचा तानी

द्रोणा और पितामह को पसीना सा निकल आया

मगर वह वेज्याँ सद शुक्र है दरवार में पहुँची।
दरीदा सित्र, आजिज मजमण-अगयार में पहुँची।।
इस आलम में उसे अहले-तरव ने जब वहाँ पाया।
द्रोणा और पितामह को पसीना सा निकल आया।।
उन्हे यह खौफ था, दुनिया न हो जाए तहो-वाला।
न पड़ जाए निजामे-अर्ज को तखरीब से पाला।।
सभी थे तरजा वर अन्दाम, सब पर खौफ तारी था।
मगर जहने-पितामह, सोचने से आज आरी था।।
दिगर इसके यहाँ मौजूद था, डक कर्ण सा इन्साँ।
जो पंचाली की इस तौहीन पर, था शाद और फरहों।।
यह मंजर भीम ने देखा, तो जोश आया, उबाल आया।
उसे विन्ते-द्रौपद की, अहानत पर जलाल आया।।
मगर समझा बुझा कर, वीर अर्जुन ने फिरासत से।
उसे ठंडा किया संजीदगी से, और मतानत से।।

दरीदा सित्र = फटे कपड़े
आजिज = मजबूर
मजमण-अगयार = शत्रु
दल

तहो-वाला = उलट
पुलट
तखरीब = टूट फूट
तरजा वर अन्दाम =
कापते हुए

आरी = खाली
शाद और फरहों = खुश

मतानत = गंभीरता से

بالاخر وہ محل کی سمت بھاگی خوف دہشت سے
فقط دوچار لمحے کی تگ و دو میں اسے پکڑا
پکڑ کر بال اس کے کھینچتا ظالم چلا لے کر
کے عیاں ماہوش پنپال کی دفتر نہ ہو جائے
غبار آلودہ عصمت کا گھر نہ ہو جائے

دروہ اور پیامہ کو پسینہ سا نکل آیا

مگر وہ بے زباں صد شکر ہے دربار میں پہنچی
اس عالم میں اسے اہل طریقے جب وہاں پایا
انہیں یہ خوف تھا دنیا نہ ہو جائے تہ و بالا
بس ہی تھے لرزہ بر اندام سب پر خوف طاری تھا
دگر اسکے یہاں ہو جو دمھا اک کرن ساناں
یہ منظر بھیم نے دیکھا تو جوش آیا، اُبال آیا
مگر سمجھا بھاکر ویرا جن نے فراست سے
اسے ٹھنڈا کیا سنجیدگی سے اور متانت سے

پنجالی کی بے بسی

فضائے حسن عشرت سے گھٹن محسوس آتی تھی
 رذیلوں کی طاقت پر شرافت خون روتی تھی
 ہر اساتھ چھڑائے کون اس مہیبت سے
 نظر پانڈو پہ اپنی ڈال دیتی غم سے شہ پیا کر
 یہ عشرت کی حیا سے جھک گئی پھر گردن عالی
 اُدھر کیا دیکھتی ہے دیکھ اُدھر بٹھیا دریا دھن
 اور اس دربار میں داسی سمجھ کر تجھ کو لایا ہے

بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر

یہ سنتے ہی پتائمہ سے کہا اس نے سر غفل
 مگر تم ہو کہ چپ سادھے ہوئے بیٹھے ہو غفل میں
 بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر
 پتائمہ نے کہا اے کتیا اے غم زدہ دختر
 اہانت سے تری خطرہ ہے دنیا کی تباہی کا
 تہا اے سامنے داسی یہ کہتا ہے مجھے جاہل
 نہیں ہے عزت ناموس کا احساس کیا دل میں
 مری بے عزتی کا انتقام اب کون لے آخر
 تری بے عزتی سے خوف سا چھایا اک دل پر
 الٹ جلے نہ تختہ کل جہاں کی بادشاہی کا

پنچالی کی بے بسی

کچاٹا، جڑنے ڈھارن سے، پوٹن مہاسم ہوتی تھی
 رتیلوں کی ہیمارن پر، شرافت روتی تھی
 سراسیمہ تھی پنچالی کینوں کی شرارت سے
 کبھی وہ برنی سے اور کبھی یکسو گھبرا کر
 مخاطب جوہی پانڈو سے ہوئی ایکبار پنچالی
 یہ نظر دیکھتے ہی بولا دشاں کراے اس
 تجھے ہم نے جوئے میں جیت کر لوٹدی بنایا،
 کچاٹا، جڑنے ڈھارن سے، پوٹن مہاسم ہوتی تھی
 رتیلوں کی ہیمارن پر، شرافت روتی تھی
 سراسیمہ تھی پنچالی کینوں کی شرارت سے
 کبھی وہ برنی سے اور کبھی یکسو گھبرا کر
 مخاطب جوہی پانڈو سے ہوئی ایکبار پنچالی
 یہ نظر دیکھتے ہی بولا دشاں کراے اس
 تجھے ہم نے جوئے میں جیت کر لوٹدی بنایا،

بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر

دھن میں کون دے آخیر

یہ سننے ہی پتائمہ سے کہا اس نے سر غفل
 مگر تم ہو کہ چپ سادھے ہوئے بیٹھے ہو غفل میں
 بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر
 پتائمہ نے کہا اے کتیا اے غم زدہ دختر
 اہانت سے تری خطرہ ہے دنیا کی تباہی کا
 تہا اے سامنے داسی یہ کہتا ہے مجھے جاہل
 نہیں ہے عزت ناموس کا احساس کیا دل میں
 مری بے عزتی کا انتقام اب کون لے آخر
 تری بے عزتی سے خوف سا چھایا اک دل پر
 الٹ جلے نہ تختہ کل جہاں کی بادشاہی کا

کچاٹا، جڑنے ڈھارن سے،
 رتیلوں کی ہیمارن پر،
 شرافت روتی تھی
 سراسیمہ تھی پنچالی
 کینوں کی شرارت سے

کبھی وہ برنی سے اور
 کبھی یکسو گھبرا کر
 مخاطب جوہی پانڈو سے
 ہوئی ایکبار پنچالی

یہ نظر دیکھتے ہی
 بولا دشاں کراے اس
 تجھے ہم نے جوئے میں
 جیت کر لوٹدی بنایا،

پتائمہ = پتیمہ
 دھن = دھن



یہی ہے وجہ جو آنکھوں کو ہم نے بند رکھا ہے
زباں کو اپنی سی کر اس لیے ہر چند رکھا ہے

نگاہِ دور بینِ عدل دھوکا کھا نہیں سکتی

پھر اس کے بعد دیو دھن نے پوچھا سب مقام سے
کہ پچالی کو میں نے کیا نہیں جیتا یہ قسم سے
جو تھیں اہلِ طرب خاموش تھے اس بات کو سن کر
بوجہ خوف کوئی بھی نہ اس کو دے سکا اثر
مگر نام و کرن اک اس کا بھائی بھی وہیں پر تھا
کہ اس نے سبھا والوں کے لوگو یہ ڈر کیا
کہو تم دھرم اور انصاف کی جو بات ہو کھل کر
کسی کے خوف سے خاموش رہ جانا نہیں بہتر
یہ مشن نے سرد رہا پہلے خود کو ہار ہے
جوئے پر اس نے اپنے بعد پچالی کو وار ہے
یہ اک نکتہ ہے فتانوں کی جس پر آپ کو مائل
مجھے کرنا ہے سنئے صاحبانِ زینتِ محفل
حقیقت ہے جوئے میں جس پہلے خود کو ہار ہو
پھر اپنی بھاریہ کو گھاٹ پر جس نے اتارا ہو
اسے کیا حق نہیں چاہیے، کہو قانون کی رف سے
لگائے داؤں پر اوروں کو بوائینی پہلو سے

یقیناً اس طرح پچالی جیتی جا نہیں سکتی
نگاہِ دور بینِ عدل دھوکا کھا نہیں سکتی

یہی ہے وجہا جو آؤں کو ہم نے بند رکھا ہے
جواں کو اپنی سی کر، इसलिए، ہر چند رکھا ہے ۱۱

نیگاہے-دور بینے-ادل دھوکا کھا نہیں سکتی

فیر اسکے باد دُورِ بون نے پوچھا سب مقام سے ۱
کی پچالی کو میں نے کیا نہیں جیتا یہ قسم سے ۱۱
جو تھے اہلِ طرب خاموش تھے اس بات کو سن کر ۱
بوجہ خوف کوئی بھی نہ اس کو دے سکا اثر ۱۱
مگر نام و کرن اک اس کا بھائی بھی وہیں پر تھا ۱
کہ اس نے سبھا والوں کے لوگو یہ ڈر کیا ۱
کہو تم دھرم اور انصاف کی جو بات ہو کھل کر ۱
کسی کے خوف سے خاموش رہ جانا نہیں بہتر ۱
یہ مشن نے سرد رہا پہلے خود کو ہار ہے ۱
جوئے پر اس نے اپنے بعد پچالی کو وار ہے ۱
یہ اک نکتہ ہے فتانوں کی جس پر آپ کو مائل ۱
مجھے کرنا ہے سنئے صاحبانِ زینتِ محفل ۱
حقیقت ہے جوئے میں جس پہلے خود کو ہار ہو ۱
پھر اپنی بھاریہ کو گھاٹ پر جس نے اتارا ہو ۱
اسے کیا حق نہیں چاہیے، کہو قانون کی رف سے ۱
لگائے داؤں پر اوروں کو بوائینی پہلو سے ۱

وجہ = کارن
ہر چند = ہر وقت

مقام = جواں
جانے

اگرچہ-تو = سبھا کا
ہر شخص
بوجہ-خوف = بھج کے
کارن

جینتے-مہفیل = سبھا
کے آدرشیہ لوگ

رہے = انوسار
آئی = کانوئی
نیگاہے-دور بینے-ادل =
دور تک دیکھنے والی
انصاف کی آواز

तअज्जुब है मुझे कानून की इस मूशगाफी पर

यह सुनकर डक खुशी की लहर दौड़ी बज्मे-इशरत में।
सदा तहसीन की गुंजी, फजाण खौफ-ओ-दहशत में।
यह रंगे-बज्म, दुर्योधन ने देखा तो कहा जल कर।
तअज्जुब है मुझे कानून की, इस मूशगाफी पर।
यह है दरवार मेरा इस जगह मेरी हुकूमत है।
मेरे अहकाम का पाबन्द हर फर्दे-रियासत है।
इसी के तहत सुन, ऐ विकर्ण अब हुकम देता हूँ।
और अपने आहनी दस्तूर से, यूँ काम लेता हूँ।
तेहाजा अब उतर वाता हूँ कपड़े उनके जिस्मों से।
गहूर-ओ-खुदसरी से जिनके सीने आज हैं अकड़े।
द्रौपद कन्या भी इस से मुसतसना नहीं होगी।
उन्ही के साथ अब यह भी बरहना बिल यकी होगी।

बज्मे-इशरत = खुशी की
मभा
सदा = आवाज
तहसीन = प्रमन्नता
मूशगाफी = बाल की
खाल उधेड़ना
अहकाम = आदेश
हर फर्दे-रियासत =
राज्य का हर व्यक्ति
आहनी दस्तूर =
शक्तिशाली कानून

मुसतसना = अलग किया
गया, वंचित

पकड़ कर उस ने पोशाके-तने-गुलरू को फिर खींचा

यह हुक्मे-नारवा सुनते ही पाण्डव ने बसद उजलत।
उतारी अपनी पोशाकें बगैरे-हीला-ओ-हुज्जत।
फिर इसके बाद दुश्शासन परी तमसाल की जानिब।
हिदायत कर्ण की पाकर, हुआ मरदूद यूँ रागिब।
कि डाला हाथ उसके सित्र पर और डक सिरा पकड़ा।
पकड़ कर उस ने पोशाके-तने-गुलरू को फिर खींचा।

बसद उजलत =
शीघ्रताके साथ
पोशाक = कपड़े
हीला व हुज्जत = बगैरे
किसी बहाने के
परी तमसाल = परी
समान
हिदायत = आदेश
पोशाके-तने-गुलरू =
फूल जैसी कन्या के शरीर
के कपड़े

तज्जब है मुझे कानून की इस मूशगाफी पर

यह सुनकर डक खुशी की लहर दौड़ी बज्मे-इशरत में।
सदा तहसीन की गुंजी, फजाण खौफ-ओ-दहशत में।
यह रंगे-बज्म, दुर्योधन ने देखा तो कहा जल कर।
तअज्जुब है मुझे कानून की, इस मूशगाफी पर।
यह है दरवार मेरा इस जगह मेरी हुकूमत है।
मेरे अहकाम का पाबन्द हर फर्दे-रियासत है।
इसी के तहत सुन, ऐ विकर्ण अब हुकम देता हूँ।
और अपने आहनी दस्तूर से, यूँ काम लेता हूँ।
तेहाजा अब उतर वाता हूँ कपड़े उनके जिस्मों से।
गहूर-ओ-खुदसरी से जिनके सीने आज हैं अकड़े।
द्रौपद कन्या भी इस से मुसतसना नहीं होगी।
उन्ही के साथ अब यह भी बरहना बिल यकी होगी।

पकड़ कर उस ने पोशाकें तने-गुलरू को फिर खींचा

यह हुक्मे-नारवा सुनते ही पाण्डव ने बसद उजलत।
उतारी अपनी पोशाकें बगैरे-हीला-ओ-हुज्जत।
फिर इसके बाद दुश्शासन परी तमसाल की जानिब।
हिदायत कर्ण की पाकर, हुआ मरदूद यूँ रागिब।
कि डाला हाथ उसके सित्र पर और डक सिरा पकड़ा।
पकड़ कर उस ने पोशाके-तने-गुलरू को फिर खींचा।



یہ حالت دیکھ کر اہل طرب نے شرم سے گردن
جھکا کر اپنی آنکھیں بند کر لیں لاج کے کارن
دروپد کنیا کے خرم ہوش و فراست پر
حیا اور ناامیدی کی گری اک برق لہر اگر
غرض ہر سمت سے مایوس ہو کر نازش گلشن
بہ چشمِ نم کیا اس نے شری گھنٹاں کلشن

ہوا لیکن نہ کپڑا ختم اس معصوم کے تن کا

اثر فریادِ پنپالی نے آہِ سراپنا دکھلایا
اسے گھنٹیاں جی نے غائبانہ ستر پہنچایا
وہ جوں جوں کھینچتا تھا ستر جسم ناز پر سے
نکلے جاکے تھے ستر، زیر ستر اندر سے
وہ اتنی دیر تک کھینچا کہ پوشِ تن گل و
کہ جس کی وجہ سے شل پر گئے مردود کے بازو
یوں ہی جاری رہا یہ سلسلہ ابلیس پر فن کا
ہوا لیکن نہ کپڑا ختم اس معصوم کے تن کا
یہاں تک لگ گیا اک ڈھیر کپڑوں کا سرِ محفل
پچاسوں رنگ کے نیلے ہر اک و قرمز مائل

یہ سب لادیکھ کر اہل طرب حُسنِ اطاعت سے
شری گھنٹیاں جی کا نام لیتے تھے عقیدت سے

یہ حال نہ دیکھ کر اہل طرب نے، شرم سے گردن
جھکا کر اپنی آنکھیں، بند کر لیں لاج کے کارن

دروپد کنیا کے خرم ہوش و فراست پر
حیا اور ناامیدی کی گری، اک برق لہر اگر

غرض ہر سمت سے، مایوس ہو کر نازش گلشن
بہ چشمِ نم کیا اس نے، شری گھنٹاں کلشن

ہوا لیکن نہ کپڑا ختم اس معصوم کے تن کا

اثر فریادِ پنپالی نے آہِ سراپنا دکھلایا
اسے گھنٹیاں جی نے غائبانہ ستر پہنچایا
وہ جوں جوں کھینچتا تھا ستر جسم ناز پر سے
نکلے جاکے تھے ستر، زیر ستر اندر سے
وہ اتنی دیر تک کھینچا کہ پوشِ تن گل و
کہ جس کی وجہ سے شل پر گئے مردود کے بازو
یوں ہی جاری رہا یہ سلسلہ ابلیس پر فن کا
ہوا لیکن نہ کپڑا ختم اس معصوم کے تن کا
یہاں تک لگ گیا اک ڈھیر کپڑوں کا سرِ محفل
پچاسوں رنگ کے نیلے ہر اک و قرمز مائل

یہ سب لادیکھ کر اہل طرب حُسنِ اطاعت سے
شری گھنٹیاں جی کا نام لیتے تھے عقیدت سے

اگرچہ-ترب = کما میں
وہاں سے لہجہ
خیرمہ-ہوش-آہ-فیرمہ
= وہاں کا دھن
ہوا = لاج
نا امیدی = نیراج
بک = بکری
ناجیہ-گولشن = باغ
کے لہجہ کا کارن
گولشن = گولشن
نہ نہ = نہ نہ
نیرمہ-ناجہ =
ناجہ کے ساتھ پنا ہوا
شیر
میر نہ-میر = کپڑے
کے اندر سے کپڑا
پوشہ-تہ-گولش = گولش
جیسی کنیا کے شری کے
کپڑے
شل = بکری
کیرمہ-میر = لاج
رنگ کی نیراج
ہوئے-اگرچہ = اگرچہ
کے ساتھ
اگرچہ = اگرچہ

یہاں تک لگ گیا اک ڈھیر کپڑوں کا سرِ محفل
پچاسوں رنگ کے نیلے ہر اک و قرمز مائل

یہ سب لادیکھ کر اہل طرب حُسنِ اطاعت سے
شری گھنٹیاں جی کا نام لیتے تھے عقیدت سے

یہاں تک لگ گیا اک ڈھیر کپڑوں کا سرِ محفل
پچاسوں رنگ کے نیلے ہر اک و قرمز مائل

بھیم کی پرتگیا

بہر صورت نہ عیاں ہو کی نچال کی دختر
بہرے دربار میں غرت بچائی شیا م نے اگر
ہو کے گھونٹ پی پی کر ابھی تک بھیم بیٹھا تھا
نہ اب تک ایسا منظر اس کی چشم سر نہ دیکھا تھا
اچانک اٹھ کے آسن پکارا اے سبھا والو
نہیں ہے ضبط کا اب مجھ کو یا ر اے سبھا والو
سنو پرتگیا میری میں اب اعلان کرتا ہوں
تمہارے سامنے اس بات کا پیمان کرتا ہوں
پیوں گا میں نہ جب تک خون دشمن کے سینے کا
مٹے گا اس گھڑی تک داغ سینے سے نہ کینے کا
پیا میں نے نہ اس کا تین چلو خون، اگر لوگو
لگے یہ پاپ کپڑا کھینچنے کا میرے سر، لوگو

تعجب ہے اندھیرا محزن انوار کہلائے

دروید کیا بولی پتی ورتا ہوں میں ساجن
مری توہین کا بدلہ فقط ہے مرگ دشمن
یہ سنکر کرن بولا، یہ بھی دعویٰ خوب ہے تیرا
بیان پارسائی کا نیا اسلوب ہے تیرا
ہوں جس کے پانچ شوہر وہ پتی ورتا کہی جائے
تعجب ہے اندھیرا محزن انوار کہلائے
پھر اس کے بعد دیروہن نے اپنی ران دکھلا کر
کہا بنت دروید سے ادھر آ بیٹھ جا اس پر

भीम की प्रतिज्ञा

वह र सुरत न उर्याँ हो सकी पंचाल की दुस्तर।
भरे दरबार में इज्जत बचाई श्याम ने आकर।।
लहू के घूँट पी पी कर, अभी तक भीम बैठा था।
न अब तक ऐसा मन्त्र, उसकी चप्पे-सर ने देखा था।।
अचानक उठ के आसन से पुकारा, ऐ सभा वालो।
नहीं है जल का अब मुझ को पारा, ऐ सभा वालो।।
सुनो प्रतिज्ञा मेरी, मैं अब एलान करता हूँ।
तुम्हारे सामने इस बात का, पैमान करता हूँ।।
पिऊँगा मैं न जब तक खून, दुष्शापन के सीने का।
मिटेंगा उस घड़ी तक दाग, सीने से न कीने का।।
पिया मैं ने, न उस का तीन चुल्लू खून, अगर लोगो।
लगे यह पाप, कपड़ा खींचने का, मेरे सर लोगो।।

तअज्जुब है अन्धेरा मखजने-अनवार कहलाए

द्रौपद कन्या बोली, पतिव्रता हूँ मैं साजन।
मेरी तौहीन का बदला, फुक्त है मर्गे-दुष्शापन।।
यह सुनकर कर्ण बोला यह भी दावा खूब है तेरा।
बयाने-पारसाई का नया असलूब है तेरा।।
हों जिसके पाँच शौहर, वह पतिव्रता कही जाए।
तअज्जुब है अन्धेरा, मखजने-अनवार कहलाए।।
फिर इसके बाद दुर्योधन ने अपनी रान दिखलाकर।
कहा विन्ते-द्रौपद से, इधर आ बैठ जा इस पर।।

वह र सुरत = किसी प्रकार

उर्याँ = नगी

मन्त्र = दृश्य

जल = धीरज

पैमान = प्रतिज्ञा

तौहीन = अपमान

मर्ग = मृत्यु

बयाने-पारसाई =

पारसाई का बयान

असलूब = ढंग

मखजने-अनवार =

प्रकाश का भंडार

یُسکر بھیم بولا تجھ کو ظالم میں نہ چھوڑونگا
تری اس ران ہی کو گرز فولادی توڑونگا
علاوہ اسکے میں اس بات کا اعلان کرتا ہوں
نہ بخشوں گا گردہ کو ر کو پیمان کرتا ہوں

دھرتی راشٹر کا وردان

دور نے بھیم کو ڈوبا ہوا جب غیظ میں پایا
انہیں فوراً زمانے کی تباہی کا خیال آیا
کہا نابینا راجہ سے کہ رکشا آپ فرمائیں
تسلی دیں دروید کتیا کو اور سمجھائیں
کہا راجہ نے بیشک تو پتی ورتا ہے ایک بیٹی
کہ دیو دھن نے کی ہے تیری اس مبارک بیٹی
مگر تو نے محل کا نہ چھوڑا ہاتھ سے دامن
لہذا تجھ سے خوش ہوں مانگ لے وردان نکلتا
یُسکر دھرتی پنپال نے خوش ہو کے ورمانگا
خلاہی شوہروں کی مانگ کر اذن سفر مانگا
علاوہ اسکے جو کچھ ضبط ہیں ہتیار اور پوشش
اسی کیساتھ بخش ایک رتھ صاحب دانش
سیلہ مند راجہ نے کیا وردان کو پورا
بزرگی کا بھرم رکھا، کیا پیمان کو پورا

بہ سرعت قبل یورش فاتح اقلیم کو روکا

اچانک برسر محفل کسی نے طر کا نشتر
چلایا بے تکلف پانڈوں کے قلب مضطرب
سہ خاندان کا چراغ۔

یہ سن کر بھیم بولا، توجھ کو جالیم میں نہ छोڑے گا۔
تیری اس ران ہی کو گرز فولادی سے توڑے گا۔

अलावा इसके मैं इस वान का एलान करता हूँ।
न बख्शूंगा गिराहे-कौर को, पैमान करता हूँ।

धृतराष्ट्र का वरदान

विदुर ने भीम को डूबा हुआ, जब गैज में पाया।
उन्हे फौरन जमाने की तबाही का खयाल आया।

कहा नाबिना राजा से कि रक्षा आप फरमाएँ।
तसल्ली दें, द्रौपद कन्या को और समझाएँ।

कहा राजा ने वेशक, तू पतिवरता है मे बेटी।
कि दुर्योधन ने की है, तेरी इस दरबार में हेटी।

मगर तूने तहम्मूल का, न छोड़ा हाथ से दामन।
तेहाजा तुझ से खुश हूँ, माँग ले वरदान कुलतारन।

यह सुनकर दुख्तरे-पंचाल ने खुश हो के वर माँगा।
खलासी शौहरों की माँग कर, इजने-सफर माँगा।

अलावा इसके जो कुछ जूत हैं हत्यार और पोशिश।
इसी के साथ बख्शें, एक रथ मे साहबे-दानिश।

सलीका मन्द राजा ने, किया वरदान को पूरा।
बुजुर्गी का भरम रक्खा, किया पैमान को पूरा।

ब सुरअत कब्ले-यूरिश

फातेह अकलीम को रोका

अचानक बरसरे-महफिल किसी ने तन्ज का नशतर।
चलाया बे तकल्लुफ पान्डवों के कब्जे-मुजतर पर।

गिराहे-कौर = कौर की
टीकी

गैज = कौर

तहम्मूल = धिगज
कुलतारण = वरदान
का चिराग

पोशिश = रुपये
साहबे-दानिश =
बुद्धिमान लोग

कब्जे-यूरिश = आक्रमण
से पहले
बरसरे-महफिल = दृष्टा
के अन्दर
नशतर = चाकू
कब्जे-मुजतर = बेचेन
हृदय

کی آخیر عمر جسم میں کشتی امن و امان بن کر
وہی کم زور عورت کام آئی وقت پڑنے پر
سنی جب بچیم نے یہ بات تو بولا شیخ سے
کبھی ہم نے سہارا اور مدد چاہی نہ عورت سے
ہمارے بازو میں آج بھی قوت ہے طاقت ہے
فنا کے گھاٹ تم جیسوں کو پہنچا کی قدر ہے
یہ کہہ کر بچیم لپکا کر زلیہ کر سمت دیو دھن
لرز کر رہ گئے جس شے کوئی کرنِ شاش
مگر فوراً یہ ہشتر نے دلا اور بچیم کو روکا
بہ سرعت قبل رویش فاتحِ اقلیم کو روکا

پانڈوؤں کی واپسی

ہوا خوش کو راجہ آج اعدامِ یہ شتر سے
کہ اک فتنہ ابھر کر دب گیا تھا جس مدبر سے
فطاب ہو کے پانڈو سے کہا اس نے محبت سے
کہ تم کو دکھ بہت پہنچا ہے دیو دھن کی حرکت سے
بھرے دربار میں نادان نے کم ظرفی دکھائی ہے
معاف کی خطا کر دو تمہارا یہ بھی بھائی ہے
یہ لو کپڑے تمہارے ان کو پہنو اور گھر جاؤ
سنبھالو اپنا سہاس یہاں سے بے خطر جاؤ
یہ سنکر چل پڑے عجلت سے پانڈو اور پنچالی
مگر دل میں کدورت لیکے لوٹے اندر کے والی

بہرے گام = دُ:خ کا
توفان
کشتی-ا-امنو-امو =
شانتی کی ناک
مشیخات = غمناک

سمتہ-دورِو-دھن =
دورِو-دھن کی اور

فاتحہ اقلیم = کسی
راستہ کے بیجیوتا

پانڈوؤں کی واپسی

ہوا خوش کور راجہ آج اعدامِ یہ شتر سے
کہ ایک فتنہ ابھر کر دب گیا تھا جس مدبر سے
فطاب ہو کے پانڈو سے کہا اس نے محبت سے
کہ تم کو دکھ بہت پہنچا ہے دیو دھن کی حرکت سے
بھرے دربار میں نادان نے کم ظرفی دکھائی ہے
معاف کی خطا کر دو تمہارا یہ بھی بھائی ہے
یہ لو کپڑے تمہارے ان کو پہنو اور گھر جاؤ
سنبھالو اپنا سہاس یہاں سے بے خطر جاؤ
یہ سنکر چل پڑے عجلت سے پانڈو اور پنچالی
مگر دل میں کدورت لیکے لوٹے اندر کے والی

ا-د-ام = نیرو
م-د-ب-یر = ب-د-ب-مان

ہرکت = کار

ناداؤ = م-و-ر
کم زرفی = م-و-ر-تا
خ-تا = د-و-ش

ب-و-ت-ر = نیرو

कुमारबाजी के दोबारा मशविरे

हुए जिस वक्त पान्डव कौरवाँ के शहर से रुखसत ।
तो दुर्योधन के कल्वे-बदगुमों पर छा गयी दहशत ।।
कहा अपने पिता से पान्डवाँ से मुझको खटका है ।
मुझे उनकी रविश पर, कुल की बरबादी का खतरा है ।।
वह अपने इन्तकामी जोश से, बाज़ आ नहीं सकते ।
दिमागो-कल्व पर अपने, वह काबू पा नहीं सकते ।।
लेहाजा रास्ते में होंगे, उनको आप रुकवा दें ।
किसी को भेज कर फौरन, यहाँ पान्डव को बुलवा लें ।।
कि उनके साथ मैं खेलूँगा ऐसी आखरी बाजी ।
कि माजी उनकी हालत पर, करे हर लम्हा गम्माजी ।।
वह ऐसी शर्त होगी, जो भी इस बाजी को हारेगा ।
वह बारह^{१२} साल जीवन अपना जंगल में गुज़ारेगा ।।
अलावा इसके वह इक साल तक खुफिया तरीके पर ।
गुज़ारेगा फिर अपनी ज़िन्दगी गोशा नशीं होकर ।।
न छिपकर रह सका इस दौर में वह बल्ल का मार ।
तो बारह^{१२} साल फिर उसको, बिताना होगा दोबारा ।।

रुखसत = रवाना
कल्वे-बदगुमों = शत्रुता
भरा हुआ दिल
दहशत = भय
रविश = अन्दाज़
इन्तकामी जोश = बदले
की भावना
दिमागो-कल्व = हृदय
और दिमाग
काबू = नियंत्रण

माजी = भूतकाल
हर लम्हा = हर घड़ी
गम्माजी = किसी चीज़
का प्रकट होना

गोशा नशीं = छिप कर
बैठना
बल्ल = भाग्य

आखरी बाजी

यह बातें हो चुकीं तो, कर्ण को राजा ने भिजवाया ।
वह आधे रास्ते से, पान्डवों को जा के ले आया ।।
जुए का सिलसिला फिर छिड़ गया दरबार के अन्दर ।
शरायत आखरी बाजी की आई, सामने खुल कर ।।

कुमारबाजी के दोबारा मशविरे

होئے جس وقت پانڈو کورواں کے شہر بھٹکتے
کہا اپنے پیتا سے پانڈواں سے مجھکو کھٹکا ہے
وہ اپنے انتقامی جوش سے باز نہیں آسکتے
لہذا راستے میں ہونگے ان کو آپ رکاوٹیں
کہ انکے ساتھ میں کھیلونگا ایسی آخری بازی
وہ اپنی شرط ہوگی جو بھی اس بازی کو ہارے گا
علاوہ اسکے وہ اک سال تک خفیہ طریقے پر
زچھپ کر رہ سکا اس دور میں وہ نجات کا مارا
تو دریودھن کے قلب بدگماں پر چھائی ہشت
مجھے انکی روش پر نکل کی بربادی کا خطرہ ہے
دماغ و قلب پر اپنے وہ قابو پا نہیں آسکتے
کسی کو بھیج کر فوراً یہاں پانڈو کو بلوالیں
کہ ماضی انکی حالت پر کسے ہر لمحہ غمازی
وہ بارہ سال میں اپنا جنگل میں گزارے گا
گزارے گا پھر اپنی زندگی گوشہ نشین ہو کر
تو بارہ سال پھر اسکو بتانا ہو گا دوبارہ

آخری بازی

یہ باتیں ہو چکیں تو کर्ण کو راجہ نے بھجوا دیا
جوئے کا سلسلہ پھر چھڑ گیا دوبارہ کے اندر
وہ آدھے راستے سے پانڈو کو جا کے لے آیا
شرائط آخری بازی کی آئی سامنے کھل کر



یوڈیٹیر نے کہا میں جیت لوں بازی تو نجات
 مجھے واپس ملے میری حکومت تاج اور تروت
 دوبارہ میں اگر ہاروں تو پھر سنان زمین میں
 گزار دوں گا فقروں کی طرح بارہ برس بن میں
 غرض منظور کر لیں ساری شرطیں سب خوش ہو کر
 بہت محتاط ہو کر پھر وہاں کھیل گئی چوسر
 خوشی سے کعب جوں جوں پھینکتے تھے جاہل پنا
 جگر کو تھام لیتے تھے معزز حاضرین اپنا
 یہ بازی جان کی بازی لگا کر کھیل دوڑوں
 بڑی لالچ کے ساتھ چوسر کھیل دوڑوں
 مگر تقدیر پاندو پر نحوست سایہ افکن تھی
 گماں ہوتا تھا گویا نردو بازی نئی دشمن تھی

وہی آخر ہوا آخر یہ تھی جو انکی قسمت میں
 یہ بازی بھی انہوں نے ہار دی تھی مسرت میں

دشاش کی پیش کش

حکومت کو روادار کو سوئپ کر پانڈو بصد عجلت
 بدل کر بھیس ہونا چاہتے تھے جشن سے نصرت
 دروید کیا بھی پانڈو اس کے ساتھ جانے کو
 تھی آمادہ سفر کی ساری تکلیفیں اٹھانے کو
 تو فوراً طرزیہ انداز سے مردود دشاشن
 مخاطب ہو کے پنجالی سے بول عقل کا دشمن
 ٹہرے نازیں لے ماہوش لے ناز پرورد
 بہت مشکل ہے اب بھی سوچ لے امر و زے فردا
 اگوت کھیلنا

یوڈیٹیر نے کہا میں جیت لوں، باجی تو بے ہوجت
 مجھے واپس ملے میری حکومت تاج اور سرکوت
 دوبارہ میں اگر ہاروں تو پھر سنان زمین میں
 گزار دوں گا فقروں کی طرح بارہ برس بن میں
 غرض منظور کر لیں ساری شرطیں سب خوش ہو کر
 بہت محتاط ہو کر پھر وہاں کھیل گئی چوسر
 خوشی سے کعب جوں جوں پھینکتے تھے جاہل پنا
 جگر کو تھام لیتے تھے معزز حاضرین اپنا
 یہ بازی جان کی بازی لگا کر کھیل دوڑوں
 بڑی لالچ کے ساتھ چوسر کھیل دوڑوں
 مگر تقدیر پاندو پر نحوست سایہ افکن تھی
 گماں ہوتا تھا گویا نردو بازی نئی دشمن تھی

وہی آخر ہوا آخر یہ تھی جو انکی قسمت میں
 یہ بازی بھی انہوں نے ہار دی تھی مسرت میں

دشاش کی پیش کش

حکومت کو روادار کو سوئپ کر پانڈو بصد عجلت
 بدل کر بھیس ہونا چاہتے تھے جشن سے نصرت
 دروید کیا بھی پانڈو اس کے ساتھ جانے کو
 تھی آمادہ سفر کی ساری تکلیفیں اٹھانے کو
 تو فوراً طرزیہ انداز سے مردود دشاشن
 مخاطب ہو کے پنجالی سے بول عقل کا دشمن
 ٹہرے نازیں لے ماہوش لے ناز پرورد
 بہت مشکل ہے اب بھی سوچ لے امر و زے فردا
 اگوت کھیلنا

ساروت = سائن

موہتات = بہت مہمان کر

کعب = پامنا

جانینی = دونوں اور کے یکتا

یوڈیٹیر = برادرانہی ہاڑی =

اوپرینت یکتا دین بنناگی =

دین بنا کر

نہایت ساہا افران = دھرم کا

ساہا

گوما = مہد

گوما = مہد

نردو باجی = پامنا اور نردو کا کھیل

تھریر = نیسا ہوا

دشاش کی پشاکش

حکومت کو روادار کو سوئپ کر پانڈو بصد عجلت
 بدل کر بھیس ہونا چاہتے تھے جشن سے نصرت
 دروید کیا بھی پانڈو اس کے ساتھ جانے کو
 تھی آمادہ سفر کی ساری تکلیفیں اٹھانے کو
 تو فوراً طرزیہ انداز سے مردود دشاشن
 مخاطب ہو کے پنجالی سے بول عقل کا دشمن
 ٹہرے نازیں لے ماہوش لے ناز پرورد
 بہت مشکل ہے اب بھی سوچ لے امر و زے فردا
 اگوت کھیلنا

تجیبا = ہمو کے انداز میں

مولا تیب = کسی کی طرف مولا

کار کے کہنا

ناج پرورد = لاد سے پانی ہوا

ہمروژ = آج

فردا = مہینہ



کہاں تُو اور کہاں یہ بادِ سپہائی جان من،
 ادھر ہے دیکھ فرسِ راہِ چشم کو رواں کب سے
 ادھر آ پاندوں کو چھوڑ، ہم پر سکرانی کر
 تجھے سمجھو بھلائی کے ہم دل میں جگہ دینگے
 ہے اب بھی وقت آجاتا ہے دامنِ دیوہن
 کھوں تُو اور کہاں یہ بادِ سپہائی جان من،
 ادھر ہے دیکھ فرسِ راہِ چشم کو رواں کب سے
 ادھر آ پاندوں کو چھوڑ، ہم پر سکرانی کر
 تجھے سمجھو بھلائی کے ہم دل میں جگہ دینگے
 ہے اب بھی وقت آجاتا ہے دامنِ دیوہن

بادیا-پہاڑ = جنگل
 جنگل فیرنا
 دشت = جنگل/میدان
 فرس-راہ = زمین پر
 بیلٹا ہوا
 بیلٹا اکس = بیرونی/بیلٹا

چیراگو-رکھ = تیرے موص کے
 دیپ

میداں = دہے سر

بشکلِ کورواں موجود ہیں اک صدِ خردِ ناق بھاکلے-کौरواँ मौजूद हैं इक सदखरे-दानिक

یہ سنکر بھیم بولا تجھ سے دشمن سمجھ لوں گا
 جواب بھیم سنکریوں کہا اس نے شکونی سے
 یہی ہیں بھیم جن کو سوگدھوں کا باپ کہتے ہیں
 یہ سنکر ہی سنکر کا اٹھا طوفانِ محفل میں
 دلاور بھیم دشمن کے فقرے کو نہانتے
 یقیناً سوگدھوں کے باپ اور سونا خلفِ ناق
 بشکلِ کورواں موجود ہیں اک صدِ خردِ ناق

تمسکور = ہنسی/ٹٹول

دیلار = ویر
 فیکرے = جھوٹے باتیں
 جرافت = بھگ
 ناہیک = گدا/ناہان
 آدمی

کہاں تُو اور کہاں یہ بادِ سپہائی جان من،
 ادھر ہے دیکھ فرسِ راہِ چشم کو رواں کب سے
 ادھر آ پاندوں کو چھوڑ، ہم پر سکرانی کر
 تجھے سمجھو بھلائی کے ہم دل میں جگہ دینگے
 ہے اب بھی وقت آجاتا ہے دامنِ دیوہن
 کھوں تُو اور کہاں یہ بادِ سپہائی جان من،
 ادھر ہے دیکھ فرسِ راہِ چشم کو رواں کب سے
 ادھر آ پاندوں کو چھوڑ، ہم پر سکرانی کر
 تجھے سمجھو بھلائی کے ہم دل میں جگہ دینگے
 ہے اب بھی وقت آجاتا ہے دامنِ دیوہن

بشکلِ کورواں موجود ہیں اک صدِ خردِ ناق

یہ سنکر بھیم بولا تجھ سے دشمن سمجھ لوں گا
 جواب بھیم سنکریوں کہا اس نے شکونی سے
 یہی ہیں بھیم جن کو سوگدھوں کا باپ کہتے ہیں
 یہ سنکر ہی سنکر کا اٹھا طوفانِ محفل میں
 دلاور بھیم دشمن کے فقرے کو نہانتے
 یقیناً سوگدھوں کے باپ اور سونا خلفِ ناق
 بشکلِ کورواں موجود ہیں اک صدِ خردِ ناق

یقیناً سوگدھوں کے باپ اور سونا خلفِ ناق

بشکلِ کورواں موجود ہیں اک صدِ خردِ ناق

علا درویش
 علا گدھا - علا نادان آدمی

پانڈوں کا عزم صحراوردی
اور
فسائے نل دمنتی

पांडवों का अज़्म
सहरा-नवरदी
और
फ़साना हाए नल दमयंती



سلسلہ قساہائے نل اور مہنتی

تخیلی ترنگیا

یہ کہہ کر بھیم اور پانڈو ہوئے رخصت بہ کر وافر
 کوئی کہنا چلا باہر نہیں ہے میرے قابو سے
 کسی نے خاک اڑائی راہ کی اک شست کیہ کر
 کہا سہا یونے من میں شکونی کو میں ماروں گا
 دروید کنتیا بھی بال کھولے اشک برساتی
 وہ من میں سوچتی تھی کاش اے پرچھو وہ دن آئیں
 کہ مجھ سے ٹھوکریں بھی لگیں کت کو روں کھائیں

سلسلہ قساہائے نل اور مہنتی

سلسلہ قساہائے نل اور مہنتی

دماہنتی

تارویلی پرتیجا

یہ کہہ کر بھیم اور پانڈو ہوئے رخصت بہ کر وافر
 کوئی کہنا چلا باہر نہیں ہے میرے قابو سے

کسی نے خاک اڑائی راہ کی، ایک مشت یہ کہہ کر
 اسی انداز سے میں تیر برباد کروں گا

کہا سہا یونے من میں شکونی کو میں ماروں گا
 دروید کنتیا بھی بال کھولے اشک برساتی

وہ من میں سوچتی تھی کاش اے پرچھو وہ دن آئیں
 کہ مجھ سے ٹھوکریں بھی لگیں کت کو روں کھائیں

یہ کہہ کر بھیم اور پانڈو ہوئے رخصت بہ کر وافر
 کوئی کہنا چلا باہر نہیں ہے میرے قابو سے

کسی نے خاک اڑائی راہ کی، ایک مشت یہ کہہ کر
 اسی انداز سے میں تیر برباد کروں گا

کہا سہا یونے من میں شکونی کو میں ماروں گا
 دروید کنتیا بھی بال کھولے اشک برساتی

وہ من میں سوچتی تھی کاش اے پرچھو وہ دن آئیں
 کہ مجھ سے ٹھوکریں بھی لگیں کت کو روں کھائیں

رخصت = رخصت
 کر وافر = کر وافر

پانڈو = پانڈو
 جگمگاتے = جگمگاتے

خاک = خاک
 ایک مشت = ایک مشت

گھر-سرکشی = گھر-سرکشی
 اور بھڑکنا

اشک = اشک
 ہمراہ = ہمراہ

بہگماتے-کیروائے = بہگماتے-کیروائے
 کیروائے کی ستریاں

ऋषि बृहदश्व का दर्शन

चले उत्तर की जानिब, हस्तिना को छोड़ कर पांडव ।
न देखा शहर की जानिब, रुख अपना मोड़ कर पांडव ॥
परेशाँ हाल बन में, फिर रहे थे ठोकरें खाते ।
नई उफताद मुहँ खोले, खड़ी रहती जिघर जाते ॥
अचानक आन पहुँचे, फिर विरह दश एक दिन बन में ।
युधिष्ठिर ने उन्हें देखा तो बेहद खुश हुआ मन में ॥
खड़े होकर किया आदाब, और आसन पे बिठलाया ।
सऊबत दश-गरदी की ज़बा पर इस तरह लाया ॥
ऋषि महाराज मुझ जैसा, दुखी राजा जमाने में ।
न होगा बिलयकी, वारेअलम मुझ सा उठाने में ॥
है इबरत के लिए काफी यह मेरी खाना वीरानी ।
मेरे हाले-परेशाँ पर है, सर गरदाँ परेशानी ॥
मुझे बरबाद कर डाला है दुर्योधन सितमगर ने ।
मताए ज़िन्दगानी लूट ली, मगरूर खुदसर ने ॥
जुए में मक्र से जीती है, उस जालिम ने सब बाजी ।
शकुनी को मिलाकर, खूब की है फितना परदाजी ॥
हमारी भारिया को, सित्र से, बेगाना दुश्शाधन ।
भरी महफिल में करना चाहता था अकल का दुश्मन ॥
बहुत मज़लूम हूँ मुझ पर मुनि जी रहम فرमाएँ ।
ब अज़राहे-मुहब्बत मेरी हालत पर तरस खाएँ ॥

रुख = मुँह

उफताद = संकट,

सऊबत = मुश्किल

इबरत = देखने के योग
खाना वीरानी = घर की
बरबादी
सर गरदाँ = परेशान
मताए-ज़िन्दगानी =
ज़िन्दगी की पूंजी
मक्र = धोका चालाकी

सित्र = कपड़े

ब अज़राहे-मुहब्बत =
मुहब्बत से

رشی وره دش کا درشن

چلے اترکی جانب ہستا کو پھوڑ کر پا ندو
پریشاں حال بن میں پھر رہے تھے ٹھوکریں کھلتے
اچانک آن پہنچے پھر وره دش ایک دن بن میں
کھڑے ہو کر کیا آداب اور آسن پر بٹھ لایا
رشی مہراج مجھ جیسا دکھی راج زمانے میں
ہے عبرت کیلئے کافی یہ میری خانہ ویرانی
مجھے برباد کر ڈالا ہے درپور دھن ستمگر نے
جوں میں مکڑ سے جیتی ہے اس ظالم نے سب بانی
ہماری بھاریہ کو ستر سے بے گانہ و سناشن
بھری محفل میں کرنا چاہتا تھا عقل کا دشمن

بہت مظلوم ہوں مجھ پر مٹی جی رحم فرمائیں
بہ ازراہ محبت میری حالت پر ترس کھائیں



بیراھ کی آگ میں جلتا رہا جو میسلے-پروانا

سونا ڈالی یوڈیٹیر نے، جب اپنی داستاں ساری۔
وہدھ کی جڑوں سے فیر ہوا اٹلکاڑی یوں جاری۔
کی تیری بات کو راجا یوڈیٹیر مانتا ہوں میں۔
بہت اچھی طرح، بیپتا کو تیری جاننا ہوں میں۔
مگر اس پتھوی پر ایک راجہ ایسا گزرا ہے۔
خبر، آلاام کے تنور میں جو تپ کے اُتارا ہے۔
اتلہ مےلے ہیں توں سے بھی، جیادہ ایک سے ایک بڑھکر۔
جیلا پائی ہے جس نے زندگی کی سان پر چڑھکر۔
اُدھر آئیں سناؤں مختصر اب اس کا فسانہ۔
برہ کی آگ میں جلنا رہا جو میسلے پروانہ۔
مگر لغت کے چکر نے اسے ایسا سنوارا ہے۔
کہ دنیا میں وہ نل کے نام سے اب آشکارا ہے۔

داستوں = کथा

آلاام = कष्ट/

موسیبت

تنور = भट्टी

اتلہ = दुःख

شوہرے-آفاک =

دُنیا میں مہار

مدھ رُوائے = تاریف

کرنے والی

نیک سیرت = अच्छे

چال-چلن

سلیکا مند = हर

کام ٹیک ترہا کرنے

والی

خوش اتوار = अच्छे

تریکے والی

لطف کی پیکر =

अच्छाई की मूर्ति

فسانہ ہائے نل اور دیمنتی

دیمنتی نام کی ایک شہرہ آفاق شہزادی۔
کی جس کے ہنس کی شہیہ رُوائے، دُنیا کی آبادی۔
نیہایت نیک سیرت تھی وہ راجہ بھیم کی دختر۔
نیہایت نیک سیرت تھی، وہ راجا بھیم کی دختر۔
نیہایت نیک سیرت تھی، وہ راجا بھیم کی دختر۔
نیہایت نیک سیرت تھی، وہ راجا بھیم کی دختر۔

۱) سہی تلطف دیمنتی ہے لیکن پھر جڑتے-شہری 'دیمنتی' استمال کیا گیا۔

۲) یہ وہ بھیم نہیں جو مہابھارت میں پانڈو کا برادر تھا۔

برہ کی آگ میں جلنا رہا جو میسلے پروانہ

سناؤں یوڈیٹیر نے جب اپنی داستاں ساری۔
وہدھ کی جڑوں سے فیر ہوا اٹلکاڑی یوں جاری۔
کی تیری بات کو راجا یوڈیٹیر مانتا ہوں میں۔
بہت اچھی طرح، بیپتا کو تیری جاننا ہوں میں۔
مگر اس پتھوی پر ایک راجہ ایسا گزرا ہے۔
خبر، آلاام کے تنور میں جو تپ کے اُتارا ہے۔
اتلہ مےلے ہیں توں سے بھی، جیادہ ایک سے ایک بڑھکر۔
جیلا پائی ہے جس نے زندگی کی سان پر چڑھکر۔
اُدھر آئیں سناؤں مختصر اب اس کا فسانہ۔
برہ کی آگ میں جلنا رہا جو میسلے پروانہ۔
مگر لغت کے چکر نے اسے ایسا سنوارا ہے۔
کہ دنیا میں وہ نل کے نام سے اب آشکارا ہے۔

فسانہ ہائے نل اور دیمنتی

دیمنتی نام کی ایک شہرہ آفاق شہزادی۔
کی جس کے ہنس کی شہیہ رُوائے، دُنیا کی آبادی۔
نیہایت نیک سیرت تھی وہ راجہ بھیم کی دختر۔
نیہایت نیک سیرت تھی، وہ راجا بھیم کی دختر۔
نیہایت نیک سیرت تھی، وہ راجا بھیم کی دختر۔
نیہایت نیک سیرت تھی، وہ راجا بھیم کی دختر۔

۱) صحیح تلفظ دیمنتی ہے لیکن پھر جڑتے-شہری 'دیمنتی' استعمال کیا گیا۔

۲) یہ وہ بھیم نہیں جو مہابھارت میں پانڈو کا برادر تھا۔

دیمنتی پر تھا وہ بھی شیفہ لیکن مقدر نے
رکیبے-نل بنا ڈالا اسے الفت کے چکر نے
ایک وجہ سے دشمن بنا گم کردہ مسئلہ
دیمنتی اور نل کے درمیان پھر ہو گیا حائل
جوئے میں جسٹس کی زلیست کو برباد کر ڈالا
نیکالا کمر و عیاری سے جسٹس اس کا دیوالہ
بیابانوں کی راجنیل سے جس نے خاک چھینوا دی
جلال خسروی کو راہ بربادی کی دکھلا دی
جوئے میں اس کا سب کچھ لٹ چکا تو نل نے گھر چھوڑا
رخ اپنا شہر کجانب سے جنگل کی طرف موڑا
حکومت دولت و ثروت وہاں سے ہار کر نکلا
جوئے کے دیوتا پر آج سب کچھ وار کر نکلا
فقط اک ستر بوسیدہ بچا تھا اسکی قسمت سے
لیٹا تھا دیمنتی نے بدن پر جسکو غیرت سے

شوفتا = پرمی
رکیب = شتر

گوس کر دے-منجیل =
جیمہ اپنے ماری کا پتا
نا ہو
درمیاں = بچ
جیست = جیون

جلالے-خوسروی =
شادشاہی شاہ

ساروت = دہلت

سینر بوسیڈا = پورانا
لیباس

سوالے-من و تू बाकी रहा मेरा न और तेरा

थके हारे वह हफ्तों के, किसी शादाब खिलते में।
पहुँच कर दम लिया, धरती के इक पुरआब खिलते में॥
वहीं बोसीदा सा खाली मकों, उन को नज़र आया।
दिमंती और नल ने उस मकों में खुदको पहुँचाया॥
सफ़र की इस सऊबत और थकन से चूर थे दोनों।
कदम आगे बढ़ाने से, वह अब माज़ूर थे दोनों॥
अलम खुर्दा थे आखिर डाला फ़र्श-खाक पर डेरा।
सुवाले-मन-ओ-तू बाकी रहा, मेरा न और तेरा॥

शादाब = हरे भरे
खिलता = इलाक़े/क्षेत्र

माज़ूर = मजबूर
अलम खुर्दा = दुःख झेले
हुए
सुवाले-मन-ओ-तू = मैं
और तू का सवाल

دیمنتی پر تھا وہ بھی شیفہ لیکن مقدر نے
رکیبے-نل بنا ڈالا اسے الفت کے چکر نے
ایک وجہ سے دشمن بنا گم کردہ مسئلہ
دیمنتی اور نل کے درمیان پھر ہو گیا حائل
جوئے میں جسٹس کی زلیست کو برباد کر ڈالا
نیکالا کمر و عیاری سے جسٹس اس کا دیوالہ
بیابانوں کی راجنیل سے جس نے خاک چھینوا دی
جلال خسروی کو راہ بربادی کی دکھلا دی
جوئے میں اس کا سب کچھ لٹ چکا تو نل نے گھر چھوڑا
رخ اپنا شہر کجانب سے جنگل کی طرف موڑا
حکومت دولت و ثروت وہاں سے ہار کر نکلا
جوئے کے دیوتا پر آج سب کچھ وار کر نکلا
فقط اک ستر بوسیدہ بچا تھا اسکی قسمت سے
لیٹا تھا دیمنتی نے بدن پر جسکو غیرت سے

سوال من و تو باقی رہا میرا نہ اور تیرا

تھکے ہارے وہ ہفتوں کے کسی شاداب خیلے میں
پہنچ کر دم لیا، مہرقی کے اک پُراب خیلے میں
وہیں بوسیدہ سا خالی مکاں ان کو نظر آیا
دیمنتی اور نل نے اس مکاں میں خود کو پہنچا یا
سفر کی اس صعوبت اور تھکن سے چور تھے دونوں
قدم آگے بڑھانے سے وہ اب معذور تھے دونوں
الم خوردہ تھے آخر ڈالا فرش خاک پر ڈیرا
سوال من و تو باقی رہا میرا نہ اور تیرا



جُرمی پر پڑ گئے دونوں کہاں کا تکیہ و بستر
یہ تھا احساس ہی کتب چھوڑے ہیں جسم میں پتھر
زمین پر لیٹتے ہی نیند سے آنکھیں ہوئیں بوجھل
مڑے سے سو گئے رانی دِمنتی اور راجہ نل

مگر وائے مقدر عقل نل پر پڑ گیا پردہ

اچانک نیم شب میں خواب آنکھیں کھلیں نل کی
کیا تھا مضحل اسکو پر اگسندہ خیالوں نے
مزانہ کیفیت اس وقت کافی نل کی برہم تھی
اچانک ذہن میں اک بات آئی اور اٹھ بیٹھا
فقط اک ستر میں لیٹی پڑی تھی ناز پروردہ
خیال آیا کہ اسکے تیاگنے ہی میں بھلائی ہے
ای صورت میں پائینگے دکھوں دونوں چھٹکارا
مگر اس تیاگ کے مانع رہی خود اسکی عسریانی
کہ آدھا ستر رانی کے حسیں و مرمریں تن سے
پھر اُسے نصف کپڑا قطع کر کے ناز پروردہ کا
گرانی نیند اچھٹنے سے بڑھی کچھ اور بے گل کی
ہلا ڈالی یقین چولیس فہم و دانش کی کالوں نے
سمجھ میں کچھ نہ آتا تھا کلام فہم بھی ختم تھی
بڑی حسرت سے خوابیدہ دِمنتی کی طرف دیکھا
مگر وائے مقدر عقل نل پر پڑ گیا پردہ
دِمنتی کے ہمیشہ ساتھ رہنے میں برائی ہے
دِمنتی بھی پہنچ جائیگی اپنے میکے دوبارہ
سوا کے نظر آئی نہ کوئی صورتِ ثانی
کروں اب قطع، عریاں جائیں کتائیں اس بن سے
چھپایا اس سے آدھا جسم، چھوڑا ساتھ دلبر کا

جُرمی پر پڑ گئے دونوں کہاں کا تکیہ و بستر
یہ تھا احساس ہی کتب چھوڑے ہیں جسم میں پتھر
زمین پر لیٹتے ہی نیند سے آنکھیں ہوئیں بوجھل
مڑے سے سو گئے رانی دِمنتی اور راجہ نل

مگر وائے مقدر عقل نل پر پڑ گیا پردہ

اچانک نیم شب میں خواب آنکھیں کھلیں نل کی
کیا تھا مضحل اسکو پر اگسندہ خیالوں نے
مزانہ کیفیت اس وقت کافی نل کی برہم تھی
اچانک ذہن میں اک بات آئی اور اٹھ بیٹھا
فقط اک ستر میں لیٹی پڑی تھی ناز پروردہ
خیال آیا کہ اسکے تیاگنے ہی میں بھلائی ہے
ای صورت میں پائینگے دکھوں دونوں چھٹکارا
مگر اس تیاگ کے مانع رہی خود اسکی عسریانی
کہ آدھا ستر رانی کے حسیں و مرمریں تن سے
پھر اُسے نصف کپڑا قطع کر کے ناز پروردہ کا
گرانی نیند اچھٹنے سے بڑھی کچھ اور بے گل کی
ہلا ڈالی یقین چولیس فہم و دانش کی کالوں نے
سمجھ میں کچھ نہ آتا تھا کلام فہم بھی ختم تھی
بڑی حسرت سے خوابیدہ دِمنتی کی طرف دیکھا
مگر وائے مقدر عقل نل پر پڑ گیا پردہ
دِمنتی کے ہمیشہ ساتھ رہنے میں برائی ہے
دِمنتی بھی پہنچ جائیگی اپنے میکے دوبارہ
سوا کے نظر آئی نہ کوئی صورتِ ثانی
کروں اب قطع، عریاں جائیں کتائیں اس بن سے
چھپایا اس سے آدھا جسم، چھوڑا ساتھ دلبر کا

نیم شب = آدھی رات

مُجھل = کمزور
پراگندا = بیکار
فہم و دانش = عقل
اور توجہ

میزاجی کیفیت =
دماغ کی دشا
برہم = بگڑی ہوئی
کُلاہے-فہم بھی ختم تھی
= اکل بھی کام
کرنے سے اُپر ہو چوکی
تھی

کُلاہے = سوئی ہوئی
ناز پروردہ = ناز میں
پلی ہوئی

مانج = رکاوٹ
سُرتے-سانی = کوئی
دُسر راستا
ہنسی مرمریتن = سُندر
سُفید شریں
کتا = کاٹنا
سُرتے = ننگا
نِسف = آدھا

دیمتی کو مقرر کے حوالے چھوڑ کر بن میں
چلا نل त्याग कर, रानी को डक वीरान निर्जन में ॥

बवक्ते-गुप्तगू जिसके दहन से फूल झड़ते थे

दहन खोले खड़ी थीं मिस्ते-गुलखन हिज्र की घड़ियाँ।
लगी थी चश्मे-नल से, आँसुओं की खुफिशों झड़ियाँ ॥
मची थी दिल में डक हलचल, नुमायाँ थी परेशानी।
रुखे नल से गमे-दूरी की जाहिर थी फरावानी ॥
कभी रुकता, कभी बढ़ता, कभी पीछे पलट आता।
कभी ख्वाबिदा रानी की बलाएँ लेके हट जाता ॥
कभी लब कपकपा उठते, कभी वह सिसकियाँ भरता।
कभी हालात की नैरगियों पर बैन यूँ करता ॥
सजाएँ मिल रही हैं मेरे मौला किन गुनाहों की।
यही होती है दुर्गत क्या जहाँ में बादशाहों की ॥
यही रानी जो कल तक, सेज पर फूलों के सोती थी।
नुमायाँ महवशों के जुमरे-रंगी में होती थी ॥
गुले-सद बर्ग पर जिस के हमेशा पांव पड़ते थे।
बवक्ते-गुप्तगू जिसके, दहन से फूल झड़ते थे ॥
वही है आज मैहवे-खाब, खाक आलुदह बिस्तर पर।
खमोशी मर्ग की छाई है जिस के रूप अनवर पर ॥
नहीं है जिस को कुछ अहसास मिट्टी की कसाफत का।
तने-नाजुक पे ना हमवार धरती की अजियत का ॥
खुदावंदा यह क्या नैरगियाँ हैं बज्मे-आलम की।
जो थी कल ऐश की महफिल वही है आज मातम की ॥

गुलखन = भट्टी
हिज्र = चिछड़ना
खुफिशों = खुन बरमानी
हुई
नुमायाँ = जाहिर

गुले सद बर्ग = वह फूल
जिस की सौ पखड़ियाँ हो

मैहवे-खाब = नींद में
हुई
खाक आलुदह बिस्तर =
मिट्टी से अटा हुआ
बिस्तर
कसाफत = भारी पन
अजियत = तकलीफ/कष्ट
नैरगियाँ = जमाने का
बदलना

دستی کو مقرر کے حوالے چھوڑ کر بن میں
چلا نل त्याग कर, रानी को डक वीरान निर्जन में ॥

بوقتِ گفتگو جسکے دہن سے پھول جھڑتے تھے

دہن کھولے کھڑی تھیں مثل گلخن ہجر کی گھڑیاں
لگی تھی چشم نل سے آنسوؤں کی خوفناک گھڑیاں
پچی تھی دل میں اک ہلچل نمایاں تھی پریشانی
ربخ نل سے غم دوری کی ظاہر تھی فراوانی
کبھی رکتا کبھی بڑھتا کبھی پیچھے پلٹ آتا
کبھی خوابیدہ رانی کی بلائیں لیس کے ہٹ جاتا
کبھی لب کپکپا اٹھتے کبھی وہ سسکیاں بھرتا
کبھی حالات کی نیرنگیوں پر بین یوں کرتا
سزائیں مل رہی ہیں میرے مولا کن گستاہوں کی
یہی رانی جو کل تک سیج پر پھولپوں کے سوتی تھی
یہی رانی جو کل تک سیج پر پھولپوں کے سوتی تھی
گلِ صد برگ پر جسکے ہمیشہ پاؤں پڑتے تھے
بوقتِ گفتگو جسکے دہن سے پھول جھڑتے تھے
وہی ہے آج محو خواب خاک آلودہ بستر پر
خوشی مرگ کی چھائی ہے جسکے روئے الوہر پر
نہیں ہے جگو کچھ احساس مٹی کی کثافت کا
تن نازک پہ ناہموار دھرتی کی اذیت کا

خداوند ایہ کیا نیرنگیاں ہیں بزمِ عالم کی

جو تھی کل عیش کی محفل وہی ہے آج ماتم کی



دِمنتی کو نل کا تیاگنا

پریشانی کے ہر احساس سے آزرہ دل ہو کر چلا راجہ وہاں سے کوہِ غم رکھ کر کیلچے پر
پلٹ کر پھر نہ دیکھا راجہ نل نے اپنی رانی کو فلک تکتا رہا حیرت سے جس کی سخت جانی کو
جدا ہو کر پری چہرہ دِمنتی سے رہا گریاں پھر صحرا بہ صحرا ٹھوکریں کھاتا ہونا داں
بالآخر مات کھائی نجات کی مکڑہ گھاتوں سے مصیبت کو خروں نل نے کیا خود اپنے ہاتھوں سے
یہ سچ ہے بحرِ غم میں کم نہ تھی پہلے سے ملیانی دِمنتی کو جدا کر کے بڑھالی اور پریشانی

وہ برسوں جنگلوں میں ٹھوکریں کھاتا رہا ناواں
دِمنتی بھی عذابِ محسوس کی گنتی رہی گھڑیاں

یہ صحیح تلفظ دِمنتی ہے۔ لیکن ضرورتِ شعری کے لیے 'دِمنتی' استعمال کیا گیا ہے

دمیانتی کو نل کا تیاگنا

پریشانی کے ہر افسوس سے، آجودا دل ہو کر
چلتا راجا وہاں سے، کوہِ غم، رکھ کر کلتے پر۔

پلٹ کر پھر نہ دیکھا، راجا نل نے اپنی رانی کو
فلک تکتا رہا ہیرت سے، جس کی سخت جانی کو۔

جودا ہو کر پری چہرہ 'دِمنتی' سے رہا گریاں
فیرا سہرا ب سہرا، ٹوکرے کھاتا ہوا نادوں۔

بیل آخیر مات کھائی بخت کی مکڑہ گھاتوں سے
موسیبت کو فوج نل نے کیا، خود اپنے ہاتھوں سے۔

یہ سچ ہے بھرے-گم میں، کم نہ تھی، پہلے سے توجہ دانی
دِمنتی کو جودا کر کے، بڑھاتی اور پریشانی۔

وہ برسوں جنگلوں میں ٹوکرے کھاتا رہا نادوں
دِمنتی بھی اُجا-بے-ہیج کی، گینتی رہی چڑیاں۔

آجودا دل = دُ:خ
ہیج = دُ:خ کا
پہاڑ
فلک = آکا

گریاں = روتا ہوا
بخت = بخت
فوج = بخت

بھرے-گم = دُ:خ کا
سمندر
توجہ دانی = توجہ

اُجا-بے-ہیج = جودا کا
کڑ

۱) سہی تال فوج دمیانتی ہے لیکن ضرورتِ شعری کے لیے 'دِمنتی' استعمال کیا گیا ہے۔

دیمنتی کی آہ وزاری

پری چہرہ دیمنتی کی کھلی آنکھیں تو گھسبائی
نہ شوہر کو وہاں پایا تو غم سے آنکھ بھر آئی
تڑپ کر اٹھ گئی فوراً ہی خاک آلودہ بستر سے
بڑی تیزی سے باہر آگئی بوسیدہ پتھر سے
نظر دوڑائی چاروں سمت سوائی کو نہ جب پایا
اک ہلکا سا دھندلا ہوش کے ذہن پر چھپایا
یہ ایک پاؤں اکھڑے گر پڑی معصوم غمش کھا کر
رہی کچھ دیر تک بے ہوش ناہموار دھرتی پر
جب آیا ہوش تو کمر نے لگی وہ گریہ وزاری
لب معصوم پر یوں بین کے الفاظ تھے جاری
خطا کیا ہے مری سوائی، جو تم نے یوں مجھے چھوڑا
بتاؤ بے رخی سے شیشہ دل کیوں مرا توڑا
ترستی میں نگاہیں اپنا چہرہ مجھ کو دکھلاؤ
مری بے چارگی پر رحم کھاؤ سا منے آؤ
ہنسی آپس میں دم بھر کی سزاوار معافی ہے
چلو منظور یہ بھی، دلگی اتنی ہی کافی ہے
میں باز آئی اب ایسی دلگی سے سا منے آؤ
ہنسی کی آڑ لے کر ناخدا اب مجھ کو نہ ترساؤ
غرض روتی رہی رانی دیمنتی بن کر کر کے
امید و بیم میں جیتی رہی گویا وہ مرم کے
نل اور دیمنتی کی صحراوردی
نل اور دیمنتی کی صحراوردی
غرض دونوں کچھ ٹھوکریں کھاتے رہے بن میں
کبھی پربت کبھی صحرا کبھی ویران نرجن میں

دمیانتی کی آہ-آو-جاری

پری چہرا دیمنتی کی खुली आँखें तो घबराई।
न शौहर को वहाँ पाया, तो ग़म से आँख भर आई।।
तड़प कर उठ गई फौरन ही, खाक आलूदा बिस्तर से।
बड़ी तेज़ी से बाहर आ गई, बोसीदा छप्पर से।।
नज़र दौड़ाई चारों سمت, स्वामी को न जब पाया।
इक हलका सा धुंदलका, माहवश के ज़हन पर छाया।।
यकायक पाँव उखड़े, गिर पड़ी मासूम ग़श खाकर।
रही कुछ देर तक बेहوش, ना हमवार धरती पर।।
जब आया होश तो करने लगी, वह गिरया-ओ-जारी।
लब-मासूम पर यूँ, बैन के अलफाज़ थे जारी।।
ख़ता क्या है मेरी स्वामी, जो तुम ने यूँ मुझे छोड़ा।
बताओ बेरुखी से, शीशाएँ दिल क्यों मेरा तोड़ा।।
तरसती हैं निगाहें, अपना चेहरा, मुझ को दिखलाओ।
मेरी बेचारगी पर, रहम खाओ, सामने आओ।।
हँसी आपस में दमभर की, सज़ावारे-मुआफी है।
चलो मन्ज़ूर यह भी, दिल्लगी इतनी ही काफी है।।
मैं बाज़ आई, अब ऐसी, दिल्लगी से, सामने आओ।
हँसी की आड़ लेकर नाथ, अब मुझ को न तरसाओ।।
गरज़ रोती रही रानी दیمन्ती बैन करकर के।
उम्मीद-ओ-बीम में जीती रही, गोया वह मर-मर के।।

نل اور دمیانتی کی سہرا-نورددی

गरज़ दोनों बिछड़ कर, ठोकरें खाते रहे बन में।
कभी पर्वत, कभी सहरा, कभी वीरान निर्जन में।।

بैन = کیمی موسیبت کے
سماں اور ت کا بیان کر
کر کے رونا
گیریا-آو-جاری = رونا،
چیلانا
شیشا-دیل = دل کا
दर्पण

उम्मीद-ओ-बीम = आशा
और निराशा

निर्जन = एकांत

کبھی جنگل میں پکڑا اژدھے نے پاؤں رانی کا
 हुआ इक तल्लू जिसको तजरुबा अपनी जवानी का ॥
 कभी वह माहवश पहुँची, ऋषि मुनियों के मन्डल में।
 कभी बद किस्मती से आ फँसी, फीलों के जंगल में ॥
 फिर उसके बाद चेदी राज की नगरी में वह आयी।
 जहाँ तकदीर उसको नीम उरियो खींच कर लायी ॥
 महल से राज माता ने उसे आते हुए देखा।
 व्याकुल नेत्र से जब, नीर बरसाते हुए देखा ॥
 तो फौरन उस को अपने पास, माता जी ने बुलवाया।
 महल में अपनी बेटी की तरह, फिर उसको ठहराया ॥
 रही कुछ दिन सुबाहू देश में मेहमान वह बनकर।
 फिर उसके बाद पहुँची अपने मैके भीम की दुस्तर ॥

तल्लू = कडवा

फीलों = हाथियों

मारे-गुर्जा की मदद से राजा रूतू के महल तक

इधर नल का गमो-आलाम से मामूर था सीना।
 लगाता कौन आखिर, उस के दर्द-ओ-गम का तल्मीना ॥
 किसी दिन नल ने इक शोला उगलती आग को देखा।
 और उस में एक "कुंडलाकार" काले नाग को देखा ॥
 मदद की नल ने अफई की, निकाला उस को आतिश से।
 खुलासी मिल गई जब नाग को नल की नवाज़िश से ॥
 तो पहले अपने ही मोहसिन को, है है इस लिया उसने।
 इक अच्छाई का बदला, यूँ बुराई से दिया उसने ॥
 बज़ाहिर सांप के इसने से उसकी शक्ल और सूरत।
 बदल कर रह गई, और जिल्द की काली हुई रंगत ॥

गमोआलाम = दु:ख और
 कष्ट
 मामूर = भरा हुआ
 तल्मीना = अंदाज़

खुलासी = मुक्ति

मोहसिन = एहसान करने
 वाला

کبھی جنگل میں پکڑا اژدھے نے پاؤں رانی کا
 کبھی وہ ماہوش پہنچی رشی منیوں کے منڈلیں
 پھر اسکے بعد چیدی راج کی نگری میں وہ آئی
 جہاں تقدیر اسکو نیم عریاں کھینچ کر لائی
 محل سے راج ماتنے آتے ہوئے دیکھا
 بیاگل نتر سے جب نیر برساتے ہوئے دیکھا
 تو فوراً اسکو اپنے پاس ماتاجی نے بلوایا
 محل میں اپنی بیٹی کی طرح پھر اسکو بٹھرایا

رہی کچھ دن سو باہودیش میں مہمان وہ بن کر
 پھر اسکے بعد پہنچی اپنے میکے بھیم کی دُستَر

مارگرزہ کی مدد سے راجہ روتو کے محل تک

ادھڑل کا غم و آلام سے معمور تھا سینہ
 لگا ناگون آخرا کے درد و غم کا تخمینہ
 کسی دن نل نے اک شعلہ اگلتی آگ کو دیکھا
 اور اُس میں ایک "کنڈلاکار" کالے ناگ کو دیکھا
 مدد کی نل نے انہی کی، نکالا اسکو آتش سے
 خلاصی ملگئی جب ناگ کونل کی نوازش سے
 تو پہلے اپنے ہی محسن کو بے بس لیا اس نے
 اک اچھائی کا بدلہ یوں برائی سے دیا اس نے
 بظاہر سانپ کے ڈسنے سے اسکی شکل اور صورت
 بدل کر رہ گئی، اور جلد کی کالی ہوئی رنگت

کھا फिर नाग ने नल से, अयोध्या देश में जाकर।
 वहाँ के राजा रतू से, तेरा मिलना है अब बेहतर॥
 वहीं से दर हकीकत नल, तेरा कल्याण अब होगा।
 दिमंती से भी मिलने का वही सामान अब होगा॥
 यह सुन कर वह खुशी से राजा रतू के नगर पहुँचा।
 शबे-दीजूर में इक, लेके, उम्मीदे-सहर पहुँचा॥
 रहा काफी दिनों तक खुशनुमा नगरी में राजा नल।
 हमा आलम मगर रहता, फिराके-यार में बेकल॥

नई राहें मिलीं और हसरते-देरीना बर आयी

दिमंती भी फिराके-यार, की गिनती रही घड़ियाँ।
 लगी थी दुःखभरी आँखों से, सावन की तरहा झड़ियाँ॥
 बिरहा और कामना की आग में जलती रही रानी।
 मनोरथ के महासागर में रोज़ उठती थी तुगयानी॥
 हजारों यूँ तो आसाईश, के सामों भी मयस्सर थे।
 कनीज़ और दास कितने, उसकी खिदमत पर मुक़रर थे॥
 विसाले-यार की तदबीरें, कितनी ज़हन में आयी।
 मगर किस्मत ने मायूसी की राहें, उस को दिखलायी॥
 यूँही होती रही काविश विसाले-जाने-जाना की।
 सबील आखिर निकल आई, इलाजे-दर्दे-पिन्हों की॥
 हुआ एलान दोबारा दिमंती के स्वयं वर का।
 मिलन होगा इसी तरीक़े से, दो रश्के-नय्यर का॥
 दिमंती की ज़हानत और तदब्बुर ने ती अंगड़ाई।
 नई राहें मिलीं, और हसरते-देरीना बर आयी॥

शबे-दीजूर = काही रात
 उम्मीदे-सहर = सुबह की
 आग
 हमा आलम = हर समय
 बेकल = बेचैन

आसाईश = आनंद
 आराम

काविश = प्रयत्न
 सबील = रास्ता

रश्के-नय्यर = इतने सुन्दर
 के उनके सामने मुरज झप
 जाए
 तदब्बुर = तदबीर
 हसरते-देरीना बर आई =
 पुरानी कामना पूरी होना

کہا پھر ناگ نے نل سے ایو دھیا دیش میں جا کر وہاں کے راجہ روتو سے ترانا ہے اب بہتر
 وہیں سے درحقیقت نل تراکیان اب ہوگا دِمنتی سے بھی ملنے کا وہیں سامان اب ہوگا
 یہ سن کر وہ خوشی سے راجہ روتو کے نگر پہنچا شب دیجور میں اک لیے امید مگر پہنچنی

رہا کافی دنوں تک خوشنما نگر میں راجہ نل
 ہمہ عالم مگر رہتا فراق یار میں بیکل

نئی راہیں ملیں اور حسرتِ دیرینہ بر آئی

دِمنتی بھی فراق یار کی گنتی رہی گھڑیاں لگی تھیں دکھ بھری آنکھوں ساون کی طرح بھٹ پیا
 پرہ اور کامنا کی آگ میں جلتی رہی رانی منور تھ کے مہا ساگر میں روز اٹھتی تھی تلغیانی
 ہزاروں یوں تو آسائش کے سامان بھی میسر تھے کینز اور داس کتنے اسکی خدمت پر مقرر تھے
 وصال یار کی تدبیریں کتنی ذہن میں آئیں مگر قسمت نے مایوسی کی راہیں اسکو دکھلائیں
 یونہی ہوتی رہی کاوش وصال جانِ جاناں کی سبیل آخر نکل آئی علاجِ دردِ پنہاں کی
 ہوا اعلان دوبارہ دِمنتی کے سوئمبر کا ملن ہوگا اسی ترکیب سے دور شکِ نیر کا
 دِمنتی کی ذہانت اور تدبیر نے لی انگڑائی نئی راہیں ملیں اور حسرتِ دیرینہ بر آئی



بدل ڈالا بالآخر اس نے بھر پار کا نقش
تصور میں کھینچ آیا وصال دلدار کا نقش

سیاہی پھیرنا کیوں چاہتی ہے پارسائی پر

سو بھر کی خبر اڑتی ہوئی جسم ملی نل کو
یقین و شبہ کی اک شکش بیہم رہی جاری
کبھی وہ سوچتا کیا بے وفا ہے، واقعی رانی
اُسے آخر ضرورت کیوں ہے دوبارہ سو بھر کی
بڑھیں بے چینیاں دل کی کون پایا نہ اک پل کو
حواس نل پہ تھی اک اضطرابی کیفیت طاری
جو یوں سوچا ہے اس نے انتخاب شوہر ثانی
وہ کتنا تو نہیں جس کو ضرورت ہو کسی در کی
نئی آغوش کی آخر تلاش اور جستجو کیوں ہے
سہاگن یا پتی ورتا کو در کی آرزو کیوں ہے

نہ جانے آج آمادہ ہے کیوں وہ بے وفائی پر

سیاہی پھیرنا کیوں چاہتی ہے پارسائی پر

وفا کی ذہن کے پردے پہ تصویریں ابھریں

مگر اک دوسرا رخ ذہن پر نل کے ابھر آیا
خیال بے وفائی تھا جو اب تک ذہن پر چھایا

بدل ڈالا بیل آخر اس نے ہینے-یار کا نقش
تسکین میں کھینچ آیا، دوسلے-دیلدار کا نقش

سیاہی فیرنا کیوں چاہتی ہے پارسائی پر

سویں ور کی خبر اڑتی ڈیڈ جس دم میلی نل کو
بہی بے چینیاں دل کی، سوکھ پایا نہ اک پل کو
یقین و شبہ کی اک شکش بیہم رہی جاری
ہوا سے-نل پہ تھی، اک ڈیڈتہ رانی کے فیتل تار
کبھی وہ سوچتا کیا بے وفا ہے، واقعی رانی
جو یوں سوچا ہے اس نے، انتہا بے-شوہر-سانی
اسے آخر ضرورت کیوں ہے دوبارہ سو بھر کی
وہ کتنا تو نہیں جس کو ضرورت ہو کسی در کی
نئی آغوش کی آخر تلاش اور جستجو کیوں ہے
سہاگن یا پتی ورتا کو در کی آرزو کیوں ہے

وفا کی جہن کے پردے پہ تسمیریں ابر آئی

مگر اک دوسرا رخ، جہن پر نل کے ابر آئی
سیاہی-بے وفا تھا جو اب تک جہن پر آئی

ہینے-یار = میتر سے
تسکین = دھیان، دھیان
دوسلے-دیلدار کا نقش
= پری سے میلن کا
سیاہی

یقین و شبہ = یقین و
اور سندھ
کشمکش = کشمکش
ہوا سے = سوچنے سمجھنے
کی شکتی

شوہر-سانی = دوسرا
پتی

جہن = دھیان

وہاں مجبوریاں رانیِ دُستی کی نظر آئیں
وفا کی، جہن کے پردے پر تھیں اُٹھ آئی
یہی نقشِ ثانی نقشِ اول سے حسین نکلا
نکشیِ ناز سے ہنسی سے ہنسی نکلا
اسے اس ضمن میں اپنی ہی کوتاہی نظر آئی
مناست سے کیا جب غور تو اپنی خطا پائی
کہ میں نے خود ستم توڑا ہے اس معصوم رانی پر
ترس مطلق نہ کھایا اسکی پاکیزہ جوانی پر
اے جنگل میں خوابیدہ اکیلا چھوڑ کر آیا
مقدر کے حوالے کر دیا، منہ موڑ کر آیا
کھلی ہوگی جب اسکی آنکھ تو وہ رو پڑی ہوگی
سمجھ کر ٹھکڑو بزمِ مہی ہر اسان ہوگی ہوگی

ہیات-او-موت کی اس کشمکش سے پارتا رہا ہے

یہ سچ ہے واقعی اس ضمن میں سب سے خطا میری
پریشانی کا باعث ہے حقیقت میں جفا میری
سوئے بھی لگا کر آنکھ اب بھاتا نہیں مجھ کو
یہی اعلان ہے ہودہ تو اس آتا نہیں مجھ کو
مری لغزش کے ساتھ اس بے وفا محبوب کی باتیں
کھٹک جاتی ہیں مثلِ خار آنکھوں میں یہی گھاہیں
دگر کے ہو شاید مابہوش کی اس میں کچھ حکمت
وگر نہ میں سمجھ لوں اسکو اپنی شومئی قسمت
لہذا اب وہیں جا کر مجھے معلوم کرنا ہے
ہیات و موت کی اس کشمکش سے پارتا رہا ہے

نکشی-مانی = دوسرا
نکشی-انکشی = پہلا
نکشی-انکشی = پہلا
نکشی-انکشی = پہلا
نکشی-انکشی = پہلا
نکشی-انکشی = پہلا
نکشی-انکشی = پہلا
نکشی-انکشی = پہلا
نکشی-انکشی = پہلا
نکشی-انکشی = پہلا

بادام = بڑھ کا

لغزش = گلتی
میلنے خوار = کاٹے کی
ترہ
حکمت = اچھاई کا
کوئی پہلو

وہاں مجبوریاں رانیِ دُستی کی نظر آئیں
وفا کی، جہن کے پردے پر تھیں اُٹھ آئی
یہی نقشِ ثانی نقشِ اول سے حسین نکلا
نکشیِ ناز سے ہنسی سے ہنسی نکلا
اسے اس ضمن میں اپنی ہی کوتاہی نظر آئی
مناست سے کیا جب غور تو اپنی خطا پائی
کہ میں نے خود ستم توڑا ہے اس معصوم رانی پر
ترس مطلق نہ کھایا اسکی پاکیزہ جوانی پر
اے جنگل میں خوابیدہ اکیلا چھوڑ کر آیا
مقدر کے حوالے کر دیا، منہ موڑ کر آیا
کھلی ہوگی جب اسکی آنکھ تو وہ رو پڑی ہوگی
سمجھ کر ٹھکڑو بزمِ مہی ہر اسان ہوگی ہوگی

ہیات و موت کی اس کشمکش سے پارتا رہا ہے

یہ سچ ہے واقعی اس ضمن میں سب سے خطا میری
پریشانی کا باعث ہے حقیقت میں جفا میری
سوئے بھی لگا کر آنکھ اب بھاتا نہیں مجھ کو
یہی اعلان ہے ہودہ تو اس آتا نہیں مجھ کو
مری لغزش کے ساتھ اس بے وفا محبوب کی باتیں
کھٹک جاتی ہیں مثلِ خار آنکھوں میں یہی گھاہیں
دگر کے ہو شاید مابہوش کی اس میں کچھ حکمت
وگر نہ میں سمجھ لوں اسکو اپنی شومئی قسمت
لہذا اب وہیں جا کر مجھے معلوم کرنا ہے
ہیات و موت کی اس کشمکش سے پارتا رہا ہے

گولے-سَد بَرگ کے جیسے چمن میں کھل گئے دونوں

فیر اسکے بعد راج بھیم کی نگری میں پہنچا نل
دستی کی فراست کا یہ ادنیٰ سا کشر تھا
وہاں پہنچا تو پہلے جا پرخ کی اُسے سو بمر کی
تھا کافی ہاتھ اس افواہ میں رانی دستی کا
یقیناً کمران تھی آج وہ اپنی سیاست میں
خدا کی حکمت ناز آفریں بیٹھانٹا نے پر
سو بمر کے بہانے قلب مضطرب گئے دونوں
گل صد برگ کی مانند گویا کھل گئے دونوں

مہامونی ویاس کا درشن

فیر اسکے بعد اک دن ویاس جی نے درشن دکھلایا
یوधिष्ठिर نے، بڑی تکریم سے، فیر ان کو بیٹھلایا
مہارشی نے ب ا ج راہے، تل تل توف، خیریت پوچی
سفر کا حال پوچھا اور مزاجی کیفیت پوچی

میرامل = بھڑیل
اَدنا = اَدنا

لارے = نیرامل

ہیکمات = دانیال
اور اکل
کامرا = مافان
تسبور = دھان
منجیل = دھان
کی منجیل
خود گے - ہیکمات = نا ج آفری
= بھڑیل اور نا ج کے مافان
چلایا گیا تیر
جہی = مافان

گولے-سَد بَرگ = گولے کا
فول

تکریم = اکریم
تل تل توف = تل تل توف کی راہ
سے یا مہارشی سے، مہارشی
کیفیت = کیفیت کا حال

گل صد برگ کے جیسے چمن میں کھل گئے دونوں

پھر اسکے بعد راج بھیم کی نگری میں پہنچا نل
دستی کی فراست کا یہ ادنیٰ سا کشر تھا
وہاں پہنچا تو پہلے جا پرخ کی اُسے سو بمر کی
تھا کافی ہاتھ اس افواہ میں رانی دستی کا
یقیناً کمران تھی آج وہ اپنی سیاست میں
خدا کی حکمت ناز آفریں بیٹھانٹا نے پر
سو بمر کے بہانے قلب مضطرب گئے دونوں
گل صد برگ کی مانند گویا کھل گئے دونوں

سو بمر کے بہانے قلب مضطرب گئے دونوں
گل صد برگ کی مانند گویا کھل گئے دونوں

مہامونی ویاس کا درشن

پھر اسکے بعد اک دن ویاس جی نے درشن دکھلایا
یوधिष्ठिर نے، بڑی تکریم سے، فیر ان کو بیٹھلایا
مہارشی نے ب ا ج راہے، تل تل توف، خیریت پوچی
سفر کا حال پوچھا اور مزاجی کیفیت پوچی

یُدھشٹر نے کہا کیا پوچھتے ہیں خیریت میری !
 مقدس صوبت ہے، نہ پوچھیں عافیت میری
 نہ ہوگا کوئی بھی مجھ سادکھی راجہ زمانے میں !!
 نہ پائیں گے کوئی باب ایسا ماضی کے فسانے میں
 رشی جی نے یُدھشٹر کی سنی باتیں متانت سے
 تسلی اور دلاسا دے کے سمجھایا محبت سے
 نہ ہو یا یوس راجہ اس قدر اپنی تباہی پر
 رہا ہے تمکنت سے کون دامن تخت شاہی پر
 علاوہ اسکے تجھ سے بھی زیادہ درد کے مارے
 اسی دھرتی پر زیرِ آسمان گزرے ہیں بیچارے
 ہے ان میں اک ہری چند نام کے راجہ کا فسانہ
 ہے جکی زندگی کا درد سے بریز پیمانہ
 رشی جی دیاس نے پھر داستان اسکی سنا ڈالی
 مسرت عیش و فرسندی سے تھی جو مطلقاً خالی

یُدھشٹر بھول بیٹھا اپنا غم اپنی مصیبت کو
 دل اسکا درد سے بھر آیا سکر اس حکایت کو

مارکنڈے جی کا दर्शन

کئی دن بعد اس بن میں یُدھشٹر کو بایں فرحت
 دیا दर्शन مہی جی مارکنڈے نے بایں خلّت
 یُدھشٹر نے انہیں دیکھا تو فوراً بادب ہو کر
 کیا آداب اور انکو بٹھایا ایک آسن پر
 بڑے عجز و ارادت سے کہا اے رہبرِ کامل
 بجا ہے! آپ پر روشن ہے ماضی اور مستقبل

یुधिष्ठिर ने कहा क्या पूछते हैं खरियत मेरी।
 मुकुन्दर में सऊबत है, न पूछें आफियत मेरी।।
 न होगा कोई भी मुझ सा, दुःखी राजा जमाने में।
 न पाएंगे, कोई बाब ऐसा, माजी के फसाने में।।
 ऋषिजी ने युधिष्ठिर की सुनी बातें मतानत से।
 तसल्ली और दिलासा देके, समझाया मुहब्बत से।।
 न हो मायूस राजा, इस कदर अपनी तबाही पर।
 रहा है तमकनत से कौन, दाइम तख्ते-शाही पर।।
 अलावा इस के, तुझ से भी ज्यादा दर्द के मारे।
 इसी धरती पे जेरे-आसमाँ, गुजरे हैं बेचारे।।
 है उन में इक हरी चंद नाम के राजा का अफसाना।
 है जिसकी जिन्दगी का, दर्द से लबरेज पैमाना ।।
 ऋषिजी व्यास ने फिर दास्तों उस की सुना डाली।
 मुसरत ऐशो-खुरसंदी से थी, जो मुतलकून खाली।।
 युधिष्ठिर भूल बैठा अपना गम, अपनी मुसीबत को।
 दिल उस का दर्द से भर आया, सुन कर इस हिकायत को।।

मारकण्डे जी का दर्शन

कई दिन बाद इस वन में, युधिष्ठिर को बई फरहत ।
 दिया दर्शन मुनिजी, मारकण्डे ने, बई खुल्लत ।।
 युधिष्ठिर ने उन्हें देखा, तो फौरन वा अदब होकर।
 किया आदाब, और उनको, बिठाया एक आसन पर।।
 बड़े इज्जो-इरादत से कहा, ऐ रहबरे-कामिल।
 बजा है ! आप पर रौशन है, माजी और मुस्तकबिल ।।

माजी के फसाने =
 प्राचीन कथाएं
 मतानत = गंभीरता

मायूस = निराश
 तमकनत = गौरव
 दाइम = हमेशा

लबरेज पैमाना = भरा
 हुवा वर्तन

मुसरत ऐशो खुरसंदी =
 प्रसन्नता और आनंद
 मुतलकून = बिल्कुल
 हिकायत = कहानी

बई फरहत = खुशी के
 साथ
 बई खुल्लत = दोस्ती के
 साथ

इज्जो-इरादत = आदरता
 माजी और मुस्तकबिल =
 भूतकाल और भविष्यकाल

مگر بتائیں "پرے" مجھ کو کس پرکار اب ہوگی
 علاوہ اسکے میرے دکھ کے لمحے کم نہیں ہوتے
 تسلی دیجئے "پرے" کا نظارہ اس کو دکھلایا
 بنا جیہار کے کیوں ہو منش جیہان جیون میں
 یہی سہانت ہے سنار میں جیون بتانے کا
 دگر اسکے منی جی مارکنڈے نے بعد رقت
 جسے سنکر یہ ہشتر بھول بیٹھا اپنا غم سارا
 بلا احساس غم سے اسکے دل کو آج چھڑکارا

پرنی = کھامنت
 برپا = اٹھنا

لہجہ = لہجہ

نہارا = دُشمن

جیہار = نفس مارنا
 جیہان = فانی

بماد ریکت = بہت
 روتے ہوئے
 کھسکا-کھسکا = درد
 ناک کھانی

سہرا-نور دی کے بارہ سال

اسی انداز سے بارہ برس تک درد کے مارے
 کبھی ڈالا کسی بربت پہ دیر غم کے ماروں نے
 کبھی پنچے کسی کے آشرم میں شان و شوکت سے
 لے پرے، قیامت لے جیہار، نفس کشی لے جیہان فانی نامر

اکیڈت = شہدا

قیامت کس طرح برپا مرے سرکار اب ہوگی
 گزر جائے گی میری زندگی کیا روتے ہی روتے
 تسلی دیجئے "پرے" کا نظارہ اس کو دکھلایا
 بنا جیہار کے کیوں ہو منش جیہان جیون میں
 یہی سہانت ہے سنار میں جیون بتانے کا
 دگر اسکے منی جی مارکنڈے نے بعد رقت
 جسے سنکر یہ ہشتر بھول بیٹھا اپنا غم سارا
 بلا احساس غم سے اسکے دل کو آج چھڑکارا

صحرا نور دی کے بارہ سال

پریشاں حال پھرتے ہی رہے محرابیں بیچارے
 کبھی ڈالا کسی بربت پہ دیر غم کے ماروں نے
 کبھی پنچے کسی کے آشرم میں شان و شوکت سے
 لے پرے، قیامت لے جیہار، نفس کشی لے جیہان فانی نامر

کبھی پربت کی چوٹی پر بھجھوتی مل کے جا بیٹھے
 لنگوٹی बांध कर, तप के लिये, आसन लगा बैठे ॥
 कभी देता था, कोई देवता, वरदान खुश होकर।
 तो कोई बख्शा देता, जंग का सामान खुश होकर ॥
 कभी लड़ने को कोई राक्षस मैदान में आता।
 गदा और मल्लयुद्ध का फन जहाँ वालों को दिखलाता ॥
 कभी सीखी युधिष्ठिर ने जुए की विद्या सारी।
 और इस फन में महारत, उसने हासिल की ब दुशवारी ॥
 कभी बस दे दिया बजरंग जी ने, भीम को दर्शन।
 दुआ-ए-खैर देकर, भर दिया उम्मीद का दामन ॥
 दिगर इसके उन्होंने भीम से हृद-दर्जे खुश होकर।
 हम-आहंगी का बख्शा 'नारा-हाए' भीम को इक वर ॥
 गरज बारह बरस तक, ठोकरें खाते रहे यूँही।
 परेशाँ-कुन जमाने, सामने आते रहे यूँही ॥

हम आहंगी = आवाज़
 मिलाकर और आपस में
 मेल जोल
 परेशाँ-कुन = परेशान
 करने वाले

रूपोशी का आखरी साल

बिता कर ज़िन्दगी के तलख बारह साल पांडव ने।
 दिखादी शाने-पा-मर्दी-ओ-इसतकलाल पांडव ने ॥
 बचा था इक बरस जिस को, उन्हे छेप कर बिताना था।
 शराएत के मुताबिक़ खुद को कौरों से छिपाना था ॥
 इसी मक़सद को लेकर, वह कहाँ थे और कहाँ पहुँचे।
 जहाँ वीराट जैसा हुकमरों था, वह वहाँ पहुँचे ॥
 मुलाज़िम रख लिया राजा ने आखिर ग़म के मारों को।
 सहारा दे दिया वक्ते-सऊबत, वे सहारों को ॥

पा-मर्दी-ओ-इसतकलाल
 = मुसीबत के मुक़ाबिल
 हटे रहना

वक्ते-सऊबत = कष्ट
 के समय

کبھی پربت کی چوٹی پر بھجھوتی مل کے جا بیٹھے
 لنگوٹی باڈھ کرت کیلئے آسن لگا بیٹھے
 کبھی دیتا تھا کوئی دیوتا وردان خوش ہو کر
 تو کوئی بخش دیتا جنگ کا سامان خوش ہو کر
 کبھی لڑنے کو کوئی راکشش میدان میں آتا
 گدا اور تلھیدھ کا فن جہاں والوں کو دکھلاتا
 کبھی سیکھی یھشٹرنے جوئے کی ودیا ساری
 اور اس فن پر مہارت اسنے حاصل کی بدستواری
 کبھی بس دیدیا بجرنگ جی نے بھیم کو درشن
 دے لے خیر دیکر بھر دیا اُمتید کا دامن
 دگر اسکے انہوں نے بھیم سے حد درجہ خوش ہو کر
 ہم آہنگی کا بخشا لغوہ ماہے بھیم کو اک ور
 غرض بارہ برس تک ٹھوکریں کھاتے رہے یونہی
 پریشاں کن زمانے سامنے آتے رہے یونہی

روپوشی کا آخری سال

بتا کر زندگی کے تلخ بارہ سال پانڈو نے
 دکھادی شان پامردی واستقلال پانڈو نے
 بچا تھا اک برس جسکو انہیں چھپ کر بتانا تھا
 شرائط کے مطابق خود کو کوروں سے چھپانا تھا
 اسی مقصد کو لیکر وہ کہاں تھے اور کہاں پہنچے
 جہاں دیراٹ جیسا حکمران تھا وہ وہاں پہنچے
 ملازم رکھ لیا راجہ نے آخر غم کے ماروں کو
 سہارا دیدیا وقتِ مصوبت بے سہاروں کو



یوڈیٹیر ہو گیا مامور، چوہٹ کے سیروانے پر۔
دلاور بھیم کو رکھا گیا کھانا پکانے پر۔

معلم موسیقی و رقص و لغو کا بسا رجن سکھائے جس نے اسکی کنیا کو ناچنے کے گن

نکل سہیلو نے بھی لے لیا کچھ بار اپنے سر انہیں اک سال تھپنے کا یہاں موقع ملا بہتر

دروید کنیا داسی بنی ویراٹ رانی کی
پرکشا جس جگہ دینی پڑی اس کو جوانی کی

دیلے-ماسوم میں ایک دنتے کامی بک لہرائے

وہی بستی میں کچک نام کا، راجا کا سالہا تھا۔
سیپہ سالارے-آلا تھا، جفاکش تھا، جیالہا تھا۔

نجر آئی اچانک ایک دن، کچک کو پنچالی۔
ہوا جالیم کا مگرے-پور-ت-ا-ف-فون، اکل سے خالی۔

بیل آخیر سے ڈھ بٹھا دھرتے-پنچال کو جالیم۔
بنانا چاہا، سارے-نفس نیک اکل کو جالیم۔

یہ عالم اس پہ کیا بیتا کو عزت جوش میں آئی۔
دیلے-ماسوم میں ایک، دنتے کامی بک لہرائے۔

شکایت بھیم سے کی اور دلایا جوش غنیمت کو۔
اُبھارہ واسطہ ناموس کا دے کر حمیت کو۔

بھیم کا جوش اور حکمت عملی

شکایت بھیم نے جو نہی سنی فوراً بھڑک اٹھا۔
کمانیں کھینچ گئیں ابرو کی اور بازو پھڑک اٹھا۔

مامور = کام پر
رکنا

موسیقی = گانے
رقص = نृत
ناما = گیت
بار = بار بار/کام

سیپہ سالارے-آلا =
سیپہ سالار
جفاکش = مہلتی
جیالہا = تاکت کر
مگرے-پور-ت-ا-ف-فون =
بڑا بڑا دیا
سارے-نفس = اپنی
اکل کا شکار
نیک اکل = اپنے
کام
دنتے کامی بک = بڑے
کی آگ

ابھارہ = بھڑک

یوڈیٹیر ہو گیا مامور چوہٹ کے سکھانے پر۔
دلاور بھیم کو رکھا گیا کھانا پکانے پر۔

معلم موسیقی و رقص و لغو کا بسا رجن سکھائے جس نے اسکی کنیا کو ناچنے کے گن

نکل سہیلو نے بھی لے لیا کچھ بار اپنے سر انہیں اک سال تھپنے کا یہاں موقع ملا بہتر

دروید کنیا داسی بنی ویراٹ رانی کی

پرکشا جس جگہ دینی پڑی اس کو جوانی کی

دل معصوم میں ایک انتقامی برق لہرائے

وہی بستی میں کچک نام کا راجہ کا سالہا تھا۔
سیپہ سالار اعلیٰ تھا جفاکش تھا جیالہا تھا۔

نظر آئی اچانک ایک دن کچک کو پنچالی۔
ہوا ظالم کا مغز پر تعفن عقل سے خالی۔

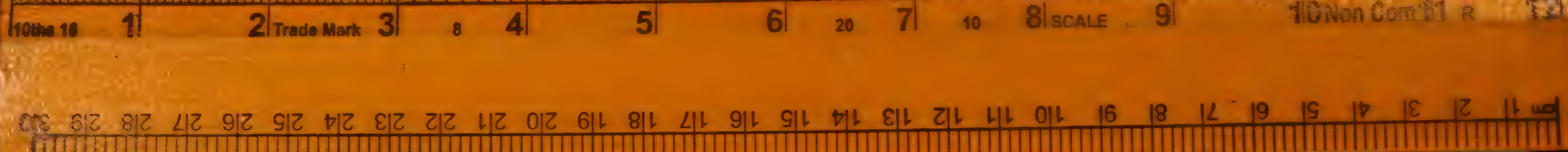
بالآخر چھپرے بٹھا دھرتے پنچال کو ظالم۔
بنانا چاہا صید نفس نیک افعال کو ظالم۔

یہ عالم اس پہ کیا بیتا کو عزت جوش میں آئی۔
دل معصوم میں ایک انتقامی برق لہرائے۔

شکایت بھیم سے کی اور دلایا جوش غنیمت کو۔
اُبھارہ واسطہ ناموس کا دے کر حمیت کو۔

بھیم کا جوش اور حکمت عملی

شکایت بھیم نے جو نہی سنی فوراً بھڑک اٹھا۔
کمانیں کھینچ گئیں ابرو کی اور بازو پھڑک اٹھا۔



مگر اس انتقامی جوش پر غالب فراسست تھی کسی اور دوسرے موقع کی طالب جاہلیت تھی
 بنا کر ایک منصوبہ اچھوتا سا ستانت سے ہوا جس پر عمل پیرا خموشی اور حکمت سے
 عروسِ ناز کی مانند اس نے روپ اک دھارا نہ تھا اسکے سوا اب بھیم ہیکل کے لئے چارا
 کیا سازش میں پہلے دختر پنچال کو شامل وساطت سے اسی کی حل ہوئی پھر بھیم کی مشکل
 معین وقت پر ایسا سے پنچالی کے، پھر کیچک
 وصال یار کا ارماں لئے پہنچا کسی حد تک

معاً انگڑائی لیکر جاگ اٹھا نفسِ آمارہ

پہنچ کر جائے معہورہ پہ کیچک خوب فرحاں تھا جہاں شانِ عروسی سے کوئی نزہت بدماں تھا
 ہوا دامنِ تحمل کا نظر بڑھتے ہی صد پارہ معاً انگڑائی لیکر جاگ اٹھا نفسِ آمارہ
 بڑھابے تاب ہو کر وہ عروسِ ناز کی جانب بظاہر جانبِ شہناز صورت باز کی جانب
 رزتے ہاتھ کو کیچک نے رکھا اس کے گھٹ پر کہ شہوت کے نشے میں چور اور بدست تھا خود
 بد لکڑ پینتر افولاد سے ٹکرا گیا کیچک
 اک ایسی ہی گھڑی کا منتظر تھا بھیم شیر انگن بد لکڑ بھیس بیٹھا تھا دلہن بن کر اسی کارن

مگر اس انتقامی جوش پر غالب فراسست تھی کسی اور دوسرے موقع کی طالب جاہلیت تھی
 بنا کر ایک منصوبہ اچھوتا سا ستانت سے ہوا جس پر عمل پیرا خموشی اور حکمت سے
 عروسِ ناز کی مانند اس نے روپ اک دھارا نہ تھا اسکے سوا اب بھیم ہیکل کے لئے چارا
 کیا سازش میں پہلے دختر پنچال کو شامل وساطت سے اسی کی حل ہوئی پھر بھیم کی مشکل
 معین وقت پر ایسا سے پنچالی کے، پھر کیچک
 وصال یار کا ارماں لئے پہنچا کسی حد تک

مآن اُنگڑائی لے کر

جاگ اٹھا نپسے-اممّارا

پہنچ کر جاگ اٹھا ماہودا پہ، کےچک خوب فرہاں تھا۔
 جہاں شانی-وروسی سے، کوئی نوجہت بدماں تھا۔
 ہوا دامنِ تحمل کا نظر بڑھتے ہی صد پارہ
 معاً انگڑائی لیکر جاگ اٹھا نفسِ آمارہ
 بڑھابے تاب ہو کر وہ عروسِ ناز کی جانب
 بظاہر جانبِ شہناز صورت باز کی جانب
 رزتے ہاتھ کو کیچک نے رکھا اس کے گھٹ پر
 کہ شہوت کے نشے میں چور اور بدست تھا خود
 بد لکڑ پینتر افولاد سے ٹکرا گیا کیچک
 اک ایسی ہی گھڑی کا منتظر تھا بھیم شیر انگن
 بد لکڑ بھیس بیٹھا تھا دلہن بن کر اسی کارن

بَدَل کر پَئْتِرا فِولاد سے

ٹکرا گیا کےچک

اک ایسی ہی گھڑی کا منتظر تھا بھیم شیر انگن
 بد لکڑ بھیس بیٹھا تھا دلہن بن کر اسی کارن

تالیب = ڈھک
 جارجیٹ = آکھن

وروسی-ناج = ڈھن

وِساات = جرجیٹ

موجڈین وکت =
 نیرجارت مام

جاگ ماہودا = نیرجارت
 جگہ
 شانی-وروسی = ڈھن کی
 یج وک
 نوجہت بدماں = پکت
 لیاوس پھنے
 تھممول = ڈھن
 سد پارا = سو ڈھن
 شہناج = ڈھن
 سورت = ڈھن

شور افغان = شور کو
 پھاننے والا

ابھی پلکیں نہ جھپکی تھیں کہ اک بجلی سی لہرائی
زمین پر لاش کیچک کی تڑپتی سی نظر آئی
نہ جانے بھیم نے کیا کیا تھا داؤں کیچک پر
گیا اک وار ہی میں اپنی جاں سے آہنی پیکر
غرض کیچک کا اس نے آج قصہ پاک کر ڈالا
مرا بے موت دست بھیم سے ویراٹ کا سالا

دستے-بھیم = بھیم کے
ہاتھوں سے

دुरیودھن کا فیتنا

خبر کے بھیم کے مرنے کی ہوئی جب شہر ہر سو
تو دुरیودھن، نہ موت لکھ دیا دل پہ اپنے رکھ سکے قابو
مہاتیراٹ کی نگر میں پہنچا ویر درلودھن
معیت میں تھے جسکے کرن، کرپہ اور دشاکشن
اسے پورا یقین تھا آج اس سنسار کے اندر
نقطہ اک بھیم سامر درجی ہے ایسا زور آور
جو کیچک جیسے رستم کی کلائی موڑ سکنا ہے
گدا کی ضرب سے ہاتھی کی گردن توڑ سکنا ہے
اسی کارن یہاں آکر ہوا تھا شہر پر آبادہ
وہ چونکہ پی کے آیا تھا فساد فسق کا بادہ
لہذا اس کے دل میں یوں اٹھا طوفان شرارت کا
شرارت سے زیادہ جس میں غم تھا حماقت کا
تھی جتنی عقل درلودھن میں بس اس کے مطابق ہی
ہنکا کر لے چلا بقرات آخر تھا تو ناہن ہی
چلا وہ ہانکتا اس وجہ سے ویراٹ کی گائیں
کہ بھگورو کئے جو سورما ہوں سامنے آئیں
لے گئے بل لے گدھا

موشاتہیر = مہاشہر
موت لکھ = بیلکھ

مہیلت = نہتہ میں

مرد-جری = بھادور مرد
جور آور =
شکستگاہی

شہر = بڑا
آمادا = تیار
فسادو-فسق = دغا
اور پاپ
بادا = شراب

ونسور = مٹ، تھ
موتاہیک = انوسار
بکرات = گای بیل
ناہیک = گدھا

ابھی پلکیں نہ جھپکی تھیں کہ اک بجلی سی لہرائی
زمین پر لاش کیچک کی تڑپتی سی نظر آئی
نہ جانے بھیم نے کیا کیا تھا داؤں کیچک پر
گیا اک وار ہی میں اپنی جاں سے آہنی پیکر
غرض کیچک کا اس نے آج قصہ پاک کر ڈالا
مرا بے موت دست بھیم سے ویراٹ کا سالا

درلودھن کا فتنہ

خبر کے بھیم کے مرنے کی ہوئی جب شہر ہر سو
تو درلودھن نہ مطلق دل پہ اپنے رکھ سکے قابو
مہاتیراٹ کی نگر میں پہنچا ویر درلودھن
معیت میں تھے جسکے کرن، کرپہ اور دشاکشن
اسے پورا یقین تھا آج اس سنسار کے اندر
نقطہ اک بھیم سامر درجی ہے ایسا زور آور
جو کیچک جیسے رستم کی کلائی موڑ سکنا ہے
گدا کی ضرب سے ہاتھی کی گردن توڑ سکنا ہے
اسی کارن یہاں آکر ہوا تھا شہر پر آبادہ
وہ چونکہ پی کے آیا تھا فساد فسق کا بادہ
لہذا اس کے دل میں یوں اٹھا طوفان شرارت کا
شرارت سے زیادہ جس میں غم تھا حماقت کا
تھی جتنی عقل درلودھن میں بس اس کے مطابق ہی
ہنکا کر لے چلا بقرات آخر تھا تو ناہن ہی
چلا وہ ہانکتا اس وجہ سے ویراٹ کی گائیں
کہ بھگورو کئے جو سورما ہوں سامنے آئیں
لے گئے بل لے گدھا

अर्जुन के मुकाबले पर कौरों की शिकस्त

पिसर वीराट का आखिर फिर उसको रोकने आया।
मगर उन देवजादों को वहाँ देखा तो घबराया ॥
वहाँ अर्जुन जो नर्तक बन के था राजा की नगरी में।
अभी तक जिन्दगी गुजरी थी, जिसकी अफरा-तफरी में ॥
उसे सहमा हुआ देखा, तो खुद तीरो-कमों लेकर।
तने-तनहा गिरा डक बर्क की मानिंद कौरों पर ॥
पड़ा घमसान का रण, तीर दोनों सम्त से छूटे।
अकेली जाँ पे धावा बोल कर, सब सूरमा टूटे ॥
मगर अर्जुन अकेला, आज सब कौरों पे भारी था।
वही गालिब, वही हावी, उसी का रोब तारी था ॥
नबर्द-आरा वह इस अन्दाज़ से था, शोरा-पुशतों से।
जमीं को पाटना हो, जैसे लाशों और कुशतों से ॥
यकीनन कौरवाँ मगलूब और अर्जुन ही गालिब था।
मगर तहसीने-जाँबाजी का, वह मुतलक न तालिब था ॥
जिधर भी टूटता था, लोग काई जैसे फटते थे।
खदंगे-आहनी से ज़रूम खाकर पीछे हटते थे ॥
कदम आखिर, उखड़ कर रह गए, कौरों के मैदों से।
दिखा कर पुशत भागे, सूरमा रफतारे-तूफाँ से ॥

विराट की दुख्तर से

अभिमन्यु का ब्याह

फ़रारे कौरवाँ के बाद ही, राजा विराट आया।
उसे हैरत हुई अर्जुन को जब उसने वहाँ पाया ॥

पिसर = बेटा

अफरातफरी = भाग
दौड़
सहमा = डग

सम्त = ओर / तरफ

हावी = छाया हुआ
रोब = भय
नबर्द आरा = लड़ने
वाला

मगलूब = पराजित
जाँबाजी = बहादुरी

खदंगे-आहनी = लोहे के
तीर

अर्जुन के مقابلے پر کورونہ کی شکست

پیرویٹ کا آخر مہپر اس کو روکنے آیا
وہاں ارجن جو نرتک بن کے تھا راجہ کی ٹگری میں
اُسے سہا ہوا دیکھا تو خود تیردو کماں لے کر
پڑا گھمسان کارن تیردو نوں سمت سے چھوٹے
مگر ارجن اکیلا آج سب کوروں پہ بھاری تھا
نبرد آرا وہاں انداز سے تھا شورہ پشتوں سے
یقیناً کوروں مغلوب اور ارجن ہی غالب تھا
جدھر بھی ٹوٹا تھا لوگ کائی جیسے پھٹتے تھے
قدم آخر کھڑکھڑا کر رہ گئے کوروں کے میداں سے
مگر ان دیو زادوں کو وہاں دیکھا تو گھبرا یا
ابھی تک زندگی گذری تھی جسکی افراتفری میں
تنہا گرا کر برق کی مانند کوروں پر
اکیل جال پہ دھاوا بول کر سب سوراٹوٹے
وہی غالب وہی حاوی اسی کا رعب طاری تھا
زمین کو پاٹنا ہو جیسے لاشوں اور کشتوں سے
مگر تحسین جان بازی کا وہ مطلق نہ طالب تھا
خندگ آہنی سے زخم کھا کر پیچھے ہٹتے تھے
دکھا کر پشت بھاگے سورا مارفتار طوفان سے

وراٹ کی دختر سے ابھیمینو کا بیاہ

فرار کوروں کے بعد ہی راجہ وراٹ آیا
اُسے حیرت ہوئی ارجن کو جب اُس نے وہاں پایا



پیسر سے اپنے پوچھا کون ہے یہ لوجواں آخر
 کہا اسنے یہی وہ لوجواں ہے جسنے نرتک کا
 یہی ہے وہ جواں ارجن بھوپانڈو کا برادر ہے
 خوشی سے جھوم اٹھا راجہ وراٹ اس بات کو سن کر
 ہوئی پھیشکیش ارجن کو فرزند کی لینے کی
 مگر ارجن نے اسکی پیشکش پر معذرت چاہی
 ہوا پھر متفق راجہ وراٹ اس بات کو سنکر
 ہوا پھر متفق راجہ وراٹ اس بات کو سنکر

ہیا ت افرورج ان کے

سامنے تھا ان کا مستقبل

بیتا دی پانڈوؤں نے مدت معہودہ جب اپنی
 تو یاد آئی انہیں ماضی کی دنیا طرب اپنی
 انہیں کا دور دورہ تھا انہیں کا کل زمانہ تھا
 کہ جبکی مملکت میں چار سو تھی فارغ البالی
 مگر تقدیر کے ہاتھوں اجڑ کر رہ گیا گلشن
 بالآخر عزم و پامردی سے پانڈوؤں نے بصد عزت
 گزاری عالم غربت میں تیرہ سال کی مدت
 حیات افرورج ان کے سامنے تھا انکا مستقبل

۱) پورانا نام اندر پرست

ماجہرے = مہرے

موتلفیک = مہمات

مردتے-ماہڑا = مکرر
 ہڈے مردت

پسر سے اپنے پوچھا کون ہے یہ لوجواں آخر
 کہا اسنے یہی وہ لوجواں ہے جسنے نرتک کا
 یہی ہے وہ جواں ارجن بھوپانڈو کا برادر ہے
 خوشی سے جھوم اٹھا راجہ وراٹ اس بات کو سن کر
 ہوئی پھیشکیش ارجن کو فرزند کی لینے کی
 مگر ارجن نے اسکی پیشکش پر معذرت چاہی
 ہوا پھر متفق راجہ وراٹ اس بات کو سنکر
 ہوا پھر متفق راجہ وراٹ اس بات کو سنکر

ہیا ت افرورج ان کے

بیتا دی پانڈوؤں نے مدت معہودہ جب اپنی
 تو یاد آئی انہیں ماضی کی دنیا طرب اپنی
 انہیں کا دور دورہ تھا انہیں کا کل زمانہ تھا
 کہ جبکی مملکت میں چار سو تھی فارغ البالی
 مگر تقدیر کے ہاتھوں اجڑ کر رہ گیا گلشن
 بالآخر عزم و پامردی سے پانڈوؤں نے بصد عزت
 گزاری عالم غربت میں تیرہ سال کی مدت
 حیات افرورج ان کے سامنے تھا انکا مستقبل

عبداللہ نام اندر پرست

جنگ مہا بھارت
کا
طویل سلسلہ

जंग-ए
महाभारत का
तवील
सिलसिला



تخت و تاج کی واپسی سے درلودھن کا انکار

پھر اسکے بعد درلودھن کی نگری میں میڈیٹر نے
شری کیشو کو یہ کہہ کر معاً بھیجا مفکر نے
کہوان سے کہ واپس دیں وہ سب جیتی ہوئی دولت
مطابق شرط کے ایفا کریں وعدہ بعد عجلت
شری گھنٹام فوراً چل بیڑے پیغام کو لیکر
سنایا متن "درلودھن کو اس پیغام کا فر فر
یہ سنتے ہی سبک سر کے دہن سے کف ہوا جاری
کر دیت ہو کے بولا شیا م سے لے شیا م بنواری
یہ میڈیٹر سے کہوا بھول جائے تان؟ و سلاطانی
سراب ریگ ہے اسکی تمنا کے جہان نیا فی
اگر بھکشا میں وہ مانگے حکومت سر جھکا کر بھی
تو میں ہرگز نہ دوں سو فار سوزن کے برابر بھی
جواب جاہلانہ سنکے "فوراً شیا م مرلی دھرم
ہوئے واپس وہاں سے اور یہ میڈیٹر سے کہا اگر
نہ رکھ امید تو ان سے وہ سب دولت اٹھا لینگے
نہیں سوئی کے ناک کے برابر بھی نہ اب دینگے

درلودھن کی وعدہ خلافی پر جیتنگ و جدل کی تیاریاں

سنی گھنٹام سے کوروں کی جیتنگ و جدل کی تیاریاں
تو پانڈو نے سنائی غائبانہ خوب صلوایتیں
سوتی کے ناک کے برابر

تخت و تاج کی واپسی سے دُریو دھن کا انکار

فیر اس کے بعد دُریو دھن کی نگر میں یو دھیشٹر نے
شری کیشو کو یہ کہہ کر، مژن بھجا سو فکیر نے
کہو ان سے کہ واپس دے، وہ سب جیتی ہوئی دولت
مطابق شرط کے ایفا کریں، وادہ بصد عجلت
شری گھنٹام فوراً چل بیڑے پیغام کو لیکر
سنایا متن "درلودھن کو اس پیغام کا فر فر
یہ سنتے ہی سبک سر کے دہن سے کف ہوا جاری
کر دیت ہو کے بولا شیا م سے لے شیا م بنواری
یہ میڈیٹر سے کہوا بھول جائے تان؟ و سلاطانی
سراب ریگ ہے اسکی تمنا کے جہان نیا فی
اگر بھکشا میں وہ مانگے حکومت سر جھکا کر بھی
تو میں ہرگز نہ دوں سو فار سوزن کے برابر بھی
جواب جاہلانہ سنکے "فوراً شیا م مرلی دھرم
ہوئے واپس وہاں سے اور یہ میڈیٹر سے کہا اگر
نہ رکھ امید تو ان سے وہ سب دولت اٹھا لینگے

دُریو دھن کی وادہ خلافی پر جنگو-جدل کی تیاریاں

سُنی گھنٹام سے کوروں کی جب وادہ شیکن باتیں
تو پانڈو نے سنائی غائبانہ خوب صلوایتیں
سوتی کے ناک کے برابر

ایفا = وادہ پورا کرنا

سُبوکسر = نیکمما

سرا بے-رے =
لٹام - خیاالی
جہاں بانی = حکومت

سُفارے-سُجن = سُئی کے
سُراک کے برابر

وادہ شیکن = وادہ
توڑنے والی

नतीजा फितरतन जो बेवफाई का निकलना था।
वही निकला, यकीनन हूबहू, जैसा निकलना था।।
गुरेज-ए-अहद ने उकसाया सूए-चपकलश उन को।
कभी बनना था मुस्तक़बल में गेती का करण उनको।।
और इसके बाद दोनों सम्त, रज़्मो-जंग की बातें।
थी मौजू-ए-सुखन के साथ ही, पैकार की घातें।।
तगे फिर वह हुसूने-हरबा-हाए फौजो-लष्कर में।
समाया था नबदो-जंग का, सौदा सा इक सर में।।
पड़ोसी मुल्क से भी लष्करे-जरार आ आ कर।
निहायत कर्णे-फर से खेमा-ज़न थे रण की धरती पर।।
वह "थानेसर" जहाँ था कौर-क्षेत्र इक नाम का मैदों।
जहाँ थीं दूबदू पैतीस^{34,00000} लख, अफवाज बे-पायों।।
महाजे-जंग पर आरास्ता होने लगीं फौजें।
सरे-साहिल से टकराने को सर, तैयार थी मौजें।।

अर्जुन मैदाने-जंग में

मुसल्लह फौजें इसतादा थीं लष्कर गाह में दोनों।
मगर सरशार थीं, वह, जज्बाए-दोताह में दोनों।।
महाजे-जंग पर अर्जुन, मुसल्लह हो के जब पहुँचा।
उचटता सा वहाँ अफवाजे-दुर्योधन को भी देखा।।
यकायक इक जगह अर्जुन की नज़रें रुकगई आकर।
अजब मन्ज़र नज़र आया, गिरी बिजली सी इक दिल पर।।
मुकाबिल फौज में, भाई, भतीजे और चाचा देखे।
गुरु देखे, पिता देखे, अजीजो-अकरबा देखे।।
यह मन्ज़र देखकर अर्जुन, बसद रंजो-अलम बोला।
लडू किस से, यहाँ तो कोई भी, दुश्मन नहीं मेरा।।

१. जररते-शेरी के पेशे-नज़र 'कुरुक्षेत्र' के बजाय कौर-क्षेत्र इस्तेमाल किया गया है।

गुरेज-ए-अहद = वादे से हटना
सूए-चपकलश = खींचा तानी की तरफ
गेती करण = एक दरवाई जानवर
मौजू-ए-सुखन = बातचीत का विषय
पैकार = लड़ाई
नबदो-जंग का सौदा = लड़ाई का जुनून
लष्करे-जरार = बहुत बड़ी फौज
खेमा-ज़न = पड़ाव

सरशार = डूबी हुई
जज्बाए-दोताह = डबल जज्बे में

निर्जन तारा जो बीसोफानी का नकलना मक्का
दही नकल यक़ीनाना हो बेहो ज़िस्ती नकलना मक्का
गुरेज-ए-अहद ने उकसाया सूए-चपकलश उन को
कभी बनना था मुस्तक़बल में गेती का करण उनको
और इसके बाद दोनों सम्त, रज़्मो-जंग की बातें
थी मौजू-ए-सुखन के साथ ही, पैकार की घातें
तगे फिर वह हुसूने-हरबा-हाए फौजो-लष्कर में
समाया था नबदो-जंग का, सौदा सा इक सर में
पड़ोसी मुल्क से भी लष्करे-जरार आ आ कर
निहायत कर्णे-फर से खेमा-ज़न थे रण की धरती पर
वह "थानेसर" जहाँ था कौर-क्षेत्र इक नाम का मैदों
जहाँ थीं दूबदू पैतीस^{34,00000} लख, अफवाज बे-पायों

महाजे-जंग पर आरास्ता होने लगीं फौजें

सरे-साहिल से टकराने को सर, तैयार थी मौजें

अर्जुन मैदाने-जंग में

मुसल्लह फौजें इसतादा थीं लष्कर गाह में दोनों।
मगर सरशार थीं, वह, जज्बाए-दोताह में दोनों।।
महाजे-जंग पर अर्जुन, मुसल्लह हो के जब पहुँचा।
उचटता सा वहाँ अफवाजे-दुर्योधन को भी देखा।।
यकायक इक जगह अर्जुन की नज़रें रुकगई आकर।
अजब मन्ज़र नज़र आया, गिरी बिजली सी इक दिल पर।।
मुकाबिल फौज में, भाई, भतीजे और चाचा देखे।
गुरु देखे, पिता देखे, अजीजो-अकरबा देखे।।
यह मन्ज़र देखकर अर्जुन, बसद रंजो-अलम बोला।
लडू किस से, यहाँ तो कोई भी, दुश्मन नहीं मेरा।।

سبھی تو اس جگہ اپنے ہیں، اے قسمت کہاں لائی
یہ نوبت جس کے کارون پہنچی ہے وہ بھی لوہے بھائی
یہ کہنے کے اسنے گرز و تیغ و خنجر تیرے اور کھٹکا
اٹا جسم سے ایک ایک کر کے خاک پھینکا
کیشن مہاراج نے ارجن کا جب دیکھا ہے یہ منظر
کہ سب ہتھیار ہیں بکھرے بڑے بے وقت و صرت
پریشاں تھے کیشن ارجن کو اب کس طرح سمجھائیں
کریں آمادہ کیسے، اسکو کیسے راہ پر لائیں
سپہ سالار جب ہتھیار اپنا ڈال دے خود ہی
لو پھر رن ویر سینا کس طرح جو ہر دکھائیگی
سپہ سالار جب ہتھیار اپنا ڈال دے خود ہی
لو پھر رن ویر سینا کس طرح جو ہر دکھائیگی

گورجی-تےگو-خنجر = گورج
ننوار اور کٹار
خاک = مٹی

بیکھرے = پھینکے ہوئے

شری کیشن جی کا پیش

نئے انداز سے ارجن کو پھر ہر بات سمجھائی
کہا! یہ ہے لڑائی حق و باطل کی مرے بھائی
بتائیں سیکڑوں گھنٹام نے عرفان کی باتیں
سکھائیں شرع کر کے وید کی اور گیان کی باتیں
ستھاپت ستوگن پر پھر دیا گھنٹام نے بھاشن
کیا اپنات اور ویراگ کا اچھی طرح وزن
وہ بولے، یہ لو بھائی پھرتی لاشیں ہیں ترے آگ
مقدر بن چکی ہے موت انکی موت سے پہلے
کہاں ہے تجھ میں یہ قوت کہ درلودھن کو نہ مائے
یہ پانی آپ اپنی موت ہی مر جائیگی سائے
منش کا اتنا ہی کر توے ہے کہ دل و جاں سے
کئے جائے بس اتنا کام پورے عزم و ایقان سے
نہ رکھے پھل کی وہ امید اپنے من میں ذرہ بھر
یہ سارا مسئلہ بس چھوڑ دے بھگوان کے اوپر
وہ صاف کو ترے ہاتھوں سے اتنا کام لینا ہے
کہ تیری آڑ سے اس کام کو انجام دینا ہے

ہک-باتیل = سچ و
جھوٹ
عرفان = جان

نئے انداز سے ارجن کو फिर हर बात समझाई।
कहा ! यह है लड़ाई, हक-ओ-बातिल की मेरे भाई।।
बताई सैंकड़ों, घनश्याम ने इफान की बातें।
सिखाई शरह करके, वेद की और ज्ञान की बातें।।
स्थापित, स्तोत्रगुन, पर फिर दिया घनश्याम ने भाषण।
किया उत्पत्त, और वैराग का अच्छी तरह वर्णन।।
वह बोले, यह तो चलती फिरती लाशें हैं तेरे आगे।
मुकद्दर बन चुकी है, मौत, इन की मौत से पहले।।
कहाँ है तुझ में यह कुव्वत, कि दुर्योधन को तू मारे।
यह पापी आप, अपनी मौत ही, मर जाएंगे सारे।।
विधाता को तेरे हाथों से इतना काम लेना है।
कि तेरी आड़ से इस काम को अंजाम देना है।।



یہ اتنا کام تو ہو کر رہیگا ہر طرح پورا
تو چاہے جنگ کر یا جنگ سے دامن بچا اپنا
دگر اسکے تری عزت پہ جس نے ہاتھ ڈالا تھا
ترے ناموس کو دربار میں جس نے اٹھالا تھا
اسی پاپی سے ہے انکار تجھ کو آج لڑنے سے
نہوگا فائدہ کچھ بھی ترا اس وقت اڑنے سے
ادھر آدیکھ یہ لاشیں پڑی ہیں آج میدان میں
ہزاروں رنگتے ہیں کیرے جنگلے جسم بے جاں میں
پڑے ہیں دیکھو نہ مکر درو نہ بھیشم دشمن
کہیں ہے جمیدرت اور کرن کر پہ اور درلودن
علاوہ اسکے لاکھوں لوگ اس میدان کے اندر
پڑے ہیں نیم عریاں دیکھ ارجن آج جو مکر

ناموس = ناج، প্রতিष्ठा

نیام उर्याँ = अघनंगे

बुते-खामोश = पत्थर
की मूर्त की तरह चुप

श्री कृष्ण जी का अलख रूप

फिर इस के बाद असली रूप बनवारी ने दिखलाया।
हकीकत में वह क्या है, कौन है अर्जुन को समझाया।
जिसे देखा निगाहे-वीर अर्जुन, ने बसद हैरत।
बुते-खामोश की मानिन्द उस की होगई हालत।
फटी आंखों से अर्जुन, चेहरा-केशव को तकता था।
हर इक लम्हा, गुजरता था, तहय्युर और हैरत का।
दहन खोले खड़े थे, सामने ही श्याम बन वारी।
कि जिन के मुहँ में, तीनों लोक के थे सारे संसारी।

یہ اتنا کام تو ہو کر رہیگا ہر طرح پورا
تو چاہے جنگ کر یا جنگ سے دامن بچا اپنا
دگر اسکے تری عزت پہ جس نے ہاتھ ڈالا تھا
ترے ناموس کو دربار میں جس نے اٹھالا تھا
اسی پاپی سے ہے انکار تجھ کو آج لڑنے سے
نہوگا فائدہ کچھ بھی ترا اس وقت اڑنے سے
ادھر آدیکھ یہ لاشیں پڑی ہیں آج میدان میں
ہزاروں رنگتے ہیں کیرے جنگلے جسم بے جاں میں
پڑے ہیں دیکھو نہ مکر درو نہ بھیشم دشمن
کہیں ہے جمیدرت اور کرن کر پہ اور درلودن
علاوہ اسکے لاکھوں لوگ اس میدان کے اندر
پڑے ہیں نیم عریاں دیکھ ارجن آج جو مکر

یہ سب کسب مرے ہی ہاتھ سے پر لوگ پہنچے ہیں
انہیں بھیجا ہے میں نے اسلئے لوگ پہنچے ہیں

شری کرشن جی کا الکھ روپ

پھر اسکے بعد اصلی روپ بنواری نے دکھلایا
حقیقت میں وہ کیا ہیں کون ہیں ارجن کو سمجھایا
جسے دیکھا نگاہ ویر ارجن نے بصد حیرت
بوت خاموش کی مانند اسکی ہو گئی حالت
پہلی آنکھوں سے ارجن چہرہ کیشو کو تنکٹا تھا
ہر اک لمحہ گذرتا تھا تحسیر اور حیرت کا
دہن کھولے کھڑے تھے سامنے ہی شیاام بنواری
کہ جبکہ مہنہ میں تینوں لوک کے تھے سارے سنساری



نجر آتا تھا منظر تیرہوں کا اٹکے سینے میں
نرک، بے کونٹ اور پرلوق ہے، دل کے نرگینے میں
اسی میں لکشمی آست پڑا شری اور دشمن
غرض ہر ایک شے کو نہیں اور پائال کی من میں
یہ عالم دیکھ کر گھنٹام کا ارجن عقیدے سے
اٹھایا سیس چرنوں سے تو دل پر خوف طاری تھا
نجر آتا تھا منظر تیرہوں کا اٹکے سینے میں
نرک، بے کونٹ اور پرلوق ہے، دل کے نرگینے میں
اسی میں لکشمی آست پڑا شری اور دشمن
غرض ہر ایک شے کو نہیں اور پائال کی من میں
یہ عالم دیکھ کر گھنٹام کا ارجن عقیدے سے
اٹھایا سیس چرنوں سے تو دل پر خوف طاری تھا

کونین = بھلوق اور
پرلوق
پور-جیوا = سورج کا
پرکاش
بھتاہت = آجنا-پالان

وید = جاپ

اُرجن

آمادا-ا-جنگ

کھٹا جی نے جب ماحول کو بدلا دیا
مخاٹب ہو کے ارجن سے متانت سے یہ فرمایا
بالآخر بول کس منزل میں اب انکار ہے تیرا
کدھر ہے دھیان، کس عالم میں حال زار ہے تیرا
تری فکر و نظر کی آن بھی ہے کیا وہی حالت
وہی انکار کی باقی ہے کیا پہلی سی کیفیت
ہوئی ہوگی یقیناً کچھ تو تبدیلی خیالوں میں
تمیز اب ہوگئی ہوگی اندھیروں اور جالوں میں
دھنی قیمت کا ہے اس ضمن میں تو بخت آور ہے
زمانے بھر میں تیرا کوئی ثانی ہے نہ ہر ہے

جمن = بارے میں ویسے
بکھل آکر = مایوس

نظر آتا تھا منظر تیرہوں کا اٹکے سینے میں
نرک، بے کونٹ اور پرلوق ہے، دل کے نرگینے میں
اسی میں لکشمی آست پڑا شری اور دشمن
غرض ہر ایک شے کو نہیں اور پائال کی من میں
یہ عالم دیکھ کر گھنٹام کا ارجن عقیدے سے
اٹھایا سیس چرنوں سے تو دل پر خوف طاری تھا
نجر آتا تھا منظر تیرہوں کا اٹکے سینے میں
نرک، بے کونٹ اور پرلوق ہے، دل کے نرگینے میں
اسی میں لکشمی آست پڑا شری اور دشمن
غرض ہر ایک شے کو نہیں اور پائال کی من میں
یہ عالم دیکھ کر گھنٹام کا ارجن عقیدے سے
اٹھایا سیس چرنوں سے تو دل پر خوف طاری تھا

تمہاری لیلیا کو پر نام لاکھوں بار اے پر بھو

تمہاری ہر ادا پر میری جاں بھرا اے پر بھو

ارجن آمادہ جنگ

کھٹا جی نے جب ماحول کو بدلا دیا
مخاٹب ہو کے ارجن سے متانت سے یہ فرمایا
بالآخر بول کس منزل میں اب انکار ہے تیرا
کدھر ہے دھیان، کس عالم میں حال زار ہے تیرا
تری فکر و نظر کی آن بھی ہے کیا وہی حالت
وہی انکار کی باقی ہے کیا پہلی سی کیفیت
ہوئی ہوگی یقیناً کچھ تو تبدیلی خیالوں میں
تمیز اب ہوگئی ہوگی اندھیروں اور جالوں میں
دھنی قیمت کا ہے اس ضمن میں تو بخت آور ہے
زمانے بھر میں تیرا کوئی ثانی ہے نہ ہر ہے

سیوا تیرے کسی نے بھی نہ دیکھا روپ یہ میرا
 اسی اک وجہ سے اعلیٰ ہے سب سے مرتبہ تیرا
 کھڑا کیا ہے ندل میں دے جگہ خدشات کو ارجن
 نہ کھو باتوں میں تو ان قیمتی لمحات کو ارجن
 اٹھاتیر و کماں تیغ و سپر کو زیب تن کر لے
 نہیں آئے گا موقع ایسا ارجن لوٹ کر پھر سے
 اور اسکے بعد ارجن نے اٹھایا تیر اور کھڑا
 کیا پھر زیب تن اس نے زہر شمشیر اور تیغا
 کرشنا جی نے جب دیکھا کہ اب ارجن ہے ماہ
 توفور اشنکھ کو منہ سے لگا کر زور سے پھونکا
 صدائے بوق سنتے ہی معاہدہ چنچ اٹھنے لگا
 اور اسکے ساتھ ہی لگنے لگے ہر سمت بے کارے

آنا = اُتارنا

سدا-ا-بوک =
 شہر واپسی

भीष्म पितामह सेनापति के रूप में

مہاجے-جنگ پر دونوں طرف فوجیں تھیں استاد
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ
 وہاں موجود تھے اک رتھ یہ استاد پتاما بھی
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ
 کیا تھا بخت نے کوروں سے انکو آن جو البستہ
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ
 وہ کتنے تابع فرماں تھے ہے اس بات سے ظاہر
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ
 اب آخر عمر میں گھنگھور بادل جنگ کے چھائے
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ

مہارے = لڑنے والے

مہارے = اُپ رسیدا
 جہاں دیا = دُنیا دے
 دُنیا
 سبھ = پوتا

تاہ-فرما = فرما
 بے سارے

سوا تیرے کسی نے بھی نہ دیکھا روپ یہ میرا
 اسی اک وجہ سے اعلیٰ ہے سب سے مرتبہ تیرا
 کھڑا کیا ہے ندل میں دے جگہ خدشات کو ارجن
 نہ کھو باتوں میں تو ان قیمتی لمحات کو ارجن
 اٹھاتیر و کماں تیغ و سپر کو زیب تن کر لے
 نہیں آئے گا موقع ایسا ارجن لوٹ کر پھر سے
 اور اسکے بعد ارجن نے اٹھایا تیر اور کھڑا
 کیا پھر زیب تن اس نے زہر شمشیر اور تیغا
 کرشنا جی نے جب دیکھا کہ اب ارجن ہے ماہ
 توفور اشنکھ کو منہ سے لگا کر زور سے پھونکا
 صدائے بوق سنتے ہی معاہدہ چنچ اٹھنے لگا
 اور اسکے ساتھ ہی لگنے لگے ہر سمت بے کارے

بھیشم پتاما سینا پتی روپ میں

مہاجے-جنگ پر دونوں طرف فوجیں تھیں استاد
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ
 وہاں موجود تھے اک رتھ یہ استاد پتاما بھی
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ
 کیا تھا بخت نے کوروں سے انکو آن جو البستہ
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ
 وہ کتنے تابع فرماں تھے ہے اس بات سے ظاہر
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ
 اب آخر عمر میں گھنگھور بادل جنگ کے چھائے
 مہارے بے سارے ہونے پر بے آمادہ



یہی پہلے سپہ سالارِ درلودھن بنے آکر
 ضعیف العمر تھے لیکن جواؤں پہ وہ سربر تھے
 بزرگی نے انھیں سیناپتی کے پد پہ پہنچا یا
 انھیں حالات نے آخر سر جنگاہ لے آیا
 وہ جب رنجیت میں پہنچے وہاں طرفین کی فوجیں
 تلاطم میں بہم تھیں محو، جیسے بحر کی موجیں
 سپاہی سارے بکتر پوش تھے فولاد پسیر تھے
 نڈر تھے دیر تھے پرجوش تھے مردِ دلاور تھے
 جھلم لوہے کی خود آہن کے اور بکتر تھے لوہے کے
 جو سامان ان کے تن پر تھے، وہ ترسا سر تھے لوہے کے
 گئے اور سینے ان کے آہنی جیب میں جکڑے تھے
 تھیں مثلِ فیل موٹی گردنیں اور جسم اڑے تھے

جڑی فوٹل-اٹھ = بڑا

میسٹل-فیل = ہاتھی جیسے

سورماؤں کی نوک-झोंक

ج्योंہی آواز گونجی شکھ کی سنگرام کے اندر
 جیپالوں کی ن تہوں رہ سکی فیر مہان کے اندر
 دیا پھر حکم بڑھنے کا پیتامہ نے رسالوں کو
 دیا فیر حکم بڑھنے کا پیتامہ نے رسالوں کو
 بڑے تھامے ہوئے سب ویر تہوں اور بجاؤں کو
 یکلک میر لشکر نے پھر اپنی فوج کو روکا
 تلاطم خیز بحرِ بیکراں کی موج کو روکا
 رکی طرفین کی افواج ڈو فر لانگ پر آ کر
 بہادر سورما سینا سے نکلے اپنی بل کھا کر
 ج्योंہی آواز گونجی شخ کی संगرام کے اندر
 जीपालों की न तेहें रह सकी फिर मयान के اندर
 दिया फिर हुक्म बढ़ने का पितामह ने रिसालों को
 दिया फिर हुक्म बढ़ने का पितामह ने रिसालों को
 बड़े थामे हुए सब वीर, तेहों और भालों को
 यकायक मीरे-लष्कर ने फिर अपनी फौज को रोका
 तलातुम-खैज़ बेहरे-बेकरों की, मौज को रोका
 रुकी तरफین کی افواج، دو فرلانگ پر آکر
 बहादुर सूरमा से निकले अपनी बल खाकर

میرے-لشکر = سپناپتی
 تلاتوم خایز = اٹلی
 ہوئی مویج
 بہرے-بیکراں = بڑا سمندر

یہی پہلے سپہ سالارِ درلودھن بنے آکر
 ضعیف العمر تھے لیکن جواؤں پہ وہ سربر تھے
 بزرگی نے انھیں سیناپتی کے پد پہ پہنچا یا
 انھیں حالات نے آخر سر جنگاہ لے آیا
 وہ جب رنجیت میں پہنچے وہاں طرفین کی فوجیں
 تلاطم میں بہم تھیں محو، جیسے بحر کی موجیں
 سپاہی سارے بکتر پوش تھے فولاد پسیر تھے
 نڈر تھے دیر تھے پرجوش تھے مردِ دلاور تھے
 جھلم لوہے کی خود آہن کے اور بکتر تھے لوہے کے
 جو سامان ان کے تن پر تھے، وہ ترسا سر تھے لوہے کے
 گئے اور سینے ان کے آہنی جیب میں جکڑے تھے
 تھیں مثلِ فیل موٹی گردنیں اور جسم اڑے تھے

سورماؤں کی نوک جھونک

جوںہی آواز گونجی شکھ کی سنگرام کے اندر
 جیپالوں کی نہ تیغیں رہ سکیں پھر نیام کے اندر
 دیا پھر حکم بڑھنے کا پیتامہ نے رسالوں کو
 دیا پھر حکم بڑھنے کا پیتامہ نے رسالوں کو
 بڑے تھامے ہوئے سب ویر تہوں اور بجاؤں کو
 یکلک میر لشکر نے پھر اپنی فوج کو روکا
 تلاطم خیز بحرِ بیکراں کی موج کو روکا
 رکی طرفین کی افواج ڈو فر لانگ پر آ کر
 بہادر سورما سینا سے نکلے اپنی بل کھا کر
 جوںہی آواز گونجی شخ کی संगرام کے اندر
 जीपालों की न तेहें रह सकी फिर मयान के اندर
 दिया फिर हुक्म बढ़ने का पितामह ने रिसालों को
 दिया फिर हुक्म बढ़ने का पितामह ने रिसालों को
 बड़े थामे हुए सब वीर, तेहों और भालों को
 यकायक मीरे-लष्कर ने फिर अपनी फौज को रोका
 तलातुम-खैज़ बेहरे-बेकरों की, मौज को रोका
 रुकी तरफین کی افواج، دو فرلانگ پر آ کر
 बहादुर सूरमा से निकले अपनी बल खाकर



लगा कर एड़ घोड़े को, कोई ललकारता पहुँचा।
कोई ताने हुए नेजे को, नारा मारता पहुँचा।।
मुकाबिल होगया, एक-एक वीर, अपने मुकाबिल से।
था जब तक दम में दम, लड़ता रहा मजरूह क़त्तिल से।।
नबर्द-आरा हतोटी से बराबर वार करते थे।
मुकाबिल को वह हर-हर वार पर हुशियार करते थे।।
कोई पीछे हटा तो ताना देदे कर उसे टोका।
कोई भागा तो कावा काट कर ललकार कर रोका।।
नबर्द आरईयाँ आखिर बहादुर पहलवानो की।
रूकी, लेकिन न जाने, भेंट लेकर कितनी जानों की।।

मजरूह = जखमी

हंगामा-ए-जंग का एक आम मन्ज़र

बिलआखिर जब हुए वापस बहादुर पहलवाँ सारे।
लगाए बहरे इस्तक़बाल फिर फौजों ने जय कारे ।।
दिया सेनापति ने हुक्म, फिर सेना को बढ़ने का।
दिगर मानों में युद्ध के, देवता पर भेंट चढ़ने का।।
चढ़ाई कौस की तांतें, सफ़े अब्बल के वीरों ने।
कमानों को किया सीधा मअन जांबाज़ शेरों ने।।
फिर इस के बाद पहली बाढ़ मारी जोश में भर कर।
मराकिब से गिरे रेक्काब, चक्कर खा के घरती पर।।
विरोधी दल ने भी फिर ऐसी मारी बाढ़ तीरों की।
हुई ज़ेरो-ज़बर सफ़, पहले ही हल्ले में वीरों की।।
बढ़े हाथी सवार इक दूसरी जानिब से फिर रण में।
कमां थी हाथ में, जिन के, जो थे मलबूस आहन में ।।

बहरे-इस्तक़बाल =
स्वागत के लिये

मराकिब = घोड़े
रेक्काब = सवार

मलब

लगाकराई ग़ुहुरे को कुन्नी ललकारता येन्या
कुन्नी ताने हुये निज़े को नعرह मारता येन्या
मقابل होगी एक-एक वीर अपने مقابل से
तथा जब तक दम में दम लड़ता रहा मजरूह क़त्तिल से
नबर्द आरह्मोनी से बराबर वार करते थे
मुकाबिल को वह हर-हर वार पर हुशियार करते थे
कुन्नी सच्चे हठातुएने दे दिकरु से लुका
कुन्नी बहाका तुकाकाठ कर ललकार कर रोका

नबर्द आरह्मोनी आखिर सहादत पहलवानों की
रुकी, लेकिन न जाने, भेंट लेकर कितनी जानों की

हंगामे-जंग का एक आम मन्ज़र

बलाख़र जब हुये वापस बहादुर पहलवान सारे
लगाए बहरे इस्तक़बाल फिर फौजों ने जय कारे
दिया सेनापति ने हुक्म, फिर सेना को बढ़ने का
दिगर मानों में युद्ध के, देवता पर भेंट चढ़ने का
चढ़ाई कौस की तांतें, सफ़े अब्बल के वीरों ने
कमानों को किया सीधा मअन जांबाज़ शेरों ने
फिर इस के बाद पहली बाढ़ मारी जोश में भर कर
मराकिब से गिरे रेक्काब, चक्कर खा के घरती पर
विरोधी दल ने भी फिर ऐसी मारी बाढ़ तीरों की
हुई ज़ेरो-ज़बर सफ़, पहले ही हल्ले में वीरों की
बढ़े हाथी सवार इक दूसरी जानिब से फिर रण में
कमां थी हाथ में, जिन के, जो थे मलबूस आहन में



رہوں کو بھی بڑھایا اپنے رتھ بالوں نے جرات سے
 بڑی ڈھالوں میں چھپ چھپ کر بڑھا پھر جنگجو شکر
 ملی اک بارگی خون پیتا مسیوں مقابل سے
 لگے لگے کٹے سر گرنے دھڑا دھڑا دھڑا لگے گرنے
 کسی کانیزہ بکتر اور سینہ توڑ کر نکلا
 کسی نے ایسا مارا ہاتھ اک شمشیر آہن کا
 کسی نے ڈھال میں سر کو چھپا کر دار کو روکا
 کسی نے گرز کا بھر پور مارا ہاتھ دشمن پر
 غرض میدان میں اک اک ویر تھا بشک نبرد آرا
 بنی تھی سرخ دھرتی اڑ رہا تھا خون کا فوارا

اسی انداز سے پھر شام تک طرفین کا شکر
 قتال و جنگ میں مشغول تھا سنگرام کے اندر

ثبات کربشن میں تنزل

یونہی نوردوز تک لڑنا رہا طرفین کا شکر
 پیتا مسیوں اور ارجن بھی اترے بلوں آہن میں

فرتے-وجہلت = बहुत
 जन्दी से

दूबदू = आगने सामने

मौजे-कुलजुम = समुद्र
 की मौज

तरफैन = दोनों तरफ

सबाते-कृष्ण में तजलजुल

यूँही नौ रोज तक लड़ता रहा, तरफैन का लष्कर।
 पितामह, भीम और अर्जुन, भी उतरे रण की धरती पर।।

रहों को भी बढ़ाया अपने, रथ बानों ने जुरजत से।
 सफे-दुश्मन की जानिव, चाक घूमे फर्ते-उजलत से।।
 बड़ी ढालों में छुप छुप कर, बढ़ा फिर जंगजू लष्कर।
 यूँही होता गया फिर रफता रफता दूबदू लष्कर।।
 मिली इक बारगी फौजे-पितामह, यूँ मुकाबिल से।
 कि जैसे मौजे-कुलजुम, आके सर टकराए साहिल से।।
 लगे कट कट के सर गिरने, घड़ा-घड़ा, घड़ा लगे गिरने।
 पड़ा घमसान का रण, कायरों के मुँह लगे फिरने।।
 किसी का नेजा, बक्तर और सीना तोड़ कर निकला।
 किसी का नेजा, अपने साथ ही, लेकर जिगर निकला।।
 किसी ने ऐसा मारा हाथ, इक शमशीरे-आहन का।
 कि कड़ियाँ कट के शाने की, गिरी, और बन्द-जोशन का।।
 किसी ने ढाल में सर को, छिपा कर वार को रोका।
 किसी ने आहनी तलवार पर, तलवार को रोका।।
 किसी ने गुर्ज का भरपूर मारा हाथ दुश्मन पर।
 सिपर टुकड़े हुई और दरमियाँ से फट गया मिगफर।।
 गरज मैदों में इक इक वीर था, बेशक नबर्द आरा।
 बनी थी सुर्ख धरती, उड़ रहा था खूँ का फव्वारा।।
 इसी अन्दाज से फिर शाम तक तरफैन का लष्कर।
 कतालो-जंग में मशगूल था, संग्राम के अन्दर।।

کسی کو بھی خبر اسکی نہ تھی انخاب کیا ہوگا
نبرد آرائی میں طسرفین کی کس کا بھلا ہوگا
ادھر ہنگامہ جنگ و جدل بڑھتا ہی جاتا تھا
رہتوں کی گرد گردا گرد سے کیلجہ مہنہ کو آتا تھا
گداؤں کے دھماکے سے لرزتی تھی زمیں رن کی
فضا میں گونج تھی تیروں کے چلنے سے سنا سن کی
پیتامہ اور ارجن تھے رتھوں پر اپنے استادہ
نظر آتے تھے دونوں سو رما لڑنے پہ آمادہ
کشن یہ جانتے تھے یوں تو ارجن بھی دلاور ہے
مگر ان کے مقابل وہ ابھی کمسن ہے کتر ہے
انہیں حالات پر ابھی طرح وہ غور فرما کر
پیتامہ کے مقابل آپ خود ہی ڈٹ گئے جا کر
بڑے ہی جوش میں تھے آج کیشو مورتی ن میں
جو کیلک زمانہ تھے نبرد آرائی کے فن میں
سودرشن چکر لے کر آپ استادہ نظر آئے
پیتامہ جی سے ٹکر لے پہ آمادہ نظر آئے
پیتامہ نے یہ دیکھا تو کہا اے شیام بھاری
تمنا ہے تمہارے ہاتھ سے مر جاؤں گردھاری

مگر ارجن نے کیشو مورتی کو آکے سمجھایا

دلایا یاد وعدہ اور انکو رتھ پہ لے آیا

یدھشہر اور شری کرشن پیتامہ کے حضور میں

مگر جب فیصلہ ہوتا نظر آیا نہ کچھ رن میں یدھشہر کے اچھوٹا سا خیال اک اکیا سن میں

کبھی کو بھی خبر اسکی نہ تھی انخاب کیا ہوگا
نبرد آرائی میں طسرفین کی کس کا بھلا ہوگا
ادھر ہنگامہ جنگ و جدل بڑھتا ہی جاتا تھا
رہتوں کی گرد گردا گرد سے کیلجہ مہنہ کو آتا تھا
گداؤں کے دھماکے سے لرزتی تھی زمیں رن کی
فضا میں گونج تھی تیروں کے چلنے سے سنا سن کی
پیتامہ اور ارجن تھے رتھوں پر اپنے استادہ
نظر آتے تھے دونوں سو رما لڑنے پہ آمادہ
کشن یہ جانتے تھے یوں تو ارجن بھی دلاور ہے
مگر ان کے مقابل وہ ابھی کمسن ہے کتر ہے
انہیں حالات پر ابھی طرح وہ غور فرما کر
پیتامہ کے مقابل آپ خود ہی ڈٹ گئے جا کر
بڑے ہی جوش میں تھے آج کیشو مورتی ن میں
جو کیلک زمانہ تھے نبرد آرائی کے فن میں
سودرشن چکر لے کر آپ استادہ نظر آئے
پیتامہ جی سے ٹکر لے پہ آمادہ نظر آئے
پیتامہ نے یہ دیکھا تو کہا اے شیام بھاری
تمنا ہے تمہارے ہاتھ سے مر جاؤں گردھاری

یوधिष्ठिर और श्री कृष्ण
भीष्म पितामह के हुजूर में

مگر جب فہملا ہوتا نجر آیا نہ کچھ رن میں
یوधिष्ठیر کے، اچھوٹا سا رتھ، ایک آگیا من میں

لرزتی = کانپتی

اساتادا = بڑے ہوئے

کمسن = کم عمر

یوڈھٹ اور کشن پھر بھیشم کے استھان پر پہنچے
یہ دونوں، شان والے کے یہاں، باکر فر پہنچے

پیتامہ نے انھیں خاطر سے اپنے پاس بٹھلایا
سبب آنے کا اتنی رات میں دریافت فرمایا

یوڈھٹ اور کشن پھر بھیشم کے استھان پر پہنچے
مگر مابعد فم ہو کر ادب سے یوں دہن کھولا

کہ دادا جان سچ ہے آپ جیسا دیر اس جگہ میں
نہیں ہے، اور نہ ہوگا آپ کا ثانی کوئی جگہ میں

ذرا اس مسئلہ پر ٹھنڈے دل سے سوچئے دادا
ہمارا اب وسیلہ کون ہے جبر آپ کے دادا

مگر اب آپ ہی خود ہیں ہماری جان دشمن
ہمیں بھی آپ ویسا جانتے جیسا ہے دیو دھن

نہیں تو آپ کہتے ہم بیابان میں نکل جائیں
بچا کر جنگ سے دامن کہیں ہم اور ٹل جائیں

اگر یہ بھی نہیں منظور تو، وہ گھر ہی بتلائیں
کہ جسکی وجہ سے ہم فتح کل میدان میں پائیں

پیتامہ نے کہا سچ ہے، کہ تم سب ہو مرے پوتے
جگر گوشہ ہو تم تو وہ بھی نور العین ہیں میرے

حقیقت ہے کہ میرے ہاتھ میں ہتھیار ہے جنگ
لڑائی جیتنے کی ہر جہد بے کار ہے جب تک

اگر اس جنگ میں اب کامرانی چاہتے ہو تم
حکومت سلطنت اور راجدھانی چاہتے ہو تم

تو کل دن میں شکست دی کو بنا کر فوج کا افسر

و غا کا بوجھ سارا ڈال دینا اسکے کا ندھوں پر

یوڈھٹ اور کشن پھر بھیشم کے استھان پر پہنچے
یہ دونوں، شان والے کے یہاں، باکر فر پہنچے

پیتامہ نے انھیں خاطر سے اپنے پاس بٹھلایا
سبب آنے کا اتنی رات میں دریافت فرمایا

یوڈھٹ اور کشن پھر بھیشم کے استھان پر پہنچے
مگر مابعد فم ہو کر ادب سے یوں دہن کھولا

کہ دادا جان سچ ہے آپ جیسا دیر اس جگہ میں
نہیں ہے، اور نہ ہوگا آپ کا ثانی کوئی جگہ میں

ذرا اس مسئلہ پر ٹھنڈے دل سے سوچئے دادا
ہمارا اب وسیلہ کون ہے جبر آپ کے دادا

مگر اب آپ ہی خود ہیں ہماری جان دشمن
ہمیں بھی آپ ویسا جانتے جیسا ہے دیو دھن

نہیں تو آپ کہتے ہم بیابان میں نکل جائیں
بچا کر جنگ سے دامن کہیں ہم اور ٹل جائیں

اگر یہ بھی نہیں منظور تو، وہ گھر ہی بتلائیں
کہ جسکی وجہ سے ہم فتح کل میدان میں پائیں

پیتامہ نے کہا سچ ہے، کہ تم سب ہو مرے پوتے
جگر گوشہ ہو تم تو وہ بھی نور العین ہیں میرے

حقیقت ہے کہ میرے ہاتھ میں ہتھیار ہے جنگ
لڑائی جیتنے کی ہر جہد بے کار ہے جب تک

اگر اس جنگ میں اب کامرانی چاہتے ہو تم
حکومت سلطنت اور راجدھانی چاہتے ہو تم

تو کل دن میں شکست دی کو بنا کر فوج کا افسر

و غا کا بوجھ سارا ڈال دینا اسکے کا ندھوں پر

اھتیرامن = امداد سے
خام ہو کر = شکست

یوگ = زمانہ، دور

مستزلا = समस्या

یوگ = سوا

جہد = کوشش

وگا = لڑائی جنگ

یوڈھٹ اور کشن پھر بھیشم کے استھان پر پہنچے
یہ دونوں، شان والے کے یہاں، باکر فر پہنچے

پیتامہ نے انھیں خاطر سے اپنے پاس بٹھلایا
سبب آنے کا اتنی رات میں دریافت فرمایا

یوڈھٹ اور کشن پھر بھیشم کے استھان پر پہنچے
مگر مابعد فم ہو کر ادب سے یوں دہن کھولا

کہ دادا جان سچ ہے آپ جیسا دیر اس جگہ میں
نہیں ہے، اور نہ ہوگا آپ کا ثانی کوئی جگہ میں

ذرا اس مسئلہ پر ٹھنڈے دل سے سوچئے دادا
ہمارا اب وسیلہ کون ہے جبر آپ کے دادا

مگر اب آپ ہی خود ہیں ہماری جان دشمن
ہمیں بھی آپ ویسا جانتے جیسا ہے دیو دھن

نہیں تو آپ کہتے ہم بیابان میں نکل جائیں
بچا کر جنگ سے دامن کہیں ہم اور ٹل جائیں

اگر یہ بھی نہیں منظور تو، وہ گھر ہی بتلائیں
کہ جسکی وجہ سے ہم فتح کل میدان میں پائیں

پیتامہ نے کہا سچ ہے، کہ تم سب ہو مرے پوتے
جگر گوشہ ہو تم تو وہ بھی نور العین ہیں میرے

حقیقت ہے کہ میرے ہاتھ میں ہتھیار ہے جنگ
لڑائی جیتنے کی ہر جہد بے کار ہے جب تک

اگر اس جنگ میں اب کامرانی چاہتے ہو تم
حکومت سلطنت اور راجدھانی چاہتے ہو تم

تو کل دن میں شکست دی کو بنا کر فوج کا افسر

و غا کا بوجھ سارا ڈال دینا اسکے کا ندھوں پر

شیرخنڈی میدان-جنگ میں

لڑائی کا جو دسواں روز نکلا قہر سماں بھٹا
تباہی اور بربادی کا چاروں سمت طوفان تھا
ہزاروں گر رہے تھے نوجوان مرنے کے کٹ کٹے
مسلسل وار کرتے تھے کبھی بڑھ بڑھکے ہٹ ہٹے
کہیں تیروں کی بارش ہو رہی تھی لڑنے والوں پر
کہیں تھام فقعہ دیروں کا اپنے صرف بھالوں پر
کوئی تلوار لے کر، پیل پڑا تھا، اپنے دشمن پر
کوئی دم توڑنا تھا زخم کھا کر سینہ دھن پر
اچانک پھر پیتامہ سے شکندری بھر گیا آکر
تضع سے جواں مردوں کے جیسی شان دکھلا کر
شکندری کچھ بھی تھا لیکن وہ ارجن کا فدا فی تھا
دروید کا یہی فرزند بد سنجالی کا بھائی تھا
پیتامہ نے جب اک نامرد کو پایا مقابل میں
ہوئی رخصت دلیری پر گئے بیچارے مشکل میں
وہ کیسے وار کرتے ایک زخمی اور نئے پیر
جہاں تک اٹھ چکا تھا ہاتھ انکارہ گیا اٹھ کر

میرفکا = مہروسا

تسنانو = بناوٹ

فیداई = प्राण अर्पण
करने वाला

अर्जुन का तीर भीष्म पितामह की पुश्त में

इसी इक लम्हा के तो, मुन्तज़िर थे श्याम बनवारी।
पितामह पर चलादे तीर अर्जुन, बोले गिरधारी॥

शकंदری میدان جنگ میں

لڑائی کا جو دسواں روز نکلا قہر سماں بھٹا
تباہی اور بربادی کا چاروں سمت طوفان تھا
ہزاروں گر رہے تھے نوجوان مرنے کے کٹ کٹے
مسلسل وار کرتے تھے کبھی بڑھ بڑھکے ہٹ ہٹے
کہیں تیروں کی بارش ہو رہی تھی لڑنے والوں پر
کہیں تھام فقعہ دیروں کا اپنے صرف بھالوں پر
کوئی تلوار لے کر، پیل پڑا تھا، اپنے دشمن پر
کوئی دم توڑنا تھا زخم کھا کر سینہ دھن پر
اچانک پھر پیتامہ سے شکندری بھر گیا آکر
تضع سے جواں مردوں کے جیسی شان دکھلا کر
شکندری کچھ بھی تھا لیکن وہ ارجن کا فدا فی تھا
دروید کا یہی فرزند بد سنجالی کا بھائی تھا
پیتامہ نے جب اک نامرد کو پایا مقابل میں
ہوئی رخصت دلیری پر گئے بیچارے مشکل میں
وہ کیسے وار کرتے ایک زخمی اور نئے پیر
جہاں تک اٹھ چکا تھا ہاتھ انکارہ گیا اٹھ کر

ارجن کا تیر بھیشم پیتامہ کی پشت میں

اسی اک لمحہ کے تو منتظر تھے شیاام بنواری
پیتامہ پر چلا دے تیر ارجن، بولے گردھاری
عائیکہ یا بھرومہ ۲ پھر اس کے بعد پیتامہ شکندری کی طرف پشت کر کے کھڑے ہو جاتے ہیں



مگر، ارجون شوجاات کا، غنی تھا، اور دلاور تھا۔
شوجا-وقت تھا، رणवीर تھا، فौलाद पैकर تھا ॥

भला पुष्टे-शिखण्डि से वह छुप कर वार क्यों करता ।
वह अपने नाम का अर्जुन था, यह व्यवहार क्यों करता ॥

बिलआखिर कर दिया इन्कार, उसने वार करने से ।
हुई चिन्ता किशन को, उसके इस इन्कार करने से ॥

किशन आखिर किशन थे, जानते थे, खूब अर्जुन को ।
बहुत पहचानते थे, उसके वह ज़हनी तलवून को ॥

किशन जैसे सियासतदों, से जब उसको पड़ा पाला ।
तो भूला चौकड़ी, फिर हाथ अपना वान पर डाला ॥

शिखण्डि के, हुआ वह अक्ब में तीरो-कमों लेकर ।
वहीं से शिस्त बांधी उसने, उस को दरमियाँ लेकर ॥

कमों को खींचकर अर्जुन ने, छोड़ा पूरी कुव्वत से ।
चला सम्ते-पितामह सनसनाता तीर सुरजत से ॥

निशाना था, वह अर्जुन का, भला कैसे खता होता ।
अगर होता खता तो, जौ से गनदुम भी उगा होता ॥

गरज अर्जुन का तीर, अपनी कमों को छोड़ कर निकला ।
तो उन की, पीठ में घुसकर, कवच को तोड़ कर निकला ॥

भीष्म पितामह तीरों की सेज पर

फिर उस के बाद, चारों सम्त से तीरों की बाढ़ आई ।
पितामह के बदन की नाप ली, तीरों ने गहराई ॥

हजारों तीर उन के, जिस्मे-खाकी में हुए पैवस्त ।
हुए वजहे-शिखण्डि से, पितामह आज यूँ बेदस्त ॥

शुजात = बहादुरी
शुजा-वक्त = अपने
वक्त का बहादुर

अक्ब = पीछे

सुरजत = तेजी

गनदुम = गेहूँ

مگر ارجن شجاعت کا دھنی تھا اور دلاور تھا۔
شجاع وقت تھان ویر تھا فولاد پیکر تھا

بھلا پست شکھندی سے وہ چھپکر وار کیوں کرتا
وہ اپنے نام کا ارجن تھا یہ دیو ہار کیوں کرتا

بالآخر کر دیا انکار اس نے وار کرنے سے
ہوئی چیتا کشن کو اسکے اس انکار کرنے سے

کشن آخر کشن تھے جانتے تھے خوب ارجن کو
بہت پہنچاتے تھے اسکے وہ ذہنی تلون کو

کشن جیسے سیاست دان سے جب اسکو ڈیالا
تو بھولا چوڑی پھر ہاتھ اپنا بان پر ڈالا

شکھندی کے ہوا وہ عقب میں تیر و کمان لے کر
وہیں سے شست باندھی اسے لکودریا لیکر

کمان کو کھینچ کر ارجن نے چھوڑا پوری قوت سے
چلا سمت پیتامہ سنسنا تا تیر شست سے

نشانہ تھا وہ ارجن کا بھلا کیسے خطا ہوتا
اگر ہوتا خطا تو جو سے گندم بھی اگا ہوتا

عرض ارجن کا تیر اپنی کمان کو چھوڑ کر نکلا

تو انکی بیٹھ میں گھسکر کوئی کو توڑ کر نکلا

بیشم پیتامہ تیروں کی سیج پر

پھر اسکے بعد چاروں سمت سے تیروں کی بارش آئی
پیتامہ کے بدن کی نا پل تیروں نے گہرائی

ہزاروں تیر انکے جسم خالی میں ہوئے پیوست
ہوئے وہ شکھندی سے پیتامہ ان کیوں دست

بیل آخیر رفتہ رفتہ ضعیف طاری ہو گیا ان پر
گشی کی کیفیت چھاتے ہی فوراً اگیا چکر

اور اسکے بعد گرنا چاہتے تھے وہ بایں عجلت
کہ تیروں نے سنبھالا جو تھے انکے جسم میں بیہوش

پیتامہ کیلئے اب بن گئی تھی سبج تیروں کی
زمانے تو نے دیکھی تھی کبھی شان ایسے دیروں کی

پیتامہ کی یہ حالت دیکھ کر پھر لڑنے والوں نے
لڑائی بند کر دی سو راؤں اور جیالوں نے

تکیے کی ضرورت

یوڈیٹیر، بھیم، ارجون، فیر پیتامہ کے قریب آئے
نکول، اور کرن-اؤ-دور یوڈھن بھی داد کے قریب آئے

پیتامہ کا سر جنگاہ اب تیروں کا بستر تھا
بدن تیروں پہ تھا انکا مگر لٹکا ہوا سر تھا

پیتامہ نے کہا اب چاہئے مجھ کو ذرا تکیہ
تو در یوڈھن نے لایا، ریشم و کمخواب کا تکیہ

یہ تکیہ دیکھ کر بولے پیتامہ اس طرح ہنس کر
اسی کی شان کا تکیہ ہو جیسا ہے مرا بستر

نہیں ہے ایسے تکیے کی ضرورت جاؤ لے جاؤ
مرے بستر کے جیسا کوئی تکیہ ہو تو لے آؤ

جوف = کمزور
گشی = بے ہوشی

بڈ-عجلت = بھڑک
جندی

سری-جنگاہ = ریشم



تیروں کا تکیا

پیتامہ کے اس اندازِ سخن پر لوگ حیراں تھے
فقط اک دیرِ ارجن کے علاوہ سب پریشان تھے
لہذا اگیا تھا دہن میں مطلب پیتامہ کا
کہ تکیہ کیا ہونا چاہئے تھا اب پیتامہ کا
نکالا تیر فوراً اور کہاں میں تیر کو جوڑا
پیتامہ کے سر ہانے پھر کہاں کو کھینچ کر چھوڑا
اچانک تھوس سے دو تیر اک طوفان سے نکلے
زمین پر گر کر تکیہ بن گئے اس شان سے نکلا

اہل اٹھار میں سے گنگا جل کا ایک فوارہ

پیتامہ تشنگی سے ہو گئے پھر اس قدر بیسکل
نظامِ زندگی میں پڑ گئی تھی ان کے اک بلبل
زبان کو خشک لب پر پھیر کر ارشاد فرمایا
تقدس بخش اپنی گنگا ماں کو یاد فرمایا
یہ سکر تیر ادھرتی پہ تیر ارجن نے پھر مارا
اہل اٹھار میں سے گنگا جل کا ایک فوارہ
زمین سے نکلا پھر اس شان سے فوارہ مضطر
پیتامہ کے دہن تک دھار پہنچی اسکی بل لہار

تیروں کا تکیا

پیتامہ کے، اس اندازِ سخن پر، لوگ حیراں تھے۔
فقط ایک دیرِ ارجن کے، اٹاوا سب پریشان تھے۔
لیہا جی آ گیا تھا، جہن میں مطلب، پیتامہ کا۔
کی تکیا، کسا ہونا چاہیے تھا، اب پیتامہ کا۔
نیکالا تیر فوراً اور کہاں میں تیر کو جوڑا۔
پیتامہ کے سر ہانے پھر، کہاں کو کھینچ کر چھوڑا۔
اچانک کوس سے دو تیر، ایک طوفان سے نکلے۔
زمین پر گر کر تکیہ بن گئے اس شان سے نکلا۔

اُبھل اُٹھا جِرمی سے گنگا جَل کا اِک فِوارا

پیتامہ تیشنگی سے ہو گئے پھر اس قدر بیسکل
نظامِ زندگی میں پڑ گئی تھی ان کے اک بلبل
زبان کو خشک لب پر پھیر کر ارشاد فرمایا
تقدس بخش اپنی گنگا ماں کو یاد فرمایا
یہ سکر تیر ادھرتی پہ تیر ارجن نے پھر مارا
اہل اٹھار میں سے گنگا جل کا ایک فوارہ
زمین سے نکلا پھر اس شان سے فوارہ مضطر
پیتامہ کے دہن تک دھار پہنچی اسکی بل لہار

اندازِ سخن = زبان
کرنے کا ہونے

کوس = کمان

تیشنگی = پھاس

تکدوس بکھا =
پہنچاتا دینے والی

مہا بھارت
کا
دوسرا کمانڈر انچیف
دروہ چاریہ
میدانِ عمل میں

महाभारत
का दूसरा
कमान्डर-इनचीफ़
द्रोणाचार्य
मैदाने-अमल में



درونا چاریہ میدان جنگ میں

ادھر رن میں پتا مہ سونے تھے سر دیکھے بستر پر
ادھر رن میں پتا مہ سونے تھے سر دیکھے بستر پر

درونا چاریہ کے زیر سایہ فوج دریو دھن
درونا چاریہ کے زیر سایہ فوج دریو دھن

سر میدان یہ سالاری کا ان کا رد اول تھا
سر میدان یہ سالاری کا ان کا رد اول تھا

یہی وہ صاحب سیف و سلم اساف دوراں تھے
یہی وہ صاحب سیف و سلم اساف دوراں تھے

حقیقت میں در پردے کو کڈرت تھی
حقیقت میں در پردے کو کڈرت تھی

یہی تھی وجہ جو پچال کے رن ویر شیروں کو
یہی تھی وجہ جو پچال کے رن ویر شیروں کو

ہزاروں سورما مارے گئے پچال راجہ کے
ہزاروں سورما مارے گئے پچال راجہ کے

اسی دن بھیم دارجن نے دلیری خوب دکھلائی
اسی دن بھیم دارجن نے دلیری خوب دکھلائی

ادھر بھی کرن کے بانوں کو ویرا رجن نے سب کاٹا
ادھر بھی کرن کے بانوں کو ویرا رجن نے سب کاٹا

غرض لڑتا رہا رن چیت میں ہر ویر ہر افسر
غرض لڑتا رہا رن چیت میں ہر ویر ہر افسر

غروب مہر پر واپس ہوا طرفین کا لشکر
غروب مہر پر واپس ہوا طرفین کا لشکر

۱) بانوں کو کاٹنا اس زمانے کا محاورہ ہے علاوہ اسکے بانوں سے صرف جسم ہی نہیں چھدے تھے بلکہ گردنیں
بھی کٹ کے گر پڑتی تھیں چونکہ ان کے پھل دھیرسا اور میٹھ کے مانند ہوتے تھے۔

جہرے-ساہا = ماتہات

روجے-اچھل = پہلا

دین

مکھول = ہر سوا

ساہیہ-سہف و کلیم =

تاتوار اور کلیم کا

دھنی

کوہنا = پورانی

بد-افحال = وادا

توڑنے والا

گورے-مہر = سورج کے

دھبے پر

ترفین = دونوں طرف

درونا چاریہ میدان جنگ میں

ادھر آئے درونہ چاریہ سینا پتی بن کر

تھی جرات آزمایا پاندو کے لشکر سے جس فن

کہ جن پر کورواں کو فخر بھٹ پورا مٹول تھا

یہ سچ ہے پاندو داں بھی جنگی شاگردی مازاں تھے

پرانی دشمنی تھی بیرکت، کہنہ عداوت تھی

درونا چاریہ نے مارا چن چن کر دلیروں کو

مرے سینا پتی اور ویر بد افعال راجہ کے

فنا کے گھاٹ پہنچے کورواں کے بیسوں بھائی

بدن چھلنی کے لاشوں سمیان دغا پاتا

غرض لڑتا رہا رن چیت میں ہر ویر ہر افسر

غروب مہر پر واپس ہوا طرفین کا لشکر

۱) بانوں کو کاٹنا اس زمانے کا محاورہ ہے علاوہ اسکے بانوں سے صرف جسم ہی نہیں چھدے تھے بلکہ گردنیں

بھی کٹ کے گر پڑتی تھیں چونکہ ان کے پھل دھیرسا اور میٹھ کے مانند ہوتے تھے۔

یوधिष्ठیر کی گیرفتاری کا منسوبا

اسی شب میں درونہ اور دیودھن نے اکیسا
شریک مشورہ تھے ان میں کچھ ابلیس کے پیسے
علاوہ اسکے آرجن کے لئے سوچی گئیں گھاتیں
اس میں چکر دیو کا مسئلہ بھی سامنے آیا
یہ اک منصوبہ سازش تھا مقصد و حاصل
یہ ہتھ پھرنے پر اپنے بھائیوں میں سب سے بڑے
اسی اک وجہ سے ہے پانڈوؤں میں خوش ہمت
یہ ہتھ پھرنے کی گرفتاری سے جرات آزمائی کا
یہ ایسی ضرب ہوگی تاب جکی لائیں سکتے
بالآخر مشورہ کے بعد کوروں کو گئے جا کر
عمل پیرا نہیں ہونا تھا کل میاں میں سازش پر

ابلیس = شیطان
فساد و فیسق = لڑائی،
مگھ

مہاجے-جنگ = جنگ کا
مورچا

اچمو پامردی و
استیکلال = ڈراوے کی
مجبوری
خودسیتا = اپنی بڑائی

جرب = مار/چوٹ

یہ ہتھ پھرنے کی گرفتاری کا منصوبہ

بنایا اہل کے منصوبہ یہ ہتھ پھرنے کو پکڑنے کا
فساد و فیسق کے پیکر شکونی جیت جیسے
خاند جنگ سے اس کو ہٹانے کی ہمتیں
درونہ نے بڑی تفصیل سے اس فن کو سمجھایا
فقط یہ تھا نہ پانڈو روکیں اب جنگ کے قابل
مناست اور ذہانت میں بھی اصل اور برتر ہے
یہ ان کا غم و پامردی یہ استیکلال یہ جرات
اگر جائیگا نہ پانڈوؤں کی خود سائی کا
یہ ایسی ضرب ہوگی تاب جکی لائیں سکتے

بالآخر مشورہ کے بعد کوروں کو گئے جا کر
عمل پیرا نہیں ہونا تھا کل میاں میں سازش پر



میدان کارزار کا ایک عام منظر

طلوع مہر نے اک آگ بھردی سینہ و تن میں
ہوا آغاز شور و طبل سے پھر جنگ کا رن میں
ہمیں تو شکم پھونکے جا رہے تھے رن کی مہر کی
کبھی سے شور و غل اٹھتا تھا افکار و کار رہ کر
رتھوں کی گھر گھر ہٹتے تھے کی تانوں کی نکالیں
سبھی تھے ترش سن سنکے تھیں یاد کی جھنکاریں
بڑھیں سیلاب کی مانند فوجیں دونوں جانب سے
گلے مل جائے جیسے دور کر مطلوب طالب سے
سپاہی گھس گئے اک دوسرے کی صف میں بے کھٹکے
پڑا گھمسان کارن بھڑکے شیران دل ڈٹ کے
فنون جنگ سے واقف تھے سب ہی نمود تھے
ہنرمیں اپنے یکتا تجربہ کاری میں پختہ تھے
کسی نے کسی کو سر کو چھپایا یا ڈھال کے پیچھے
کسی نے کسی نے ہاتھ کھینچا اپنا الجھن سے
کوئی تیچھے ہٹا ہمیں ردیح پھر بڑھا آگے
جھکاؤ دیکھے پھرتی سے بچا یا نو دوشمن سے
لگا کر حبست فوراً لے لیا نیزے پر دشمن کو
کبھی کاوا دیا، اور پشت پر جا پھنچا دشمن کے
مخالف سمت سے بھی تیغ جوہر دار لہرائی
کبھی تلوار نے کالی سپر اور خوشن و منفیر
گری سر پر تو کلنی اور منفیر کاٹ کر آئی
تو فوراً ہی مقابل نے جواب اس کا دیا بڑھ کر

تولوع-مہر نے، ایک آگ بھردی، سینا-او-تن میں۔
ہوا آگاز شور-تبل سے، فیر جنگ کا رن میں۔

کھیں تو، شخ فونکے جارہے تھے، رن کی مہر کی
کھیں سے شور-غل اٹھتا تھا، نکالوں کی نکالیں

رتھوں کی گڑ گڑا ہٹ، کوس کے تانتوں کی ٹکاروں۔
سبھی تھے مشت سن سن کے تھیں یاد کی جھنکاروں۔

بڑھیں سیلاب کی مانند فوجیں دونوں جانب سے۔
گلے مل جائے جیسے دور کر مطلوب طالب سے۔

سپاہی گھس گئے اک دوسرے کی صف میں بے کھٹکے۔
پڑا گھمسان کا رن، بھڑکے شیران-دل ڈٹ کے۔

فنون جنگ سے واقف تھے سب ہی نمود تھے۔
کسی نے اپنے یکتا تجربہ کاری میں پختہ تھے۔

کسی نے کسی کو سر کو چھپایا یا ڈھال کے پیچھے۔
کسی نے کسی نے ہاتھ کھینچا اپنا الجھن سے۔

کوئی تیچھے ہٹا ہمیں ردیح پھر بڑھا آگے۔
جھکاؤ دیکھے پھرتی سے بچا یا نو دوشمن سے۔

لگا کر حبست فوراً لے لیا نیزے پر دشمن کو۔
کبھی کاوا دیا، اور پشت پر جا پھنچا دشمن کے۔

مخالف سمت سے بھی تیغ جوہر دار لہرائی۔
کبھی تلوار نے کالی سپر اور خوشن و منفیر۔

گری سر پر تو کلنی اور منفیر کاٹ کر آئی۔
تو فوراً ہی مقابل نے جواب اس کا دیا بڑھ کر۔

مخالف سمت سے بھی تیغ جوہر دار لہرائی۔
کبھی تلوار نے کالی سپر اور خوشن و منفیر۔

گری سر پر تو کلنی اور منفیر کاٹ کر آئی۔
تو فوراً ہی مقابل نے جواب اس کا دیا بڑھ کر۔

تولوع-مہر = سورج کا
نیکلتا

مشت سن = کانپتے ہوئے

آگاز مودا = تازہ کاری

کاسا-آ-سر = انسانی
سر ایک کٹوری کے
سमान ہوتا ہے، متعلق
سر

کیلگی = لوہے کی ٹوپی
پر لگے پرنیوں کے پر،
چوٹی۔

بَدل کر پتھر، ڈک دوسرے پر وار کرتے تھے۔
 کُجا سر پر خدیٰ تھی، مَویت سے لےکین نہ ڈرتے تھے۔
 فِڈک اُٹھتی تھی مَخلّی، باجُو-شَہجُور کی اُکسَر۔
 اُبھَر آتی تھی، مایہ کی رَوں، اُک-اُک ہَملے پر۔
 دِلّاوَر اور نَامی پھِلواؤں، مَرتے تھے کُتے تھے۔
 ہُجّاروں جُرمِ خااتے تھے، مَگر فِیر بھی نہ ہُڑتے تھے۔

یوڈیٹیر کو پکڑنے کی ناکام کوشش

یوڈیٹیر کو پکڑنے میں دُر نہ کُرنِ دِشاشن
 تَقاضائے اِسی دَم بَدَم بڑھتا ہی جاتا تھا
 یوڈیٹیر کو پکڑنے کی تھی کوشش چار سو جاری
 ہونا ناکام جب کوروں کا یہ منصوبہ سازش
 تُو اُنکے طائفے میں سر پاتک لگ گئی تاش

دُریوڈھن محاذ جنگ سے ارجن کو ہٹا دینے میں کامیاب

اُلاوا اس کے ارجن کے لیے بھی جال پھیلے تھے
 جو تھے مامور اس سازش پہ اُنکے غمِ محکم سے
 غرض ارجن کو میدان سے ہٹا دینے میں دُریوڈھن
 ہوا تھا کامیاب کامراں پوری طرح پُرفن

باجو-شہجور =
 تانکوار ہاتھ

تکاؤ-ا-اسیری = کُتے
 کرنے کی آواز

اُتیش = آگ

کولوب-کولواؤ = کولواؤ
 کے دِل

سڈ-ا-پہم = بار بار
 کوشش

بَل کر پتھرے اُک دوسرے پر وار کرتے تھے
 اُبھرتی تھی چھلی بازوئے شہزور کی اکثر
 دلاور و زامی پہلوں مَر تے تھے کُتے تھے
 ہزاروں زخم کھاتے تھے مگر پھر بھی نہ ہٹتے تھے

یوڈیٹیر کو پکڑنے کی ناکام کوشش

یوڈیٹیر کو پکڑنے میں دُر نہ کُرنِ دِشاشن
 تَقاضائے اِسی دَم بَدَم بڑھتا ہی جاتا تھا
 یوڈیٹیر کو پکڑنے کی تھی کوشش چار سو جاری
 ہونا ناکام جب کوروں کا یہ منصوبہ سازش
 تُو اُنکے طائفے میں سر پاتک لگ گئی تاش

دُریوڈھن محاذ جنگ سے ارجن کو ہٹا دینے میں کامیاب

اُلاوا اس کے ارجن کے لیے بھی جال پھیلے تھے
 جو تھے مامور اس سازش پہ اُنکے غمِ محکم سے
 غرض ارجن کو میدان سے ہٹا دینے میں دُریوڈھن
 ہوا تھا کامیاب کامراں پوری طرح پُرفن



ن ہٹتا دیر آجین چھوڑ کر یہ مورچہ اپنا
تو ہوتا چکر دیو کا یوں نہ منصوبہ کبھی پورا
پھر اس نے چکر دیو کے واسطے دیروں کو بلایا
اور ان کو چکر کے اس کام پر مامور فرمایا

مامور = نیوکت

ایک جنگی منصوبہ یہ چکر دیو کا مورچہ

ادھر آجین اک ایسے مورچے پر تھا بندہ آرا
دروہ جیدرت اور کرن نے کوروں کے منڈلیں
کماں اس مورچے کی جیدرت نے خود نبھائی تھی
یہ اک منصوبہ جنگی دروہ چار یہ کا تھا
کہ اس سے موڑ نارنج نزدیکی کی علامت تھی
شکست چکر دیو اس فتن میں اک مستقل فن تھا
مگر شہ زور آجین کو نہ بھی مطلق خبر اس کی
اسی کارن دروہ بنجی نے یہ منصوبہ باندھا تھا
کہ آجین دوسری جانب الجھا آئے سکتا تھا

اگر اب چکر دیو کا دائرہ پائندہ نہیں توڑے
تو ہوگی اک شکست فاش منہ اس اگر موڑے

ن ہٹتا ویر ارجون छोड़ कर यह मोर्चा अपना।
तो होता चक्रव्यूह का यूँ, न मनसूबा कभी पूरा॥
फिर उसने चक्रव्यूह के वास्ते, वीरों को बुलवाया।
और उन को चक्र के इस काम पर, मامूर فرमाया॥

مامور = نیوکت

एक जंगी मनसूबा याने चक्रव्यूह का मोर्चा

इधर अर्जुन इक ऐसे मोर्चे पर था नबर्द-आरा।
जहाँ से वापसी का शाम से पहले न था यारा॥
द्रोणा, जयद्रथ और कर्ण, ने कौरवों के मंडल में।
बनाया चक्रव्यूह का एक जंगी मोर्चा दल में॥
कमों इस मोर्चे की जयद्रथ ने खुद संभाली थी।
इसी के मशवरे ने, चक्र की बुनियाद डाली थी॥
यह इक मनसूबा-ए-जंगी, द्रोणाचार्या का था।
बहादुर सूरमाओं के लिये, चलेन्ज ऐसा था॥
कि इस से मोड़ना रुख बुझदिली की इक अलामत थी।
मगर इस चक्रव्यूह का, तोड़ देना ही शुजात थी॥
शिकस्ते-चक्रव्यूह इस ज़िम्न में, इक मुसतकिल फन था।
फकत इक वीर अर्जुन था, जो इस फन से मुजय्यन था॥
मगर शहजोर अर्जुन को, न थी मुतलक खबर इस की।
जहाँ वह था, उसी इक मोर्चे पर थी, नज़र उस की॥
इसी कारण द्रोणा जी ने यह मनसूबा बांधा था।
कि अर्जुन दूसरी जानिब है उलझा, आ न सकता था॥
अगर अब चक्रव्यूह का दायरा, पान्डव नहीं तोड़े।
तो होगी इक शिकस्ते-फाश, मुँह इस से अगर मोड़े॥

मानसूबा-ए-जंगी = जंग
की योजना

शिकस्ते-फाश = खुली
हार

چکر ویو کے اعلان سے پانڈوؤں کی پریشانی

خبر اس چکر ویو کی آئی جب پانڈو کے منڈل میں
 یوڈیشٹر دم-بکود سا رہ گیا، میدان-مکاتل میں ۱۱
 سرے-میدوں جو لاہک تھی، یوڈیشٹر کو پریشانی
 وہ تھی دک بے محل سی، چکر ویو کی فتنہ سامانی ۱۱
 نہ تھا موجود آج اس کے لئے پھر کے لہر
 اسی اک وجہ سے پانڈو سر میں پریشانی تھے
 اگر آج یہاں ہوتا تو پھر موتی نہ دشواری
 سمجھ میں کچھ نہیں آتا کہ اب انجام کیا ہوگا
 ابھیمو نے جب دیکھی یہ پھر کی پریشانی
 نہ گہرائی کہ میں اس چکر ویو کو توڑ سکتا ہوں
 اجازت دیجئے یا جان مجھ پر لطف فرمائیں
 اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ اب انجام کیا ہوگا
 ابھیمو نے جب دیکھی یہ پھر کی پریشانی
 نہ گہرائی کہ میں اس چکر ویو کو توڑ سکتا ہوں
 اجازت دیجئے یا جان مجھ پر لطف فرمائیں

دم-بکود = مچککا

کروفر = شان سے

تا یا جان = باپ کا
 بڑا भाई

تأجرب آپ کو ہو گا یہ میری داستاؤں سن کر
 یہ میری داستاؤں سن کر

یہ سن کر پانڈواں بولے ابھیمو یہ بتلانا
 کہاں سے چکر ویو کو توڑنا سیکھا ہے سمجھانا

چکر ویو کے اعلان سے پانڈوؤں کی پریشانی

خبر اس چکر ویو کی آئی جب پانڈو کے منڈل میں
 یوڈیشٹر دم-بکود سا رہ گیا، میدان-مکاتل میں ۱۱
 سرے-میدوں جو لاہک تھی، یوڈیشٹر کو پریشانی
 وہ تھی دک بے محل سی، چکر ویو کی فتنہ سامانی ۱۱
 نہ تھا موجود آج اس کے لئے پھر کے لہر
 اسی اک وجہ سے پانڈو سر میں پریشانی تھے
 اگر آج یہاں ہوتا تو پھر موتی نہ دشواری
 سمجھ میں کچھ نہیں آتا کہ اب انجام کیا ہوگا
 ابھیمو نے جب دیکھی یہ پھر کی پریشانی
 نہ گہرائی کہ میں اس چکر ویو کو توڑ سکتا ہوں
 اجازت دیجئے یا جان مجھ پر لطف فرمائیں
 اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ اب انجام کیا ہوگا
 ابھیمو نے جب دیکھی یہ پھر کی پریشانی
 نہ گہرائی کہ میں اس چکر ویو کو توڑ سکتا ہوں
 اجازت دیجئے یا جان مجھ پر لطف فرمائیں

تأجرب آپ کو ہو گا یہ میری داستاؤں سن کر
 یہ میری داستاؤں سن کر

یہ سن کر پانڈواں بولے ابھیمو یہ بتلانا
 کہاں سے چکر ویو کو توڑنا سیکھا ہے سمجھانا



अभिमन्यु यह बोला कीजिए विश्वास अब मुझ पर।
तआज्जुब आप को होगा, यह मेरी दास्ताँ सुनकर॥

मगर जो बात है उसको, बर्षा करता हूँ मैं तुम से।
यकीनन जिस को सुनकर तुम भी, रह जाओगे गुमसुम से॥

कि जब मैं गर्भ में था बेकस-ओ-मजबूर बेचारा।
मेरे माता पिता लेटे थे, और सोया था जग सारा॥

इसी आलम में दौराने-तकल्लुम में बसद अहसन।
अचानक दरमियाँ में छिड़ गया था चक्रव्यूह का फन॥

पिता ने चक्रव्यूह के फन पे काफी रौशनी डाली।
कोई मोहरा दिफा-ओ-जारेहय्यत से न था खाती॥

बताई सारी चालें और मोहरे उस तड़ाई के।
तरीके भी बताते जाते थे, जोर आजमाई के॥

निहायत गौर से माता जी सब सुनती रहीं बातें।
वगा में सरफरोशी और रिया-ओ-मक्र की घातें॥

यह सारी बातें मैं भी सुन रहा था पेट के अन्दर।
अचानक मेरी माताजी को घेरा नींद ने आकर॥

पिताजी सिर्फ आधा जिक्र कर पाए थे इस फनका।
कि माँ को नींद आने से, अधूरी रह गयी विद्या॥

युधिष्ठिरने दिया

इजने-वगा अपने भतीजे को

इसीकी वजह से मुझको अधूरा याद है यह फन।
अधूरा फन बना है आरजूओं का मेरी दुशमन॥

फकत इस दायरे में मुझ को, दर-आना तो आता है।
व लेकिन वापसी की फिक्र, से दिल काँप जाता है॥

मुझे मालूम है अंजाम अब अपनी जसारत का।
नतीजा मौत की सूरत में निकलेगा अजीमत का॥

दौराने तकल्लुम = बानों
के बीच
दरमियाँ

रिया-ओ-मक्र = छलकपट

दर-आना = अन्दर जाना

जसारत = दिलेरी
अजीमत = बहादुरी

अभिमान्यु बोला किन्हे دشو اس اب مجھ پر
مگر جو بات ہے اسکو بیان کرتا ہوں میں تم سے
کہ جب میں گریہ میں تھا سیکس مجبور بے یارا
اسی عالم میں دوران تکلم میں بصد حسن
پتنے چکر دیو کے فن یہ کافی روشنی ڈالی
بتائیں ساری چالیں اور مہر اس لڑائی کے
نہایت غور سے مآبجی سب سنتی رہیں باتیں
یہ ساری باتیں میں بھی سن رہا تھا پیٹ کے اندر
پتائی صرف آدھا ذکر کر پائے تھے اس فن کا
تعب آپ کو ہو گا یہ میری داستان سنکر
یقیناً جس کو سنکر تم بھی رہ جاؤ گے گم سم سے
مرے مآبجی لیتے تھے اور سو یا تھا جگ سارا
اچانک دریاں میں پھر گیا تھا چکر دیو کا فن
کوئی تہرہ دفاع و جارحیت سے نہ تھا خالی
طریقے بھی بتاتے جاتے تھے زور آزمائی کے
وغایں سرفروشی اور ریا و مکر کی گھماتیں
اچانک میری مآبجی کو گھیر نیند نے آکر
کہ ماں کو نیند آنے سے ادھوری رہ گئی وریا

یہ شہر نے دیا اذن و عنا اپنے بھتیجے کو

اسی کی وجہ سے مجھ کو ادھور یا یاد ہے یہ فن
فقط اس دائرے میں مجھ کو در آتا تو آتا ہے
مجھے معلوم ہے انجرام اب اپنی جسارت کا
ادھور افن بس ہے آرزوں کا مری دشمن
ویسے واپسی کی فکر سے دل کانپ جاتا ہے
نیتجہ موت کی صورت میں نکلے گا غمیت کا



بلا سے کچھ بھی ہو لیکن اجازت چاہتا ہوں میں
یہ شہر نے سنا جس دم ابھینو کا یہ بھاشن
مدد کرنے تمہاری پشت پر ہم ہونگے بیدل میں
لو اس شان سے کہ بھول جائیں لوگ آج کو
ابھینو یہ شہر سے اجازت پا چکا جس دم
پھر اپنے نین کی جوتی سے بار آور کیا اسکو
پھر اس کے بعد وہ لوٹا محاذ جنگ کی جانب
جہاں تھا پکڑیو کا دیو اسکی بھینٹ کا طالب

اٹھانی کو روانے چکر دیو کی پہلی پسپائی

ابھینو مسلح ہو کے سینہ تان کر نکلا
بڑھا عزم و یقیں کے ساتھ میدانِ شجاعت
کماں تھی ہاتھ میں ترکش کا بندل پشت پر ڈالے
کھجا جاتا تھا دل میں ہر روش پر باپچن اس کا
درق نہ بنید اور کرن پہلے سامنے لے کر
علا شاندار ہونا

گلے ملنے قتل سے جی میں اپنے ٹھکان کر نکلا
نہ تھا کم ہمتی کا کوئی عنصر اس کی فطرت میں
زیر تہی زیب تن لگے ہوئے تھے تیغ اور بھالے
قدم کو چومنے خود بڑھ رہا ہو جیسے رن اس کا
ابھینو پہ بارش آتشیں تیروں کی برسائے

بلا سے کچھ بھی ہو لیکن اجازت چاہتا ہوں میں
اٹا اب کی جیغ، ڈجنے-شہادت چاہتا ہوں میں
یوڈیٹیر نے سنا جس دم، ابھینو کا یہ بھاشن
اجازت دے کے بولے جاؤ، توڑو کبر دیو دھن
مدد کرنے تمہاری پشت پر، ہم ہوں گے مہدائے میں
لگاؤ جوتی بھینٹ کے خطر تیروں کے طوفان میں
نرمانہ یاد رکھو شہر تک کار تیشیں کو
گیا گھر اپنی بیوی سے بلا ہو کر خوش و خرم
دفا و مہر کا انمول گوہر دے دیا اسکو
جہاں تھا پکڑیو کا دیو اسکی بھینٹ کا طالب

اٹھانی کورواں نے چکر دیو کی پہلی پسپائی

ابھینو مسلح ہو کے سینہ تان کر نکلا
بڑھا عزم و یقیں کے ساتھ میدانِ شجاعت
کماں تھی ہاتھ میں ترکش کا بندل پشت پر ڈالے
کھجا جاتا تھا دل میں ہر روش پر باپچن اس کا
درق نہ بنید اور کرن پہلے سامنے لے کر
علا شاندار ہونا

ابھینو شہادت = یوڈیٹیر
مرنے کی آواز

کیر = گھر

جمن = جلا

تھائیون = شاندار

نارین = ڈنڈ

کڑا = مہر



یہ سب دوسرے بٹکانے تھا جنگ میں کوئی ثانی
 ابھی تک کہ آرائی تھی محسوس نہ تھی میں!
 لڑائی ہو رہی تھی چکر دیو کے غاص تھے میں
 نہ حاصل کر سکا تھا کوئی جنگی منفعت اب تک
 اٹھائی کورواں نے چکر دیو کی پہلی پسپائی
 دیران و غابور تھے تیروں کے طوفان سے

دریودھن کا بیٹا لکشمی ابھیمنو کے مقابلے میں

ابھیمنو کو موقع مل گیا کورواں کے ہٹنے سے
 لڑائی چھڑ گئی تھی چکر دیو کی چکر کے اندر
 کبھی بڑھ کر صنف کورواں کو وہ پلٹ دیتا
 بدھ بھی ٹوٹتا تھا کالی جیسے لوگ پھٹتے تھے
 اپنا تک سامنے دیکھا تو دریودھن کا اک بیٹا
 ابھیمنو نے جب اس نوجوان کو سامنے پایا
 تیری! پرورش تیری ہوئی ہے کس جھڑپ سے
 تیرے مانباپ نے پالا ہے کتنے ناز و نعمت سے

یہ سب دوسرے بٹکانے تھا جنگ میں کوئی ثانی
 ابھی تک کہ آرائی تھی محسوس نہ تھی میں!
 لڑائی ہو رہی تھی چکر دیو کے غاص تھے میں
 نہ حاصل کر سکا تھا کوئی جنگی منفعت اب تک
 اٹھائی کورواں نے چکر دیو کی پہلی پسپائی
 دیران و غابور تھے تیروں کے طوفان سے

دुरیودھن کا بیٹا لکشمی ابھیمنو کے مقابلے میں

ابھیمنو کو موقع مل گیا کورواں کے ہٹنے سے
 لڑائی چھڑ گئی تھی چکر دیو کی چکر کے اندر
 کبھی بڑھ کر صنف کورواں کو وہ پلٹ دیتا
 بدھ بھی ٹوٹتا تھا کالی جیسے لوگ پھٹتے تھے
 اپنا تک سامنے دیکھا تو دریودھن کا اک بیٹا
 ابھیمنو نے جب اس نوجوان کو سامنے پایا
 تیری! پرورش تیری ہوئی ہے کس جھڑپ سے
 تیرے مانباپ نے پالا ہے کتنے ناز و نعمت سے

مجرعہ-آراہی = لکشمی

مجرعہ-آراہی = لکشمی

مجرعہ-آراہی = لکشمی

مجرعہ-آراہی = لکشمی

مجرعہ-آراہی = لکشمی

مجرعہ-آراہی = لکشمی

مجرعہ-آراہی = لکشمی

توجہ ہے مجھے اس کمسنی میں تیری ہمت پر
تیرے شوق و غا اور تیری اس جسارت پر

خواب بن کے تو آیا ہے اس سن میں سر میلاں
لڑکپن میں یہ کھیل اچھا کہاں ہوتا ہے ناداں

ہے اب بھی وقت بس تو لو جالوان شاہی میں
نہ ڈال اپنے کو ناہک، اس ہلاکت اور تباہی میں

ابھی ہے عمر کیا تیری ترس کھا اپنی حالت پر
اس اپنے جسم شیشہ تاب اور معصوم صورت پر

یہ تیرا پھول سا نازک بدن یہ عمر یہ اراں
قدم رکھا ہے تو نے سبزہ آغاز میں ناداں

علاوہ اسکے کیا دیکھا، تو نے زندگانی میں
نہ دھکت تو اپنی موت کو اٹھتی جوانی میں

لکشمण मौत की आगोश में

سُنی جب لکشمण نے اسکی تیس جوش میں آیا
بدن میں خوں خویلا، سोंپ کی مانیند بول خواہا

کہا اُس نے ابھیمنو، نہ جلا فوقیت اپنی
کھا اُس نے ابھیمنو، نہ جلا فوقیت اپنی

میں چھتری ہوں مجھے آتا ہے کھانا پٹاؤں سے
خران راشقی آتا ہے لینا پہلو انوں سے

نہ دے طعنہ مجھے تو کمسنی کا تو بھی کمسن ہے
نہ دے طعنہ مجھے تو کمسنی کا تو بھی کمسن ہے

وہ کوئی اور ہوگا تو تیری دھمکی میں آئیگا
دکھا کر پشت میدانِ دغا سے بھاگ جائیگا

مجھے کائر سمجھ کر ٹاننا تیری طاقت ہے
حقیقت میں یہی تو ہے وقوف کی علامت ہے

مُہارِیخ = لڑنے والا

پنہانے-شاہی = راجہ

فوکیت = بھارت

کمسن = کم عمر

توجہ ہے مجھے اس کمسنی میں تیری ہمت پر
تیرے شوق و غا اور تیری اس جسارت پر

خواب بن کے تو آیا ہے اس سن میں سر میلاں
لڑکپن میں یہ کھیل اچھا کہاں ہوتا ہے ناداں

ہے اب بھی وقت بس تو لو جالوان شاہی میں
نہ ڈال اپنے کو ناہک، اس ہلاکت اور تباہی میں

ابھی ہے عمر کیا تیری ترس کھا اپنی حالت پر
اس اپنے جسم شیشہ تاب اور معصوم صورت پر

یہ تیرا پھول سا نازک بدن یہ عمر یہ اراں
قدم رکھا ہے تو نے سبزہ آغاز میں ناداں

علاوہ اسکے کیا دیکھا، تو نے زندگانی میں
نہ دھکت تو اپنی موت کو اٹھتی جوانی میں

لکشمण मौत کی آغوش میں

سُنی جب لکشمण نے اسکی تیس جوش میں آیا
بدن میں خوں کھولا سانپ کی مانند بل کھایا

کہا اُس نے ابھیمنو، نہ جلا فوقیت اپنی
نہ میری فکر کر تو سوچ پہلے عافیت اپنی

میں چھتری ہوں مجھے آتا ہے کھانا پٹاؤں سے
خران راشقی آتا ہے لینا پہلو انوں سے

نہ دے طعنہ مجھے تو کمسنی کا تو بھی کمسن ہے
نہ دے طعنہ مجھے تو کمسنی کا تو بھی کمسن ہے

وہ کوئی اور ہوگا تو تیری دھمکی میں آئیگا
دکھا کر پشت میدانِ دغا سے بھاگ جائیگا

مجھے کائر سمجھ کر ٹاننا تیری طاقت ہے
حقیقت میں یہی تو ہے وقوف کی علامت ہے

یہ سنتے ہی ابھیمنوں کے فوراً چڑھ گئے توڑ
چڑھایا تو اس کا چلہ پھر اس نے غیظ میں کر
وہیں سے شہت باندھی اس نے فوراً دو قدم ہٹکے
کماں کو اپنی کھینچا زور دیکر پوری قوت سے
گھسا جوشن میں پشت لکھن کو توڑ کر نکلا

ابھیمنوں کے طرز جنگ — پر کوروں کو پریشانی

ابھیمنوں کے طرز جنگ سے سب دیریناں تھے
درود چاریہ بھی اس گھڑی بعد پریشاں تھے
مثال جن کے تھی اس نوجواں کی رزم آرائی
وہی چھب ڈھب ہی تو رہی لڑنے میں پٹرائی
جو اس کے سامنے آتا وہ اپنی جان بچاتا
قضا کا دوت پیغام اجل پر لوک سے لاتا
انہیں ضرب ابھیمنوں سے لاحق تھا یہ اندیشہ
نہ کر دے ختم اک اک ویر کو اب یہ تم پیشہ
وہاں فوراً انھوں نے سارے سرداروں کو بلا کر
کیا اک مشورہ سمجھ گئی سے غور فرما کر
کہ اس حالت میں لڑنا تو یقیناً اک حماقت ہے
اکیلے ہر بشر کے جنگ کر نہیں ہلاکت ہے
میرا تو مشورہ یہ ہے کہ ہم سب متحد ہو کر
کریں بھر پور یورش پادوں جانب اگر اس پر
تو ممکن ہے اسے پر لوک کی ہم راہ کھلائیں
اجل کی گود میں سب دیر لکر اس کو پہنچا دیں

یہ سناتے ہی ابھیمنوں کے فوراً چڑھ گئے توڑ
چڑھایا تو اس کا چلہ پھر اس نے غیظ میں کر
وہیں سے شہت باندھی اس نے فوراً دو قدم ہٹکے
کماں کو اپنی کھینچا زور دیکر پوری قوت سے
گھسا جوشن میں پشت لکھن کو توڑ کر نکلا

ابھیمنوں کے تہجے-جنگ پر کوروں کو پریشانی

ابھیمنوں کے تہجے-جنگ سے سب ویر ہارے تھے
دروناचार्य بھی اس غڈی، بہت پریشاں تھے
میشال ارجون کے یہی اس نوجواں کی رزم آرائی
وہی چھب ڈھب، وہی تہجے، وہی لڑنے میں چتورائی
جو اس کے سامنے آتا وہ اپنی جان سے جاتا
قضا کا دوت پیغام اجل پر لوک سے لاتا
انہیں ضرب ابھیمنوں سے لاحق تھا یہ اندیشہ
نہ کر دے ختم، ایک ایک ویر کو، اب یہ سیتام پشہ
وہاں فوراً انھوں نے سارے سرداروں کو بولوا کر
کیا اک مشورہ سمجھ گئی سے غور فرما کر
کہ اس حالت میں لڑنا تو یقیناً اک حماقت ہے
اکیلے ہر بشر کے جنگ کر نہیں ہلاکت ہے
میرا تو مشورہ یہ ہے کہ ہم سب متحد ہو کر
کریں بھر پور یورش پادوں جانب اگر اس پر
تو ممکن ہے اسے پر لوک کی ہم راہ کھلائیں
اجل کی گود میں سب دیر لکر اس کو پہنچا دیں

نکالا = تیر لکھنے کا
بھا

جوشن = جوش

تہجے-جنگ = جنگ کرنے کا
ڈن

موتلہد = میلکار

اجل = موت

ہوئے اس مشوک پر متفق جنگ آزماساے کے اس ضمن میں مامور فوراً سات ہتھیارے

درخشاں ہو گئے جن کی ضیا پاشی سے نطاے

یہ ساتوں نامور رن ویر یحیائے زمانہ تھے
 نہ تھا انکا کوئی ثانی وہ ہر فن میں یگانہ تھے
 بڑھے ہر سمت سے چرخ و غلے کے سیار
 درخشاں ہو گئے جنکی ضیا پاشی سے نطاے
 اکیلی جاں پردھاوا سب سے شیران و غا تھا
 خدنگ قوس کی پوش کا وہ منظر بلا کا تھا
 کسی جانب سے کرپہ اور کسی جانب دیو دھن
 بڑھے سمت ابھینو، درونہ کرن و دشاشن
 لڑائی چھڑ گئی پھر عکس و یوں پوری شدت سے
 خدنگ آتش چلنے لگے ہر سمت سرعت سے
 ابھینو کے رتھ کو کاٹ ڈالا سورماؤں نے
 سر میں اکیلی جاں کو گھیرا تھا بلادوں نے
 غرض کوردوں کے زخمی میں لکھنوی تھا استادہ
 کہ جسے شیر پر ہوں بھڑیے پوش پہ آمادہ
 نہ جانے تن پر اپنے کھا چکا تھا زخم و کتنے
 بہر لمحہ قریب آتے بے شیطان کے فتنے
 اچانک اس کے سینہ پر لگی دوبارہ ضرب ایسی
 کہ غش کھا کر ابھینو گرا، اور کانپ اٹھی دھرتی

مبارک باد ایسی موت پر اور ایسے جینے پر

جو مر جائے و غایم زخم کھا کر اپنے سینے پر

ملہ رتھ کو کاٹنا اس زمانے کا محاورہ ہے۔ علاوہ اس کے اس زمانے میں تیروں نے پہل تیشہ و پھرسا کے مانند بھی ہوتے تھے جن سے تلوار کی طرح سرکٹ کر گر جاتے تھے۔

ہوئے اس مشوک پر متفق جنگ آزماساے کے اس ضمن میں مامور فوراً سات ہتھیارے
 کئے اس جیمن میں مامور فوراً سات ہتھیارے

درخشاں ہو گئے جن کی ضیا پاشی سے نطاے

یہ ساتوں نامور رن ویر یحیائے زمانہ تھے
 نہ تھا انکا کوئی ثانی وہ ہر فن میں یگانہ تھے
 بڑھے ہر سمت سے چرخ و غلے کے سیار
 درخشاں ہو گئے جنکی ضیا پاشی سے نطاے
 اکیلی جاں پردھاوا سب سے شیران و غا تھا
 خدنگ قوس کی پوش کا وہ منظر بلا کا تھا
 کسی جانب سے کرپہ اور کسی جانب دیو دھن
 بڑھے سمت ابھینو، درونہ کرن و دشاشن
 لڑائی چھڑ گئی پھر عکس و یوں پوری شدت سے
 خدنگ آتش چلنے لگے ہر سمت سرعت سے
 ابھینو کے رتھ کو کاٹ ڈالا سورماؤں نے
 سر میں اکیلی جاں کو گھیرا تھا بلادوں نے
 غرض کوردوں کے زخمی میں لکھنوی تھا استادہ
 کہ جسے شیر پر ہوں بھڑیے پوش پہ آمادہ
 نہ جانے تن پر اپنے کھا چکا تھا زخم و کتنے
 بہر لمحہ قریب آتے بے شیطان کے فتنے
 اچانک اس کے سینہ پر لگی دوبارہ ضرب ایسی
 کہ غش کھا کر ابھینو گرا، اور کانپ اٹھی دھرتی

موت فیکر = مہمان

چرخے-وگا = یو دھ میں
 لڑنے والے
 سب سے مہمان
 میتاے
 درخشاں = روشن
 ضیا پاشی = چمک
 خدنگ-کوس = تیر
 اور کمان

خدنگ-آتش = آگ
 کے چلنے

نرگا = چہرا

۱) رن کو کاٹنا اس زمانے کا محاورہ ہے، اسی طرح اس کے اس زمانے میں تیروں کے فٹ تیشا و پھرسا کے
 مانند بھی ہوتے تھے جن سے تلوار کی طرح سرکٹ کر گر جاتے تھے۔



اچانک آگیا ارجن، کس سے اپنے منڈل میں

ایہمنو کے مرجانے سے چھایا سوگ کا عالم
سبھا اشک نری کر رہی تھی سبکیاں بھکے
یہ کیا معلوم تھا بیٹا تو رن میں مارا جائے گا
ایک لہم تجھے جانے نہیں دیتے سرسیداں
یہی ہے فکر اب کیسے مٹے گا اضطراب اُس کا
یہاں سب ہیں ایہمنو نظر آتا نہیں مجھ کو
یہ ہشتہر نے سنانی چکر دیو کی اُس کو سب باتیں
اچانک بچھ گئی پانڈو کے منڈل میں صفِ ماتم
یہ ہشتہر اور پانڈو روہے تھے بن کر کر کے
مخاض جنگ پر کوڑوں کے ہاتھوں کا ٹھکانا
نہ مطلق چھوڑتے تھے تھے یوں بے سُر ساماں
اسے اس ماتی ماحول نے صدمہ سا پہنچایا
کہاں ہے وہ بتاؤ لے چلو اسکے قریں مجھ کو
بتائیں دیر ارجن کو، نبرد و جنگ کی گھاتیں

دگر اسکے بتائی جیہد رت کی فتنہ سامانی

بیاں کی ہر قدم پر اس کی تحریکاتِ شیطانی

اچانک آ گیا ارجن کہیں سے اپنے منڈل میں

अभिमन्यु के मरजाने में, छाया योग का आलम।
अचानक बिल गई पान्डव के मंडल में जो याम।
सुभद्रा अटक रेजी कर रही थी विधिविधायी मर के।
युधिष्ठिर और पान्डव रो रहे थे जैन कर कर के।
यह क्या मालूम था बेटा, नू रण में आया आलम।
महाजे-जंग पर कौरों के हाथों ब्रह्म उठापण।
अकेला हम तुझे जाने नहीं देते बरे-मैदाँ।
न मुतलक छोड़ते तन्हा, तुझे यूँ ब्रे-सरो-सामाँ।
कहेगे उस से आखिर क्या, जो अर्जुन हम से पूछेगा।
यही है फिक्र, अब कैसे, मिटेगा डग्नतेराब उभरा।
यूँही थे महवे-गिरयाँ, पान्डवाँ मैदाने-मरुतल में।
अचानक आगया अर्जुन कहीं से अपने मंडल में।
वहाँ चारों तरफ़ इक सोग का आलम नजर आया।
उसे इस मातमी माहौल ने, सदमा सा पहुँचाया।
युधिष्ठिर से मुखतिब हो के पूछा माजरा क्या है।
सभी आजुर्दा हैं, आखिर बताओ तो हुआ क्या है।
यहाँ सब हैं अभिमन्यु नजर आता नहीं मुझको।
कहाँ है वह बताओ, ले चलो, उसके करी मुझको।
युधिष्ठिर ने सुनाई चक्रव्यूह की उसको सब बातें।
बताई वीर अर्जुन को नबदों-जंग की घातें।
दिगर इसके बताई जयद्रथ की फितना सामानी।
बयाँ की हर कदम पर उसकी, तहरीकाते-शैतानी।

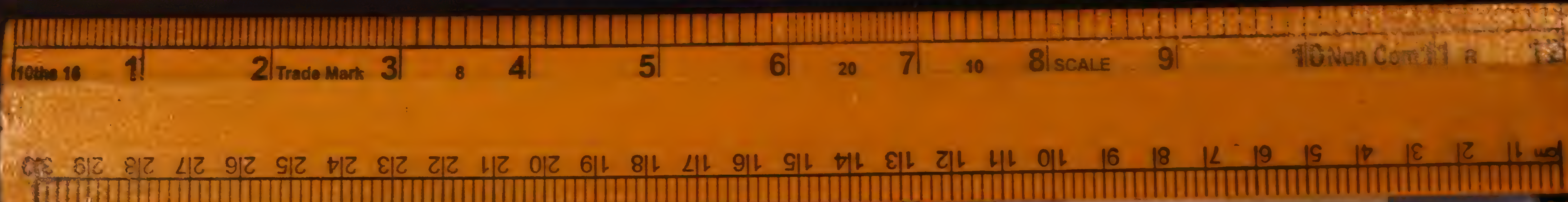
अचानक-रेजी = अचानक
उठाना

उठाना = उठाना

महवे-गिरयाँ = गेने में
मरुतल

आजुर्दा = दुकी

करी = पास



آرجن کی پڑگیا

سُنی آرجن نے یوں تو ضبط یہ داستاں ہی
مگر پیشِ نظر جب حیدرت کی نئی ہزاری
ہوا یکلخت برہم حیدرت کی اس کاوش پر
کہ پائند کو نہ ہو گھٹنے دیا تھا چکر کے اندر
فقط اس بتر پر آرجن نے کافی مشتعل ہو کر
یہ کی پڑگیا ہل ہی اُسے سنگرام کے اندر
غروبِ مہر سے پہلے میں اس ظالم کو مارو نکلا
و غایں حیدر کو کل فنا کے گھاٹ اُتارو نکلا
غروبِ مہر سے پہلے اگر اس بائی شر کو
معاذِ جنگ پر میں نے نہ کل مارا سنگم کو
تو میں لاریب اس کے بعد اپنی جان دیدوں گا
چتا میں بیٹھ کر خود اپنے تن کو بھسم کروں گا
ہوئی پڑگیا آرجن کی فوراً مستہر ہو سو!
فضا میں پر فشاں ہو جائیے مشک کی خوشبو

اُسے حیرت ہوئی سورج کے فوراً ڈوب جانے پر

وہی تھا دوسرے دن بھی معاذِ جنگ کا عالم
وہی تھا ولولہ دل میں وہی تھا عزمِ مستحکم
تلاشِ حیدر میں صبح سے آرجن پریشان تھا
مگر آرجن کا اُس کو دھونڈنا کب کا راساں تھا
دہ چونکہ آج تمہاراں میں درونہ کی حقیقتیں
ہزاروں ویرِ نطفہِ ماقدم تھے معیت میں

آرجن کی प्रतिज्ञا

سُنی آرجن نے یوں تو، جتن سے یہ داستاں ساری
مگر پشہ-نجر جتن جیوہ کی آئی دھوا ساری
ہوا یکلخت برہم جیوہ کی اس کاوش پر
کہ پائند کو نہ ہو گھٹنے دیا تھا چکر کے اندر
فقط اس بتر پر آرجن نے کافی مشتعل ہو کر
یہ کی پڑگیا ہل ہی اُسے سنگرام کے اندر
غروبِ مہر سے پہلے میں اس ظالم کو مارو نکلا
و غایں حیدر کو کل فنا کے گھاٹ اُتارو نکلا
غروبِ مہر سے پہلے اگر اس بائی شر کو
معاذِ جنگ پر میں نے نہ کل مارا سنگم کو
تو میں لاریب اس کے بعد اپنی جان دیدوں گا
چتا میں بیٹھ کر خود اپنے تن کو بھسم کروں گا
ہوئی پڑگیا آرجن کی فوراً مستہر ہو سو!
فضا میں پر فشاں ہو جائیے مشک کی خوشبو

اسے ہیرت ہوئی سورج کے فौरن ڈوب جانے پر

وہی تھا دوسرے دن بھی معاذِ جنگ کا عالم
وہی تھا ولولہ دل میں وہی تھا عزمِ مستحکم
تلاشِ حیدر میں صبح سے آرجن پریشان تھا
مگر آرجن کا اُس کو دھونڈنا کب کا راساں تھا
دہ چونکہ آج تمہاراں میں درونہ کی حقیقتیں
ہزاروں ویرِ نطفہِ ماقدم تھے معیت میں

جتن = جیوہ

گروبہ-مہر = غروب
دُکھا = دکھ

لاریب = لاریب

کارے-آساں = آساں
ہام
ہیفجے-ما-تک-دوم =
پہلے سے لڑا تھا کرتا
مہیبت = مہیبت

ن پایا صبح از تاشام آرجن نے سراغ اُسکا
 نہایت بے جگر ہو کر بھپٹتا تھا وہ دشمن پر
 کبھی اگنی کی بارش اپنے بانوں سے وہ برساتا
 اسی انداز سے لڑتا رہا دن بھر وہ دشمن سے
 اسی امید میں آخر قریب وقت شام آیا
 یکایک دیکھتا گیا ہے اندھیرا ہو گیا ہر سو
 اسے حیرت ہوئی سورج کے فوراً ڈوب جا پرنے
 ن پایا صبح از تاشام آرجن نے سراغ اُسکا
 وہی ایک وجہ سے تھا مشتعل دل اور داغ اُسکا
 نہایت بے جگر ہو کر بھپٹتا تھا وہ دشمن پر
 کبھی اگنی کی بارش اپنے بانوں سے وہ برساتا
 اسی انداز سے لڑتا رہا دن بھر وہ دشمن سے
 اسی امید میں آخر قریب وقت شام آیا
 یکایک دیکھتا گیا ہے اندھیرا ہو گیا ہر سو
 اسے حیرت ہوئی سورج کے فوراً ڈوب جا پرنے

مُشتعل = تھکرا ہوا

تَنکِید = آलोचना

अर्जुन चिता की सप्त

गुरुबे-महर पर प्रतिज्ञा के पूरा करने का।
 तकाजा सब का अर्जुन से हुआ, फिर जल के मरने का।।
 मुताबिक शर्त के अर्जुन नजर आता था आमादा।
 ब मजबूरी चिता में, भस्म होने पर था इस्तादा।।
 यह मंजर देखने को जमा थे, सब दोस्त और दुश्मन।
 द्रोणा, जयद्रथ, कृपा, श्री घनश्याम, दुश्शासन।।
 अलावा उन के हाजिर थे वहाँ काफी तमाशाई।
 चिता को देखने हर सप्त से खिलकत उमड़ आई।।
 फिर उसके बाद अर्जुन ने श्री घनश्याम को देखा।
 नजर भर कर ब हसरत, पैकरे-कराम को देखा।।

खिलकत = जनता

पैकर-कराम = बड़ा
दयालू

ن پایا صبح از تاشام آرجن نے سراغ اُسکا
 نہایت بے جگر ہو کر بھپٹتا تھا وہ دشمن پر
 کبھی اگنی کی بارش اپنے بانوں سے وہ برساتا
 اسی انداز سے لڑتا رہا دن بھر وہ دشمن سے
 اسی امید میں آخر قریب وقت شام آیا
 یکایک دیکھتا گیا ہے اندھیرا ہو گیا ہر سو
 اسے حیرت ہوئی سورج کے فوراً ڈوب جا پرنے
 اُسی اک نبض سے تھا مشتعل دل اور داغ اُسکا
 جو آتا سامنے باقی نہ رہتا اُسکا سر تن پر
 کبھی آندھی کبھی طوفان کا نطفہ رہ دکھلاتا
 مگر حسرت بونٹی لپٹی رہی آرجن کے دامن سے
 نہ اب تک جید رست کو وہ ٹھکانے سے لگایا
 غروب مہر پر آرجن نہ دل پر رکھ سکا قابو
 کرتے تنقید کیا کوئی خدا کے کارخانے پر

अर्जुन चिता की सप्त

غروب مہر پر پرتگیتا کے پورا کرنے کا
 مطابق شرط کے آرجن نظر آتا تھا آمادہ
 یہ منظر دیکھنے کو جمع تھے سب دوست اور دشمن
 علاوہ ان کے حاضر تھے وہاں کافی تماشاخانے
 پھر اُس کے بعد آرجن نے شری گھنشیام کو دیکھا
 تقاضہ سب کا آرجن سے ہوا پھر جل کے مرنے کا
 بہ مجبوری چیتا میں بھسم ہونے پر تھا استادہ
 درد نہ جید رہا، کرپہ شری گھنشیام و شاشن
 چتا کو دیکھنے ہر سبت سے خلقت اند آئی
 نظر بھر کر بہ حسرت پیکر کر آم کو دیکھا

اور اپنا تیر کھٹا رکھ دیا حسرت سے دھرتی پر
کی پالان کر سکے پر تیر کا وہ چٹالے کر،

مگر آج کو فوراً بڑھ کے مری شیم نے روکا
کمان اور باण کو यूँ छोड़ देने पर उसे टीका ॥

कि जो रणवीर होता है, सलाह-ओ-हरबा और सब 'अस्त्र'
व वक्ते-मर्ग रखता है, वह अपने साथ अपना 'शस्त्र' ॥

बता अब किस लिए, तीरो-कर्मों को छोड़ता है तू।
कुजा के रूबरू, हथियार से मुँह मोड़ता है तू ॥

उठा ले तीर और कम्हा चिता में जल के तू मरजा।
अदाए-शर्त की खातिर, यह इतना काम भी कर जा ॥

श्री कृष्ण का करिश्मा

और जयद्रथ का हथ्र

सुना इरशाद अर्जुन ने, श्री घनश्याम का जिस दम ।
उठाया तीर कम्हा दौड़ कर और हो गया खुर्रम ॥

नज़र आई उसे, इस में भी हिकमत, अपने मोहसिन की।
कि खाली मसलेहत से थी, न मुतलक गुप्तगू जिन की ॥

इसी अंदाज़ की खुश-फ़हमियों में मुबतेला होकर।
चिता की सप्त फिर आगे बढ़ा अर्जुन व करोफ़र ॥

जूँही पहुँचा चिता के सामने, वह जल के मरने को।
श्री घनश्याम ने फौरन कहा, उसको ठहरने को ॥

न कर उजलत, ठहर अर्जुन कहाँ दूबा भला सूरज।
सुदर्शन चक्र के साए के पीछे है छिपा सूरज ॥

यह सुनते ही फ़जा में छा गया आलम तहय्युर का।
समझ पाया न मंशा कोई भी उसके तदब्बुर का ॥

श्री घनश्याम ने काया से अपनी चक्र सरकाकर।
कहा यह वीर अर्जुन से करिश्मा अपना दिखलाकर ॥

१) अस्त्र वह हथियार, जो दुश्मन पर दूर से चलाया जाता है, जैसे तीर वगैरा।

२) शस्त्र वह हथियार, जिस से करीब से वार किया जाए, जैसे तलवार खंजर वगैरा।

वक्ते पृग = मृत्यु का
ममय

इरशाद = कोई बात
कहना
खुर्रम = खुश

तहय्युर = हैरत
तदब्बुर = अकलमंदी

اور اپنا تیر کھٹا رکھ دیا حسرت سے دھرتی پر
کمان اور باण کو यूँ छोड़ देने पर उसे टीका ॥
कि जो रणवीर होता है, सलाह-ओ-हरबा और सब 'अस्त्र'
व वक्ते-मर्ग रखता है, वह अपने साथ अपना 'शस्त्र' ॥
बता अब किस लिए, तीरो-कर्मों को छोड़ता है तू।
कुजा के रूबरू, हथियार से मुँह मोड़ता है तू ॥
उठा ले तीर और कम्हा चिता में जल के तू मरजा।
अदाए-शर्त की खातिर, यह इतना काम भी कर जा ॥

شری کرشن کا کرشمہ اور جیدرت کا حشر

سنا ارشاد آج نے شری گھنشیام کا جس دم
نظر آئی اسے ہمیں بھی حکمت اپنے محسن کی
اسی انداز کی خوش فہمیوں میں مبتلا ہو کر
جو نہی پہنچا چتا کے سامنے وہ چل کے مرنے کو
نہ کر عجلت، نہر آج کہیں دوبا بھلا سوچ
یہ سنستے ہی قضائیں چھا گیا عالم تحسیر کا
شری گھنشیام نے کایا سے اپنی چکر سرکا کر
کھا یہ ویر آج سے کرشمہ اپنا دکھلا کر
لے آئے وہ ہتھیار جو دشمن پر دُور سے چلایا جیسے تیر وغیرہ۔ لے آئے وہ ہتھیار جس سے قریب سے وار کیا جائے جیسے تلوار وغیرہ

कि अर्जुन देख सूरज है, उधर आकाश पर रोशन।
 इधर यह जयद्रथ है सामने, जो है नेरा दुश्मन॥
 उठा तीरो-कमाँ क्या देखता है, सर कलम कर दे।
 तने-नापाक से, मग़र सर का, बार कम कर दे॥
 यह सुनते ही अचानक, खिंच गया चिल्ला कमानी का।
 हुआ फिर जोश-जन, रग रग में खूँ, उसकी जवानी का॥
 खदंगे-आहनी फौरन, कमाँ से जोड़ कर उसने।
 निशाना लेके देखा, श्याम को रुख मोड़ कर उसने॥
 इशारा पाते ही खींचा, कमाँ को पूरी कुवत से।
 कृपा का तीर झपटा, जयद्रथ की मम्म मुरझत से॥
 खदंगे-आहनी ने, उसके तन से यूँ उड़ाया सर।
 गिरा सर उसका, अपने बाप की आगोश में जाकर॥

बार = जोश

खदंगे-आहनी = फोनादी तीर

द्रोणाचार्य पर बे लाग तबसेरा

द्रोणाचार्य उस दौर में, डक मर्दे-आकिल थे।
 मुअल्लिम थे, मुदख़िर थे, बड़े जीरक थे, काविल थे॥
 फनूने-जंग के माहिर थे, और उस्ताद थे सब के।
 फने-जंग-ओ-जदल, सीखा था जिन से, कौरो पांडव ने॥
 अलावा इसके उन से दूसरे भी फैज़ पाते थे।
 पै-ताजीम खिदमत में, अदब से सर झुकाते थे॥
 मगर यह भी अजब है खास्सा इन्साँ की फितरत का।
 कि इन्साँ कितना ही मालिक हो, इज्जत और बसीरत का॥
 अमल का उसके कोई सुस्त पहलू ऐसा होता है।
 कि जिस से आदमियत का विकार अफसुर्दा होता है॥
 द्रोणाचार्य भी एक इन्साँ थे बहर-सूरत।
 नज़र-अंदाज़ की जा सकती है, इस शकल में तोहमत॥

आकिल = बुद्धिमान
 मुअल्लिम = गुरु
 मुदख़िर = तदवीर करने वाला

फैज़ = लाभ

विकार = विभूति, स्थिरता

१) उस ज़माने में तीरों के फल तेशा के मानिन्द भी होते थे।

करा ज़ेन दिक्क सूरज है अदहर आकाश पर रोशन
 अमितात्रे कमाँ किया दिक़्ता है सरकम कर दे
 हुवा पहर जोश रन रग रग में खूँ अकी जवानी का
 नशाने लिके दिक़्ता श्याम कुरु मोर कुरुसने
 दफ़ा का तिर चिप्टा ज़िदरत की मम्म सरकसे
 नदंग अहनी ने अके तन से यों उड़ाया सर
 गिरा सर उसका, अपने बाप की आगोश में जाकर

द्रोण चारिये पर बے लाग تبصره

द्रोण चारिये अस दौर में, डक मर्दे-आकिल थे
 फनूने-जंग के माहिर थे, और उस्ताद थे सब के
 अलावा इसके उन से दूसरे भी फैज़ पाते थे
 पै-ताजीम खिदमत में, अदब से सर झुकाते थे
 मगर यह भी अजब है खास्सा इन्साँ की फितरत का
 कि इन्साँ कितना ही मालिक हो, इज्जत और बसीरत का
 अमल का उसके कोई सुस्त पहलू ऐसा होता है
 कि जिस से आदमियत का विकार अफसुर्दा होता है
 द्रोण चारिये भी एक इन्साँ थे बहर-सूरत
 नज़र-अंदाज़ की जा सकती है, इस शकल में तोहमत
 १) उस ज़माने में तीरों के फल तेशा के मानिन्द भी होते थे

حقیقت پوچھے تو ان کو حق کا ساتھ دینا تھا
یہی انصاف تھا باطل سے رخ کو موڑ لینا تھا
مگر ان پر اثر کافی تھا کوروں کی حکومت کا
اسی اک جذبہ سے بھرتے تھے دم انکی حیات کا
ادھر پانڈو کی قسمت میں لکھی تھی خواریِ ذلت
دروہ کی نظر میں اسلئے انکی نہ تھی وقعت
اگر پانڈو جوئے میں سلطنت اپنی نہیں کھوتے
دروہ نہ بھی انھیں کے حاشیہ داروں میں پھر ہوتے
یہی پھوٹی سی لغزش یوں نہ گیرائی کے قابل ہے
مگر تاریخ سازوں کے لئے یہ تم قاتل ہے
علاوہ اسکے ہے دستورِ قدرتِ حکم و انظر
ہمیشہ حق رہا کرتا ہے غالب اہلِ باطل پر
اسی قانونِ قدرت کے مطابق فیصلہ کن میں
دروہ نہ چارہ کا ہو گیا تھا روزِ روشن میں

دروہ کا ہر اک حربہ جنگ کے پار ہوتا تھا

مخاذِ جنگ میں تھا فیصلہ جس دن دروہ کا
بہت ہی شد و مد سے جنگ کا طوفان برپا تھا
دروہ نہ چارہ تھے اک عظیم المرتبت انسان
نہر تھی انکو، دشمن میں ہے کتنا عزم اور ایقان
یہ سب شگرد تھے جو رزمِ آرائی پہ باطل تھے
سکھایا تھا جنھیں لڑنا وہ آج انکے مقابل تھے
مگر استاد پھر استاد ہی ہوتا ہے کیا کہئے
گرو کے آگے کیا چیلوں کی وقعت ہے بھلا کہئے
عجب تیور عجب انداز سے ہر وار ہوتا تھا
دروہ نہ کا ہر اک حربہ جنگ کے پار ہوتا تھا
علا زہر

ہکیکت پوچھئے تو انکو، ہک کا साथ دینا تھا
یہی انصاف تھا، باطل سے رخ کو موڑ لینا تھا
مگر ان پر اثر کافی تھا، کوروں کی حکومت کا
اسی اک جذبہ سے بھرتے تھے دم، انکی حیات کا
ادھر پانڈو کی قسمت میں لکھی تھی خواریِ ذلت
دروہ کی نظر میں اسلئے انکی نہ تھی وقعت
اگر پانڈو جوئے میں سلطنت اپنی نہیں کھوتے
دروہ نہ بھی انھیں کے حاشیہ داروں میں پھر ہوتے
یہی پھوٹی سی لغزش یوں نہ گیرائی کے قابل ہے
مگر تاریخ سازوں کے لئے یہ تم قاتل ہے
علاوہ اسکے ہے دستورِ قدرتِ حکم و انظر
ہمیشہ حق رہا کرتا ہے غالب اہلِ باطل پر
اسی قانونِ قدرت کے مطابق فیصلہ کن میں
دروہ نہ چارہ کا ہو گیا تھا روزِ روشن میں

دروہ کا ہر اک حربہ جنگ کے پار ہوتا تھا

مخاذِ جنگ میں تھا فیصلہ جس دن دروہ کا
بہت ہی شد و مد سے جنگ کا طوفان برپا تھا
دروہ نہ چارہ تھے اک عظیم المرتبت انسان
نہر تھی انکو، دشمن میں ہے کتنا عزم اور ایقان
یہ سب شگرد تھے جو رزمِ آرائی پہ باطل تھے
سکھایا تھا جنھیں لڑنا وہ آج انکے مقابل تھے
مگر استاد پھر استاد ہی ہوتا ہے کیا کہئے
گرو کے آگے کیا چیلوں کی وقعت ہے بھلا کہئے
عجب تیور عجب انداز سے ہر وار ہوتا تھا
دروہ نہ کا ہر اک حربہ جنگ کے پار ہوتا تھا
علا زہر

خواری و ذلت =
آرامش

لغزش = گرتی
مسم = جگر

مورکمو - ارجھ =
گنیشا کی اور رونا
دروہ

ہک = یہاں
ارجھ - ان - مرنبات =
بڑے ہنر والا

بڑی خود اعتمادی سے نبرد آ رہے میدان میں
نمایاں شخصیت تھی ان کی آتش خیز طوفاں میں
صنوں پر صف آلتے جا رہے تھے آپ بڑھ بڑھ کر
لگا تھا ہر طرف کشتوں کا اک انبار دھرتی پر
کماں بس سمت بھی اٹھتی ادھر کھرام مچ جاتا
مخالف جنگ اک محشر کی صورت میں نظر آتا
غرض داد شجاعت دے رہے تھے آج بڑھ بڑھ کر
بلا کا خوف طاری ہو چکا تھا فوج پانڈو پر

کھنوا = کھنوا

گمے-فرجند سے دل پر ن اپنے رکھ سکے کا بھ

کृष्णा جی نے جب دیکھے درونہ کے یہ نظار
نہیں بھی روز روشن میں نظر آنے لگے تارے
بہت فکر و تردد میں پڑے تھے شیا م نواری
ادھر فوج پھر شہر پر تھا انکا خوف اک طاری!
اچانک اُن کو اُشوت بن درونہ کا خیال آیا
تو فوراً پھل کپٹ کا اک نرالا جال پھیلایا
وہاں موجود تھا اُس نام کا اک قیل زنگی بھی
مرتب کی بسرعت پھر وہیں تجویز اک ایسی
کہ پہلے گھیر کر ہاتھی کو تنہائی میں لے آئیں
پھر اس کے بعد گزرتی ہر جانب سے برساتیں
مریکا فیل، لیکن شور اُشوت کا چائیں گے
کہ اُشوت کی خبر سن کر درونہ دھوکا کھائیں گے
یہ منصوبہ پھر اس کے بعد عینی شکل میں آیا
درونہ نے فریب آفراسی اک جہ سے کھایا
لگائی مرگ اُشوت کی خبر نے ضرب اک کاری
یکایک ایک سکتہ سادرونہ پر ہوا طاری

فیلے-جنگی = کالہ
ہاتھی

مڑا = موت

۱) اُشوتیاما ابن درونہ چاریہ

بڑی خود اعتمادی سے نبرد آ رہے میدان میں
نمایاں شخصیت تھی ان کی آتش خیز طوفاں میں
صنوں پر صف آلتے جا رہے تھے آپ بڑھ بڑھ کر
لگا تھا ہر طرف کشتوں کا اک انبار دھرتی پر
کماں بس سمت بھی اٹھتی ادھر کھرام مچ جاتا
مخالف جنگ اک محشر کی صورت میں نظر آتا
غرض داد شجاعت دے رہے تھے آج بڑھ بڑھ کر
بلا کا خوف طاری ہو چکا تھا فوج پانڈو پر

غم نرند سے دل پر نہ اپنے رکھ سکے قابو

کرتناجی نے جب دیکھے درونہ کے یہ نظار
نہیں بھی روز روشن میں نظر آنے لگے تارے
بہت فکر و تردد میں پڑے تھے شیا م نواری
ادھر فوج پھر شہر پر تھا انکا خوف اک طاری!
اچانک اُن کو اُشوت بن درونہ کا خیال آیا
تو فوراً پھل کپٹ کا اک نرالا جال پھیلایا
وہاں موجود تھا اُس نام کا اک قیل زنگی بھی
مرتب کی بسرعت پھر وہیں تجویز اک ایسی
کہ پہلے گھیر کر ہاتھی کو تنہائی میں لے آئیں
پھر اس کے بعد گزرتی ہر جانب سے برساتیں
مریکا فیل، لیکن شور اُشوت کا چائیں گے
کہ اُشوت کی خبر سن کر درونہ دھوکا کھائیں گے
یہ منصوبہ پھر اس کے بعد عینی شکل میں آیا
درونہ نے فریب آفراسی اک جہ سے کھایا
لگائی مرگ اُشوت کی خبر نے ضرب اک کاری
یکایک ایک سکتہ سادرونہ پر ہوا طاری

۱) اُشوتیاما ابن درونہ چاریہ

جُہی سکتا ہوا طاری اچانک رک گئے بازو
غم فرزند سے دل پر نہ اپنے رکھ سکے قابو
مگر ان کو یقیں آتا تھا بیٹے کے مرنے کا
گماں باقی رہا اسوقت کے دنیا سے گزرنے کا

یہ شہر کی دروغ گوئی

اسی کارن درد نہ نے یہ شہر کو طلب کر کے
یہ شہر سچ بتا تمھیں اسے تو دور رہتا ہے
بتا مجھ کو مراد نہ کیا مارا گیا رن میں
یہ شہر گوگوں میں پڑ گیا اس بات کو سنکر
ضمیر اس بات پر راضی نہ تھا کہ جھوٹ وہ بولے
مگر حالات گردش سے مجبور سا ہو کر
کہ معنی جسکے اسوقت ہی کے مرنے کے نکلے تھے
یقیناً دار فانی سے گزرنے کے نکلے تھے

نہایت سنگدل بیگانہ درد محبت ہیں

درد نہ کو بول بیٹے کے مرنے کا یقیں جس دم
مزا کی کیفیت غیظ و غضب سے ہو گئی برہم

یوधिष्ठिर की दरोह गोई

इसी कारण द्रोणा ने, युधिष्ठिर को तलब करके।
खबर बेटे की जब पूछी, तो दिल भर आया रिक्त से।।
युधिष्ठिर सच बता मिथ्या से तू तो दूर रहना है।
जो सच्ची बात होती है, वही बर वक्त कहना है।।
बता मुझ को मेरा फरजन्द क्या मारा गया रण में।
मेरे तूरे-नजर की रूह, क्या बाकी नहीं तन में।।
युधिष्ठिर गोमगो में पड़ गया, इस बात को सुनकर।
कि आखिर दे द्रोणाचार्य को, कौन सा उत्तर।।
जमीर इस बात पर राजी न था, कि झूट वह बोले।
खुद अपने हाथ, जहरे-किज्ब, जामे-जीस्त में धोले।।
मगर हालाते-गिर्दों-पेश, से मजबूर सा होकर।
जवाब आखिर दिया मुबहम सा, एत्थर रख के सीने पर।।
कि माना जिसके, अश्वत ही के, मरने के निकलते थे।
यकीनन दारे-फानी से गुजरने के निकलते थे।।

निहायत संग दिल बेगाना-ए-दर्दे-मुहब्बत हैं

द्रोणा को हुआ बेटे के मरने का यकीं जिस दम ।
मिजाजी कैफियत, गैजो-गजब से, हो गई बरहम ।।

दरोग गोई = झूट बोलना

रिक्त = मदमे

मिथ्या = झूट

गोमगो = कह या ना
कहू

जमीर = आत्मा
जहरे-किज्ब = झूट का
जहर
जामे-जीस्त = जीवन का
प्याला
मुबहम = साफ बात न
कहना
दारेफानी = खत्म हो
जाने वाली दुनिया

نہایت جوش میں وہ پل پڑے تیر و کماں لیکر
 نہایت بنکے ٹوٹے ناگہاں پائند کے لشکر پر
 جدھر بڑھتے دھڑلا شوق اک انبار لگ جاتا
 دغا کی سہریں چرستہ کا نقشہ نظر آتا
 درونہ چاریہ کا بھیم نے دیکھا جو یہ عالم
 پکارا اے گرواے کارزار جنگ کے ضیغم
 جہاں میں مرگ نورالین کے غم سے کہیں بڑھ کر
 بتاؤ اور ہے غم، عالمِ ناسوت کے اندر؟
 مگر اک آپ میں عجیبے نیاز مرگِ استوت میں
 نہایت سنگ دل بیگانہ دردِ محبت میں
 برہمن ہیں مگر انداز ہیں پیکار کے ایسے
 کہ بن میں راکشش اک برسر پیکار جو جیسے
 مثالِ ضیغمِ خونخوار ہے بس آپ کی حالت
 اسی اک مہر سے ہم بھیجتے ہیں آپ پر لغت

درونہ چاریہ کا یوگ آسن اور سفر آخرت

درونہ چاریہ نے بھیم کی باتیں سنیں جسم
 بدل کر رہ گیا غیظ و غضب اور جوش کا عالم
 بالآخر صاحبِ سیف و قلم نے ہاتھ کوڑکا
 نبرد و جنگ کی تحریک کی ہر بات کوڑکا
 اتار اپھر سلاحِ جنگ اپنے آہستی تن سے
 ہوا خالی بدن اُن کا مہلیم سے اور جوش سے
 پڑے تھے تیر و کماں اور کماں سب کی دھڑکی
 کہیں تیغ و سپر بھلے کہیں جوش کہیں منفر
 وہ خود کو تیاگ دینے کے لئے فوراً سر میں
 لگا بیٹھے سادھی پر تھوہی پر صاحبِ فرزاں

نیہایت جوش میں وہ پل پڑے تیر و کماں لیکر
 کھامنت بن کے ٹوٹے نا-گاہوں پانڈو کے لاکر پر
 جیگر بڑھتے اُچر لاشوں کا ڈک اُتار لگا جاتا
 وگا کی سر جُملی پر ہتھ کا نکشا نجر آتا
 دھوٹاچارِ کا بھیم نے دیکھا، جو یہ عالم
 پکارا اے گرو، اے کارزارے-جنگ کے جیگم
 جہاں میں مڑو-نورالین کے غم سے کہیں بڑھ کر
 بتاؤ اور ہے گم، آلام-ناسوت کے اندر؟
 مگر اک آپ ہیں جو بے نیازی-مڑو-اُتار ہے
 نیہایت سنگ دل، بیگانہ-درد-محبت ہے
 براہمن ہیں مگر انداز ہیں، پیکار کے ایسے
 کہ بن میں راکشش، اک برسر پیکار جو جیسے
 مثالِ ضیغمِ خونخوار ہے بس آپ کی حالت
 اسی اک مہر سے ہم بھیجتے ہیں آپ پر لغت

دھوٹاچارِ کا یوگ آسن اور سفر آخرت

دھوٹاچارِ نے بھیم کی باتیں سنی جس دم
 بدل کر رہ گیا غیظ و غضب اور جوش کا عالم
 بالآخر صاحبِ سیف و قلم نے ہاتھ کوڑکا
 نبرد و جنگ کی تحریک کی ہر بات کوڑکا
 اتار اپھر سلاحِ جنگ اپنے آہستی تن سے
 ہوا خالی بدن اُن کا مہلیم سے اور جوش سے
 پڑے تھے تیر و کماں اور کماں سب کی دھڑکی
 کہیں تیغ و سپر بھلے کہیں جوش کہیں منفر
 وہ خود کو تیاگ دینے کے لئے فوراً سر میں
 لگا بیٹھے سادھی پر تھوہی پر صاحبِ فرزاں

نا-گاہوں = اچانک

کارزارے-جنگ کے جیگم =
 رگشتر کے مہم کے جیگر
 نورالین = آگاہی کی
 رگشتری یا پھر
 آلام-ناسوت = دنیا
 کے اندر

ساہو-سہو-کلم =
 کلم اور تلوار کا
 دھنی

میگفر = لہجہ کی ڈوپہ
 جوشن = جیگر، لہجہ کا
 لہجہ



جھکا کر سیں بکھیں بند کر لیں ہاتھ کو جوڑا، لگا کر یوگ آسن منہ کو فانی لوک سے موڑا
 درونہ کا یہ عالم دیکھ کر نچال کا بیٹا بڑھا تو اریس کر ہاتھ میں تقدیر کا ہیٹا
 گروے دو قدم کے فاصلے پر رک گیا جا کر کیا سیف قضا کو تول کر، اک وار پھر ان پر
 فقط اک وار میں سر اڑ گیا استاد دوراں کا مہیا ہو گیا سا ماں علاج درد پہنیاں کا

درونہ چاریہ کے فرزند اشوت تھا ماما کی سخت کلامی

خبر مرگ درونہ کی سنی جس وقت اشوت نے لیا اک موڑ سینے میں بطرز نوشہا عینے
 کہا اُس نے یہ پاندو سے کہ تم سب بڑے کتر درونہ کو پہ مارا میرے مرنے کی خبر دیکر
 اب اُنکے بعد جینا میرا مرنے کے برابر ہے یہ بتیا اک قیامت کے گزرنے کے برابر ہے
 مگر اک بات تو مجھ کو بتائے دھرم کے رشک یہی سہی تو بولیں کسکو مٹھیا اور کیسے پانک
 دکھایا خوب سچائی کا منظر کم نظر تو نے دیا اچھا صلہ اپنے گرد کو مار کر تو نے
 بتائے لاپٹی ہے کتنے دن کارج اور شائن بتائے دھرم کے بیٹے یہی ہے دھرم کا پالنہ
 حیا کا نام لے کر بے حیائی تو نے دکھلائی گرو سے چھل اے ظالم تجھے غیر نہیں آئی
 ترے اس پاپ کے دھرم و ست ہے سچا خود لگی ہے دیکھ کالک بھڑیو لنگے آج چہروں پر
 سچائی سہ جھوٹ سہ گناہ، عصیان۔ یہی دھرم کے بیٹے

بھوکا کر شیش، آئینے بند کر لیں، ہاتھ کو جوڑا
 لگا کر یوگ آسن، منہ کو فانی لوک سے موڑا
 دروणा کا یہ عالم دیکھ کر نچال کا بیٹا
 بڑھا تو اریس کر ہاتھ میں تقدیر کا ہیٹا
 گرو سے دو قدم کے فاصلے پر رک گیا جا کر
 کیا سیف قضا کو تول کر، اک وار پھر ان پر
 فقط اک وار میں سر اڑ گیا استاد دوراں کا
 مہیا ہو گیا سا ماں علاج درد پہنیاں کا

دروणाचार्य के फरजन्द अश्वत्थामा की सरख्त कलामी

खबर मृगे-द्रोणा की सुनी, जिस वक्त अश्वत ने।
 लिया डक मोड़ सीने में, वतर्जे-नौ शुजाअत ने।
 कहा उसने यह पांडव से, कि तुम सब हो बड़े कमतर।
 द्रोणा को है मारा, मेरे मरने की खबर देकर।
 अब उनके बाद जीना मेरा, मरने के बराबर है।
 यह हत्या डक कयामत के गुजरने के बराबर है।
 मगर डक बात तू मुझ को बता, ऐ धर्म के रक्षक।
 यही सत्य है, तो बोले किस को मिथ्या और किसे पातक।
 दिखाया खूब सच्चाई का मंजर, कम नजर तूने।
 दिया अच्छा सिला, अपने गुरु को मर कर तूने।
 बता ऐ लालची, है कितने दिन का राज और शामन ?
 बता ऐ धर्म के बेटे, यही है धर्म का पालन ?
 हया का नाम लेकर बे हयाई तूने दिखालाई।
 गुरु से छल, अरे जालिम, तुझे गैरत नहीं आई।
 तेरे इस पाप से ऐ 'धर्म सत्य' ऐ बे हया खुद सर।
 लगी है देख कालक क्षत्रियों के आज चेहरो पर।

मक-कजा = मौत की
 तलवार
 दई-पिन्ही = जगा हुआ
 दर्

वतर्जे-नौ = नाप अन्दाज
 में

सत्य = सच्चाई
 मिथ्या = झुट
 पातक = गुनाह

धर्म सत्य = धर्म के बेटे

مگر اس مٹھیا سے اب بھروسہ اٹھ گیا تیرا
ابھی تک چھتریوں کی ذات پر دوشواس تھا میرا
یہ باتیں سننے انشوت کی یہ صفت پریشان تھا
خمیدہ سر تھا، نادم تھا بڑی حد تک شیمان تھا

اشوت تھا ما کا برہما استر

بسانِ صنمِ نوخوار، گرب، رن میں جب انشوت
گرج سنکر جنود پانڈواں پر چھا گئی دہشت

کچھ ایسا شور و ہنگامہ چا سنکر ام کے اندر
کہ بھاگے خوف سے رن ویر سر پر پاؤں کو رکھ کر

پھر انشوت نے کمائی میں برہما استر کو جوڑا
نشانہ باندھ کر پانڈو کے لشکر کی طرف چھوڑا

جونہی پھوٹا برہما استر انشوت کی کمائی سے
مکان والے لکس لاکھوں ملے جالا مکانی سے

زیریں پر بے گماں ہر ایک نے شعلہ بڑھا ہوا تھی
برہما استر کے شعلوں میں گویا موت پنہاں تھی

یہ عالم دیکھ کر انشوت کی جانب جوش میں آ کر
کیا دھاوا اگلے کر دلا اور بھیم نے اس پر

مگر شعلوں نے اکوایا گھیر چاروں جانب سے
یقین تھا رنج گہرا کر نکل آئے گی قالب سے

یہ نظر دیکھتے ہی ویرا رجن کو حبلال آیا
دیا تھا جو رن استر اندر نے اسکا خیال آیا

بجلیت قوس کا چلہ چڑھایا غنیمت میں آ کر
چلایا پھر خدنگ آب مشعلہ بار آتش پر

مگر رجن کے بانوں سے ٹھنڈی ہو سکی آتش
بڑی شدت سے کی پھر اس نے آبی تیر کی بارش

ادھر انشوت کا تھارن چھتر میں کچھ اور منصوبہ
ادھر پانڈو بھی اب تک لڑے تھے جنگ منقلب

غرض لڑتے رہے دونوں غروب مہر تک رن میں
ہوئے واپس نہرو جنگ کا ارماں نے من میں

۱) یہ شब्द استر ہے جس کے معنی ہیں وہ ہتھیار جو دور سے دشمن پر چلایا جائے۔ اس لفظ کا "الف" شعری ضرورت کے لیے حذف کر دیا گیا ہے۔

۲) یہ شब्د استر ہے جس کے معنی ہیں وہ ہتھیار جو دور سے دشمن پر چلایا جائے۔ اس لفظ کا "الف" شعری ضرورت کے لیے حذف کر دیا گیا ہے۔

خامیہ سر = سر دھوا
دھوا

شولہ ونداموں = آگ میں
لپٹا دھوا

جلال = گھما
استر = سر

مگر اس مٹھیا سے اب بھروسہ اٹھ گیا تیرا
ابھی تک چھتریوں کی ذات پر دوشواس تھا میرا
یہ باتیں سننے انشوت کی یہ صفت پریشان تھا
خمیدہ سر تھا، نادم تھا بڑی حد تک شیمان تھا

اشوت تھا ما کا برہما استر

بسانِ صنمِ نوخوار، گرب، رن میں جب انشوت
گرج سنکر جنود پانڈواں پر چھا گئی دہشت

کچھ ایسا شور و ہنگامہ چا سنکر ام کے اندر
کہ بھاگے خوف سے رن ویر سر پر پاؤں کو رکھ کر

پھر انشوت نے کمائی میں برہما استر کو جوڑا
نشانہ باندھ کر پانڈو کے لشکر کی طرف چھوڑا

جونہی پھوٹا برہما استر انشوت کی کمائی سے
مکان والے لکس لاکھوں ملے جالا مکانی سے

زیریں پر بے گماں ہر ایک نے شعلہ بڑھا ہوا تھی
برہما استر کے شعلوں میں گویا موت پنہاں تھی

یہ عالم دیکھ کر انشوت کی جانب جوش میں آ کر
کیا دھاوا اگلے کر دلا اور بھیم نے اس پر

مگر شعلوں نے اکوایا گھیر چاروں جانب سے
یقین تھا رنج گہرا کر نکل آئے گی قالب سے

یہ نظر دیکھتے ہی ویرا رجن کو حبلال آیا
دیا تھا جو رن استر اندر نے اسکا خیال آیا

بجلیت قوس کا چلہ چڑھایا غنیمت میں آ کر
چلایا پھر خدنگ آب مشعلہ بار آتش پر

مگر رجن کے بانوں سے ٹھنڈی ہو سکی آتش
بڑی شدت سے کی پھر اس نے آبی تیر کی بارش

ادھر انشوت کا تھارن چھتر میں کچھ اور منصوبہ
ادھر پانڈو بھی اب تک لڑے تھے جنگ منقلب

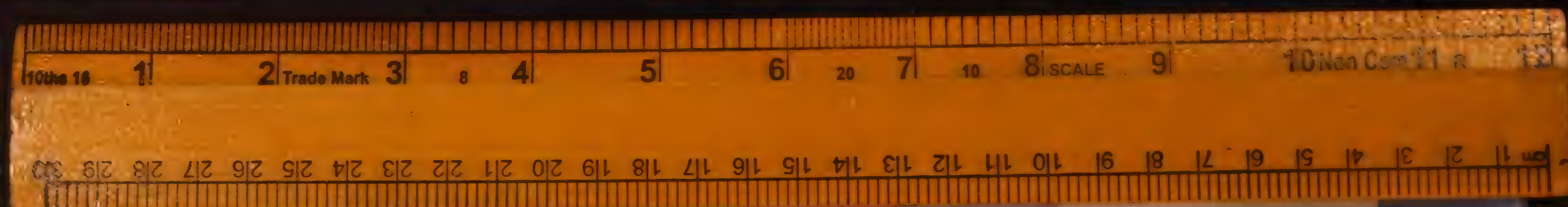
غرض لڑتے رہے دونوں غروب مہر تک رن میں
ہوئے واپس نہرو جنگ کا ارماں نے من میں

۱) یہ شब्د استر ہے جس کے معنی ہیں وہ ہتھیار جو دور سے دشمن پر چلایا جائے۔ اس لفظ کا "الف" شعری ضرورت کے لیے حذف کر دیا گیا ہے۔

۲) یہ شब्د استر ہے جس کے معنی ہیں وہ ہتھیار جو دور سے دشمن پر چلایا جائے۔ اس لفظ کا "الف" شعری ضرورت کے لیے حذف کر دیا گیا ہے۔

مہا بھارت
کا
تیسرا کمانڈر انچیف
دلاور کرن

महाभारत
का तीसरा
कमान्डर-इनचीफ
दिलावर कर्ण
मैदाने-अमल में



کرن سیناپتی روپی میں

دروہ چار یہ جب دارفانی سے ہوئے نصرت جنود کورواں کی پست ہو کر رہ گئی ہمت
کرن ویر درلودھن کی بیٹھی ان کے کرنے سے بیاطن کورواں سبزار تھے اب جنگ کرنے سے
نئی فکر میں تھیں دامن گیسر اب کیا ہو گمبیاں میں بے گنا کون کل سیناپتی میدان برکٹاں میں
پھر اس کے بعد درلودھن نے کافی غور فرما کر کیا ایک فیصلہ جو واقعی تھا ہر طرح بہتر
بنایا کرن کو سیناپتی کل کیلئے اُس نے اسی میں اپنی سمجھی منفعت اور بہتری اُس نے
جلیل القدر منصب فوج کا جب کرن نے پایا شجاعت کا سرغور در میں نشہ سالہرا یا
کہا اس نے کہ میں ارجن سے ہوں ہر بات میں آگے فن جنگ و جدل کی ساری تحریکات میں آگے
مگر ارجن ہے مجھ سے اب فقط اک بات میں بھاری کہ اس کے سار تھی میں نہ دلالت ہشیام بنواری
اگر تو مثل راجہ کو سر جنگاہ درلودھن بنا دے سار تھی میرا تو بن سند یہاں راجن

تو پھر دعوے سے کہتا ہوں کہ میں ارجن کو مارونگا

سر میدان اُسے میں کل فنا کے گھاٹ اتارونگا

۱۔ بمعنی آتش فشاں، جوالا مکھی

کرن سیناپتی کے रूप میں

دروہاचार्य जब दारे-फानी में हुए रहा सत।
जुनूदे-कौरवाँ की, पस्त होकर रह गई हिम्मत॥

कमर रण वीर दुर्योधन की बेटी उन के मरने से।
बनातिन कौरवाँ बेजार थे, अब जग करने से॥

नई फिक्रें थीं दामन गीर, अब क्या होगा मैदान में।
बनेगा कौन कल सेनापति मैदाने-बगरकों में॥

फिर इसके बाद दुर्योधन ने काफी गौर फरमा कर।
किया डक फैसला जो वाकई था हर तरह बेहतर॥

बनाया कर्ण को सेनापति कल के लिए उसने।
उसी में अपनी समझी मुनफअत और बेहतरी उसने॥

जलीलुलकदर मनसब, फौज का जब कर्ण ने पाया।
शुजाअत का सरे-मगरूर में नश्या सा लहराया॥

कहा उसने कि मैं अर्जुन से हूँ हर बात में आगे।
फने-जंग-ओ-जदल की सारी तहरीकات में आगे॥

मगर अर्जुन है मुझ से, अब फकत डक बात में भारी।
कि उसके सारथी हैं, नन्द लाला श्याम बनवारी॥

अगर तू शल्ल राजा को सरे-जंगाह दुर्योधन।
बनादे सारथी मेरा तो, बिन संदेह ऐ राजन॥

तो फिर दावे से कहता हूँ कि मैं अर्जुन को मारूँगा।
सरे-मैदान उसे मैं कल, फना के घाट उतारूँगा॥

जुनूदे-कौरवाँ = कौरवों
का लज्जत

मुनफअत = लाभदायक

जलीलुलकदर मनसब =
महान स्थान बहुत बड़ा
ओहदा

तहरीकات = कोशिशें

१) बमानी आतिश फिशों 'ज्वाला मुखी'

اسی کو زیب دیتا ہے فقط یہ نصب اکبر

یہ سکرشل کی نگری میں پہنچا راجہ درلودھن
ممانت سے بتایا اپنے آئے کا اسے کارن
کہ میں آیا ہوں تیکر پاس اک درخواست یہ لیکر
کہ تو کل سارھتی بن کرن کا سنگرام کے اندر
یہ باتیں سن کے درلودھن کی راجہ شل یوں بولا
نہایت ترش وئی سے دہن کم نخت نے کھولا
مجھے دل الزنا کا سارھتی بننے کو کہتے ہو کہ
ذرا یہ تو کہو تم کون سی دنیا میں رہتے ہو
تمہیں اس بات کو کہتے ہوئے غصہ نہیں آئی
مرے مضمب کی تم نے خوب کی ہے قدر افزائی
خبر تم کو نہیں کیا؟ تر بھون کا میں مسخر ہوں
مرے احکام چلتے ہیں ہر اک جا میں موڑ ہوں
ہو جاؤ یہاں سے ذہن اپنا صاف کر آؤ
یہ بیہودہ سی باتیں اور کسی کے پاس لے جاؤ
سینیں یہ ساری باتیں شل کی اس نے ممانت سے
تکلم کا نیب اسلوب بدلا جلد حکمت سے
کہ پہلے سکرانہٹ لب پہ لے آئی مدبر سی
بن کر شکل اس کے بعد اپنی اک مفکر سی
ہو گویا، کہ اے ناداں وہی منشا تو میرا ہے
مگر شمع دکا پر تیسری ہلکا سا اندھیرا ہے
کہ جو سب سے بڑا بلوان ہو سنار کے اندر
اسی کو زیب دیتا ہے فقط یہ نصب اکبر
برٹھا جیسے میں "رودھیر" کے اور آگن کے وایو
شری گھنشاں، کنتی پتر کے ہیں قوت بازو
عزرائی ع حکم دینے والا ع عقل کی روشنی

उसी को जेब देता है फकत यह मनसबे-अकबर

यह सुनकर शल्ल की नगरी में पहुँचा राजा दुर्योधन।
मतानत से बताया अपने आने का उसे कारण॥
कि मैं आया हूँ तेरे पास, इक दरख्वास्त यह लेकर।
कि तू कल सारथी बन कर्ण का, संग्राम के अंदर॥
यह बातें सुन के दुर्योधन की राजा शल्ल ये बोला।
निहायत तुर्ग-रूई से दहन कमवक्त ने सोचा॥
मुझे बलदुर्जिना का सारथी बनने को कहते हो।
जरा यह तो कहो, तुम कौन सी दुनिया में रहते हो॥
तुम्हें इस बात को कहते हुए गैरत नहीं आयी।
मेरे मनसब की तुम ने खूब की है कद्र अफजायी॥
खबर तुम को नहीं क्या? त्रिभवन का मैं सुमस्विर हूँ।
मेरे अहकाम चलते हैं हर इक जा में सुअस्मिर हूँ॥
हटो जाओ यहाँ से ज़हन अपना साफ़ कर आओ।
यह बेहूदा सी बातें और किसी के पास ले जाओ॥
सुनीं यह सारी बातें शल्ल की, उस ने मतानत से।
तकल्लुम का नया असलूब बदला जल्द हिकमत से॥
कि पहले मुसकुराहट लब पे ले आयी मुदब्विर सी।
बनाकर शकल उस के बाद, अपनी इक मुफक्किर सी॥
हुआ गोया, कि ऐ नादों वही मनशा तो मेरा है।
मगर शम्मे-जका पर तेरी हलका सा अंधेरा है॥
कि जो सब से बड़ा बलवान हो संसार के अंदर।
उसी को जेब देता है फकत यह मनसबे-अकबर॥
ब्रह्मा जैसे हैं 'रूधीर' के, और अग्न के वायू।
श्री घनश्याम कुन्ती पुत्र के हैं कुव्वते-बाजू॥

१) जका शोरा, उल्मा, ऐसे जितने भी अलफाज हैं अंजुमन तरक्की उर्द की सिफारिशान के तहत उनकी हमजा को गैर जरूरी करार दिया गया है।

मतानत = मतानत

तुर्ग-रूई = लंबा पना

दहन = दहन

बलदुर्जिना = दुर्जना

गैरत = गर्व

मनसब = ओज

सुमस्विर = विजयता

सुअस्मिर = दुःख देने

वाला

तकल्लुम = शान

असलूब = तरीका

शमे-जका = अकल की

गैरती

یہ سب بلوان سرچشمہ میں شہسختی اور طاقت کے
یہ سارے لوگ جن کو فخر ہے رکھ بان بننے پر
یہ بابت سن کے درلودھن کی رہی ٹھیکیا آخر
مگر جو بیسرتھادل میں نہ اس کو کر سکا ظاہر

ابھی سے لاف کرنے میں کیا حاصل بہت فخر

بنا جب مثل اس کا سارھتی تو کرن خوش ہو کر
اسے رکھ پر چڑھا دیکھا تو کوروگن کے تیار
یہ عالم کرنے دیکھا تو بولا کبر و نخوت سے
کہ جس جاشیام ہوتے میں وہیں تھی بے بس نفرت
مخاذ جنگ پر تم دیکھتے ارجن کو ماروں گا
جسے دیورج راجہ اندر دیکھیں تو ترپ جایش
یہ ضرب مثل کہنے ہو چکی ہے میں بدل دوں گا
سیاہ چہرہ پاندو پہ ناکامی کی مل دوں گا

سے بازو ملے نوڑے ام، بر = حکم دینے والا ملے ذکا، شعراء، علماء = ایسے جتنے بھی الفاظ ہیں جنہیں ترقی اردو کی سفارشات

کے تحت ان کی ہمزہ کو غیر ضروری قرار دیا گیا ہے

سر چشما = شیشہ
پیکر = پورے
مگر جن = مگر

بڑے = بڑے بڑے
مقامات کے لیے
کیتو-نیکو-نیکو = پیمانہ
جڑے-زل-مست =
کھانا
نومرن = پختہ، جیت

یہ سب بلوان سر چشما ہے جاکت اور تاکت کے
یہی پیکر ہے کویکت کے، یہی مگر جن شجاعت کے
یہ سارے لوگ جن کو فخر ہے رکھ بان بننے پر
مگر جن کو فخر ہے رکھ بان بننے پر
یہ بابت سن کے درلودھن کی رہی ٹھیکیا آخر
مگر جو بیسرتھادل میں نہ اس کو کر سکا ظاہر

یہ سب بلوان سر چشما ہے جاکت اور تاکت کے
یہی پیکر ہے کویکت کے، یہی مگر جن شجاعت کے
یہ سارے لوگ جن کو فخر ہے رکھ بان بننے پر
مگر جن کو فخر ہے رکھ بان بننے پر

سنی جب کرن کی باتیں کہیں شل نہ نہیں کر
ابھی سے لاف کرنے میں ہے کیا حاصل بت خود سر
یہ شخی جنگ کے میدان میں تیسری تم بھی دیکھیں گے
تری فنی صلاحیت کا وہ عالم بھی دیکھیں گے
نہ کر بکواس جب ارجن سے تیسرا سامنا ہوگا
کلیجہ دونوں ہاتھوں سے تجھے پھر تھامنا ہوگا

بھیم کی شجاعت

برہی شدت سے میدانِ و غایں جنگ جاری تھی
جنودِ کوروں پوری طسرج پاندو پہ بھاری تھی
یہ شتر کو پسینہ آ رہا تھا خوف و دہشت سے
اتر آیا تھا رتھ سے آج وہ بالوں کی شدت سے
یہ نظر بھیم نے دیکھا تعجب سے یہ شتر کا
کہ چہرہ خوف سے اتر ہوا ہے اب منکر کا
یہ عالم دیکھتے ہی انتہائی جوش میں آ کر
گرا سیکر وہ جھپٹا باز کی مانند کوروں پر
جھڑ پڑھتا اور ہنگامہ محشر نظر آتا
جہاں پڑتے قدم اس کے وہاں بھونپال آجاتا
بہادر کور اس کے سامنے آنے سے گھبراتے
بچ کر آنکھ اپنی دوسری جانب نکل جاتے
مگر وہ دندان کشپور رہا تھا فیل کی مانند
دغا کے بحر میں بے خوف موج نیل کی مانند
جو اتاراہ میں اس کی فنا کے گھاٹ اتر جاتا
عدم کی راہ لیتا، دارِ فانی سے گزر جاتا

سुनी जब कर्ण की बातें, कहा यूँ शल्ल ने हम कर।
अभी से लाफ करने में, है क्या हासिल बुते-खुदसर॥
यह शेखी जंग के मैदानों में तेरी, हम भी देखेंगे।
तेरी फनी सलाहियत, का वह आलम भी देखेंगे॥
न कर बकवास जब अर्जुन से तेरा सामना होगा।
कलेजा दोनों हाथों से तुझे, फिर थामना होगा॥

भीम की शुजाअत

बड़ी शिद्दत से मैदान-वगा में जंग जारी थी।
जुनूदे-कौरवाँ पूरी तरह, पांडव पे भारी थी॥
युधिष्ठिर को पसीना आ रहा था, खौफो-दहशत से।
उतर आया था रथ से आज, वह बाणों की शिद्दत से॥
यह मंजर भीम ने देखा, तआज्जुब से युधिष्ठिर का।
कि चेहरा खौफ से उतरा हुआ है अब मुफक्किर का॥
यह आलम देखते ही, इन्तहाई जोश में आकर।
गदा लेकर वह झपटा, बाज की मानिन्द कौरों पर॥
जिधर बढ़ता उधर हंगामा-ए-महशर नजर आता।
जहाँ पड़ते कदम उसके, वहाँ भौंचाल आजाता॥
बहादुर कौर उस के सामने आने से घबराते।
बचा कर आँख अपनी, दूसरी जानिब निकल जाते॥
मगर वह दनदनाता फिर रहा था फील की मानिन्द।
वगा के बहर में बे खौफ, मौजे-नील की मानिन्द॥
जो आता राह में उसे की, फना के घाट उतर जाता।
अदम की राह लेता, दारे-फानी से गुजर जाता॥

जुनूदे-कौरवाँ = कौरवों
की फौज

फना = मौत

تڑپتے تھے کہیں زخموں سے رن میں راکب مرکب
کہیں لٹھڑے ہوئے تھے خاک و خون میں صائب
کہیں تھے نند اور آپ نند، پاسی اور سنگی
پڑی تھیں لاشیں میداں میں سوپر و اوکرنی کی
ہزاروں آج شیران و غلامے گئے رن میں
جو حفظ مالقہم غرق تھے مولادو آہن میں
علاقہ اس کے بارہ بھائی دریو دھن بدانت کے
پڑے تھے نیم عریاں بدعل سگرام میں کے

دُششاہن

کے فیرے-کیردار تک

نہایت آج ہیبت ناک منظر تھا لڑائی کا
نیرالا دنگ تھا افواہ کی، زور آج ماری کا
اچانک بھیم کے مددے-مکابیل آیا دُششاہن
مورسا رتھ پہ استادا تھا، اکل-او-ہوش کا دشمن
خڑا تھا سامنے ہی، آج جالیم تان کر سنا
کیا دھاوا لگا کر بھیم نے، فیر ایک ترمینا
مگر فوراً ہی دُششاہن پھیل کر آگیا نیچے
بچائی جان اپنی، کاٹ کر کاوا ہوا پیچھے
مگر گزر گراں کی ضرب سے رتھ اس طرح ٹوٹا
کہ رتھ کے ساتھ رتھ والا غم آفاق سے چھوٹا
یہ دہشت ناک منظر دیکھتے ہی بھاگ دُششاہن
لیک کر اس کو پکڑا بھیم نے یہ کہہ کے اڑا دیا
کہاں جائے گا میرے ہاتھ سے بدبخت تو بچ کر
نہ چھوڑوں گا کسی بھی حال میں زندہ تھے مجھ سے

۱) استیلاہن، جُلم اور شکیں لکھ کر استیلا کیا گیا ہے

راکب-مرکب = چوڑا
اور سوار
خاک = مٹی

ہیفے-ما-تکدوم =
پہلے سے اُڑنیاں
بد اُتر = بد کسمپن

مورسا = جڑا

نہایت آج ہیبت ناک منظر تھا لڑائی کا
نیرالا دنگ تھا افواہ کی، زور آج ماری کا
اچانک بھیم کے مددے-مکابیل آیا دُششاہن
مورسا رتھ پہ استادا تھا، اکل-او-ہوش کا دشمن
خڑا تھا سامنے ہی، آج جالیم تان کر سنا
کیا دھاوا لگا کر بھیم نے، فیر ایک ترمینا
مگر فوراً ہی دُششاہن پھیل کر آگیا نیچے
بچائی جان اپنی، کاٹ کر کاوا ہوا پیچھے
مگر گزر گراں کی ضرب سے رتھ اس طرح ٹوٹا
کہ رتھ کے ساتھ رتھ والا غم آفاق سے چھوٹا
یہ دہشت ناک منظر دیکھتے ہی بھاگ دُششاہن
لیک کر اس کو پکڑا بھیم نے یہ کہہ کے اڑا دیا
کہاں جائے گا میرے ہاتھ سے بدبخت تو بچ کر
نہ چھوڑوں گا کسی بھی حال میں زندہ تھے مجھ سے

دُششاہن کے فیرے-کیردار تک

نہایت آج ہیبت ناک منظر تھا لڑائی کا
نیرالا دنگ تھا افواہ کی، زور آج ماری کا
اچانک بھیم کے مددے-مکابیل آیا دُششاہن
مورسا رتھ پہ استادا تھا، اکل-او-ہوش کا دشمن
خڑا تھا سامنے ہی، آج جالیم تان کر سنا
کیا دھاوا لگا کر بھیم نے، فیر ایک ترمینا
مگر فوراً ہی دُششاہن پھیل کر آگیا نیچے
بچائی جان اپنی، کاٹ کر کاوا ہوا پیچھے
مگر گزر گراں کی ضرب سے رتھ اس طرح ٹوٹا
کہ رتھ کے ساتھ رتھ والا غم آفاق سے چھوٹا
یہ دہشت ناک منظر دیکھتے ہی بھاگ دُششاہن
لیک کر اس کو پکڑا بھیم نے یہ کہہ کے اڑا دیا
کہاں جائے گا میرے ہاتھ سے بدبخت تو بچ کر
نہ چھوڑوں گا کسی بھی حال میں زندہ تھے مجھ سے

۱) استیلاہن، جُلم اور شکیں لکھ کر استیلا کیا گیا ہے

یہ کہہ کر اس کو اس نے پتھری پر اس طرح پیٹھا کہ بیٹھا ٹرٹھ کی ہڈی میں اس کی زور کا جھٹکا پھر اس کے بعد ہیکل بھیم فوراً چھا گیا اس پر اور اپنی انگلیاں پیوست کر دیں پیٹ کے اندر لگا کر پوری قوت چپیر ڈالاسید نہ دشمن تروپ لینے کی مہلت پاسکا مطلق نہ دشمن اور اس کے بعد رکھا ایک گھٹنا ناف دشمن پر کیا سینے میں اپنا ہاتھ داخل ہے جبکہ ہو کر ٹٹولا چاروں جانب ہاتھ سے اور نرم سرا پکڑا کیا مضبوط اپنا پنجہ اور اچھی طرح جکڑا جکڑ کر دوسرا اک ہاتھ رکھ کر اس کی گردن پر بڑی قوت سے کھینچ اپنی جانب سنگدل بن کر تو فوراً پھیپھڑا، دل اور جگر باہر نکل آیا دیا پھر اس کو جھٹکا قطع کر کے لطف سا پایا

بریدہ عضو منجملہ جوتھے اک ہاتھ میں اب تک

انہیں پھینکا بھلا رکھتا وہ اپنے ہاتھ میں کب تک

بھیم کا خون و شاشن پینے کی تربیتی تکمیل

کیا اس نے مخاطب اپنی جانب لڑنے والوں کو پکارا پھرتیوں کو سورماؤں اور جیبیالوں کو کہا تم کو تو باتیں یاد ہوں گی آج بھی ساری کہ تیرا سال پہلے اسے جو کی تھی دل آزاری اسی نے چپیر نیچالی کی کھینچی تھی سرِ مفل برہنہ اس کو کر دینے کی تھی سعی لا حاصل

پے و من کر دی = پٹیا دی

ناک = پٹ

بوری دا اچھ = کٹے ہوئے
شریر کے ٹوکڑے

بھیم کا، خوں-دو ششاشن پینے کی تربیتی تکمیل

کیا اس نے مخاطب، اپنی جانب لڑنے والوں کو پکارا کھتریوں کو، سورماؤں اور جیبیالوں کو کہا تو تم کو تو باتیں یاد ہوں گی آج بھی ساری کہ تیرا سال پہلے اسے جو کی تھی دل آزاری اسی نے چپیر نیچالی کی کھینچی تھی سرِ مفل برہنہ اس کو کر دینے کی تھی سعی لا حاصل

دیل آجاری = دین
دو ششاشن

سُواب اپنی میں پر تگیا کو لپوری کرتا ہوں
یہ کہہ کر تین انجیل خوں نکالا اس کے سینے کا
کدورت کی تپش کم ہو گئی کچھ خوں پینے سے
لبوں پر خون ایسا جم گیا تھا جیسے انگارا
دور مقصود سے دامن تمناؤں کا بھرتا ہوں
عجب منظر تھا ہیبت ناک اس کے خون پیے کا
لگا کر تہقہہ بھپھیرا سیم اترا اس کے سینے سے
اور اس پر پھیرتا تھا وہ زباں لے لیکے چٹخارا
پھر اس کی سرخ آنکھیں دیکھتے ہی لوگ روتے تھے
کئی غش کھا کے گرتے تھے کئی دہشت سے مرنے لگتے تھے

عَبَّاسُ بْنُ سَاسِیٍّ اَكْشِیْرِ رُوبَاهِ كَا اَنَا

اُدھر مگر پڑا تھا خاک پر معرورِ دشا شن
خدا نگِ مرگ سے ارجن نے اسکے دستِ دیا کاٹے
یہ عالم کرن نے ارجن کا جب دیکھا تو جھنجھلایا
کہا پھر شل سے ارجن کی جانب موڑ دے رتھ کو
یہ باتیں کرن کی سُن کر کہا یوں شل نے ہنس کر
اُدھر بھرنگ جی ہیں اور شری گھنشا ابنواری

सुनो अब अपनी मैं प्रतिज्ञा को पूरी करता हूँ।
दुरे-मकसूद से दामन, तमन्नाओं का भरता हूँ॥

यह कहकर तीन अंजुल खूँ, निकाला उसके सीने का।
अजब मंज़र था हैबत नाक, उस के खून पीने का॥

कदूरत की तपिश कम हो गई कुछ, खून पीने से।
लगा कर कहकहा फिर भीम उतरा उसके सीने से॥

लबों पर खून ऐसा जम गया था, जैसे अंगारा।
और उस पर फेरता था वह ज़बाँ, ले लेके चटखारा॥

फिर उसकी सुख्ख आँखें, देखते ही लोग डरते थे।
कई ग़श खा के गिरते थे, कई दहशत से मरते थे॥

अबस है सामने इक
शेर के रूबाह का अड़ना

उधर मर कर पड़ा था, खाक पर मगरूर दुश्शासन।
इधर था, कर्ण के फरज़न्द का, चक्कर में अब अड़गन।।

खदंगे-मृग से अर्जुन ने उसके दस्तो-पा काटे।
अलावा उस के लाशों से, फिर उस ने रण के रण पाटे।।

यह आलम कर्ण ने, अर्जुन का जब देखा, तो झुंझलाया।
धुवाँ नथनों से निकला, साँप की मानिन्द बल खाया।।

कहा फिर शल्ल से, अर्जुन की जानिब, मोड़ दे रथ को।
तुझे है खौफ तो नीचे उतर जा, छोड़ दे रथ को।।

यह बातें कर्ण की सुनकर, कहा यूँ शल्ल ने हंस कर।
यकीनन पीरे-ना-बालिग है तू भी, ऐ बुते-खुद सर।।

उधर बजरंग जी हैं और श्री घनश्याम बनवारी।
इधर है तू अकेला, कौन है अब तेरा हितकारी।।

कदूत = दुःख
तपिष = आनन्द

अङ्गन = सितारा

खदंगे-मृग = मौत के
तीर
दस्ते-पा = हाथ पैर

पीरे-ना-बालिग = बूढ़ा
मगर कम अकल

हितकारी = दोस्त

پلٹ جا، وقت ہے، پیکار ہے ارجن اب لڑنا
ابس ہے، سامنے دک شہر کے، روباہ کا اڑنا

کبھی حالت میں ارجن پروجے تو پانہیں سکتا
یہ لوہے کا چنا، توجہ سے چبایا جانی سکتا

مگر زعم شجاعت میں خرد سے تھا وہ بیگانہ
وہ بیٹا سورہ کا تھا، عبت تھا اس کو سمجھنا

دھنوش اور بان لیکے آگیا وہ سامنے تن کر
غرض آمادہ پیکار تھا با حسن کرد و منہ

अर्जुन का रथ तीन कदम पीछे

उधर अर्जुन भी इस्तादा ही था गाण्डीव धनुष लेकर।
और उसके रथ पे थे, बजरंग जी और श्याम मुरलीधर॥

किया टनकार चिल्ला खींच कर, फिर दोनों शेरों ने।
निकाले अपने अपने बाण, तरकश से दिलेरों ने॥

खदंगे-आहनी जोड़े गए, कोसे-हिलाली से।
नजर आते थे दोनों, वे जंगर और ला उबाली से॥

उन्हें परवाह नहीं थी, अपने मरने और जीने की।
न थी बहरे-वगा में फिर, जीवन के सफ़ीने की॥

अचानक खिंच गई दोनों कमानें दूबदू होकर।
निशाना लेके बान्धी शिस्त, दोनों ने ब कररोफ़र॥

पड़ी ढीली यकायक, चुटकियों की उन की गिराई।
फज़ा में दोनों जानिब, एक बरकी रौ सी लहराई॥

खदंगे-आहनी छूटा, तो जा बैठा निशाने पर।
कवाए जौहरी नावक, लिए पहुँचा ठिकाने पर॥

अबस = बेकार
रुबाह = भेड़िया

जोमे-शुजाअत = बहादुरी
का गर्व

इस्तादा = खड़ा

कोसे-हिलाली = चंद्रमा
जैसी मुड़ी हुई कमान

बहरे-वगा = जंग का
समुद्र
दूबदू = आमने सामने

गिराई = खिंचावट

बरकी रौ = बिजली की
लहर

پلٹ جا، وقت ہے، پیکار ہے ارجن اب لڑنا
عبث ہے سامنے اک شیر کے، روباہ کا اڑنا

کبھی حالت میں ارجن پروجے تو پانہیں سکتا
یہ لوہے کا چنا، توجہ سے چبایا جانی سکتا

مگر زعم شجاعت میں خرد سے تھا وہ بیگانہ
وہ بیٹا سورہ کا تھا، عبت تھا اس کو سمجھنا

دھنوش اور بان لیکے آگیا وہ سامنے تن کر

غرض آمادہ پیکار تھا با حسن کرد و منہ

अर्जुन का रथ तीन कदम पीछे

ادھر ارجن بھی استادہ ہی تھا گادیو دھنوش لیکر
اور اس کے رتھ پہ تھے بھرنگ جی اور شیا اکرلی دھر

کیا ٹنکار چلے کھینچ کر پھیر دونوں شیروں نے
ٹکڑے اپنے اپنے بان ترکش سے دلیروں نے

خدنگ آہنی جوڑے گئے تو سہیلی سے
نظر آتے تھے دونوں بے جگر اور لاابالی سے

انہیں پروا نہیں تھی اپنے مرنے اور جینے کی
نہ تھی بجز وفائیں منکر جیون کے سفینے کی

اچانک کھینچ گئیں دونوں کمانیں دودد سہو کر
نشانہ لیکے بانڈی شست دونوں بہ کرد و فر

پڑی دھیلی یکایک چٹکیوں کی ان کی گیسرائی
فضائیں دونوں جانب ایک برقی رسی لہرائی

خدنگ آہنی چھوٹا تو جبا بیٹھا نشانے پر
قوائے جوہری ناوک لئے پہنچا ٹھکانے پر

ملہ نڈر، بے باک، دلیر

کزن پر پولوں کی باتیں

تختہ، کاسا عالم ذہنِ ارجن پر سہوا طاری
 وہی رتھ آج رن میں تین پگ ہو جائے گا بیچھے
 یہ باتیں سوچ کر دل میں خلش محسوس ہوتی تھی
 بالآخر اس نے پوچھا شام سے اے کرشن ہزاری
 علاوہ اس کے رتھ کسے ہتھے ہی دھرم ماتاؤں نے
 یہ باتیں سن کر ارجن کی، کہا گھنشاں نے ہنس کر
 کہ میں جس رتھ پہ بیٹھوں اس کی جب جائے ڈرگت
 یہی توجہ ہے پھولوں کی بارشِ سن ہوتی ہے
 ترا اس ضمن میں سندیہہ اب بیکار ہے ارجن
 کہ جس رتھ پر براجمہوں شری گھنشاں اگر دھاری
 فقط اک ضربِ ناوک ہی سے وہ ہٹ آئیگا بیچھے
 طبیعت، اس کی ان باتوں سے کچھ مایوس ممتی تھی
 بتاؤ کیا ہے کارن رتھ کے ہٹ جانے کا گردھاری
 گلوں کی، کرن پر برسات کی ہے دیوتاؤں لے
 یہی تو بات ہے جو کہہ رہا ہے ہو کے تو مضطر
 سمجھ لے کرن سادشمن ہے کتنا باملا حیثیت
 سعید اور پاک ردھوں کی نوازش سن ہوتی ہے
 لگا رہے جست تنور و غاتیار ہے ارجن

कर्ण पर फूलों की बारिश

तहय्युर का सा आलम ज़हने-अर्जुन पर हुआ तारी ।
कि जिस रथ पर बिराजे हों, श्री घनश्याम गिरधारी ।।

वही रथ आज रण में, तीन पग हो जाएगा पीछे ।
फ़क़त इक ज़र्बे-नावक ही से वह, हट जाएगा पीछे ।।

यह बातें सोचकर दिल में, ख़लिश मैहसूस होती थी ।
तबीयत उसकी इन बातों से कुछ मायूस होती थी ।।

बिलअख़िर, उसने पूछा श्याम से, ऐ कृष्ण बनवारी ।
बताओ क्या है कारण, रथ के हट जाने का गिरधारी ।।

अलावा इसके रथ के हटते ही धर्मात्माओं ने ।
गुलों की, कर्ण पर बरसात की है, देवताओं ने ।।

यह बातें सुन के अर्जुन से कहा घनश्याम ने हंस कर ।
यही तो बात है, जो कह रहा है, हो के तू मुज़तर ।।

कि मैं जिस रथ पे बैटूँ उसकी जब हो जाए यह दुर्गत ।
समझ ले, कर्ण सा दुश्मन है कितना, बा सलाहियत ।।

यही तो वजह है फूलों की बारिश उस पे होती है ।
सईद और पाक रूहों की, नवाज़िश उस पे होती है ।।

तेरा इस ज़िम्न में सन्देह अब बेकार है अर्जुन ।
लगा दे जस्त, तन्नूरे-वगा तैयार है अर्जुन ।।

जुर्बे-खदगे-कर्ण = कर्ण
के तीर की मार
मालिके-सहैगाने-आलम
= तीनों लोक का
मालिक
जुर्बे-नावक = तीर के
वार

जिम्न = विषय
तन्मूरे-वगा = जंग की
भट्टी

دلاور کرن کے پانچ بان

ارجن کے سینے میں

مجاز جنگ پر اک سمت نظریں رک گئیں آکر جہاں اک مورچے پر لڑ رہی تھیں فوجیں بابکتر
سپاہی جوش میں اک دوسرے پر دار کرتے تھے کبھی دوچار مل کر ایک پر یلف کرتے تھے
ہر اک ان میں تناور تھا بہادر تھا دلاور تھا جو تنہا پنج میں دوچار لڑائیوں پر سر برحق
غرض ہنگامہ بسیار چاروں سمت تھا جاری اسی کے ساتھ خوفِ درگ بھی ہر دل پہ تھا طاری
کہیں شمشیر و خنجر لیسے تھا کوئی نہ سرد آرا کوئی برہمی کا چرکا کھا کے مرجاتا تھا بیچارا
دھتوں کی گھڑ گڑاہٹ سے فضا تھی رقصِ رن کی نکل جاتی تھی ضربِ گرز سنکر روح دشمن کی
لگاتے تھے دلیران و غارہ رہ کے بے کالے کہیں فیلوں کی چنگھاڑیں کہیں بجتے تھے نقائے
کبھی بالوں سے برکھا کا سماں آنکھوں میں پھر جاتا خدنگ آتشیں سے آگ کا طوفان نظر آتا
کہیں تیغ و سپر تیشہ کے ٹکرانے کی جھنکاریں کہیں قرنائی کی آوازیں کہیں تانتوں کی ٹنکاریں
برابر جو کسی سے ہو رہے تھے وار میں داں میں شناور غوطہ زن تھے جنگ کے پُر ہول طوفان میں
اچانک پانچ ناوک کرن کی چھوٹے کمافی سے بڑے ارجن کی جانب پوری تیزی اور روانی سے

لا ششکھ

دلاور کرن کے پانچ بان ارجن کے سینے میں

مہاجے-جنگ پر اک سمت نظریں رک گئی آکر۔
جہاں اک مورچے پر لڑ رہی تھیں فوجیں بابکتر۔
سپاہی جوش میں اک دوسرے پر دار کرتے تھے۔
کبھی دوچار مل کر ایک پر یلف کرتے تھے۔
ہر اک ان میں تناور تھا بہادر تھا دلاور تھا۔
جو تنہا پنج میں دوچار لڑائیوں پر سر برحق۔
غرض ہنگامہ بسیار چاروں سمت تھا جاری۔
اسی کے ساتھ خوفِ درگ بھی ہر دل پہ تھا طاری۔
کہیں شمشیر و خنجر لیسے تھا کوئی نہ سرد آرا۔
کوئی برہمی کا چرکا کھا کے مرجاتا تھا بیچارا۔
دھتوں کی گھڑ گڑاہٹ سے فضا تھی رقصِ رن کی۔
نکل جاتی تھی ضربِ گرز سنکر روح دشمن کی۔
لگاتے تھے دلیران و غارہ رہ کے بے کالے۔
کہیں فیلوں کی چنگھاڑیں کہیں بجتے تھے نقائے۔
کبھی بالوں سے برکھا کا سماں آنکھوں میں پھر جاتا۔
خدنگ آتشیں سے آگ کا طوفان نظر آتا۔
کہیں تیغ و سپر تیشہ کے ٹکرانے کی جھنکاریں۔
کہیں قرنائی کی آوازیں کہیں تانتوں کی ٹنکاریں۔
برابر جو کسی سے ہو رہے تھے وار میں داں میں۔
شناور غوطہ زن تھے جنگ کے پُر ہول طوفان میں۔
اچانک پانچ ناوک کرن کی چھوٹے کمافی سے۔
بڑے ارجن کی جانب پوری تیزی اور روانی سے۔

یلتگار = ہمتا

مورتدش = پراہی ہوئی

کرنا = شاک

شناور = تیراک

پڑا جس وقت ناک شیر دل ارجن کے سینے پر
پسیا آ گیا اور رہ گیا دلچسپ چکر اکر

کর্ণ کے رथ کا چاک پृथوی کے سینے میں

اسے جب ہوش آیا تو نہایت غیظ میں آکر
انہی تیسروں نے کافی کرن کو نقصان پہنچایا
علاوہ دوسرا اک بان مارا جوش میں آکر
گرجا بان دھرتی پر تو وہ پاتاں تک پہنچا
بڑھا پھر کرن کا زرین رتھ سنگرام کے اندر
کہ گھوڑوں نے لگایا زور رتھ کو کھینچ ہی لیں گے
یہ صورت کرن نے دیکھی تو گودا رتھ سے دھرتی پر
ذرا سادہ لیا اور پھر یکایک جوش میں آٹھا
مگر پھر غور سے دوبارہ اس نے چاک کو دیکھا
جہاں دھرتی نے اس کے رتھ کو مضبوطی سے جکڑا تھا

نیہایت گہرا = بہت
گہرے میں

نہارے-ڈکبال = ہمارے
کا سورا
جڑی = سونہرا

جھک کر = بے بس
ہو کر

بڑا جس وقت ناک شیر دل ارجن کے سینے پر
پسیا آ گیا اور رہ گیا دلچسپ چکر اکر

کرن کے رتھ کا چاک پرتھوی کے سینے میں

اسے جب ہوش آیا تو نہایت غیظ میں آکر
انہی تیسروں نے کافی کرن کو نقصان پہنچایا
علاوہ دوسرا اک بان مارا جوش میں آکر
گرجا بان دھرتی پر تو وہ پاتاں تک پہنچا
بڑھا پھر کرن کا زرین رتھ سنگرام کے اندر
کہ گھوڑوں نے لگایا زور رتھ کو کھینچ ہی لیں گے
یہ صورت کرن نے دیکھی تو گودا رتھ سے دھرتی پر
ذرا سادہ لیا اور پھر یکایک جوش میں آٹھا
مگر پھر غور سے دوبارہ اس نے چاک کو دیکھا
جہاں دھرتی نے اس کے رتھ کو مضبوطی سے جکڑا تھا

لہ عاجز ہونا



فंسا है पृथ्वी में मेरा रथ ऐ सूरमा दम ले

फिर उसके बाद अपनी पीठ, चक्के की तरफ करके।
घुमाया अपने दोनों हाथों को, और कर लिया पीछे॥
पहिये को फिर अपने, आहनी पंजों में ले आया।
इसी आलम में फिर उस ने लगाया जोर वाजू का॥
फड़क कर खा गयी बल, वाजू-शह जोर की मछली।
उभर आयी रगे शिदत से, सीना और गर्दन की॥
अरक आलूदा पेशानी हुई, लेकिन न रथ निकला।
लगाया उस ने जोर डलना, पसीने में नहा बैठा॥
कृष्णा जी ने देखा, कर्ण को जब ऐसे आलम में।
कहा ! हूवा है अर्जुन, फिर के किस बहरे-कुलजम में॥
फंसे हैं पृथ्वी में, रथ के दोनों चाक, ऐ अर्जुन।
निहत्ता हो चुका है, कर्ण सा चालाक, ऐ अर्जुन॥
उठा तीरो-कमाँ, और छेद दे, अब कर्ण का सीना।
भरा है पांडवों के वास्ते, जिस में बहुत कीना॥
सुनी जिस वक्त, केशवमूर्ति की कर्ण ने बातें।
समझ में आ गई थीं, छल कपट और मक्र की घातें॥
पुकारा कर्ण ने अर्जुन क्षमाकर, और जुरा दम ले।
फंसा है पृथ्वी में मेरा रथ, ऐ सूरमा दम ले॥
करे यूरिश निहत्तों पर, यह शेवा कब है मदों का।
तरीका यह है सफ़ाकों का, और आवारा गदों का॥
तुझे मैं जानता हूँ, तू न कायर है, न बुजदिल है।
निहत्ते पर करेगा वार, यह तो और मुश्किल है॥
अलावा इस के मैं ऐ श्याम, मरने से नहीं डरता।
अदाएँ फर्जे-हक को, पूरा करने से नहीं डरता॥

वाजू-शह जोर =
बहादुर के हाथ

अरक आलूदा = पसिने
में भिगा हुआ

बहरे-कुलजम = समुद्र

शेवा = डग
सफ़ाक = हत्या

पھنسا ہے پرتھوی میں میرا رتھ سورما دے

پھر اس کے بعد اپنی پیٹھ کے کی طرف کر کے
گھمایا اپنے دونوں ہاتھوں کو اور کر لیا پیچھے
اسی عالم میں پھر اس نے لگایا زور بازو کا
پھر مل کر کھا گئی بل بازوئے شہزور کی پھلی
اُبھر آئیں رگیں شدت سے سینہ اور گردن کی
لگایا اس نے زور اتنا پسینے میں نہا بیٹھا
عرق آلودہ پیشانی ہوئی لیکن نہ رتھ نکلا
کرشنا جی نے دیکھا کرن کو جب ایسے عالم میں
کہا ! ڈوبا ہے ارجن فکر کے کس بحرِ قلزم میں
پھنسنے ہیں پرتھوی میں رتھ کے دونوں چاک ارجن
نہتا ہو چکا ہے کرن سا چالاک اے ارجن
اٹھاتیر وکاماں اور چھید دے اب کرن کاسینہ
بھرا ہے پانڈوؤں کے واسطے جس میں بہت کینہ
سُنی جس وقت کیشو مورتی کی کرن نے باتیں
سمجھ میں آ گئی تھیں پھل کپٹ اور مکر کی گھاتیں
پکارا کرن نے، ارجن شما کر اور ذرا دم لے
پھنسا ہے پرتھوی میں میرا رتھ سورما دے
کرے یورش نہتوں پر، یہ شیوا کب ہے مردوں کا
طریقہ یہ ہے سفاکوں کا اور آوارہ گردوں کا
تجھ میں جانتا ہوں، تو نہ کار ہے، نہ بزدل ہے
نہشتے پر کرے گا وار، یہ تو اور مشکل ہے
علاوہ اس کے میں اے شیوا، مرنے سے نہیں ڈرتا
ادا دے دھن حق کو، پورا کرنے سے نہیں ڈرتا

مجھے معلوم ہے جو دیر مڑتا ہے سرسید اس مسوگر ہو تا ہے مسیر عقیدہ اور ہے ایمان

علاوہ اس کے مجھ کو دھرم سے ہٹ کر نہ تم مارو

یہ بازی جیت کر سچائی کی بازی نہ تم ہارو

بہت دن بعد ڈالا دھرم نے دل میں تیرے ڈیرا

شری گھنشا جی نے کرن کی باتیں سنیں جس نے
کہ جب پانڈو کو لاکھی گھر میں تم سب نے جلایا تھا
بتاؤ تو جو جیتا تھا کیا سچائی سے تم نے
علاوہ حیرتم لوگوں نے پچالی کی کھینچی تھی
تجھے اس وقت اپنے دھرم کا مطلق نہ ہوش آیا
نہ سچائی کی غمیت اور حیرت ہی کو ہوش آیا

بتا اے کرن آخر کل کہاں تھا دھرم یہ تیرا

بہت دن بعد ڈالا دھرم نے دل میں تیرے ڈیرا

مجھے مالوم ہے، جو دیر مڑتا ہے سرے-مے-دوں
میں ہو تا ہے، میرا اکریدا اور ہے ایمان

الواوا دھم کے مڈ کو، دھرم سے ہٹ کر نہ تم مارو
یہ بازی جیت کر، سچائی کی بازی نہ تم ہارو

بहुत दिन बाद डाला धर्म ने दिल में तेरे डेरा

श्री घनश्याम जी ने, कर्ण की बातें सुनी जिस दम।
क्रोधित होके बोले, क्या तुझे वह याद है आलम।

कि जब पांडव को लाखी घर में, तुम सब ने जलाया था।
वह लड्डू भीम ने क्या जहर का, खुद होके खाया था।

बताओ तो, जुआ जीता था क्या, सच्चाई से तुम ने।
अभिमन्यु मरा था, सच कहो क्या धर्म की रू से।

अलावा चीर तुम लोगों ने पंचाली की खींची थी।
यह हरकत एक मैं क्या, सारी दुनिया ही ने देखी थी।

तुझे उस वक्त अपने धर्म का, मुतलक न होश आया।
न सच्चाई की गैरत, और हमीअत ही को जोश आया।

बता ऐ कर्ण आखिर कल कहाँ था धर्म यह तेरा।
बहुत दिन बाद डाला, धर्म ने दिल में तेरे डेरा।

गैरत और हमीअत =
शर्म और लाज



موضوع یورش کشتری گھنشیام اور ارجن میں بحث

پھر اس کے بعد ہی رنجست میں موضوع یورش پر کشتری گھنشیام اور ارجن میں ٹھہری بحث یہ کر
کشن کہتے تھے ارجن دارکرموقع غنیمت ہے مگر ارجن یہ بولا بزدلی کی یہ عکلاست ہے
کشن بولے کہ ارجن، کرن اب بالکل انتہا ہے کہ ارجن نے یہ تو صرف نامردوں کا شیوہ ہے
کشن بولے اے ارجن دیکھ ساری عمر روئیگا کہ ارجن نے داغ بزدلی کو، کون دھوئے گا
کشن بولے یہ موقع ہاتھ دوبارہ نہ آئے گا کہ ارجن نے اب ہتھیار بزدل ہی اٹھائے گا
کشن بولے لڑائی میں ہے جائز مکرو و عیاری کہ ارجن نے مجھ کو زیب کب دیتی ہے مکاری
کشن بولے کہ سورج دیوتا کا کرن بیٹا ہے کہ ارجن نے ہوگا، مجھ سے اس کا کیا علاقہ ہے
کشن بولے کہ ناداں اس طرح تو مارا جائے گا کہ ارجن نے موقع آئے گا تو دیکھا جائے گا
کشن بولے نہ ہو معسر ورتو اپنی شجاعت پر کہ ارجن نے مجھ کو ناز ہے ایشوری رحمت پر
کشن بولے کہ میں خود ہی تو ہوں اوتار ایشور کا کہ ارجن نے بیشک آپ پر دشواری ہے میرا
کشن بولے اگر مجھ پر ترا دشواری پختہ ہے تو میرے حکم سے پھر کس لیے انکار کرتا ہے
اٹھاتیر وکام تو، ورنہ پچھتائے گا جیون بھر جلا دے دیکھتا کیا ہے چڑھا کر توں چھاتی پر

مौजूए यूरिश पर श्री घनश्याम और अर्जुन में बहस

फिर इसके बाद ही, रणक्षेत्र में मौजूए यूरिश पर। श्री घनश्याम और अर्जुन में, ठहरी बहस यह आकर।।
किशन कहते थे, अर्जुन बार कर मौका गनीमत है। मगर अर्जुन यह बोला, बुद्धिदली की यह अलामत है।।
किशन बोले कि अर्जुन, कर्ण अब विष्कुल निहत्ता है। कहा अर्जुन ने यह तो, सिर्फ ना मदों का शेवा है।।
किशन बोले ऐ अर्जुन, देख सारी उम्र रोएगा। कहा अर्जुन ने, दागे-बुद्धिदली को कौन धोएगा।।
किशन बोले यह मौका, हाथ दोबारा ना आएगा। कहा अर्जुन ने, अब हथियार बुद्धिदल ही उठाएगा।।
किशन बोले लड़ाई में है जाएज़ मक़ो-अव्यारी। कहा अर्जुन ने मुझ को, ज़ेव कव देती है मक्कारी।।
किशन बोले, कि सूरज देवता का, कर्ण बेटा है। कहा अर्जुन ने होगा, मुझ से उस का, क्या डलाका है।।
किशन बोले कि नादाँ, इस तरह तू मारा जाएगा। कहा अर्जुन ने, मौका आएगा तो देखा जाएगा।।
किशन बोले न हो मगर, तू अपनी शुजाअत पर। कहा अर्जुन ने, मुझ को नाज़ है ईश्वर की रहमत पर।।
किशन बोले कि मैं खुद ही तो हूँ, अवतार ईश्वर का। कहा अर्जुन ने बेशक, आप पर विश्वास है मेरा।।
किशन बोले अगर मुझ पर तेरा विश्वास पुस्तता है। तो मेरे हुक्म से फिर, किस लिए इनकार करता है।।
उठा तीरो-कमाँ तू, वरना पछताएगा जीवन भर। चला दे देखता क्या है, चढ़ा कर कौस छाती पर।।

मौजूए यूरिश = मौजूए
विषय में

मक़ो-अव्यारी = लान
कव

शुजाअत = वशादगी

पुस्तता = मतबून



کیا دھرم کا پالنا ایسا دھرم کا پالنا

اس اثناء میں نکل آیا تھا تھکا چاک دھرتی سے
چلایا اس کے فوراً بعد اس نے تیرا کایا
بڑھاجب تیرا رجن کی طرف کیلکھت سرعے سے
ضرناؤک نامانی نے ارجن کو نہ پہنچایا!
بہت نزدیک ارجن کے گرجا جب بان رجن میں
چلایا دوسرا پھر بان اس نے مشتعل ہو کر
اسی انداز سے کرتے رہے جنگ و جدل دونوں
اچانک پر پھوٹی نے پھر سے پکڑا کرن کے رتھ کو
نظر آئی اس عالم میں، اسے تو نہ فتنہ جنگی
معا اس نے اٹھایا فائدہ کمزور پہلو سے
تقاضہ تھا تدبیر کا، نہ ہوتا خیر یورش میں
بس اتنا سوچ کر ارجن نے رخ سمت کشن منہ
اس اثناء میں نکل آیا تھا تھکا چاک دھرتی سے
چلایا اس کے فوراً بعد اس نے تیرا کایا
بڑھاجب تیرا رجن کی طرف کیلکھت سرعے سے
ضرناؤک نامانی نے ارجن کو نہ پہنچایا!
بہت نزدیک ارجن کے گرجا جب بان رجن میں
چلایا دوسرا پھر بان اس نے مشتعل ہو کر
اسی انداز سے کرتے رہے جنگ و جدل دونوں
اچانک پر پھوٹی نے پھر سے پکڑا کرن کے رتھ کو
نظر آئی اس عالم میں، اسے تو نہ فتنہ جنگی
معا اس نے اٹھایا فائدہ کمزور پہلو سے
تقاضہ تھا تدبیر کا، نہ ہوتا خیر یورش میں
بس اتنا سوچ کر ارجن نے رخ سمت کشن منہ

لے لیا

کیا دھرم کا پالنا ایسا دھرم کا پالنا

اس اثناء میں نکل آیا تھا تھکا چاک دھرتی سے
چلایا اس کے فوراً بعد اس نے تیرا کایا
بڑھاجب تیرا رجن کی طرف کیلکھت سرعے سے
ضرناؤک نامانی نے ارجن کو نہ پہنچایا!
بہت نزدیک ارجن کے گرجا جب بان رجن میں
چلایا دوسرا پھر بان اس نے مشتعل ہو کر
اسی انداز سے کرتے رہے جنگ و جدل دونوں
اچانک پر پھوٹی نے پھر سے پکڑا کرن کے رتھ کو
نظر آئی اس عالم میں، اسے تو نہ فتنہ جنگی
معا اس نے اٹھایا فائدہ کمزور پہلو سے
تقاضہ تھا تدبیر کا، نہ ہوتا خیر یورش میں
بس اتنا سوچ کر ارجن نے رخ سمت کشن منہ
اس اثناء میں نکل آیا تھا تھکا چاک دھرتی سے
چلایا اس کے فوراً بعد اس نے تیرا کایا
بڑھاجب تیرا رجن کی طرف کیلکھت سرعے سے
ضرناؤک نامانی نے ارجن کو نہ پہنچایا!
بہت نزدیک ارجن کے گرجا جب بان رجن میں
چلایا دوسرا پھر بان اس نے مشتعل ہو کر
اسی انداز سے کرتے رہے جنگ و جدل دونوں
اچانک پر پھوٹی نے پھر سے پکڑا کرن کے رتھ کو
نظر آئی اس عالم میں، اسے تو نہ فتنہ جنگی
معا اس نے اٹھایا فائدہ کمزور پہلو سے
تقاضہ تھا تدبیر کا، نہ ہوتا خیر یورش میں
بس اتنا سوچ کر ارجن نے رخ سمت کشن منہ

یہاں = مہاراج

یہاں = مہاراج
= مہاراج کے سامنے گرجا میں
لکھت

یہاں = مہاراج

یہاں = مہاراج

یہاں = مہاراج
= مہاراج
= مہاراج

کماں کھینچی نشانہ لیکے اس نے اتنی شدت سے کہ جب دھیلی پڑی چٹکی تو نکلا تیر سرعت سے
تراز و بن گیا ناوک فلک کا تیر سینے میں لگی اک ضرب ایسی سخت دل کے آگینے میں
کہ فوراً گر پڑا غش کھا کے رن میں کرن سا خوش فن
کیا دھرماتاؤں نے کچھ ایسا دھرم کا پالن

مرا ہے کرن سامر جبری اس کے ہیں چھ کارن

ہوئے مسرور پانڈو کرن کے غش کھا کے گرتے اور ماتم بپا تھا کوروں کی فوج کے اندر
کمی ٹسوس کی ارجن نے اپنے دل کے کینے میں پڑی تھی آج ٹھنڈک اس کے شعلہ خیز سینے میں
کہا پھر اس نے کیشو مورتی سے فخر یہ منس کر کہ میں نے کرن کو مارا ہے جو تھا ظالم و خود سر
شری گھنشا م بولے موکھوں جیسی نہ کر باتیں نہایت پست ہیں اے لاف زن تیری خالیاں
مرا ہے کرن سامر جبری اس کے ہیں چھ کارن بتاتا ہوں تجھے، تو غور سے سن عقل کے دشمن
سبب پہلا ہے اس کا، پرتھوی کا رتھ پکڑ لینا اور اس کا دوسرا کارن ہے اپنی ماں کو دکھ دینا
کوچ کا اس کے تھین جانا ہے اس کا تیسرا کارن ہے چوتھی وجہ پر شورام کی نفرین اے راجن
سبب ہے پانچواں میرا فریب اور چھل کپٹ کرنا چھٹا کارن ہے تیری دشمنی بس کرن کا مرنا

کماں خلیچی نشانہ لے کے اس نے، اتنی شدت سے۔
کی جب ڈیلی پڑی چوٹکی، تو نکلا تیر سورجن سے۔
تراजू बन गया, नावक फगन का, नीर सीने में।
लगी डक जब ऐसी, मरत दिल के आबगीने में।
कि फौरन गिर पड़ा गुण खा के, रण में कर्ण सा खुशफन।
किया धर्मात्माओं ने कुछ ऐसा धर्म का पालन।

मरा है कर्ण सा मर्दे-जरी उसके हैं, छे कारण

हुए मसरूर पांडव, कर्ण के गुण खा के गिरने पर।
उधर मातम बपा था, कौरवों की फौज के अन्दर।
कमी मेहसूस की अर्जुन ने, अपने दिल के कीने में।
पड़ी थी आज ठंडक, उसके शोला-खेज़ सीने में।
कहा फिर उसने केशवमूर्ति से, फखरिया हंस कर।
कि मैं ने कर्ण को मारा है, जो था जालिम-ओ-खुदसर।
श्री घनश्याम बोले मुखों जैसी ने कर बातें।
निहायत पस्त हैं, ऐ लाफ़ ज़न तेरी खुराफातें।
मरा है कर्ण सा मर्दे-जरी उसके हैं छे कारण।
बताता हूँ तुझे, तू गौर से सुन, अकल के दुश्मन।
सबब पहला है उसका, पृथ्वी का रथ पकड़ लेना।
और उसका दूसरा कारण है, अपनी माँ को दुख देना।
कवच का उस के छिन जाना है इस का तीसरा कारण।
है चौथी वजह, परशुराम की नफ़रीन ऐ राजन।
सबब है पांचवाँ, मेरा फरेब और छल कपट करना।
छटा कारण है तेरी दुश्मनी, बस कर्ण का मरना।

शिददत, सुरजन = तेरी

नावक फगन = नीर

चलाने वाला

गुण खाके = चरुया कर

वेहोग हो कर

मसरूर = युग

علاوہ اس کے ارجن کرن ہے ماہر خوش فن جو اگلے جنم میں بالی تھا، اور تھا، اک بڑا دشمن
اسی بالی کو اگلے جنم میں بھی میں نے مارا تھا ادھرمی روپ سے اس کو فن کے گھاٹ اتارا تھا
یہاں بھی یہ ادھرمی روپ مارا گیا رن میں
لکھا تھا اس کا رنا، اس طرح ہی دونوں جنم میں

کرن اور کنتی

حکایت کرن سے مشہور ہے وہ ایک دانی تھا سخاوت میں کوئی ہمسر تھا اس کا اور نہ ثانی تھا
چلا تھا سلسلہ جب دونوں منزل میں لڑائی کا دلوں میں پل رہا تھا حوصلہ زور آزمائی کا
بروئے کرن اس اثناء میں کنتی ایک دن آئی زبان پر حرف مطلب انتہائی پیار سے لائی
کیرے لال تو، جو سوریہ کا چاپ کرتا ہے اور ان کے لطف سے جو دامن مقصود بھرتا ہے
انہیں کا پتر ہے تو، اور میں ہوں والدہ تیسری میں سچ کہتی ہوں تو پید ا ہوا ہے کوکھ سے میری
گواہی سوریہ دیں گے تو ان سے پوچھ لے بیٹا میں جو کہتی ہوں میری بات پر تو بھیاں دے بیٹا
یہ بھشٹر اور پانچوں پانڈواں سب بیک بھائی ہیں ترے دمساز میں، ہمد میں اور تیرے فدائی ہیں
یہ سنکر کرن بولا آج جو میکھر بھر دسہ پر لڑائی کیلے نکلا ہے میداں میں، مگر کس کر

اٹاوا اس کے ارجن، کرن ہے وہ ماہر خوش فن جو اگلے جنم میں بالی تھا، اور تھا، اک بڑا دشمن
اسی بالی کو اگلے جنم میں بھی میں نے مارا تھا ادھرمی روپ سے اس کو فن کے گھاٹ اتارا تھا
یہاں بھی یہ ادھرمی روپ مارا گیا رن میں
لکھا تھا اس کا رنا، اس طرح ہی دونوں جنم میں

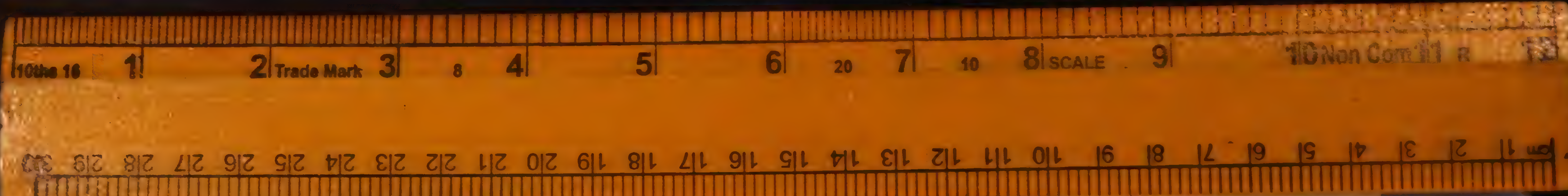
کرن اور کنتی

ہیکایت کرن سے مشہور ہے وہ ایک دانی تھا سخاوت میں کوئی ہمسر تھا اس کا اور نہ ثانی تھا
چلا تھا سلسلہ جب دونوں منزل میں لڑائی کا دلوں میں پل رہا تھا حوصلہ زور آزمائی کا
بروئے کرن اس اثناء میں کنتی ایک دن آئی زبان پر حرف مطلب انتہائی پیار سے لائی
کیرے لال تو، جو سوریہ کا چاپ کرتا ہے اور ان کے لطف سے جو دامن مقصود بھرتا ہے
انہیں کا پتر ہے تو، اور میں ہوں والدہ تیسری میں سچ کہتی ہوں تو پید ا ہوا ہے کوکھ سے میری
گواہی سوریہ دیں گے تو ان سے پوچھ لے بیٹا میں جو کہتی ہوں میری بات پر تو بھیاں دے بیٹا
یہ بھشٹر اور پانچوں پانڈواں سب بیک بھائی ہیں ترے دمساز میں، ہمد میں اور تیرے فدائی ہیں
یہ سنکر کرن بولا آج جو میکھر بھر دسہ پر لڑائی کیلے نکلا ہے میداں میں، مگر کس کر

ہیکایت = ہیکایت

دامن-مکسود = اہمیت

دمساز = غنیل، مین
ہمد = غنیل، مین



اُسے میں چھوڑ کر سنسار کو کیا منہ دکھاؤں گا
یہ کالک منہ پہ کیسے بے وفائی کی لگاؤں گا
مجھے دنیا کے گی پاندؤں کے خوفِ دہشت سے
بچایا کرن نے دامن و غنا کا ہلاکت سے
دگر اس کے، کیا ہے کورواں سے میں نے تپتیاں
مجھے پاندو پہ دلوؤں کا تمکو، بیتِ کرمیہاں
اگر میں مان بھی جاؤں تو کرپا بھیشم اور اسنوت
لڑیں گے یہ، ابھیں رو کے گی آخر کو نسی طاقت
مرا منشا ہے مجھ کو لیکے جو چھ پتر ہیں تیرے
سمجھ کوروں کو تو ویسے ہی یہ ستو پتر ہیں میرے
علاوہ اس کے دونوں میں وہاں کافی ہوئیں باتیں
نتیجے میں سنانی کرن نے ماتا کو صبر و صواب میں

غرض کتنی بہت مایوس ہو کر اپنے گھر آئی
مگر ممتا نے دل میں اک خلشِ پیمان کی پائی

دکھائی شان ایسی دھرم کی دھرماتماؤں نے

حقیقت میں بہت ہیں کرن کے اسباب نے
ادھرمی روپ میں، شیرازہ، مستی بکھرنے کے
کوچ کنڈل جو تھا پیدائشی وروان سورج کا
نمایاں جس سے تھا ایک ایک گوشہ اسکی سج و سج کا
کوچ کیا تھا؟ دفاعی شے تھی اک روشن کی صورت میں
ذریعہ تھا پچاؤ کا و غنا کا، شجاعت میں
اُسے ارجن کے والد اندرجی نے چھل کپٹ کر کے
کوچ کنڈل کو حاصل کر لیا بہروپ اک بھر کے

اُسے میں छोड़ कर संसार को क्या मुँह दियाऊंगा ।
यह कालक मुँह पे कैसे, वे बफाई की लगाऊंगा ।।
मुझे दुनिया कहेगी पांडवों के खौफो-दहशत से ।
बचाया कर्ण ने दामन, बगा गाहे-हलाकत से ।।
दिगर इस के किया है कौरवों से मैं ने यह पैमाँ ।
विजय पांडव पे दिलवाऊंगा तुमको, जीत कर मैदाँ ।।
अगर मैं मान भी जाऊँ तो कृपा, भीष्म और अश्वत ।
लेंगे यह, उन्हें रोकेगी आखिर कौन सी ताकत ।।
मेरा मंशा है मुझ को लेके, जो छे पुत्र है तेरे ।
समझ कौरों को तू, वैसे ही यह सौ पुत्र है मेरे ।।
अलावा इसके दोनों में, वहाँ काफी हुई बातें ।
नतीजे में सुनाई कर्ण ने, माता को सलवातेँ ।।
गुरज कुंती बहुत मायूस होकर, अपने घर आयी ।
मगर ममता ने दिल में, डक खलिश अपमान की पायी ।।

दिखाई شان ऐसी धर्म की धर्मात्माओं ने

हकीकत में बहुत हैं, कर्ण के असबाब मरने के ।
अधर्मी रूप में शीराजाए-हस्ती विखारने के ।।
कवच कुन्डल जो था, पैदाइशी वरदान सूरज का ।
नुमायाँ जिस से था, एक एक गोशा उसकी सज धज का ।।
कवच क्या था ? दिखाई शै थी, डक जौशण की सूत में ।
ज़रिया था बचाओं का, बगा गाहे-गुजाअत में ।।
उसे अर्जुन के वालिद इन्द्रजी ने छल कपट कर के ।
कवच कुन्डल को हासिल कर लिया, बहुरूप डक भर के ।।

पैमा = माता

मंशा = इरादा

सलवान = समीप

नुमायाँ = जाहिर

बगा गाहे-गुजाअत =
मैदाने जंग

بنا کر برہمن کا روپ پہنچے کرن کے درپر وہاں سے اندر لے آئے کوچ کھڈل کو بتیا کر
 دکھائی شان ایسی دھرم کی دھرم تاماؤں نے ادھرم پن سے مارا کرن کو ان نافذوں نے
 اگر یہ قیمتی شے اس طرح پھینکی نہیں جاتی
 تو میدان و غامیں اس کو ہرگز یوں موت آتی

مگر اک قوت برداشت کا نظارہ دکھایا

دروہ چاریہ سے کرن نے اک دن کہا اگر برہمہ شتر سکھلا کر کریں احسان اک بھج پر
 دروہ نے کیا انکار اس فن کو سکھانے سے اٹھا مایوس ہو کر کرن ، ان کے آستانے سے
 وہاں سے کرن پر شورام کے استھان پر پہنچا بتا کر برہمن خود کو تلہ کا شرف چاہا
 برہمہ شتر پر شورام نے سکھلا دیا اس کو برہمن جان کر ہر ایک گربہ تدا دیا اس کو
 اسی اثناء میں اک دن پیش آیا ایسا منظر گرد جی سو رہے تھے کرن کے زانوں پہ سر رکھ کر
 کہیں سے ایک کیرازیر زانو کرن کے آیا کیا سورخ زانوں میں بہت دکھ اس نے پہنچایا
 مگر جنبش نہ کی یہ سوچ کر مرد دلادرنے گرد کی آنکھ کھل جائے نہ میرے ہلنے جلنے سے
 یہاں تک دوسری جانب سے وہ کیرا نکل آیا مگر اک قوت برداشت کا نظارہ دکھلایا

بنا کر براہمن کا روپ پہنچے کرن کے درپر
 وہاں سے اندر لے آئے کوچ کھڈل کو بتیا کر
 دکھائی شان ایسی دھرم کی دھرم تاماؤں نے
 ادھرم پن سے مارا کرن کو، ان نا-خداؤں نے
 اگر یہ قیمتی شے اس طرح پھینکی نہیں جاتی
 تو میدان-و-غام میں اس کو ہرگز یوں موت آتی

مگر اک قوت برداشت-برداشت کا نجزارا دیخلایا

دروہاچار्य سے، کرن نے اک دن کہا آکر
 برہما شتر سیخلا کر، کرے اہسان اک منجر
 دروہا نے کیا انکار، اس فن کو سیخانے سے
 اٹھا مایوس ہو کر کرن، ان کے آستانے سے
 وہاں سے کرن پر شورام کے استھان پر پہنچا
 بتا کر براہمن خود کو، تلہ کا شرف چاہا
 برہمہ شتر پر شورام نے سکھلا دیا اس کو
 براہمن جان کر ہر اک گور بتلا دیا اس کو
 اسی اثناء میں اک دن، پیش آیا ایسا منظر
 گرد جی سو رہے تھے، کرن کے زانوں پہ سر رکھ کر
 کہیں سے ایک کیرازیر زانو کرن کے آیا
 کیا سورخ زانوں میں بہت دکھ اس نے پہنچایا
 مگر جنبش نہ کی یہ سوچ کر مرد دلادرنے
 گرد کی آنکھ کھل جائے نہ میرے ہلنے جلنے سے
 یہاں تک دوسری جانب سے وہ کیرا نکل آیا
 مگر اک قوت برداشت کا نظارہ دکھلایا

کرمی کے = مہر کی دھرم

مایوس = نیراج
 آستان = دربار

تلہ کا شرف =
 تلہ کا شرف کی دھرم

کیرا جان = ماری کے نیچے

خوتی جب آئیں پرشورام جی کی خواب غفلت سے
تو دیکھا کर्ण کے جانو سے خوں بہتا ہے شیدت سے ॥

گولنے کर्ण سے پوچھا کہ آخیر یہ ہوا کیا ہے
تیرا جانو ہے خوں سے تر-بتر یہ مانجرا کیا ہے ॥

بتایا کर्ण نے جب واقعہ تو بولے پرشورام جی
کہ تیری کھوتے-برداشت پر اب شک ہے مجھ کو بھی ॥

تو پھرتی ہو تو سکتا ہے برہمن ہو نہیں سکتا
تو کھتری ہو تو سکتا ہے برہمن ہو نہیں سکتا ॥

غرض جو کچھ سکھائی تھی گرو نے دیا اس کو
وہ سب کچھ چھین گئی، آخر نہ کچھ بھی مل سکا ॥

کبھی प्रतिज्ञا کو بھنگ اپنی وہ نہیں کرتا

یہاں تھے گفنگو میں محرابن اور گردھاری
یہاں تھے گفنگو میں محرابن اور گردھاری ॥

کہا رو، رو کے دیو دھن نے، شیر و غار میں
کہا رو، رو کے دیو دھن نے، شیر و غار میں ॥

کھڑا ہو، جنگ کر، پھرتی تو کر بھی نہیں مرتا
کھڑا ہو، جنگ کر، پھرتی تو کر بھی نہیں مرتا ॥

ترے بن، کرن میری فوج کی ہے آج یہ حالت
ترے بن، کرن میری فوج کی ہے آج یہ حالت ॥

علاوہ اس کے شوبھارت کی ہوتی سیماروں سے
علاوہ اس کے شوبھارت کی ہوتی سیماروں سے ॥

اسی پر کار بھج بن میری سینا کا ہے اب عالم
اسی پر کار بھج بن میری سینا کا ہے اب عالم ॥

شیدت = تہی

تر-بتر = بھیجا دیا

جانو = ران

کھوتے-برداشت = مہن
کرنے کی شکتی

کھلی جب آنکھ پر شورام جی کی خواب غفلت سے
تو دیکھا کَرَن کے زانو سے خوں بہتا شیدت سے ॥

گرو نے کَرَن سے پوچھا کہ آخر یہ ہوا کیا ہے
ترا زانو ہے خوں سے تر بہتر یہ ماجرا کیا ہے ॥

بتایا کَرَن نے جب واقعہ تو بولے پرشورام جی
کہ تیری قوت برداشت پر اب شک ہے مجھ کو بھی ॥

تو پھرتی ہو تو سکتا ہے برہمن ہو نہیں سکتا
تو کھتری ہو تو سکتا ہے برہمن ہو نہیں سکتا ॥

غرض جو کچھ سکھائی تھی گرو نے دیا اس کو

وہ سب کچھ چھین گئی، آخر نہ کچھ بھی مل سکا ॥

کبھی پرتگیا کو بھنگ اپنی وہ نہیں کرتا

یہاں تھے گفنگو میں محرابن اور گردھاری
یہاں تھے گفنگو میں محرابن اور گردھاری ॥

کہا رو، رو کے دیو دھن نے، شیر و غار میں
کہا رو، رو کے دیو دھن نے، شیر و غار میں ॥

کھڑا ہو، جنگ کر، پھرتی تو کر بھی نہیں مرتا
کھڑا ہو، جنگ کر، پھرتی تو کر بھی نہیں مرتا ॥

ترے بن، کرن میری فوج کی ہے آج یہ حالت
ترے بن، کرن میری فوج کی ہے آج یہ حالت ॥

علاوہ اس کے شوبھارت کی ہوتی سیماروں سے
علاوہ اس کے شوبھارت کی ہوتی سیماروں سے ॥

اسی پر کار بھج بن میری سینا کا ہے اب عالم
اسی پر کار بھج بن میری سینا کا ہے اب عالم ॥

یہ کہہ کر خوب دھڑکیں مار کر روتا تھا دیو دھن
منہ اپنا آنسوؤں سے دہا دھوتا تھا دیو دھن
یونہی کرتا ہوا وہ بین پھر واپس چلا آیا
لیا فوجوں کا پھر سے جائزہ اور دل سمجھنا

کرن کا آخری ہمتہان

پڑا تھا کرن حالِ نزع میں دھڑکی کی چھاتی پر
مخاطب ہو کر اجن سے کہا یوں شیا کے نہ سکر
کریس اب آخری ہے کرن کا اک امتحاں باقی
چڑھنے کے لئے ہے سان پر لبک سنان باقی
چلے پھر بھیس میں دونوں برہمن اور بالک کے
قدم لرزیدہ پنچے روپ میں دونوں بھکشک کے
کہا پھر کرن سے گھنٹا جی نے رے سخی دانی
سخاوت میں نہیں ہے کوئی دنیا میں ترثانی
بصدائے میں اے کرن تیرے پاس آیا ہوں
تمناؤں کی دنیا ایک اپنے ساتھ لایا ہوں
جوں بیٹی کی مجھ کو فکر تیرے در پہ لانی ہے
سہارا دے مجھے اے کرن، اب تیری دھاتی ہے
گرہ میں کچھ نہیں، کیسے رچاؤں بیاہ بیٹی کا
کوئی اچھا سا بر ملتا نہیں، قسمت کی بیٹی کا
گرہ میں ہو اگر دام و درم تو سینکڑوں برہمن
یہاں اک دد کی کیا گنتی، جو زر ہو تو بہت میں
فردت ہے مجھے زر کی مری پوری ضرورت کر
ترس کھا ضعف پیری پر مری کچھ تو اعانت کر

ہالے-نجا = دم توڑنے کی
بھی

ہمتہاں = परीक्षा
सान = धार लगाने का
पत्थर
सनाँ = भाला

दानी = सखी
सानी = दुसरा

जर = धन

जोफे-पीरी = बुढ़ापे की
कमजोरी

یہ کہہ کر خوب دھڑکیں مار کر روتا تھا دیو دھن
منہ اپنا آنسوؤں سے دہا دھوتا تھا دیو دھن
یونہی کرتا ہوا وہ بین پھر واپس چلا آیا
لیا فوجوں کا پھر سے جائزہ اور دل سمجھنا

کرن کا آخری امتحان

پڑا تھا کرن حالِ نزع میں دھڑکی کی چھاتی پر
مخاطب ہو کر اجن سے کہا یوں شیا کے نہ سکر
کریس اب آخری ہے کرن کا اک امتحاں باقی
چڑھنے کے لئے ہے سان پر لبک سنان باقی
چلے پھر بھیس میں دونوں برہمن اور بالک کے
قدم لرزیدہ پنچے روپ میں دونوں بھکشک کے
کہا پھر کرن سے گھنٹا جی نے رے سخی دانی
سخاوت میں نہیں ہے کوئی دنیا میں ترثانی
بصدائے میں اے کرن تیرے پاس آیا ہوں
تمناؤں کی دنیا ایک اپنے ساتھ لایا ہوں
جوں بیٹی کی مجھ کو فکر تیرے در پہ لانی ہے
سہارا دے مجھے اے کرن، اب تیری دھاتی ہے
گرہ میں کچھ نہیں، کیسے رچاؤں بیاہ بیٹی کا
کوئی اچھا سا بر ملتا نہیں، قسمت کی بیٹی کا
گرہ میں ہو اگر دام و درم تو سینکڑوں برہمن
یہاں اک دد کی کیا گنتی، جو زر ہو تو بہت میں
فردت ہے مجھے زر کی مری پوری ضرورت کر
ترس کھا ضعف پیری پر مری کچھ تو اعانت کر

یہ سن کر کرن بولا چور ہے زخموں سے تن میرا
سکت باقی نہیں اٹھنے کی بھینکتا ہے بدن میرا
ابھی تو کچھ نہیں ہے میسرے چربی خالی ہے
مجھے افسوس ہے تو ایسے عالم میں سوالی ہے
نہ ہو مایوس، جا میرے مکان کے صد سائل
مری بیوی کرے گی تیرا پورا مدعا سائل

کرن کی سخاوت اپنے عزیز پر

سین سائل نے باتیں کرن کی تو طعنے سے بولا
بڑے چھتے ہوئے انداز میں اپنا دہن کھولا
میں سمجھا تھا تجھے، تو اک شجر ہے ایسا بار آور
بھرا رکھتا ہے جو اپنا، ہر اک موسم میں پھل دیکر
مگر یہ حسن ظن میرا تھا اس پر تبصرہ کیسا
توقع کے طمانچوں کا گلا کیسا، تذکرہ کیسا؟
گراں گزری مزاج کرن پر باتیں یہ سائل کی!
ترپ محسوس کی جہرے سے سائل نے بھی سائل کی
کہا پھر کرن نے دندان جڑے ہیں میرے گوہر سے
وہ ہے پتھر اٹھالا، توڑے تو دانت تھیں
کہا سائل نے پیری کے سبب میں نہیں طاقت
کہ دانتوں کو ترے توڑوں، ہے مجھ میں کہاں قوت
یہ سن کر کرن خود ہی سنگ لینے کیلے لکھکا
بشکل وہ کھسکتا رہتا اس سنگ تک پہنچا
پھر اس نے اپنے ہی ہاتھوں سے اپنے دانت کو توڑا
زمانے کے لئے نقش سخاوت دہر میں چھوڑا

یہ سن کر کرن بولا چور ہے زخموں سے تن میرا
سکت باقی نہیں اٹھنے کی، فٹکتا ہے بدن میرا
ابھی تو کچھ نہیں ہے میرے پلے جیب خالی ہے
مجھے افسوس ہے تو، ایسے عالم میں سوالی ہے
ن ہو مایوس، جا میرے مکان پر دے سدا سائل
میری بیوی کرے گی، تیرا پورا مدعا سائل

کرن کی سخاوت اپنے زخموں پر

سورنی سائل نے باتیں کرن کی تو تانج سے بولا
بڑے چوہتے ہوئے انداز میں اپنا دھن کھولا
میں سمجھا تھا تجھے، تو اک شجر ہے ایسا بار آور
بھرا رکھتا ہے جو اپنا، ہر اک موسم میں فیل دیکر
مگر یہ حسن ظن میرا تھا اس پر تبصرہ کیسا
توقع کے طمانچوں کا گلا کیسا، تذکرہ کیسا؟
گراں گزری مزاج کرن پر باتیں یہ سائل کی!
ترپ محسوس کی جہرے سے سائل نے بھی سائل کی
کہا پھر کرن نے دندان جڑے ہیں میرے گوہر سے
وہ ہے پتھر اٹھالا، توڑے تو دانت تھیں
کہا سائل نے پیری کے سبب میں نہیں طاقت
کہ دانتوں کو ترے توڑوں، ہے مجھ میں کہاں قوت
یہ سن کر کرن خود ہی سنگ لینے کیلے لکھکا
بشکل وہ کھسکتا رہتا اس سنگ تک پہنچا
پھر اس نے اپنے ہی ہاتھوں سے اپنے دانت کو توڑا
زمانے کے لئے نقش سخاوت دہر میں چھوڑا

سکت = شکت

معدا = دھن

تانج = بھگ

بار آور = فیلدار

دھن-جمن = اچھے خیال
توڑنے = آہا، اٹھانا

سائل = شکت

دندان = دانت

سنگ = پتھر
نکشہ سخاوت =
دانتیلتا کے نشان
دھر = جگ

دیے سائیل کو ہیرے اور جواہر توڑ کر جس دم
تو سائیل آیا املی روپ میں ہو کر فروش و خرم

شری گھنشا م جی تھے برہمن کے روپ میں
جسے سمجھا تھا بھٹک اس سے ٹک کر بن گیا

کর্ণ کا

سفر-آ-آخیرت

نچارا دیکھ کر جودو-سرخا کا بولے بنواری
رہا فہرے-سرخاوت تیرا، ہر ایک دور میں جاری

میں تجھ سے آج خوش ہوں کرن مجھ سے مانگ کوئی
کئی وردان اس نے صاحب اعجاز سے مانگے

علاوہ اس کے اک ور اور مانگا پھر مزاری سے
لجابت سے خوشامد سے نہایت نکساری سے

کہ اے بھگوان مجھ کو داہ کیجئے لہی دھرتی پر
جہاں اب تک ہو اہو کوئی بھی جل نہ خاکستر

کرن شنائی نے یہ وردان بھی منظور نہ کیا
نظارہ خلق و شفقت کا جہاں والوں کو دکھلایا

پھر اس کے بعد ہی راہِ عساکر چل پڑا ہی

ہوئی اس راہ پر چلنے میں مطلق پھر نہ کوتاہی

کھڑا جی نے یہ ورنہ بھی مانجور فرمایا
نچارا خولکے-شاکت کا، جہاں والوں کو دکھلایا

فیر اسکے باد ہی، راہے-ادم کا چل پڑا راہی
ہوئی اس راہ پر چلنے میں متعلق، فیر نہ کوتاہی

جودو-سرخا = خیر
خیرات، اینام

خاکستر = جل کر راکھ
ہونا

دیے سائیل کو ہیرے اور جواہر توڑ کر جس دم
تو سائیل آیا املی روپ میں ہو کر فروش و خرم

شری گھنشا م جی تھے برہمن کے روپ میں
جسے سمجھا تھا بھٹک اس سے ٹک کر بن گیا

کرن کا سفر آخرت

نظارہ دیکھ کر جودو-سرخا کا بولے بنواری
رہا فیض سخاوت تیرا ہر اک دور میں جاری

میں تجھ سے آج خوش ہوں کرن مجھ سے مانگ کوئی
کئی وردان اس نے صاحب اعجاز سے مانگے

علاوہ اس کے اک ور اور مانگا پھر مزاری سے
لجابت سے خوشامد سے نہایت نکساری سے

کہ اے بھگوان مجھ کو داہ کیجئے لہی دھرتی پر
جہاں اب تک ہو اہو کوئی بھی جل نہ خاکستر

کرن شنائی نے یہ وردان بھی منظور نہ کیا
نظارہ خلق و شفقت کا جہاں والوں کو دکھلایا

پھر اس کے بعد ہی راہِ عساکر چل پڑا ہی

ہوئی اس راہ پر چلنے میں مطلق پھر نہ کوتاہی

چتا اس کی جلائی نغش اپنے ہاتھ پر رکھ کر

جہانِ خیر و شر سے کرن آخر کر گیا رحلت
حیاتِ چند روزہ کی کشاکش سے ملی فرصت
ادھر تھے نند لالہ ایسی دھرتی کے تجسس میں
کہ ہر ہونہ اُس جیسی زمیں کوئی نقش میں
جہاں کرنا تھا ان کو، اک جری ہمت کو فکستر
جو تھا چرخ و غا کا سب سے روشن نیلہ اکبر
مگر ایسی زمیں جگ میں نہ را دھے شیا کے پائی
چتا دے کر جہاں پوری کریں وعدہ کی سچائی
بہت فکر و نظر کے بعد پہنچے اس نتیجے پر
چتا اس کی جلائی نغش اپنے ہاتھ پر رکھ کر
خیالِ شیا علی شکل میں پھریں ہو اظہار
جلایا اپنے دائیں ہاتھ پر پھر کرن کو احسنر

گلن سے پھول برسایا چتا پر دیوتاؤں نے

مقدس پاک روتوں اور سب دھرماتماؤں نے

چیتا اس کی جلائی ناش اپنے ہاتھ پر رکھ کر

جہانے-خیر و-شر سے کُرنِ آخرِ کر گیا رہلت۔
ہیا تے-چند روزہ کی، کشاکش سے ملی فرصت۔

ادھر تھے نند لالہ، ایسی دھرتی کے تجسس میں۔
کہ ہر ہونہ اُس جیسی زمیں کوئی نقش میں۔

جہاں کرنا تھا ان کو، اک جری ہمت کو فکستر۔
جو تھا چرخ و غا کا سب سے روشن نیلہ اکبر۔

مگر ایسی زمیں جگ میں نہ را دھے شیا کے پائی۔
چتا دے کر جہاں پوری کریں وعدہ کی سچائی۔

بہت فکر و نظر کے بعد پہنچے اس نتیجے پر۔
چتا اس کی جلائی نغش اپنے ہاتھ پر رکھ کر۔

خیالِ شیا علی شکل میں پھریں ہو اظہار۔
جلایا اپنے دائیں ہاتھ پر پھر کرن کو احسنر۔

گلن سے پھول برسایا چتا پر دیوتاؤں نے۔
مقدس پاک روتوں اور سب دھرماتماؤں نے۔

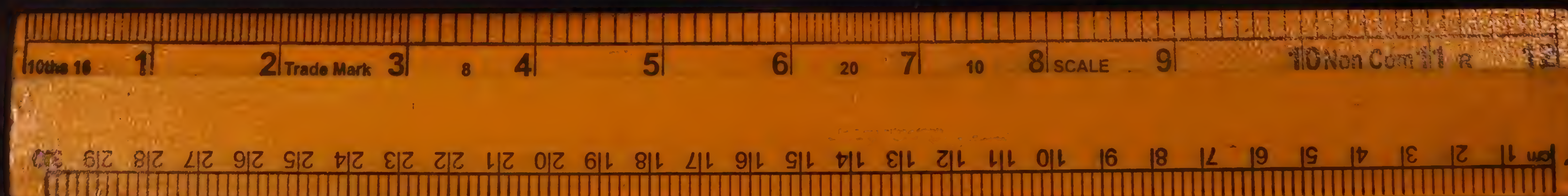
خیر و-شر = نیکی اور
بدمعاشی
کشاکش = کشیدگی
تجسس = تلاش، جستجو
تکدوس = پرتو

نہایت-اکبر = بڑا
مستار

فکر و-نظر = سوچ
سمجھ
ناش = لاش

مہا بھارت کا چوتھا
کمانڈر انچیف راجہ شل
میدانِ عمل میں

महाभारत
का चौथा
कमान्डर-इनचीफ
राजा शल्ल
मैदाने-अमल में



راجہ شل

سیناپتی کے منصب پر

مہائیڈھ نے دو ہفتے سے زیادہ لول تو کھینچا
مگر اب تک وہی تھا جنگ کے میدان کا نقشہ
وہی سرگرمی جنگ و جدل تھی روزِ اول سے
وہی خورنریاں جاری تھیں اب تک قتل و غارت کی
مگر تنے دلوں کی جنگ میں رنجشتر کے اندر
یہی بس کام آئے فوج درلودھن کے تین افسر
یہ افسر بے گماں تینوں سپہ سالار اعلیٰ تھے
فنون جنگ کے ماہر تھے اور سردار اعلیٰ تھے
سپہ سالارِ اول بھی شمشیر سے پہلے کام آئے
سر میدانِ خدگی سب پر آرام فرمائے
پھر اسکے بعد کام آئے دروند چاریہ رن میں
حقیقت میں جو استادوں کے تھے استادِ فتن میں
سپہ سالارِ آخر تیسرا بھی رن میں کام آیا
اجل کا تیسرا پھر کرن کے حصے میں جام آیا
بہت افسوس درلودھن کو تھا تینوں کے مرنے کا
یہی اک راستہ تھا بحرِ غم سے پار اترنے کا

کہ راجہ شل کو سیناپتی کا منصبِ اکبر

عطا کر کے اٹار جائے کل میدان کے اندر

راجا شلل

سیناپتی کے منصب پر

مہایودھ نے دو ہفتے سے زیادہ لول تو کھینچا
مگر اب تک وہی تھا جنگ کے میدان کا نقشہ

وہی سرگرمی جنگ و جدل تھی روزِ اول سے
وہی خورنریاں جاری تھیں اب تک قتل و غارت کی

مگر تنے دلوں کی جنگ میں رنجشتر کے اندر
یہی بس کام آئے فوج درلودھن کے تین افسر

یہ افسر بے گماں تینوں سپہ سالار اعلیٰ تھے
فنون جنگ کے ماہر تھے اور سردار اعلیٰ تھے

سپہ سالارِ اول بھی شمشیر سے پہلے کام آئے
سر میدانِ خدگی سب پر آرام فرمائے

پھر اسکے بعد کام آئے دروند چاریہ رن میں
حقیقت میں جو استادوں کے تھے استادِ فتن میں

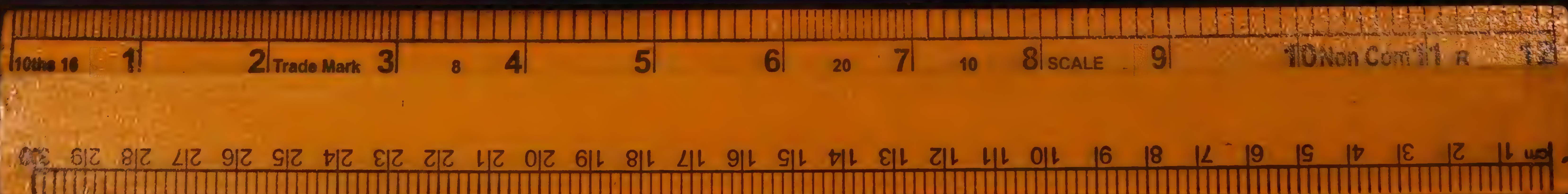
سپہ سالارِ آخر تیسرا بھی رن میں کام آیا
اجل کا تیسرا پھر کرن کے حصے میں جام آیا

بہت افسوس درلودھن کو تھا تینوں کے مرنے کا
یہی اک راستہ تھا بحرِ غم سے پار اترنے کا

کہ راجا شلل کو سیناپتی کا منصبِ اکبر
عطا کر کے اٹار جائے کل میدان کے اندر

اُپھل = پہلا

بے گماں = بے شک



نیا تھا شل کا انداز فوجوں کو لڑانے کا

ابھی تک گیارہ اکشونی سپاہی کام آئے تھے
نظام فوج میں تنظیم نو کی بھر ضرورت تھی

دیران و غایں افراتفری جیسی حالت تھی
ہوئیں پھر جمع جو تھیں منتشر، طرفین کی فوجیں

مجاز جنگ تنور و غا سے گرم تھا سارا
نظر آتا تھا ہر جاقٹل و خونریزی کا نظارہ

وغایں شل کی سرکردگی میں کور کا شکر
نبرد آرا تھا فوج پانڈواں سے رن کی دھڑکی پر

نیا تھا شل کا انداز فوجوں کو لڑانے کا
لیا ہر مورچے سے کام دشمن کو مٹانے کا

ہدایت مل رہی تھی ہر روش پر لڑنیوالو کو
رکھا تھا نگہ میں محفوظ سب دشمن کی چالو کو

دگر اسکے وہ خود بھی برسریکا رتھارن میں
بہ حسن کرد و فر، اغیار سے دوچار تھارن میں

قدم پڑنا جہاں اس کا وہاں بھونچال آجانا
دہان حربہ آتش فشاں سے آگ برساتا

کسی میں کب یہ جرات تھی کہ اسکے سامنے آئے
نبرد آرا ہو اور فنی مہارت اپنی دکھلائے

بہادر سورما بھی سامنے آنے سے گھبراتے
جہر بھی لٹساکشتوں کے پستے میں لگاتے

بہادر سورما بھی سامنے آنے سے غبارا تے
جیگر بھی ٹوٹتا کشتوں کے پستے میں لگاتے

مونتشر = تیکری ہڈ
ترفین = دونوں طرف کی
جولماٹ = سمود
تنورے-وگا = جنگ کی
بھٹی

سرکردگی = ماتہت

ہدایت = آدیش

ہربا-ا-اتیش =
ا-تیش
جورجٹ = ہوسلا

نیا تھا شل کا انداز فوجوں کو لڑانے کا

ابھی تک گیارہ اکشونی سپاہی کام آئے تھے
نظام فوج میں تنظیم نو کی بھر ضرورت تھی

دیران و غایں افراتفری جیسی حالت تھی
ہوئیں پھر جمع جو تھیں منتشر، طرفین کی فوجیں

مجاز جنگ تنور و غا سے گرم تھا سارا
نظر آتا تھا ہر جاقٹل و خونریزی کا نظارہ

وغایں شل کی سرکردگی میں کور کا شکر
نبرد آرا تھا فوج پانڈواں سے رن کی دھڑکی پر

نیا تھا شل کا انداز فوجوں کو لڑانے کا
لیا ہر مورچے سے کام دشمن کو مٹانے کا

ہدایت مل رہی تھی ہر روش پر لڑنیوالو کو
رکھا تھا نگہ میں محفوظ سب دشمن کی چالو کو

دگر اسکے وہ خود بھی برسریکا رتھارن میں
بہ حسن کرد و فر، اغیار سے دوچار تھارن میں

قدم پڑنا جہاں اس کا وہاں بھونچال آجانا
دہان حربہ آتش فشاں سے آگ برساتا

کسی میں کب یہ جرات تھی کہ اسکے سامنے آئے
نبرد آرا ہو اور فنی مہارت اپنی دکھلائے

بہادر سورما بھی سامنے آنے سے گھبراتے
جہر بھی لٹساکشتوں کے پستے میں لگاتے

بہادر سورما بھی سامنے آنے سے غبارا تے
جیگر بھی ٹوٹتا کشتوں کے پستے میں لگاتے

نکول سے کর্ণ کے بेटوں کی जोर आजमाई

بڈھار ایک سمٹ جاری تھی لڑائی آج شدت سے
شیرخونڈ، سارڈکی، بھی لڑ رہے تھے پوری قوت سے
وہی دن تین بٹے کرن کے میدان میں کام آئے
نکول کے سامنے جس وقت آیا کرن کا بیٹا
بڑھا پھر دوڑا بیٹا نہایت جوش میں آکر
یہ دونوں مر گئے تو تیسرا فرزند بل کھا کر
سنبھل اب میری باری ہے ٹیلے پھیر دار کرتا ہوں
یہ کہہ کر تیغ کو تولا بسرعت نیترا کاٹا
مثال برق ہر ہر دار پر تلوار لہرائی
پریا پئے وار سے فوراً ہی دم جارج کا بھرا آیا
دفاع و جارحیت سے نکول نے پائی کچھ مہلت
اسی دم بھر کی مہلت نے اسے بخشی تو لائی
کہ اک بجلی سی کوندی دفعتاً یوں لپکتی مکتی
صدائے آفریں نکلی شری گھنٹا مکتی

نجات = مکتی

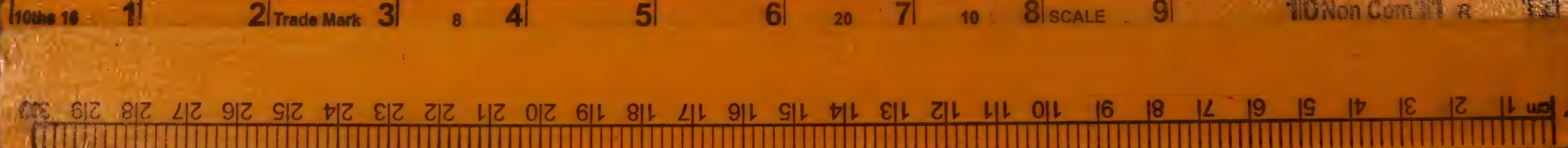
فرزند = بٹا
بوتے-خودسر = غمگینی

پیا-پے = بار بار

دفا-او-جاریہیت =
ہملا اور بچاؤ

نکول سے کرن کے بیٹوں کی زور آزمائی

ادھر اک سمٹ جاری تھی لڑائی آج شدت سے
شکھنڈی، ساٹھی بھی لڑ رہے تھے پوری قوت سے
اسی دن تین بٹے کرن کے میدان میں کام آئے
نکول کے سامنے جس وقت آیا کرن کا بیٹا
بڑھا پھر دوڑا بیٹا نہایت جوش میں آکر
یہ دونوں مر گئے تو تیسرا فرزند بل کھا کر
سنبھل اب میری باری ہے ٹیلے پھیر دار کرتا ہوں
یہ کہہ کر تیغ کو تولا بسرعت نیترا کاٹا
مثال برق ہر ہر دار پر تلوار لہرائی
پریا پئے وار سے فوراً ہی دم جارج کا بھرا آیا
دفاع و جارحیت سے نکول نے پائی کچھ مہلت
اسی دم بھر کی مہلت نے اسے بخشی تو لائی
کہ اک بجلی سی کوندی دفعتاً یوں لپکتی مکتی
صدائے آفریں نکلی شری گھنٹا مکتی



پلک اپنی ن تھی، تہو-نکول اس طرح لہرای۔
میسالے-بک چمکی، اور میگفر کی طرف آئی۔
مگر اس نے چھپایا اپنا مغر ڈھال کے نیچے
خپے جیسے کوئی ایک انکبوتی جال کے نیچے۔
سپر پر جب گری سیف قضا تو ڈھال کو توڑا
فیر اس کے بعد رشتہ مغر بد نجات سے جوڑا
پھا مغر تولی پھر کاسہ سر کی خبر اس نے
لہو کے ساتھ چائنا شوق سے پھر مغر ہر اس نے
غرض تیغ نکلنے لگاٹ پر پہنچا دیا اسکو
اچلنے اپنے پہلو میں خوشی سے لیا اسکو

تہو-نکول = نکول کی
تالوار

انکبوتی جال = مکڑی
کا جال
مپر = ڈال
سے-کڑا = تالوار

مگرے-سر = سر کا
بھجا، گوا

اجل = مہل

راجہ شل اور بھیم کی زور آزمائی کی زور آزمائی

حقیقت ہے فن جنگ و جہل میں شل سے بڑھ کر
یہی تھی وجہ جو سینا پتی کا منصب اکبر
کشن بولے درونہ، کران کر پے بھیشم در یو دھن
علاوہ ان کے ارجن بھیم اور سہیلو یہ سارے
خیال شام کے بالعکس لیکن رن کی دھرتی پر
کفر ایل پڑا وہ شل پر طوفان کی مانند
مگر اس نے نگا کر جست مزب بھیم سے پہلے
مکڑی کا جال

مہسبے-اکبر = بڑا
اوہدا

بیل اکس = खिलाफ،
ولٹ

جست = ڈالنا

مثال برق چمکی اور مغر کی طرف آئی
چھپے جیسے کوئی ایک انکبوتی جال کے نیچے
پھر اس کے بعد رشتہ مغر بد نجات سے جوڑا
لہو کے ساتھ چائنا شوق سے پھر مغر ہر اس نے
اچلنے اپنے پہلو میں خوشی سے لیا اسکو

راجہ شل اور بھیم کی زور آزمائی

حقیقت ہے فن جنگ و جہل میں شل سے بڑھ کر
یہی تھی وجہ جو سینا پتی کا منصب اکبر
کشن بولے درونہ، کران کر پے بھیشم در یو دھن
علاوہ ان کے ارجن بھیم اور سہیلو یہ سارے
خیال شام کے بالعکس لیکن رن کی دھرتی پر
کفر ایل پڑا وہ شل پر طوفان کی مانند
مگر اس نے نگا کر جست مزب بھیم سے پہلے
مکڑی کا جال

وہی بس چشم زدیں بھیر گیا آنکھوں میں یہ منظر
کیا دھاوا دلاور بھیم پر مرد دلاور نے
تو فوراً بھیم نے بھی بڑھکے اسکے وار کو روکا
سُبک دستی کی اُس نے آج ایسی شان دکھائی
جو اب بھیم نے بھی گرز مار پوری طاقت سے
دُناؤں کی صداؤں سے محراب ہول کھاتے تھے
یقیناً وہ بڑے جنگی و آہن جان تھے دونوں
ابھی تک دونوں ہم پلہ رہے زور آزمائی میں
نہ حاصل کر سکا سبقت کوئی بھی اس لڑائی میں

نہ ہوتا ناश मेरे दोस्तों का इस तरह जीवन

لڑائی ہو رہی تھی خوب جم کر دونوں شیروں میں
یہ طرز جنگ در یوہن نے دیکھا شل کا جسم
اگر پہلے ہی میں سینا پستی اسکو بنا لیتا
دروہ کرن ہی مرتے، نہ مرتے بھیشم و مٹاشن

चष्मेजद = पलक झपकते
ही
मिमने काह = तिनके की
तरह
शनावर = गोता लगाने
वाला

सुबक دستی = चालाकी

अजुदर = साँप

आहनजान = सख्त जान
खाकान = बादशाह

सबकत = पहले विजय
पाना

बा-गिरया चष्मेनम =
आँखों में आँसू भर के

وہیں بس چشم زدیں بھیر گیا آنکھوں میں یہ منظر
کیا دھاوا دلاور بھیم پر مرد دلاور نے
تو فوراً بھیم نے بھی بڑھکے اسکے وار کو روکا
سُبک دستی کی اُس نے آج ایسی شان دکھائی
جو اب بھیم نے بھی گرز مار پوری طاقت سے
دُناؤں کی صداؤں سے محراب ہول کھاتے تھے
یقیناً وہ بڑے جنگی و آہن جان تھے دونوں
ابھی تک دونوں ہم پلہ رہے زور آزمائی میں
نہ حاصل کر سکا سبقت کوئی بھی اس لڑائی میں

نہ ہوتا ناश میرے دوستوں کا اس طرح

لڑائی ہو رہی تھی خوب جم کر دونوں شیروں میں
یہ طرز جنگ در یوہن نے دیکھا شل کا جسم
اگر پہلے ہی میں سینا پستی اسکو بنا لیتا
دروہ کرن ہی مرتے، نہ مرتے بھیشم و مٹاشن

بڈھار چنچھامجی نے شلل کا دیکھا یہ نظر آرا
 کی مہدوں میں دلاواں بھیم سے تھا وہ نبرد آرا
 تو فوراً رتھ کو موڑا پھر انھوں نے شلل کی جانب
 کہ استاد تھا جس پر شب بھیدی، صف شکن راگ
 اشارہ شیاں کپاتے ہی پھر راجن نے غلٹ سے
 پیائے شلل کی جانب چلائے تیر سر سے
 علاوہ چند تیروں کے ہوئے ناوک بھی کاری
 ہوئی تھی جس کے کارن شلل پر فوراً غشی طاری
 اُسے پھر ہوش میں لانے کو اسکا سار تھی آیا
 بڑی ہی مشکوں کے بعد اسکو ہوش میں لایا

گیرا دھرتی پہ راجہ شلل رشتہ موت جوڑا

ہوا چیتن، راجہ شلل میدان میں بہر صورت
 دیکھنے لگے اُسے دیکھا تو کافی غیظ میں آیا
 کسی موقع پہ میدان نے خوش ہو کر دیکھنے لگو
 یہ شکتی، خوش کو راجہ سے شیشو شکر نے پانی تھی
 وہ شکتی جب دیکھنے لگے چلائی شلل راجہ پر
 یکایک ہو گیا ہنگامہ محشر میدان
 فضا میں کاگ، آلو، اور چمکا ڈر کی پروازیں
 اُسے ہوش میں لانے کو اسکا سار تھی آیا

راکب = سوار

زجلت = زلزلہ
 سُرطن = تہی

چیتن = ہوش میں

گہڑ = گھوڑا
 مرسا رتھ = ہیرے جڑا
 ہوا رتھ
 اتا = وادان
 مہیگر = مہدائے-جنگ کے
 حالات کو تبدیل کرنے
 والا

ادھر گھنٹام جی نے شلل کا دیکھا یہ نظر آرا
 کی مہدوں میں دلاواں بھیم سے تھا وہ نبرد آرا
 تو فوراً رتھ کو موڑا پھر انھوں نے شلل کی جانب
 کہ استاد تھا جس پر شب بھیدی، صف شکن راگ
 اشارہ شیاں کپاتے ہی پھر راجن نے غلٹ سے
 پیائے شلل کی جانب چلائے تیر سر سے
 علاوہ چند تیروں کے ہوئے ناوک بھی کاری
 ہوئی تھی جس کے کارن شلل پر فوراً غشی طاری
 اُسے پھر ہوش میں لانے کو اسکا سار تھی آیا
 بڑی ہی مشکوں کے بعد اسکو ہوش میں لایا

گرا دھرتی پہ راجہ شلل رشتہ موت جوڑا

دکھائی پھر بہ معروف دغا ہو کر بڑی جرات
 مڑے رتھ کو اپنے موڑ کر پھر سامنے لایا
 عطا اک ایسی شکتی کی تھی، اس رن کے بغیر کو
 یہی، شیشو سے میدان، کے پھر حصے میں آئی تھی
 انوکھے دھنگ سے کچھ باتیں آئیں سارے لشکر
 اندھیرا پر تھوی پر چھایا، ہر سواٹھا طوفان
 خواست خیز چاروں سمت سے اٹھتی تھیں آوازیں
 اُسے ہوش میں لانے کو اسکا سار تھی آیا

اُسے ہوش میں لانے کو اسکا سار تھی آیا

کहीं आन्धी कहीं तूफ़ाँ, कहीं बिजली कड़कती थी।
यह मंजर देखकर हर एक की छाती धड़कती थी॥
बरसता था फलक से मिस्ते-बारों खून धरती पर।
सितारे टूट कर आकाश से गिरते थे रह रह कर॥
वह शक्ति हर दिशा से घूम कर जब शल्ल तक आई
तो फौरन उसने नापी, शल्ल के सीने की गहराई॥
फिर इसके बाद उसने, दिलको ताका, पुष्ट को तोड़ा।
गिरा धरती पे राजा शल्ल, रिश्ता मौत से जोड़ा॥

जंग में दुर्योधन की शिकस्त

पड़ा था खूँ में लत पत, शल्ल राजा वे हिसो-हरकत।
जो अपने वक्त का था सफ़ शिकन, और वा सलाहियत॥
सरे-जंगाह सारे भाई, दुर्योधन वद अरुतर के।
हुए सद हैफ़ रुखसत, लोक से परलोक मरमर के॥
अलावा इसके लाखों वीर, मैदाने-शुजाअत में।
लड़े, लड़कर मरे, जो थे यगाना अपनी ताकत में॥
यहाँ तक जंग में काम आ गयी जब फौजे-दुर्योधन।
जो इक दो थे, बचा कर वह भी भागे, जंग से दामन॥
शकुनी भी उसी दिन, मौत की आगोश में पहुँचा।
हमेशा के लिए वह, आलमे-खामोश में पहुँचा॥
वह अपने दौर का इतना बड़ा था पुरफ़नो-शातिर।
मुकाम उसका जहाने-मक्र में था अव्वल-ओ-आखिर॥
लगाना चाहता था ज़र्व जालिम पुष्टे-अर्जुन पर।
मगर फौरन नज़र सहदेव की इस पर पड़ी जाकर॥

फलक = आसमान,
आकाश
मिस्ते-बारों = वारंजन
की तरह

सद-हैफ़ = बहुत
अफ़सोस

کہیں آندھی کہیں طوفان، کہیں بجلی کڑکتی تھی
یہ منظر دیکھ کر ہر ایک کی چھاتی دھڑکتی تھی
برساتا تھا فلک سے مثل باران خون دھرتی پر
ستارے لوٹ کر آکاش سے گرتے تھے رہ رہ کر
وہ شکتی ہر دشا سے گھوم کر جب شل تک آئی
تو فوراً اسنے ناپی شل کے سینے کی گہرائی
پھر اسکے بعد اسنے دل کو تاکا پشت کو توڑا
گرا دھرتی پہ راجہ شل شرنہ موت سے جوڑا

جنگ میں درلودھن کی شکست

پڑا تھا خون میں لت پت شل راجہ جس چرکت
جو اپنے وقت کا تھا صف شکن اور باصلاحیت
سر جگاہ سارے بھائی درلودھن بد اختر کے
ہوئے مدحیف خضعت لوک سے پر لوک مڑ کر
علاوہ اسکے لاکھوں ویر، میدان شجاعت میں
لڑے، لڑکر، مڑے جو تھے یگانہ اپنی طاقت میں
یہاں تک جنگ میں کام آگئی جب فوج درلودھن
جواک دو تھے، بچا کر وہ بھی بھاگے جنگ سے دامن
شکوئی بھی اسی دن موت کی آغوش میں پہنچا
ہمیشہ کیلئے وہ عالم خاموش میں پہنچا
وہ اپنے دور کا اتنا بڑا تھا پرفن و شامل
مقام اسکا جہان مکر میں تھا اول و آخر
لگانا چاہتا تھا ضرب ظالم پشت ارجن پر
مگر فوراً نظر سہیلو کی اس پر پڑی جا کر

ऐ मेरे लाल तुझ पर तेरी माँ सौ जान से वारी

बयाँ की जा चुकी है, पहले ही तहकीरे-गंधारी।
वह क्या शे थी? बनी जो वाइसे-नफरीनो-बेजारी।।

पढ़ा है हम ने यह, बुर्जे-हमल में जब था दुर्योधन।
फिरासत ने सुझाई, दिल में उसके, बात इक अहसन।।

पति तो सूर है, जब लख्ते-दिल को वह न देखेगा।
दिले-मैहजूँ न जाने किस कदर, फिर उसका तड़पेगा।।

यही सोचा है, वह है जिस तरह जीवन का इक साथी।
बनूंगी ! मैं भी साथी, इस तरह शौहर के हर दुख की।।

पस अपनी चष्मे-बीना को, मैं उमदन बंद कर लूँगी।
अब अपनी आँख से नूरे-नजर को मैं न देखूँगी।।

अमल पैरा इरादे पर हुई फिलफौर गंधारी।
हमेशा के लिए, आँखों पे अपनी बाँध ली पट्टी।।

यहाँ तक हो गया जब पुत्र दुर्योधन जवाँ उसका।
हुआ हर सन्त फिर, हंगामाए-जंगो-जदल बरपा।।

तो उसने अपने बेटे से कहा ऐ जाने गंधारी।
ऐ मेरे लाल तुझ पर, तेरी माँ सौ जान से वारी।।

मुझे डर है कि तन्नूरे-वगा कल गर्म जब होगा।
बदन जख्मों से मेरे लाल, तेरा खन्दा लब होगा।।

इसी कारण मेरे लख्ते-जिगर, ऐ चाँद के टुकड़े।
बरहना हो के इस्तादा हो, फौरन तू मेरे आगे।।

तेरे जिस्मे-बरहना पर, नजर डालूँगी मैं जिसदम।
तो हो जाएगा तेरा जिस्म, फिर लाफानी-ओ-मुहकम।।

तहकीर = अपमान
शे = चीज़

अहसन = भली

चष्मे-बीना = देखती
आँख

लाफानी-ओ-मुहकम =
मज़बूत, कभी न खत्म
होने वाला

ऐ मेरे लाल तू ज़िंदगी में सो जान से वारी

बियाँ की जा चुकी है, पहले ही तहकीरे-गंधारी।
वह क्या शे थी? बनी जो वाइसे-नफरीनो-बेजारी।।

पढ़ा है हम ने यह, बुर्जे-हमल में जब था दुर्योधन।
फिरासत ने सुझाई, दिल में उसके, बात इक अहसन।।

पति तो सूर है, जब लख्ते-दिल को वह न देखेगा।
दिले-मैहजूँ न जाने किस कदर, फिर उसका तड़पेगा।।

यही सोचा है, वह है जिस तरह जीवन का इक साथी।
बनूंगी ! मैं भी साथी, इस तरह शौहर के हर दुख की।।

पस अपनी चष्मे-बीना को, मैं उमदन बंद कर लूँगी।
अब अपनी आँख से नूरे-नजर को मैं न देखूँगी।।

अमल पैरा इरादे पर हुई फिलफौर गंधारी।
हमेशा के लिए, आँखों पे अपनी बाँध ली पट्टी।।

यहाँ तक हो गया जब पुत्र दुर्योधन जवाँ उसका।
हुआ हर सन्त फिर, हंगामाए-जंगो-जदल बरपा।।

तो उसने अपने बेटे से कहा ऐ जाने गंधारी।
ऐ मेरे लाल तुझ पर, तेरी माँ सौ जान से वारी।।

मुझे डर है कि तन्नूरे-वगा कल गर्म जब होगा।
बदन जख्मों से मेरे लाल, तेरा खन्दा लब होगा।।

इसी कारण मेरे लख्ते-जिगर, ऐ चाँद के टुकड़े।
बरहना हो के इस्तादा हो, फौरन तू मेरे आगे।।

तेरे जिस्मे-बरहना पर, नजर डालूँगी मैं जिसदम।
तो हो जाएगा तेरा जिस्म, फिर लाफानी-ओ-मुहकम।।

तू ज़िंदगी में
सो जान से वारी

तू ज़िंदगी में
सो जान से वारी

برہنہ پیش مادر کیسے ہوگا عقل کے دشمن

یہ باتیں سن کر گندھاری کی درلودھن چلا گھر سے گیا پانڈو کے منڈل میں بفرحت مشورہ لینے
 دیا پانڈو نے مخلص دوست بن کر مشورہ اسکو جو سچی بات تھی کہدی وہ ساری برہما اسکو
 وہاں سے وہ خوش و خرم چلا پھر جانب مادر کہ اپنی ماں کی خدمت میں برہنہ پیش ہو جا کر
 ہوئی مد بھیڑ لیکن شیا م سے اُف ثوئی قیمت سب اس سمت آئیک انھوں نے پوچھا با خلت
 بغیر مگر درلودھن نے سارا حال بتلایا جسے سن کر شری گنیشام نے ارشاد فرمایا
 ارے بچے کوئی دشمن بھی دیگا مشورہ بہتر جو تو پانڈو سے لینے مشورہ پہنچا تھا انکے گھر
 ذرا دل پر تو اپنے ہاتھ رکھ کر سوچ درلودھن برہنہ پیش مادر کیسے ہوگا عقل کے دشمن
 اگر تجھکو برہنہ ہو کے ماں کے پاس جانا ہے یہ بار بے حیائی تجھکو درلودھن اٹھانا ہے
 تو اک بھولو لگی کھنی باندھ لے ہے مشورہ میرا کہ جس سے عضو زیر ناف بھی چھپ جائیگا تیرا
 کشن کی بات درلودھن کے دل میں بس گئی اگر نہ سمجھا اصل مطلب اور دھوکا کھا گیا خود مگر

فریب شیا م بنواری پہ آخر ہو کے آمادہ

ہوا وہ سارے مادر کے اپنی جا کے استادہ

یہ باتیں سن کر گندھاری کی، دُریو دھن چلا گھر سے۔
 گیا پانڈو کے منڈل میں، بفرہت مہشیرا لےنے۔

دیا پانڈو نے مخلص دوست بن کر مشورہ اسکو۔
 وہاں سے وہ خوش و خرم چلا پھر جانب مادر۔

کہ اپنی ماں کی خدمت میں برہنہ پیش ہو جا کر۔
 ہوئی مد بھیڑ لیکن شیا م سے اُف ثوئی قیمت۔

سب اس سمت آئیک انھوں نے پوچھا با خلت۔
 بغیر مگر درلودھن نے سارا حال بتلایا۔

جسے سن کر شری گنیشام نے ارشاد فرمایا۔
 ارے بچے کوئی دشمن بھی دیگا مشورہ بہتر۔

جو تو پانڈو سے لینے مشورہ پہنچا تھا انکے گھر۔
 ذرا دل پر تو اپنے ہاتھ رکھ کر سوچ درلودھن۔

برہنہ پیش مادر کیسے ہوگا عقل کے دشمن۔
 اگر تجھکو برہنہ ہو کے ماں کے پاس جانا ہے۔

یہ بار بے حیائی تجھکو درلودھن اٹھانا ہے۔
 تو اک بھولو لگی کھنی باندھ لے ہے مشورہ میرا۔

کہ جس سے عضو زیر ناف بھی چھپ جائیگا تیرا۔
 کشن کی بات درلودھن کے دل میں بس گئی اگر۔

نہ سمجھا اصل مطلب اور دھوکا کھا گیا خود مگر۔
 فریب شیا م بنواری پہ آخر ہو کے آمادہ۔

ہوا وہ سارے مادر کے اپنی جا کے استادہ۔

بفرہت = خوشی سے

جاننے-مادر = ماں کی
 طرف

شومی-ا-کسمت =
 بدکسمتی

آمادا = تیار
 ڈستا = خڑا ہوا

مُझे افسوس ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی ہو गई मुझ से यह नादानी

فیر اسکے بعد اپنی والدہ سے بولادریو دھن
اب آؤں خول دو ماں جی، مے آوا ہوں ورہنا تن ۱۱

سُنی آوا جے-دُریو دھن، تو گندھاری نے بے کھٹکے
خوشی سے خولدی، فیرن ہی پدتی اپنی آؤں سے ۱۱

کھلی پیٹی تو گندھاری نے پھر ہر عضو کو دیکھا
خولی پدتی تو گندھاری نے فیر ہر اُچھ کو دیکھا ۱۱

نکل آئی زباں سے چیخ، ایسا غم ہو لٹاری
مگر فلوں کا ایک گچھا سا زبیر ناف جب پایا ۱۱

جب آیا ہوش تو بیٹے سے پوچھا بول اے میٹا
نیکل آئی زباں سے چیخ، ایسا غم ہو لٹاری ۱۱

پہنکر پھول کی کچھنی جو میرے پاس آیا ہے
جب آیا ہوش تو بیٹے سے پوچھا بول اے میٹا ۱۱

ہے تیرے جسم کا جتنا بھی حقہ گل سے پوشیدہ
دیا یہ مشورہ کتنے زباں تو کھول اے میٹا ۱۱

کہا پھر ماں سے درو دھن نے پر پھو کی قسم کھا کر
یہ کسی بات سن کر آن دھوکا تو نے کھایا ہے ۱۱

انھیں کے حکم پر باندھی ہے کچھنی پھول کی میں نے
دیں تو زخم کھائیگا، اسی کارن ہوں بخیرہ ۱۱

تھا ورنہ مشورہ پانڈو کا میرے حق میں عریانی
مجھے افسوس ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی ۱۱

اگر میں عقل سے اپنی ذرا بھی کام لے لیتا
فریب و مکر بنواری نہ دھوکا اس طرح دیتا ۱۱

سُنی جب گفتگو اپنے جگر گوشہ کی گندھاری
سر اپ اور بد عادی نے لگی آلام کی ماری ۱۱

ورہنا تن = نگو بدن

گل = گل

گفتگو = باتیں

مُझे افسوس ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی

اب آنکھیں کھول دو باجی، میں آیا ہوں پرنتی
پھر اسکے بعد اپنی والدہ سے بولادریو دھن ۱۱

خوشی سے کھولدی فوراً ہی پیٹی اپنی آنکھوں سے
سُنی آوا جے-دُریو دھن، تو گندھاری نے بے کھٹکے ۱۱

مگر پھول کا ایک گچھا سا زبیر ناف جب پایا
کھلی پیٹی تو گندھاری نے پھر ہر عضو کو دیکھا ۱۱

اندھیرا چھایا آنکھوں میں گری ش کھا گندھاری
نکل آئی زباں سے چیخ، ایسا غم ہو لٹاری ۱۱

دیا یہ مشورہ کتنے زباں تو کھول اے میٹا
جب آیا ہوش تو بیٹے سے پوچھا بول اے میٹا ۱۱

یہ کسی بات سن کر آن دھوکا تو نے کھایا ہے
پہنکر پھول کی کچھنی جو میرے پاس آیا ہے ۱۱

دیں تو زخم کھائیگا، اسی کارن ہوں بخیرہ
ہے تیرے جسم کا جتنا بھی حقہ گل سے پوشیدہ ۱۱

مجھے بھیجا ہے اس حالت میں مری دھرنے سمجھا کر
کہا پھر ماں سے درو دھن نے پر پھو کی قسم کھا کر ۱۱

فریبِ شیا میں آیا بہت ہی کھول کی میں نے
انھیں کے حکم پر باندھی ہے کچھنی پھول کی میں نے ۱۱

مجھے افسوس ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی
تھا ورنہ مشورہ پانڈو کا میرے حق میں عریانی ۱۱

فریب و مکر بنواری نہ دھوکا اس طرح دیتا
اگر میں عقل سے اپنی ذرا بھی کام لے لیتا ۱۱

سر اپ اور بد عادی نے لگی آلام کی ماری
سُنی جب گفتگو اپنے جگر گوشہ کی گندھاری ۱۱

شری کشو نے اس نفیرن اور کھٹکار کے کارن
بڑی تکلیف و محسرت میں گزارا آخری مہینوں

دریودھن دوبارہ محاذ جنگ پر

غرض اس وقت گندھاری بہت کافی پریشان تھی فریبِ شیاہ پر، حد درجہ برہم اور نالاں تھی
پھر اپنے تحت دل کو یوں تسلی دے کے بچھایا مقدر میں جو لکھا تھا وہ تیرے سامنے آیا
جو شہنی بات ہوتی ہے، وہ ہو کر رہتی ہے بیٹیا اب اس کو کیا کرے کوئی تو ہے تقدیر کا بیٹا
یہ زیرِ ناف تیرا عضو تن، کول ہے دریودھن مرا منشا ہے تو سنگرام سے اپنا بچا دامن
نہیں ہے واقعی مطلق، بغیر جنگ اب یارا تو پھر کمزور حصے کو بچا کر ہو نبرد آرا
یہ ارشادِ گرامی والدہ سے سنئے دریودھن محاذ جنگ پر پہنچا، پہنکر مغفرو جو شہن
مگر پنجستر پر چھایا ہوا تھا ہو کا اک عالم رسوا اعدا کے کوئی بھی نہ تھا غم خوار اور بہم
یہ منظر دیکھ کر اس کا کلیجہ پھٹ گیا غم سے نکل کر آگئے عارض یہ آنسو چشمِ پر غم سے
خیال آیا اسے، پائال کی جب یاترا کی تھی جہاں سیکھی تھی و دیا اُس نے زیرِ آب رہنے کی
دستیوں نے سیکھایا تھا یقیناً بے مثال اسکو اسی اک فن کا ایسے وقت میں آیا خیال اسکو

شری کیشو نے اس نفیرن اور کھٹکار کے کارن
بڑی تکلیف و محسرت میں گزارا آخری مہینوں

دुरیودھن دوبارہ مہاجے-جنگ پر

گرجی اُس وقت گندھاری، بہت کافی پریشانی تھی
فریبِ شیاہ پر، حد درجہ برہم اور نالاں تھی
پھر اپنے تحت دل کو یوں تسلی دے کے بچھایا
مقدر میں جو لکھا تھا وہ تیرے سامنے آیا
جو شہنی بات ہوتی ہے، وہ ہو کر رہتی ہے بیٹیا
اب اس کو کیا کرے کوئی تو ہے تقدیر کا بیٹا
یہ زیرِ ناف تیرا عضو تن، کول ہے دریودھن
مرا منشا ہے تو سنگرام سے اپنا بچا دامن
نہیں ہے واقعی مطلق، بغیر جنگ اب یارا
تو پھر کمزور حصے کو بچا کر ہو نبرد آرا
یہ ارشادِ گرامی والدہ سے سنئے دریودھن
محاذ جنگ پر پہنچا، پہنکر مغفرو جو شہن
مگر پنجستر پر چھایا ہوا تھا ہو کا اک عالم
رسوا اعدا کے کوئی بھی نہ تھا غم خوار اور بہم
یہ منظر دیکھ کر اس کا کلیجہ پھٹ گیا غم سے
نکل کر آگئے عارض یہ آنسو چشمِ پر غم سے
خیال آیا اسے، پائال کی جب یاترا کی تھی
جہاں سیکھی تھی و دیا اُس نے زیرِ آب رہنے کی
دستیوں نے سیکھایا تھا یقیناً بے مثال اسکو
اسی اک فن کا ایسے وقت میں آیا خیال اسکو

نکیرین = خواب

نکیرین = خواب
نکیرین = خواب

نکیرین = خواب
نکیرین = خواب

نکیرین = خواب
نکیرین = خواب

خیاں آتے ہی پٹا اور چھپا تالاب میں جا کر
نہاں، جس طرح سر کو چھپائے ریک کے اندر

مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے

ڈھیر پوشیدہ زیر آب درلودھن تھا بد قسمت
اُدھر اس کے تجسس میں تھے کرپہ کرت اور اُسٹ

پتا سنجی نے انکو جانے پو شیدہ کا بستلایا
کہاں پوشیدہ درلودھن ہے خود جا کر دکھا آیا

سروں کے کنارے تینوں ہتھکاری کھڑے ہو کر
پکارا ہے مہی پت یوں نہ ہو آزدہ و مضطر

نکل آؤ سرور سے وہ کی جنگ لڑنا ہے
اچانک مثل شربت پانڈواں پر لٹ پڑنا ہے

ہمارے ساتھ چل پانڈو پیر شبنم مار درلودھن
کچل کر ایک ہی جگہ میں رکھے تو سر دشمن

یہ باتیں انکی سنکر بولاد درلودھن مہار تھیو
نہایت تھک چکا ہوں مجھ کو آرام کرنے دو

یقیناً معترف ہوں میں تمھاری غلگساری کا
تقاضہ بھی یہی ہے سجنواب پاس داری کا

تھکاوٹ سے لیکن مضحل میری طبیعت ہے
مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے

لہذا تمکو بھی آرام کرنا ہے بس اب جاؤ
تھکاوٹ دور کرلو، تازہ دم کل ہو کے تم آؤ

اُشتر مرغ اُتالاب سے چیتا

نہاں = شورو مرق

زیر آب = پانی کے
اندھ
تجسس = تالاب

سروں = تالاب

شربت = چیتا

شربت = رات میں ہملا
کرنے

موجمہیل = تھکا ہوا

خیاں آتے ہی پٹا اور چھپا تالاب میں جا کر
نہاں، جس طرح سر کو چھپائے ریک کے اندر

مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے

ڈھیر پوشیدہ زیر آب درلودھن تھا بد قسمت
اُدھر اس کے تجسس میں تھے کرپہ کرت اور اُسٹ

پتا سنجی نے انکو جانے پو شیدہ کا بستلایا
کہاں پوشیدہ درلودھن ہے خود جا کر دکھا آیا

سروں کے کنارے تینوں ہتھکاری کھڑے ہو کر
پکارا ہے مہی پت یوں نہ ہو آزدہ و مضطر

نکل آؤ سرور سے وہ کی جنگ لڑنا ہے
اچانک مثل شربت پانڈواں پر لٹ پڑنا ہے

ہمارے ساتھ چل پانڈو پیر شبنم مار درلودھن
کچل کر ایک ہی جگہ میں رکھے تو سر دشمن

یہ باتیں انکی سنکر بولاد درلودھن مہار تھیو
نہایت تھک چکا ہوں مجھ کو آرام کرنے دو

یقیناً معترف ہوں میں تمھاری غلگساری کا
تقاضہ بھی یہی ہے سجنواب پاس داری کا

تھکاوٹ سے لیکن مضحل میری طبیعت ہے
مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے

لہذا تمکو بھی آرام کرنا ہے بس اب جاؤ
تھکاوٹ دور کرلو، تازہ دم کل ہو کے تم آؤ

اُشتر مرغ اُتالاب سے چیتا

وہی اب بھاگتا پھرتا ہے ظالم موت کے ڈر سے

یہ سنکر چلے گئے تینوں ہاں سے بادل مضطر
مگر یہ ساری باتیں سن ہاتھ بھیل اک چپکے
کہ جسکو پانڈواں سے انس تھا کافی جھٹکا
محبت کی تھی اک حد عبادت تک عقیدت تھی
اسی کارن بھلت پانڈواں کے پاس آیا
سندیسہ ان کو دیو دھن کی پویشی کا پہنچایا
یہ شتر بھی اسی فکر و تجسس میں تھا سرگرداں
کہ دیو دھن چھاپے کس جگہ فرعون سماں
یہی ہے وجہ فتنہ جس سے یہ کھرام برپا ہے
زمین جنگ پر ہر سمت قتل عام برپا ہے
ابھی تک لاکھوں انساں کٹ گئے جسکے اشار پر
وہی اب بھاگتا پھرتا ہے ظالم موت کے ڈر
مگر جب بھیل نے اس کا ٹھکانہ آکے بتلایا
یہ شتر بھوم اٹھا اور خوش و خرم نظر آیا
پھر اسکے بعد پہنچے اس جگہ پانڈو بہ کر و فر
جہاں پوشیدہ دیو دھن تھا اس جا تھام کر

زبان کھول لے عوام اناس کے سب بڑے قاتل

لگایا پانڈواں نے پہلے اس تالاب کا پھیرا
پھر اسکے بعد اس جو ہر کو چاروں سمت گھیرا
پکارا پھر یہ شتر نے سروں کے کنارے سے
لے دیو دھن بچ گیا تو نہ پانی کے سہارے

وہی اب بھاگتا پھرتا ہے جالیم मौत کے ڈر سے

یہ سنکر چلے گئے تینوں ہاں سے بادل مضطر
مگر یہ ساری باتیں سن ہاتھ بھیل اک چپکے
کہ جسکو پانڈواں سے انس تھا کافی جھٹکا
محبت کی تھی اک حد عبادت تک عقیدت تھی
اسی کارن بھلت پانڈواں کے پاس آیا
سندیسہ ان کو دیو دھن کی پویشی کا پہنچایا
یہ شتر بھی اسی فکر و تجسس میں تھا سرگرداں
کہ دیو دھن چھاپے کس جگہ فرعون سماں
یہی ہے وجہ فتنہ جس سے یہ کھرام برپا ہے
زمین جنگ پر ہر سمت قتل عام برپا ہے
ابھی تک لاکھوں انساں کٹ گئے جسکے اشار پر
وہی اب بھاگتا پھرتا ہے ظالم موت کے ڈر
مگر جب بھیل نے اس کا ٹھکانہ آکے بتلایا
یہ شتر بھوم اٹھا اور خوش و خرم نظر آیا
پھر اسکے بعد پہنچے اس جگہ پانڈو بہ کر و فر
جہاں پوشیدہ دیو دھن تھا اس جا تھام کر

جہاں خولے آواہ

उन्नास के सब से बड़े क़ातिल

لگایا پانڈواں نے پہلے اس تالاب کا پھیرا
پھر اسکے بعد اس جو ہر کو چاروں سمت گھیرا
پکارا پھر یہ شتر نے سروں کے کنارے سے
لے دیو دھن بچ گیا تو نہ پانی کے سہارے

वड जलन = जल्दी में
रूपोशी = गायब होना
सर-गर्दों = परेशान

करोफर = शान में

पोशीदा = छिपा हुआ

نکل آئیں دل پانی میں کب چھپتے ہیں ناداں
 ہوئی ہیں لاکھوں جانیں تلف میدان میں تیرا
 وہ تیری خود سری اور وہ رعونت کیا ہوئی آخر
 ہوا کافور کیسے سرکشی کا نشہ جھلس
 ترے پندار اور زعم شجاعت کو ہوا کیا ہے
 کہاں ہے وہ اکڑا اور وہ تیری اینٹھی ہوئی گردن
 رگوں میں دوڑتا تھا کل جو غلوں سپاہ کی نشہ
 دکھاتا ہے جانت مرد ہو کر تو جوانی میں
 اب اسے وقت میں تیری رگ غمیرت پہنک جاتی
 بت پندار آخر گر پڑا ہے ٹھوکر میں کھسکا کر
 بچتے ہیں ہشتنر دل پہ ہشتنر جنگ سے داماں
 وغامیس بھائیوں کو ٹوٹنے کو آیا ہے دیو دھن
 وہ شاہانہ تھامسک اور نخوت کیا ہوئی آخر
 زباں کھول احوام ان اس کے سب سے بڑے قاتل
 جو امر دی کے اس دعو اس نخوت کو ہوا کیا ہے
 تناؤ کیا ہوا چھاتی کا تیری بول دیو دھن
 وہی خوں سرد ہو کر جم گیا کیا؟ آب کی مانند
 رہیگا چھپ کے کب تک بھولہ سگلاب پانی میں
 شجاعت کی جگر میں کاش کاش بھڑک جاتی
 دبیو یا ہے تیری نخوت نے تھک گوس جگہ لاکر

شہنشاہی کا جذبہ کونسی ہے آج منزل میں

یہ شہنشاہی کونسی ہے آج منزل میں
 سنی، لیکن رہا غاموش دیو دھن یہ اختر
 اثر طعنہ زنی کا جب نہ دیو دھن پہ ہوا پیا
 تو فوراً زور دے کر حلق پر پھر بھیم چلا آیا
 ملے بزدلی سے پانی کا کتا سے برہمنہ، ننگا، کاہل، بیکار۔

نیکل آ شہر دل پانی میں کب چھپتے ہیں ناداں
 بچاتے ہیں شہنشاہی جگ سے داماں
 وہ تیری خود سری اور وہ رعونت کیا ہوئی آخر
 ہوا کافور کیسے سرکشی کا نشہ جھلس
 ترے پندار اور زعم شجاعت کو ہوا کیا ہے
 کہاں ہے وہ اکڑا اور وہ تیری اینٹھی ہوئی گردن
 رگوں میں دوڑتا تھا کل جو غلوں سپاہ کی نشہ
 دکھاتا ہے جانت مرد ہو کر تو جوانی میں
 اب اسے وقت میں تیری رگ غمیرت پہنک جاتی
 بت پندار آخر گر پڑا ہے ٹھوکر میں کھسکا کر
 بچتے ہیں ہشتنر دل پہ ہشتنر جنگ سے داماں
 وغامیس بھائیوں کو ٹوٹنے کو آیا ہے دیو دھن
 وہ شاہانہ تھامسک اور نخوت کیا ہوئی آخر
 زباں کھول احوام ان اس کے سب سے بڑے قاتل
 جو امر دی کے اس دعو اس نخوت کو ہوا کیا ہے
 تناؤ کیا ہوا چھاتی کا تیری بول دیو دھن
 وہی خوں سرد ہو کر جم گیا کیا؟ آب کی مانند
 رہیگا چھپ کے کب تک بھولہ سگلاب پانی میں
 شجاعت کی جگر میں کاش کاش بھڑک جاتی
 دبیو یا ہے تیری نخوت نے تھک گوس جگہ لاکر

شہنشاہی کا جذبہ کونسی ہے آج منزل میں

کونسی ہے آج منزل میں

یہ شہنشاہی کونسی ہے آج منزل میں
 سنی، لیکن رہا غاموش دیو دھن یہ اختر
 اثر طعنہ زنی کا جب نہ دیو دھن پہ ہوا پیا
 تو فوراً زور دے کر حلق پر پھر بھیم چلا آیا
 ملے بزدلی سے پانی کا کتا سے برہمنہ، ننگا، کاہل، بیکار۔

شہنشاہی جگ سے داماں
 دل، ڈرپوک
 تھامسک = ختم

رعونت = غم
 نخوت = غم

نشاہی ع باتیل = بڑا
 نشا

سیما کی مانیند =
 پارے کی طرح
 آب کی مانیند = پانی
 کی طرح
 جہانن = بوجھیلی
 سگلاب = پانی کا
 کھل

پندار = گھر

سیماہ اکر = بد
 کسمت

نیکل پانی سے ناہنجار اب مردانگی دکھلا
اگر ہے بازوؤں میں تیرے دم تو سامنے آجا
نہیں تو میں تجھے نامرد اور بزدل ہی سمجھوں گا
دغا کے آئینے میں تجھ کو اک مائل ہی سمجھوں گا
دروغہ، کرن، راجہ شل، اے شیطان یوہن
مرہی جیدرت اور عیشیم یہ سب تیرے ہی کارن
نہیں ہے بھاوناسمٹ بننے کی تردید میں
شہنشاہی کا جذبہ کنوسی ہے آج منزل میں
میں نفرت بھیجتا ہوں تجھ پر اور تیری جفا پر
اٹھا مغرور سر، میں تمھو کو تیری صورت پر
سنائی خوب دونوں اے جی بھر کے صلواتیں
یہ طعن آمیز باتیں صبر اس نے نہیں ساری
مگر دشنام کے بدلے میں یوں کی راست گفتاری
کراہ حسرت نہیں، مرے دل میں آج کر سکی
خوشی سے کمرانی تم کو اب ساری دھرتی پر
یہ تانن آمیز باتیں، سب سے اس نے سنی ساری
مگر دشنام کے بدلے میں، یوں کی راست گفتاری
کی اب حسرت نہیں ہے، مرے دل میں آج کر سکی
خوشی سے کمرانی تم کو اب ساری دھرتی پر

برہنا = ننگا پن
آتیل = جھر کا پانی

لانات = فٹکار
جوانت = بوجدلی،
کایرپن
جھراہ = جھر کا پانی

دشنام = گالی
راست گوشتاری = سیधी
بات

یہ بے پایاں نوازش بول اے ابن قرش کیسی بول ہے ڈبنے-کورش کیسی

یوڈیٹیر نے کہا، اب پृथوی پر دان کرنے سے
تو مجھے کیا लाभ ہوگا، اس طرح اعلان کرنے سے
وہی تू ہے، جو کل سूर्य کے नाके، کے बराबर भी।
मुझे यह पृथ्वी देने पे, बिलकुल ही न था राजी।
बता वह जब-ए-दाराई तेरा क्या हुआ आखिर।
मिजाजे-आतिशी क्यों सदा होकर रह गया आखिर।

जब-ए-दाराई = हुकूमत
की ईच्छा

نیکل پانی سے ناہنجار اب مردانگی دکھلا
اگر ہے بازوؤں میں تیرے دم تو سامنے آجا
نہیں تو میں تجھے نامرد اور بزدل ہی سمجھوں گا
دغا کے آئینے میں تجھ کو اک مائل ہی سمجھوں گا
دروغہ، کرن، راجہ شل، اے شیطان یوہن
مرہی جیدرت اور عیشیم یہ سب تیرے ہی کارن
نہیں ہے بھاوناسمٹ بننے کی تردید میں
شہنشاہی کا جذبہ کنوسی ہے آج منزل میں
میں نفرت بھیجتا ہوں تجھ پر اور تیری جفا پر
اٹھا مغرور سر، میں تمھو کو تیری صورت پر
سنائی خوب دونوں اے جی بھر کے صلواتیں
یہ طعن آمیز باتیں صبر اس نے نہیں ساری
مگر دشنام کے بدلے میں یوں کی راست گفتاری
کراہ حسرت نہیں، مرے دل میں آج کر سکی
خوشی سے کمرانی تم کو اب ساری دھرتی پر

یہ بے پایاں نوازش بول اے ابن قرش کیسی

یہ ہشت نے کہا اب پر تھوی پردان کرنے
تجھے کیا لا بھ ہوگا، اس طرح اعلان کرنے
وہی تھ ہے جو کل سوتی کے ناکے، کے برابر بھی
مجھے یہ پر تھوی دینے پہ بالکل ہی تمھارا رضی
بتا وہ جذبہ دارائی تیرا کیا ہوا آخر
مراج آتیش کیوں سرد ہو کر رہ گیا آخر
نہ نہر کا پانی۔ مہر بہنہ



यह तेरी बे नियाजाना रविश, ऐवाने-शाही से।
यह बेजारी विलायत से, तनफपुर कजकुलाही से।।
यह आखिर मंसबे-दाराई की, यूँ पेशकश कैसी।
यह बे पायाँ नवाजिश, बोल ऐ इन्ने-कुरश कैसी।।
अगर प्रतिज्ञा का हो इसी अंदाज से पालन।
बनाएगी तेरी वादा खिलाफी नार का ईन्धन।।
न तोड़ इस तरह तू प्रतिज्ञा, आहो, नबर्दआरा।
नरक से जोड़ता क्यों है, बजाए स्वर्ग के यारा।।
अगर पालन करे प्रतिज्ञा का, अपनी हर इन्साँ।
तो बादे-मृग आसूदा रहे हर शक्स का दामाँ।।

कहेगा जिस से लड़ने को
लड़ेगा वह जवाँ तुझ से

यह बातें सुनके दुर्योधन, हुआ गोया मतानत से।
युधिष्ठिर तू न रख उम्मीद, यह मेरी जबिल्लत से।।
कि मैं बैकुण्ठ पर तरजीह दूँगा, क्या जहन्नम को?।
निशातो-कैफ के बदले में चाहूँगा, भला ग़म को।।
नहीं हर गिज़ नहीं, प्रतिज्ञा को मैं न तोड़ूँगा।
बला से जान जाए, मुँह सदाक़त से न मोड़ूँगा।।
अधर्मी रूप से लड़ना, तुम्हें पांडव मुबारक हो।
जिओ बे ग़ैरती से, जी सको, जब तक, जहाँ तक हो।।
फिर इसके बाद तर्जे-कौल, बदला उसने यह कहकर।
कि मैं तैयार हूँ, इक इक से बारी बारी लड़ने पर।।
युधिष्ठिर ने कहा मंजूर है, यह शर्त अब तेरी।
तुझे लड़ना हो जिस हथियार से लड़, हम में जिस से भी।।
उसी हर्बे से होगा, वह नबर्दआरा यहाँ तुझ से।
कहेगा जिस से लड़ने को, लड़ेगा वह जवाँ तुझ से।।

बे नियाजाना रविश =
उमूलों लापरवाही
विलायत = हुकूमत
तनफपुर कजकुलाही से
= वादशाह से नफरत
मंसबे-दाराई =
वादशाही का उहदा
बे पायाँ नवाजिश =
बहुत मेहरबानी
कुरश = एक समुद्री
जानवर
नार = आग की भट्टी

निशातो-कैफ = खुशी
का नशा
सदाक़त = सच्चाई

ये तیری बे नيازانه روش ایوان شاهی سے
یہ آخر منصب دارائی کی یوں پیش کش کیسی
بنائے گی تیری وعدہ خلافی نار کا ایندھن
نرک سے جوڑتا کیوں ہے بجائے سورگ کے یارا
تو بعد نرگ آسودہ رہے ہر شخص کا داماں
اگر پالن کرے پرتگیت کا اپنی ہر انس

کہے گا جس سے لڑنے کو لڑے گا وہ جواں تجھ سے

یہ باتیں سنکے دیو دھن ہوا گویا متانت سے
کہ میں بیکینہ پر ترجیح دوں گا کیا جہنم کو؟
نہیں ہرگز نہیں پرتگیت کو میں نہ توڑوں گا
ادھر می روپے لڑنا تمہیں پائند و مبارک
پھر اسکے بعد طرز قول بدلا اُس نے یہ کہہ کر
یہ شتر نے کہا منظور ہے یہ شرط اب تیری
اُسی حربہ سے ہو گا وہ نبرد آرا ہاں تجھ سے
یہ شتر، تو نہ رکھ امید یہ میری جلد سے
نشا و کیف کے بدلے میں چاہوں گا بھلا غم کو
بلا سے جان جائے ہنہ، صداقت نہ موڑوں گا
جو بے غیرتی سے جی سکو بھتک جہاں تک
کہ میں تیار ہوں اک اک باری باری لڑنے
تجھے لڑنا ہو جس ہتھیار سے لڑ، ہم میں جس سے بھی
کہے گا جس سے لڑنے کو لڑے گا وہ جواں تجھ سے

یہ باتیں سن کے من گھنٹیام جی کا خوب جھنجھلایا
اے اک سمت لے جا کر بولے شیام بنواری
اے پچھلے گدیڈھ پر جو دیر یو دھن اتر کے
تو پھر کیا حال ہو گا اس حماقت پر ترانا داں
مجھے تو یہ بھی شک ہے بھیم جیسا ابھی پکیر
موجہ تو یہ بھی شک ہے بھیم جیسا ابھی پکیر

دھراک = बुद्धि, अकल

तेरी इस सरकशी को आज मिट्टी में मिलाना है

जबाने-श्याम से जिस वक्त यह खदशा हुआ जाहिर।
दिलावर भीम की जुरअत को, गैरत आगई आखिर॥
गदा लहरा के उस ने राजा दुर्योधन को ललकारा।
निकल पानी से ऐ सगलाव, हो मुझ से नबर्दआरा॥
गरज जिस वक्त उसकी गोशे-दुर्योधन से टकराई।
निकल आया मअन पानी से, गैरत जोश में आयी॥
पुकारा ऐ दिलावर भीम, तुझ को जानता हूँ मैं।
तेरी तर्जे-वगा को, खूब तर पहचानता हूँ मैं॥
मुझे यह भी खबर है, तूने हाँ केचक को मारा था।
फना के घाट तूने ही, जरासंग को उतारा था॥
मुझे मालूम है, मारे हैं तूने सैकड़ों खुश फन।
पिया है तूने जालिम तीन चिल्लू खूने-दुश्शापन॥
मुझे इक इक का बदला भीम, अब तुझसे चुकाना है।
तेरी इस सरकशी को आज, मिट्टी में मिलाना है॥

सगलाव = पानी का कुत्ता

یہ باتیں سن کے من گھنٹیام جی کا خوب جھنجھلایا
اے اک سمت لے جا کر بولے شیام بنواری
اے پچھلے گدیڈھ پر جو دیر یو دھن اتر کے
تو پھر کیا حال ہو گا اس حماقت پر ترانا داں
مجھے تو یہ بھی شک ہے بھیم جیسا ابھی پکیر
موجہ تو یہ بھی شک ہے بھیم جیسا ابھی پکیر

تری اس سرکشی کو آج مٹی میں ملانا ہے

زبان شیاام سے جس وقت یہ خدشہ ہوا ظاہر
گدالہرا کے اس نے راجہ دیر یو دھن کو لکھارا
گرچ جس وقت اسکی گوش دیر یو دھن لکرائی
پکاراے دلاور بھیم تجھ کو جانتا ہوں میں
مجھے یہ بھی خبر ہے تونے ہاں کیچک کو مارا تھا
مجھے معلوم ہے تونے سیکر و خوش فن
مجھے اک اک کا بدلہ لایم اب تجھے پکانا ہے
تری اس سرکشی کو آج مٹی میں ملانا ہے

۱۔ پانی کا کتا



میرا دعویٰ ہے تو اک وار میرا سہہ نہیں سکتا
میری اک ضرب فولادی سے زندہ رہ نہیں سکتا
یہ کہہ کر ہو گئے آمادہ دونوں لڑنے پر
نظر آتے تھے بے شک مستعدہ وار کر پرنے

اڑا کرتی سراج اسیل کی مانند چنگاری

محاذ جنگ کا پیش نظر تھا آج نظارہ
کھڑے تھے تان کر سینہ مقابل دوبردار
لیا تھا ہاتھ میں دونوں اپنے گز فولادی
وہ گز آہنی تھے، یا تھی دوسپات کی لادی
گدائل اس قدر وزنی نہ کبھی تھیں زمانے
نہ جاکھل کے آئی تھیں کس اسپات خانے
جرے تھے انکے دستے لعل ہے نیم سے گوہر سے
جلی تھا ہر اک کنگورہ آب نقرہ وزرے
بہم کرنے لگے طرفین دونوں سمت یورش
بھڑک اٹھی سرتالاب فوراً جنگ کی آتش
لڑتی تھی زمیں سہا ہوا تھا آسمان زن کا
صدائے گھن گرج کی ترش تھا ہر خواں زن کا
کبھی میدان اک سن سنا سن کی صدا آتی
کبھی کنگورے جھڑتے جب گداپس میں نکمائی
فضائیں جھنجھٹاتی تھیں گدا کی ضرب بہیم سے
دہتی تھی زمیں انکی اچھل کود اور دھما دم سے
ہزاروں فن کے جوہر کھلے تھے آج میدان میں
اڑا کرتی سراج اسیل کی مانند چنگاری
لے جگنو

میرا داوا ہے تو ایک وار میرا، سہ نہیں سکتا۔
میری ایک جڑبے-فولادی سے جیندا رہ نہیں سکتا۔
یہ کہہ کر ہو گئے آمادہ دونوں، لڑنے مرنے پر۔
نہجڑ آتے تھے بے شک مستعد وہ وار کرنے پر۔

اڑا کرتی سیراجوللے کی مانیند چینگاری

مہاجے-جنگ کا پشہ-نہجڑ تھا آج نہجڑارا۔
خڑے تھے تان کر سیتا، مہکابیل دو نہجڑ آرا۔
لیا تھا ہاتھ میں، دونوں نے اپنے، گزبے-فولادی۔
وہ گزبے-آہنی تھے، یا تھی دو سپات کی لادی۔
گداپس اس قدر وزنی نہ کبھی تھیں زمانے۔
نہ جاکھل کے آئی تھیں کس اسپات خانے۔
جرے تھے انکے دستے لعل ہے نیم سے گوہر سے۔
جلی تھا ہر اک کنگورہ آب نقرہ وزرے۔
بہم کرنے لگے طرفین دونوں سمت یورش۔
بھڑک اٹھی سرتالاب فوراً جنگ کی آتش۔
لڑتی تھی زمیں سہا ہوا تھا آسمان زن کا۔
صدائے گھن گرج کی ترش تھا ہر خواں زن کا۔
کبھی میدان اک سن سنا سن کی صدا آتی۔
کبھی کنگورے جھڑتے جب گداپس میں نکمائی۔
فضائیں جھنجھٹاتی تھیں گدا کی ضرب بہیم سے۔
دہتی تھی زمیں انکی اچھل کود اور دھما دم سے۔
ہزاروں فن کے جوہر کھلے تھے آج میدان میں۔
اڑا کرتی سیراجوللے کی مانیند چینگاری۔

مستعد = تیار

سپات = لوہے کی

مہکابیل = چمکا ہوا
آبے-نکرا-آہ-جڑ =
سونا چاندی کے پانی سے

سدف = سیپ
گواپس = گوتا لگانے
والے
سیراجوللے = جگنو

بلا کی ضربیں تھیں ہر ضرب سے اک فن نمایا تھا
 وہاں ہر زاویے سے اک انوکھے فن کا تھا عالم
 ابھی تک دونوں اپنے تجربے میں مارتے تھے
 کسی کو بھی کسی پر فوقیت حاصل نہ تھی اب تک
 گدائیں ایک سو لڑائی تھیں دیو دھن بدتر کی
 اچانک ایک منظر ناظرین جنگ نے دیکھا
 بولا کی جڑیں تھیں، ہر جڑ سے ایک فن نمایا تھا
 مکرر ہر فیروزہ سے وہاں گورجوں کا تھا
 وہاں ہر جڑ سے، ایک انوکھے فن کا تھا
 وہی بھاشا شیاؤں چہرے پہ تھی اور وہی دم خم
 ابھی تک دونوں اپنے تجربے میں مارتے تھے
 کسی کو بھی کسی پر فوقیت حاصل نہ تھی اب تک
 گدائیں ایک سو لڑائی تھیں دیو دھن بدتر کی
 اچانک ایک منظر ناظرین جنگ نے دیکھا
 بولا کی جڑیں تھیں، ہر جڑ سے ایک فن نمایا تھا
 مکرر ہر فیروزہ سے وہاں گورجوں کا تھا
 وہاں ہر جڑ سے، ایک انوکھے فن کا تھا
 وہی بھاشا شیاؤں چہرے پہ تھی اور وہی دم خم

مہارے = لڑنے والے

بھاشا شیاؤں = تاجی

مہارے = بڑا بڑے کے

فوقیت = بڑائی

ہامیل = لاکھ

کشیو = لکھی ہوئی

خیراجے-سبکتے-یوریش

میتا مگرر دوشمن سے

آپکتے ہی پلک، پشہ-نجر تھا، ایک نیا منجر
 پڑا تھا وہ ہیسو-ہرکت، دیتا ہر بھیم دھرتی پر
 چوما کر گورج دھوون، نے جس تہی سے مارا تھا
 وہ بہت مہیل فنکاری کا بھشک ایک تھارا تھا
 گدا ٹکرائی تھی ایسی کہ فوراً صد ہزاروں سے
 نکل آیا ارک کی شکل میں خوں چہرے خوں سے
 غشی کا ایک لمحہ بھیم کے اعصاب پر گزرا
 مگر ہوش آگیا فوراً ہی پوے ہوش سے اٹھا
 گدا ہرا کے بدلا پتیرا، آیا مقابل میں
 نہ لایا بھیم کچھ بھی غشہ سو دیاں دل میں
 دوبارے لی تھر بڑھ کے اس شیطاں پر فن سے
 خراج سبکتے یوریش ملا مغرور دشمن سے

بہت مہیل = بہت مہیل

چہرے-خوں = دیتا

آساہ = جیس

خداشا-آ-سود-جیو =
 نفا-نوکسار کا ڈر

بلا کی ضربیں تھیں ہر ضرب سے اک فن نمایا تھا
 وہاں ہر زاویے سے اک انوکھے فن کا تھا عالم
 ابھی تک دونوں اپنے تجربے میں مارتے تھے
 کسی کو بھی کسی پر فوقیت حاصل نہ تھی اب تک
 گدائیں ایک سو لڑائی تھیں دیو دھن بدتر کی
 اچانک ایک منظر ناظرین جنگ نے دیکھا
 بولا کی جڑیں تھیں، ہر جڑ سے ایک فن نمایا تھا
 مکرر ہر فیروزہ سے وہاں گورجوں کا تھا
 وہاں ہر جڑ سے، ایک انوکھے فن کا تھا
 وہی بھاشا شیاؤں چہرے پہ تھی اور وہی دم خم
 ابھی تک دونوں اپنے تجربے میں مارتے تھے
 کسی کو بھی کسی پر فوقیت حاصل نہ تھی اب تک
 گدائیں ایک سو لڑائی تھیں دیو دھن بدتر کی
 اچانک ایک منظر ناظرین جنگ نے دیکھا
 بولا کی جڑیں تھیں، ہر جڑ سے ایک فن نمایا تھا
 مکرر ہر فیروزہ سے وہاں گورجوں کا تھا
 وہاں ہر جڑ سے، ایک انوکھے فن کا تھا
 وہی بھاشا شیاؤں چہرے پہ تھی اور وہی دم خم

خراج سبکتے یوریش ملا مغرور دشمن سے

پڑا تھا بے حس و حرکت دلاو بھیم دھرتی پر
 وہ بے تمیل فنکاری کا بھشک ایک تھارا تھا
 نکل آیا عرق کی شکل میں خوں چہرے خوں سے
 مگر ہوش آگیا فوراً ہی پوے ہوش سے اٹھا
 گدا ہرا کے بدلا پتیرا، آیا مقابل میں
 نہ لایا بھیم کچھ بھی غشہ سو دیاں دل میں
 دوبارے لی تھر بڑھ کے اس شیطاں پر فن سے
 خراج سبکتے یوریش ملا مغرور دشمن سے

مگر یورش کی سبقت سے نہ اسنے منفعت پائی
پھر اس کے بعد دیو دھن بھی کافی غیظ میں آیا
ترپ کر پھر لگائی ضرب کاری بھیم پر اس نے
نہ لایا تاب ضرب گرز کھا کر بھیم بے چارا
غرض بھاری تھادیو دھن کا پلاس لڑائی میں
یہ سچ ہے آج کمتر بھیم تھادیو دھن کی آزمائی میں

سزا اپنے کئے کی آج خود پائے گا دیو دھن

یہ نظر دیکھتے ہی پاندواں کے غم و ہمت پر
نمایاں بھیم کے مغلوب ہونے کا تھا ہر پہلو
شری گھنشیام نے روتا ہوا پاندو کو جو بچھا
تہا اس طرح رونا ابھی سے نامناسب ہے
نہیں معلوم تم کو کیا ہے شدنی میں بتا ہوں
سنو غالب ہے گا بھیم، مارا جائے گا دشمن
یہی تقدیر کل ہے فیصلہ جو آگے آئے گا

گدا تمیل گل سینے سے دیو دھن کے لڑائی
سُبلدستی سے گرز آہنی کا ہاتھ دکھلایا
کہ تا کا تھانے کے لئے اب تو جگر اس نے
گر ا شہتیر کی مانند وہ دھرتی پہ دوبارا
یہ سچ ہے آج کمتر بھیم تھادیو دھن کی آزمائی میں

سزا اپنے کئے کی آج خود پائے گا دیو دھن

یہ نظر دیکھتے ہی پاندواں کے غم و ہمت پر
نمایاں بھیم کے مغلوب ہونے کا تھا ہر پہلو
شری گھنشیام نے روتا ہوا پاندو کو جو بچھا
تہا اس طرح رونا ابھی سے نامناسب ہے
نہیں معلوم تم کو کیا ہے شدنی میں بتا ہوں
سنو غالب ہے گا بھیم، مارا جائے گا دشمن
یہی تقدیر کل ہے فیصلہ جو آگے آئے گا

یورش کی سبقت =
پہلا ہتھیار کرنا
مغلوب = ہارنا
تھادیو دھن = ہارنا
تھادیو دھن = ہارنا
تھادیو دھن = ہارنا
تھادیو دھن = ہارنا

شہتیر = بے جان خبہ کی
ترہ

فہمو فیراسات = اکل
مغلوب = ہارنا، ہارنا

خداشا = اندیشہ

شودنی = اٹل، ہونی

یہ منظر دیکھتے ہی، پاڈواں کے اچھو-ہیممت پر
گیری ایک بک سی، چھایا دھواں فہمو-فیراسات پر
نمایاں بھیم کے مغلوب ہونے کا تھا ہر پہلو
شری گھنشیام نے روتا ہوا پاندو کو جو بچھا
تہا اس طرح رونا ابھی سے نامناسب ہے
نہیں معلوم تم کو کیا ہے شدنی میں بتا ہوں
سنو غالب ہے گا بھیم، مارا جائے گا دشمن
یہی تقدیر کل ہے فیصلہ جو آگے آئے گا

قسم ماضی کی لیکر اک پیغام مردہ باد آئی

پیشتر نے پھر اس کے بعد پوچھا شیا م بنواری
 کہا گشتیا م نے طاقت میں یوں تو ہم بڑھ کر
 گد کے فن کو دریودھن نے بارہ سال کی ہم
 اسی اک وجہ سے فضل ہے فن میں ہم نے دشمن
 کرشنا جی نے اتنا کہہ کر کچھ ہم کی جانب
 اشارے ہی اشارے میں ہنر کی بات سمجھائی
 اُسے یاد آ گیا فوراً وہاں دربار دریودھن
 جہاں بھلائی جانے والی تھی زانو پر پچالی
 اُسے ماضی کی وہ پر گھیا بھی اپنی یاد آئی
 ہرے سب ہو گئے چودہ برس کے زخم دوبارہ
 بتاؤ کون شہزادی میں فضل تر ہے گردھاری
 مگر فن کے تعلق سے تو دریودھن ہی برتر ہے
 شہری بلدیو سے سیکھا تھا جس کا دم ہے مستحکم
 یہی ہے وجہ جو غالب نظر آتا ہے دریودھن
 اشارے اور کنایہ سے کیا اپنی طرف راغب
 نئے انداز سے اپنی انھوں نے جانگم دکھلائی
 دریدہ تھا جہاں تہذیب اور اخلاق کا دامن
 جہاں انسانیت سے قلب آدم زاد تھا خالی
 قسم ماضی کی لیکر اک پیغام مردہ باد آئی
 خیال غیرت ناموس سے چڑھنے لگا پارہ

دریودھن کا انجام

کمال فن نظر آتا تھا دریودھن کی کوشش میں
 بھرم خود اعتمادی کا تھا جس کے قلب نازش میں

کسم ماجی کی लेकर

اک پیامے-موجدا बाद आयی

یوधिष्ठिर ने फिर इसके बाद पूछा श्याम बनवारी।
 बताओ कौन शैहजोरी में, अफजल तर है गिरधारी।।
 कहा घनश्याम ने ताकत में यूँ तो भीम बढकर है।
 मगर फन के ताल्लुक से तो दुर्योधन ही बरतर है।।
 गदा के फन को दुर्योधन ने बारा साल तक पैहम।
 श्री बलदेव से सीखा था जिसका दम है मुस्तहकम।।
 इसी इक वजहा से अफजल है फन में भीम से दुश्मन।
 यही है वजहा, जो गालिब नजर आता है दुर्योधन।।
 कृष्णा जी ने इतना कह के, देखा भीम की जानिब।
 इशारे और किनाये, से क्या अपनी तरफ रागिब।।
 इशारे ही इशारे में हुनर की बात समझाई।
 नये अंदाज़ से अपनी, उन्होंने जांघ दिखलाई।।
 उसे याद आ गया फौरन, वहाँ दरबारे-दुर्योधन।
 दरीदा था जहाँ, तैहजीब और इखलाक का दामन।।
 जहाँ बिठलाई जाने वाली थी जानु पे पंचाली।
 जहाँ इन्सानियत से, कल्बे-आदम जाद था खाली।।
 उसे माजी की वह प्रतिज्ञा भी अपनी याद आयी।
 कस्म माजी की लेकर इक پیامے-मुजदा बाद आयी।।
 हरे सब हो गए चौदा बरस के ज़रूम दोबारा।
 खयाले-गैरते-नामूस से चढ़ने लगा पारा।।

दुर्योधन का अंजाम

कमाले-फन नजर आता था, दुर्योधन की यूरिश में।
 भ्रम खुद एतेमादी का था, जिसके कल्बे-नाज़िश में।।

शैहजोरी = ताकत
 अफजल = अच्छा-बड़ा

पैहम = लगातार
 मुस्तहकम = पक्का

गालिब = विजय

दरीदा = तार तार
 तैहजीब = सभ्यता
 कल्बे-आदम जाद =
 मानव जाति का दिल
 माजी = गुजरा ज़माना
 پیامے-मुजदा बाद = शुभ
 कामनाओं की सूचना
 गैरते नामूस = इज़्ज़त

यूरिश = धावा
 खुद एतेमादी = खुद पर
 भरोसा
 कल्बे-नाज़िश = नाज़
 करने वाला दिल

بترجہ نوا کرتی تھی اک اک ضرب در یودھن
 ذرا مہلت اسے ملتی تو خود بھی وار کر دیتا
 مگر ہر سچی پیہم، سچی لا حاصل نظر آئی؛
 ادھر زانو پچا کر خود بزدل آتا تھا در یودھن
 بہر صورت بچا کر اپنا زانو جنگ کرتا تھا
 لگائی ضرب در یودھن نے اچھی سی، بشوہی
 یہ اک منصوبہ مکرور یا تھا بھیم خوش فن کا
 مگر سب رائیگاں گزری تھی اب تک بھیم کی محنت
 پڑا تھا بھیم دم سادھے زمیں پر بے حس حرکت
 یہی اک چھل کپٹ کی آخری حکمت نظر آئی
 الٹ دی اتنی مہلت میں بساط جنگ مغلوب
 کہ لیٹے لیٹے ہی اس شان اچھلا گدا لیکر
 وہ ضرب گرز کی سرعت تھی یا اک برق کی دھنکی
 پلٹ چھکی نہ تھی کہ گرز، زانو پر گرا، آکر

بترجہ نوا = ہمیشہ نئے
 ڈنگ سے

جانو-اے-دوہمن = دوہمن
 کی مانی
 ہر سڈے-پہم =
 لگاتار کوشش
 سڈے-لا-ہاسیل =
 ناکام
 یاس = ناظمی دی

مکرو-ریا = छल कपट

राएगों = बेकार

दगा = छल

सुरअत = तेजी
 बर्क की रौ = बिजली की
 लहर
 जौ = चमक
 जानू = जांच

اسی انداز سے بچتا تھا خود بھی بھیم شیر افگن؛
 نشانہ زانوئے دشمن کو وہ فوراً بنا لیتا
 گدا کی ضرب، گویا یاس کی حامل نظر آئی
 اسے احساس تھا میری تباہی کہ ہے کیا کارن
 وہ چونکا تھا، ضرب بھیم سے ہر لمحہ ڈرتا تھا
 گرا بھیم اس طرح جیسے لگی ہو ضرب اک کاری
 اسی انداز سے نقصان ہو سکتا تھا دشمن کا
 نہ زک پہنچا سکتا تھا دست بھیم اس کو کسی صورت
 دغا سے وار کرنے کی اسے کافی تھی یہ مہلت
 ریا و مکر کے پڑے میں بس نصرت نظر آئی
 برفے کا لایا بھیم نے یوں اپنا منصوبہ
 مقابل ہو کھلا کر رہ گیا حیران اور ششدر
 گدا کی لہر، شکل دائرہ، بجلی کی اک مٹو تھی
 گدا کا وار پوری طرح جا بیٹھا نشانے پر

وہ ضربِ بھیم جس نے توڑ ڈالا زانوئے دشمن
گدے ران کیا ٹوٹی اندھیرا آنکھیں چھپایا
پڑا تھا گر کے دریودھن لبوں پر آہ و زاری تھی
فقاں کیساتھ کچھ بدیان کچھ ہفوات جاری تھی

جُربے-بھیم = بھیم کا
وار

خود ایتھمادی = خود پر
بھروسا
ہیجیان = پاگل پن

اسے انسانیت محراب ہوئی سی نظر آئی

پھر اُس کے بعد دریودھن نے یوں اپنا دھن کھولا
شری گشتیام میں مارا گیا ہوں آپ کے کارن
ادھرمی روپے مارا گیا ہوں میں سر میں
یہ باتیں بھیم نے جسدِ سنس تو غیظ میں آکر
پھر اُس کے بعد اُس کے سر پر رکھ دی لات غصے میں
یہ منظر دیکھ کر چشمِ پھٹشتر غم سے بھرا آئی
لہذا بھیم کو اس فعلِ بد سے منع فرمایا
مگر وہ دشمنی میں ہو چکا تھا اس قدر اندھا
دہیں موجود تھے بلدیوچی جیسے پراکرمی

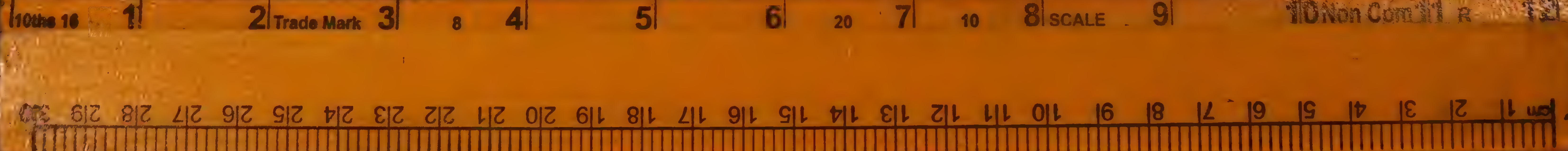
فخالب ہو کے کیشو مورتی سے اس طرح بولا
کہاں تھی ورنہ ظالم بھیم میں جرات یہ من مہن
کیا ہے دھرم والوں ہی چاک اب دھرم کا دماں
لگائی ایک ٹھوکر بڑھ کے دریودھن کے مغر پر
دکھا دی بھیم نے بھی اپنی یوں وقت غصے میں
اسے انسانیت محراب ہوئی سی نظر آئی
سراں کی عظمت کس قدر ہوئی ہے سمجھایا
یہ پھٹشتر کی نہ کوئی بات مانی اور نہ کی پروا
انہوں نے بھی سراں کی جتنی حرمتی دیکھی

فیر اُس کے بعد دریودھن نے یوں اپنا دھن کھولا
مُخاٹیب ہو کے کیشو مورتی سے اس طرح بولا
شری گشتیام میں مارا گیا ہوں آپ کے کارن
ادھرمی روپے مارا گیا ہوں میں سر میں
یہ باتیں بھیم نے جسدِ سنس تو غیظ میں آکر
پھر اُس کے بعد اُس کے سر پر رکھ دی لات غصے میں
یہ منظر دیکھ کر چشمِ پھٹشتر غم سے بھرا آئی
لہذا بھیم کو اس فعلِ بد سے منع فرمایا
مگر وہ دشمنی میں ہو چکا تھا اس قدر اندھا
دہیں موجود تھے بلدیوچی جیسے پراکرمی

چاک = فاڑنا ، تھکڑے
تھکڑے کرنا

فیلے-بد = بُرا کام

بہرمتی = اُپمان



تو وہ بھی رکھ سکے مطلق نہ قابو اپنے غصے پر
 بپٹ کر بھیم کی جانب بڑھے اپنی گد لے کر
 یہ نظر شیا م نے جس دم شری بلدیو کا دیکھا
 کہ بھائی جان اتنا بھیم پر غصہ نہ نہ سرائیں
 کہ چودہ سال پہلے بھیم نے پرتگیا کی تھی
 کہ میں تو میں پنچالی کا بدلہ لیکے چھوڑوں گا
 اسی انداز سے گھنشیام نے ہر بات سمجھائی
 پھر اس کے بعد کشو مورتی نے بھیم کو ٹوکا
 غرض بلدیو جی بھی پھر وہاں سے ہو گئے نصرت

بمورجنت = تہی سے

अश्वत्थामा का इन्तकाम

فیر اسکے بعد کشو مورتی اور پانڈواں مل کر
 اچھڑا شوت نے دریودھن کے پاس کر کہا سجن
 پتا کی موت نے غم جتنا پنچایا نہ تھا مجھ کو
 دعا برکت کی دیکھ اے جی پت مجھ کو نصرت کر
 مہ شری بلدیو جی شری کرشن جی کے بڑے بھائی تھے۔ گدایدھ میں جتکے زمانہ تھے۔ دریودھن نے بارہ سال تک
 گدایدھ کا من آپ سے سیکھا۔

دناایت = کرپا

۱) شری بلدیو جی شری کرشن جی کے بڑے بھائی تھے۔ گدایدھ میں جتکے زمانہ تھے۔ دریودھن نے بارہ سال تک گدا
 یوڈ کا فن آپ سے سیکھا۔

تو وہ بھی رکھ سکے مطلق نہ قابو اپنے غصے پر
 بپٹ کر بھیم کی جانب بڑھے اپنی گد لے کر
 یہ نظر شیا م نے جس دم شری بلدیو کا دیکھا
 کہ بھائی جان اتنا بھیم پر غصہ نہ نہ سرائیں
 کہ چودہ سال پہلے بھیم نے پرتگیا کی تھی
 کہ میں تو میں پنچالی کا بدلہ لیکے چھوڑوں گا
 اسی انداز سے گھنشیام نے ہر بات سمجھائی
 پھر اس کے بعد کشو مورتی نے بھیم کو ٹوکا
 غرض بلدیو جی بھی پھر وہاں سے ہو گئے نصرت

اشوت تھاما کا انتقام

گئے سب جنتی کا درس کرنے سرتی تپ پر
 مجھے سینا پتی کا پد عطا کرویر دریودھن
 ہولے دکھ تری حالت بہا اس سوا مجھ کو
 کہ میں پانڈو سے بدلہ لے سکوں اتنی عیانت
 مہ شری بلدیو جی شری کرشن جی کے بڑے بھائی تھے۔ گدایدھ میں جتکے زمانہ تھے۔ دریودھن نے بارہ سال تک
 گدایدھ کا من آپ سے سیکھا۔

इजाजत दी खुशी के साथ, दुर्योधन ने अश्वत को।
इधर कुछ और ही मंजूर था, शायद मणीयत को॥
फिर इसके बाद कृपा, क्रतु, अश्वत रात को छिप कर।
किसी बरगद के नीचे, सो गये महफूज धरती पर॥
इधर अश्वत को नींद आयी, न मुतलक फिक्रे-दुश्मन में।
व लेकिन कृत-ओ-कृपा सो गए वीरान निर्जन में॥
इसी असना में, इक उल्लू कहीं से इस जगह आया।
शजर पर जाग के बच्चों को, बस सोया हुआ पाया॥
तो उसने नींद में सोए हुए उन "कागलाओं" को।
बनाया जुल्म का अपने, निशाना बे-नवाओं को॥
यह मंजूर देखते ही बात आयी कल्बे-अश्वत में।
कि माहँ दुश्मनों को मैं भी, यूँही ख्वाबे-गफलत में॥

मणीयत = ईश्वर की
इच्छा

महफूज = सुरक्षा,
हिफाजत से

असना = मौके
शजर = पेड़
जाग = कच्चा
कागलाओं = कब्बे के
बच्चों
बे-नवाओं = बेजबानों

बसद अरमाँ-ओ-हसरत इस जहाँ से कूच करना है

बस इतना सोचते ही, कृत और कृपा को उजलत से।
जगा कर, कर दिया आगाह उन को अपनी नीयत से॥
खयाल अश्वत का सुनकर, फिर उन्होंने मना फरमाया।
अधर्मी काम से रोका उसे, और खूब समझाया॥
मगर कुछ दुश्मनी में इस कदर दीवाना था अश्वत।
चला पान्डव की जानिब, फिर न रोके से रुका अश्वत॥
बिलआखिर कृत और कृपा भी पहुँचे बाद अश्वत के।
वहाँ दोनों का रुक जाना, मनाफी या मुरव्वत के॥
अंधेरी रात में जिस वक़्त, अश्वत उस जगह पहुँचा।
अंधेरे के सबब बच्चों को उसने पान्डवाँ समझा॥
समझ कर पान्डवाँ, उन के सरो को ख्वाबे-गफलत में।
उड़ाया वीर अश्वत ने, न सोचा कुछ भी उजलत में॥

नीयत = इरादा

मनाफी = खिलाफ
मुरव्वत = दया, रहम

ख्वाबे-गफलत = गहरी
नींद
उजलत = जल्दी

अजर्दी خوشی کیساتھ دیرودھن نے اشوت کو
پہرے کے بعد کرپہ، کرت، اشوت رات کو چھپ کر
ادھر اشوت کو نیند آئی نہ مطلق فکر دشمن میں
اسی اثنا میں اک اُلو کہیں اس جگہ آیا
تو اس نے نیند میں سوہوئے ان کا گلاؤں کو
یہ منظر دیکھتے ہی بات آئی قلب اشوت میں
ادھر کچھ اور ہی منظور تھا شاید مشیت کو
کسی برگد کے نیچے سو گئے محفوظ و معرقی پر
لیکن کرت و کرپہ سو گئے ویران زبرج میں
شجر پر زانغ کے بچوں کو بس سویا ہوا پایا
بنایا ظلم کا اپنے فتنے بے نواؤں کو
کہ ماروں دشمنوں کو میں بھی یوں ہی خواب غفلت میں

بصد ارمان و حسرت اس جہان سے کوچ کرنا ہے

بس اتنا سوچتے ہی کرت اور کرپہ کو عجلت سے
خیال اشوت کا سنکر پھر انہوں نے منع فرمایا
مگر کچھ دشمنی میں اس قدر دیوانہ تھا اشوت
بالآخر کرت اور کرپہ بھی پہنچے بعد اشوت کے
اندھیری راتیں جس وقت اشوت اس جگہ پہنچا
سمجھ کر پانڈواں ان کے سر کو خواب غفلت میں
جگا کر کر دیا آگاہ ان کو اپنی نیت سے
ادھرمی کام سے روکا اسے اور خوب سمجھایا
چلا پانڈو کی جانب پھر نہ روکے سے رکا اشوت
وہاں دونوں کا رُک جانا، منافی تھا مروت کے
اندھیرے کے سبب بچوں کو اس نے پانڈواں سمجھا
اُریا اور اشوت نے نہ سوچا کچھ بھی عجلت میں

دیگر اسکے وہاں مار گئے تھے اور جواں کتنے
 غرض نکلا وہاں وہ سردوں کو ہاتھ میں لیکر
 وہاں پہنچا تو دریو دھن کو سر بچوں کا دکھلایا
 ہوا سر در دریو دھن نے پیغام کو سنکر
 یہ منظر دیکھتے ہی بولا دریو دھن بصد کلفت
 نظر پہنچی اب شوت کی بھی دریو دھن کے کہنے پر
 اندھیر کے سبب شوت نے دھوکا لٹیس کھلایا
 بالآخر بولا دریو دھن ہوا وہ تھابو قسمت میں
 ہے آخر وقت میرا میں یہاں کوچ کرتا ہوں
 یہ کہہ کر ہو گیا رخصت جہاں غم سے دریو دھن
 دیگر اسکے وہاں مارے گئے تھے اور جواں کتنے
 فنا کے غاٹ پہنچا ہے، اس نے پہلے کتنے
 گرج نکلا وہاں سے وہ ساروں کو ہاتھ میں لے کر
 چلا فیر سمتے-دوریو دھن بسانے-ناجی-کرو-فر
 وہاں پہنچا تو دوریو دھن کو سر بچوں کا دکھلایا
 کھا، لو پانڈو کو مار کر سر ان کا لے آیا
 ہوا مسرور دوریو دھن نئے پیغام کو سنکر
 مگر واں تھے بجائے پانڈو اس کچھ بالکوں کے سر
 یہ پانچوں سر میں پناہی کے فرزند کے اسوت
 حقیقت میں تھے اسکے ہاتھ میں سب بالکوں کے سر
 سر پانڈو سمجھ کر بالکوں کے سر لے آیا
 وہی ہوتا ہے سب کچھ جو بھی ہوتا ہے مشیت میں
 بصد رمان حسرت اس جہاں کوچ کرتا ہوں
 رہا تھا زندگی بھر یہ پر جاکے سر دشمن

ہوئے اشوت کی جان بخشی پیراضی پانڈو خوشتر

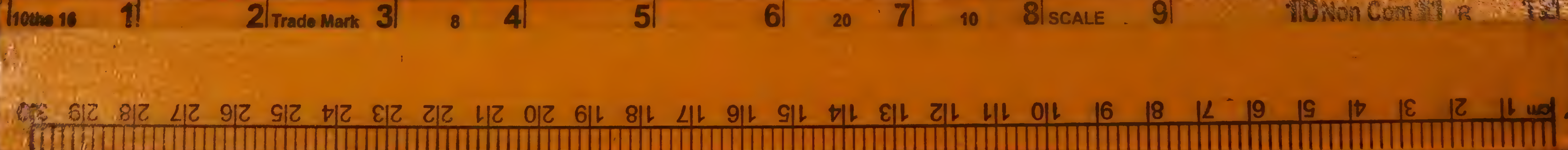
فراغت پا چکے دشمن سے پانڈو اور بنواری
 خوشی سے آہے تھے پانڈو والے اٹھکیلیاں کر
 ہوئے واپس تو قلب و روح پر اک کیف تھا طاری
 نشاط و کیف میں وہی ہوئی خوش گیلیاں کرتے

مشییات = ایشور کی
 دھشا

کلبو-رہ = من اور
 آتما
 نیشاتو-کےف = خوشی کی
 تران

ہوئے اشوت کی جان بخشی پیراضی پانڈو خوشتر

فراغت پا چکے دشمن سے پانڈو اور بنواری
 خوشی سے آہے تھے پانڈو والے اٹھکیلیاں کر
 ہوئے واپس تو قلب و روح پر اک کیف تھا طاری
 نشاط و کیف میں وہی ہوئی خوش گیلیاں کرتے



कि इतने में खबर उनको किसी ने आके पहुँचाई।
 कि फर्जन्दाने-पंचाली हुए परलोक के राही॥
 कि अश्वत ने फना के घाट बच्चों को उतारा है।
 सितम है, खाब मे जालिम ने मजलूमों को मारा है॥
 खबर वहशत असर, बित्ते-द्रौपद को मिली जिस दम।
 गमे-फर्जन्द से तारी हुआ सकते का डक आलम॥
 युधिष्ठिर और पाण्डव को भी उस का गम हुआ सुनकर।
 मगर उन से ज्यादा था असर बित्ते-द्रौपद पर॥
 मुखतिब पाण्डवाँ से होके फिर उसने कसम खायी।
 तमन्ना दिल की ऐ स्वामी, अगर मेरी न वर आयी॥
 तो मैं अनशन करूँगी उस समय तक चाहे जाँ जाए।
 मनि अश्वत के सर की, मार कर जब तक न तुम लाए॥
 द्रौपद कन्या की इस तरह प्रतिज्ञा सुनकर।
 चला अश्वत का सर लाने दिलावर भीम जोर आवर॥
 इधर घनश्याम-ओ-अर्जुन, भीम की पहुँचे अजानत को।
 श्री घनश्याम लेकिन जानते थे खूब अश्वत को॥
 कि अश्वत अब ब्रह्मास्त्र को ही आजमाएगा।
 जवाब उसका न देगा भीम तो खिफफत उठाएगा॥
 वही हथियार अश्वत ने चलाया भीम पर आखिर।
 कि खदशा जिस से पहले, कर दिया था श्याम ने ज़ाहिर॥
 बिलआखिर वीर अर्जुन ने, दिखाया इक नया मंज़र।
 ब्रह्मास्त्र से काटा, ब्रह्मास्त्र को बढ़कर॥
 फिर इसके बाद ही अश्वत को पकड़ा गैज़ में आकर।
 और उसको खींच कर ले आया पंचाली के कदमो पर॥
 उसी के सामने छिनी जुबरदस्ती मनि उसकी।
 और उमको छीन कर फिर दुख्तरे-पंचाल को दे दी॥
 मगर पाण्डव ने आखिर श्याम बनवारी के कहने पर।
 खता अश्वत की बख्शी दिल पे इक संगे-गिराँ रखकर॥

फना = मौत

खबर वहशत असर = दुख
पहुँचाने वाली खबरबित्ते-द्रौपद = द्रौपद की
बेटी

अनशन = मरन ब्रत

अजानत = मदद, सहायता

खता = अपराध, गुनाह
संगे-गिराँ = पत्थर

کہ اتنے میں خبر ان کو کسی نے آکے پہنچائی
 کہ اسٹوت نے فنا کے گھاٹ بچوں کو اتارا ہے
 خبر وشت اثر بنت دروید کو ملی جس دم
 یہ شہر اور پانڈو کو بھی اس کا غم ہوا سنکر
 مخاطب پانڈواں ہو کے پھر اس نے قسم کھائی
 تو میں اس کڑوں کی اس سے تک چاہاں جا
 دروید کنیا کی اس طرح پر تگیا سنکر
 ادھر گھنشیام وارجن بھیم کی پہنچے اعانت کو
 کہ اسٹوت اب برہماستر کو ہی آزمائے گا
 وہی ہتھیار اسٹوت نے چلایا بھیم پر آخیر
 بالآخر ویرارجن نے دکھایا اک نیل منظر
 پھر اس کے بعد ہی اسٹوت کو پکڑا غنیل میں آکر
 اسی کے سامنے چھینی زبردستی منی اس کی
 مگر پانڈو نے آخر شیاہ بنواری کے کہنے پر
 کہ فرزند ان پچالی ہوئے پر لوک کے راہی
 ستم ہے خواب میں ظالم نے مظلوموں کو مارا
 غم فرزند سے طاری ہوا سکتے کا اک عالم
 مگر ان سے زیادہ تھا اثر بنت دروید پر
 تمنا دل کی اے سواہی اگر میری نہ بر آئی
 منی اسٹوت کے سر کی مار کر جب تک نہ تم لائے
 چلا اسٹوت کا سر لانے دلاور بھیم زور آور
 شری گھنشیام لیکن جلتے تھے خواب اسٹوت کو
 جواب اس کا نہ دیکھا بھیم تو نفقت اٹھائے گا
 کہ خدشہ جس سے پہلے کر دیا تھا شیاہ نے
 برہماستر سے کاٹا برہماستر کو بڑھ کر
 اور اس کو کھینچ کر لے آیا پچالی کے قدموں پر
 اور اس کو چھین کر پھر دختر پچال کو دے دی
 خط اسٹوت کی بخشی دل پہ اک سنگ گراں کھ کر

انسان مرن برت

ناتیجا یا بھیانک آارजूए-कजकुलाही का

महल में मर्गे-दुर्योधन की पहुँची है खबर जिसदम ।
हरीमे-कौरवाँ में बिछ गई, हर सू सफे-मातम ॥
थीं अंजामे-जदल से, बेगमाते-कौरवाँ गिरयाँ ।
महल से निकलीं रोती पीटती पहुँचीं सरे-मैदाँ ॥
पड़े थे हर तरफ कुशों के पुशे रण की धरती पर ।
चिकत्ता बन गया था खूने-इन्साँ, तैह व तैह जम कर ॥
कहीं पहलू व पहलू राकिबो-मरकब की लाशें थीं ।
बदन थे जिनके ज़ख्मी और कहीं गहरी खराशें थीं ॥
कहीं टूटे पड़े थे रथ, कहीं तीरो-कमाँ खंजर ।
कहीं ढालें पड़ी थीं और कहीं थे जोशनो-मिगफर ॥
पड़े थे टुकड़े हो हो कर कहीं आजाए-इन्सानी ।
कहीं रिस कर ज़मी पर, वह रहा था खून से पानी ॥
कहीं था कासा-ए-सर, ज़बे-पाए-अस्प की जूद में ।
कदूमे-दाइयाने-ताज, पहुँचे मौत की हद में ॥
मिला था आज बिस्तर खाक का, मखमल फराशों को ।
सरे-जंगाह, हाथी रौन्दते थे, जिनकी लाशों को ॥
नज़ारा हर तरफ था, बरबरीयत और तबाही का ।
नतीजा था भयानक, आरजूए-कजकुलाही का ॥
इधर नौहा गिराने-कौर में, शामिल थी गंधारी ।
हुजूमे-बेकसाँ में इक यही थी सब से दुखयारी ॥
महाजे-जंग पर तारी थ आलम सोगवारी का ।
बपा था शोर, नाशे-कौरवाँ पर आह-ओ-जारी का ॥
मगर गंधारी-ए-मुजतर बहुत रंजीदा खातिर थी ।
सदाए-गिरया-ओ-गम को दबाने से वह कासिर थी ॥

हरीम = राजमहल
सफे-मातम = सोग, दुख
बेगमाते-कौरवाँ = कौरवों
की औरत
कुशों के पुशे = लाशों
के अंवार

कासा-ए-सर = कटा
हुआ सर
ज़बे-पाए-अस्प = घोड़ों
के पांव की ठोकर
कदूम = कदम की
जमा, पैर
दाइयाने-ताज = ताज के
दावेदार
बरबरीयत = जुल्म
कजकुलाही = ताज-मुकुट
नौहा गिराँ = सोंग करती
हुई

सदा = रोने की आवाज
कासिर = मजबूर

نتیجہ تھا بھیانک آرزوئے کجکلاہی کا

عمل میں مرگ دیودھن کی پہنچی بکھر جس دم
تھیں انجام بدل سے بیگمات کوڑاں گریاں
پڑے تھے ہر طرف کشتوں کے پستے زن کی مہرتی پر
کہیں پہلو پہلو راکب مرکب کی لاشیں تھیں
کہیں لڑے پڑے تھے تھکے تھکے تیر و کمان خنجر
پڑے تھے ٹکڑے ہو ہو کر کہیں اعضا انسانی
کہیں تھا کاسہ سر ضرب پیا اسپ کی ندیں
بلا تھا آج بستر خاک کا مغل فراشوں کو
نظارہ ہر طرف تھا بربریت اور تباہی کا
ادھر نوہ گران کوڑ میں شامل تھی گندھاری
خاؤ جنگ پر طاری تھا عالم سوگواری کا
مگر گندھاری مضطرب بہت رنجیدہ خاطر تھی
حرم کو رواں میں بچھ گئی ہر سو صفت ماتم
عمل سے نکلیں دلی پیٹی پہنچیں سر میاں
چلتا بن گیا تھا خون انساں تہہ تہہ جم کر
بدن تھے جنکے زخمی اور کہیں گہری خراشیں تھیں
کہیں ڈھالیں پڑی تھیں اور کہیں جوشن و مغفر
کہیں رِس کر زمین پر بہہ رہا تھا خون سپانی
قدوم داعیان تاج پائے موت کی حد میں
سر جنگاہ ہاتھی روندتے تھے جنگی لاشوں کو
نتیجہ تھا بھیانک آرزوئے کجکلاہی کا
ہجوم بچاں میں کبھی تھی سب ڈکھاری
پیا تھا شور و نقش کو رواں پر آہ وزاری کا
مدائے گریہ و غم کو دبانے سے وہ قاصر تھی

گرج ماں سے زیادہ غم کیسے بٹوں کا ہوتا ہے۔
سیوا ماں کے جہاں میں، رُخ کے آسوں کون روتا ہے۔

نئیجا جंगے-مہا بھارت

گرج جंगے-مہا بھارت ہڈی جب خاتم تو اس کا۔
نئیجا پانڈواں کے ہک میں نیکلا خیر سے اچھا۔

یہ جंग اڈھارا دین تک کورواں پانڈو لڑی ایسی۔
کی جس میں کام آئی، لاکھوں جانے دونوں جانیں کی۔

بتایا جاتا ہے اس جंग میں گیارہ کشتوں شکر۔
اُتارا تھا گیروہ-کौरواں نے رण کی دھرتی پر۔

ڈھار تھا ہفت، راجا دھرم کی جانیں کشتوں لکھ۔
ہوا ہڈیا کشتوں کول جما لکھ ارجے-میدان پر۔

ہنودے-ہند کی رُسمے یہی ہے ایک کشتوں لکھ۔
کی ہوں اسوارے-فیل ڈککس دھ سد سیتا-سد ستر۔

دیگر ہوں شاہسوارے-اسپ پائسٹ دھ-سدو-شش سد۔
پاڈے ساڈے ڈیسو اور ہوں ایک لاکھ سد نوبد۔

گرج ایک لاکھ ڈیوانے ہزار اور مل کے نو سو میں۔
بنے گا ایک کشتوں لکھ، یہ ہے آدھار کی تاسیس۔

اسی کو ضرب تھا رُسمے دیکھ کر سینگے پاٹھ۔
یہ اتنی فوج ارض تھانسر کے طول و ستر میں۔

یہ اتنی فوج ارض تھانسر کے طول و ستر میں۔
اُتاری کورواں پانڈو نے وگا گاھے-بسالت میں۔

یہ ہے ایک داستاں، ہندی ہونے دال گوکی۔
جو کہتا ہے بچے اس جंग سے وارا نکر باکی۔

گيروہ-کौर سے باکی بچے تھے صرف چار انساں۔
بچا تھا موت سے پانڈو کے ہشت افراد کا دماں۔

یہ ہشت افراد = آٹھ
۱) یوڈیٹیر

کشتوں = ایک کشتوں لکھ
میں ایک لاکھ ڈککس دھ
نوب سو بیس سیتا-سد
سے

ہفت = سات

ہڈیا کشتوں = اڈھارا کشتوں

کی رُسمے = کے ہما دھ سے

انوارے-فیل ڈککس دھ

سد سیتا-سد ستر =

ساڈیوں والی فوج

۲۴۳

شاہسوارے-اسپ پائسٹ

دھ-سدو-شش سد =

پوڈا سوار فوج ۶۴۶۰۰

پاڈے ساڈے ڈیسو اور ہوں

ایک لاکھ سد نوبد =

پیدل فوج ۱۰۹۶۴۰

گرج ایک لاکھ ڈککس دھ

ہزار نوب سو بیس،

بنے گا ایک کشتوں لکھ =

یانی ایک کشتوں لکھ میں

۱۰۹۶۴۰۰۰ کول فوج ہوتی

تھی

مہا بھارت کی جंग میں

کورواں اور پانڈواں کی

فوج کی سیرگینتی

۳۴۸۸۴۶۰

وگا گاھے-بسالت = ویرتا

کا میدان جंग

نکر = ویرتا

ہشت افراد = آٹھ

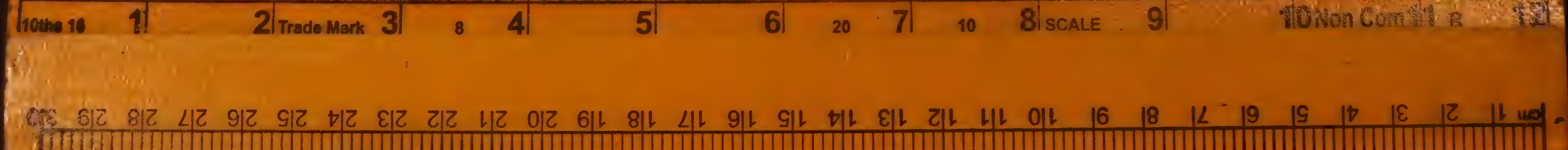
ویرتا

غرض ماں سے زیادہ غم کے بیٹوں کا ہوتا ہے،
سواماں کے جہاں میں نوبوں کے آنسو کون روتا ہے،

نتیجہ جنگ مہا بھارت

غرض جنگ مہا بھارت ہوئی جب ختم تو اس کا
یہ جنگ اٹھارہ دن تک کورواں پانڈو لڑی ایسی
بتایا جاتا ہے اس جنگ میں گیارہ کشتوں شکر
اور تھانفت راجہ دھرم کی جانب کشتوں شکر
ہنود کی رُسمے یہی ہے ایک کشتوں شکر
دیگر ہوں شاہسوار اسپ پائسٹ دھ سدو شش سد
غرض ایک لاکھ ڈیوانے ہزار اور مل کے نو سو میں
اسی کو ضرب تھا رُسمے دیکھ کر سینگے پاٹھ
یہ اتنی فوج ارض تھانسر کے طول و ستر میں
یہ ہے ایک داستاں ہندی ہونے دال گوکی
گردہ کور سے باقی بچے تھے صرف چار انساں

یہ ہشت افراد = آٹھ لوگ



جو پہلا شخص فوج کو رے اب تک ہا زندہ
 دگر تھے کرت و رما اور کر پہ چار یہ سنبھ
 یہی وہ فوج دیروہمن کے مردان لاوتھے
 ادھر فوج پیشتر سے بچے تھے صرف ہشت سال
 دگر انکے تھا پوتھا ہمیں اور پسمید پیشتر تھا
 علاوہ پانچو پانڈو کے چھا تھا انیس اک ساک
 سلامت ساتواں جو فرجہ پیش نام نامی تھا
 تھے شتم فرد بنواری ہے بوزندہ و باقی
 غرض اس جنگ میں بارہ نفر کو چھوڑ کر سارے
 جو پہلا شخص فوج کو رے اب تک رہا جیندا
 وہ اشد تھا جو تھا پھر رخ و غا کا نیم تابندہ
 یہ چاروں جنگ کے ہنگام آخر تک سلاست تھے
 بہادر تھے نڈر تھے جنگجو تھے زور آور تھے
 نکل سہیلو اور راجن کے بیسے ضیم دوراں
 بولنے عصر میں اقلیم عالم کا سبخر تھا
 یگانہ تھا فراست میں بڑا تھا قابل وزیر کر
 ادیب و فلسفی تھا اور اک فنکار راجی تھا
 خدا ہو کر جوانوں میں تھے انسان آفاقی
 فنا کے گھاٹ اترے ہو گئے بھگوان کو پیارے

چرخے-وگا = جگ کا
 آکااش
 نژمہ-تاہیندا = آخر
 وکت تک

ہشت ہنساں = آٹھ آدمی

کابیلو-جیرک = چالاک
 اور ہوشیار

نفر = آدمی

کی رکییت نے روپ اک یگن کایوں سامنے لایا

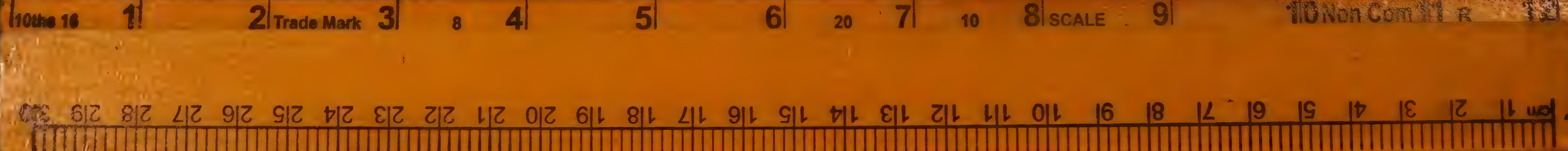
مہایوڈھ کا اثر پھر رفتہ رفتہ کم ہوا آخر
 پھر اس کے بعد پانڈو اس شادہ دارفانی میں
 دگر اس کے ہوا تھا جس قدر اٹلاف جاں اتک
 نشان جاہت متے متے میٹ گیا آخر
 کی حالات سے گئے ہیں اپنی زندگانی میں
 ستم برپا ہوئے تھے بتنے زیر آسمان اب تک

ہتلاہے-جائ = جان کا
 نوسان
 جیرے-آساماں = آکااش کے
 نیچے

جو پہلا شخص فوج کو رے اب تک ہا زندہ
 دگر تھے کرت و رما اور کر پہ چار یہ سنبھ
 یہی وہ فوج دیروہمن کے مردان لاوتھے
 ادھر فوج پیشتر سے بچے تھے صرف ہشت سال
 دگر انکے تھا پوتھا ہمیں اور پسمید پیشتر تھا
 علاوہ پانچو پانڈو کے چھا تھا انیس اک ساک
 سلامت ساتواں جو فرجہ پیش نام نامی تھا
 تھے شتم فرد بنواری ہے بوزندہ و باقی
 غرض اس جنگ میں بارہ نفر کو چھوڑ کر سارے
 جو پہلا شخص فوج کو رے اب تک رہا جیندا
 وہ اشد تھا جو تھا پھر رخ و غا کا نیم تابندہ
 یہ چاروں جنگ کے ہنگام آخر تک سلاست تھے
 بہادر تھے نڈر تھے جنگجو تھے زور آور تھے
 نکل سہیلو اور راجن کے بیسے ضیم دوراں
 بولنے عصر میں اقلیم عالم کا سبخر تھا
 یگانہ تھا فراست میں بڑا تھا قابل وزیر کر
 ادیب و فلسفی تھا اور اک فنکار راجی تھا
 خدا ہو کر جوانوں میں تھے انسان آفاقی
 فنا کے گھاٹ اترے ہو گئے بھگوان کو پیارے

کی رکییت نے روپ اک یگن کایوں سامنے لایا

مہایوڈھ کا اثر پھر رفتہ رفتہ کم ہوا آخر
 پھر اس کے بعد پانڈو اس شادہ دارفانی میں
 دگر اس کے ہوا تھا جس قدر اٹلاف جاں اتک
 نشان جاہت متے متے میٹ گیا آخر
 کی حالات سے گئے ہیں اپنی زندگانی میں
 ستم برپا ہوئے تھے بتنے زیر آسمان اب تک



انہیں انکی تلافی گت کرنے میں نظر آئی،
تدارک کا نیا آئین ان کے روبرو آیا۔
طریقہ یگانہ کا اس طرح اپنا یا بدستور نے
اسی کیساتھ اک اعلان بھی اس کی ہر سو
اسی کیساتھ اس کے عقب میں اک فوج باکتر
یہ تھا چیلنج اپنے ہم مراتب بادشاہوں کو
گرفاری مرکب پر نہ جانے حکمراں کتنے
غرض ہوتا رہا کافی دنوں تک یگانہ برکت

شری کرشن جی کا ساندان دوار کا میں

بیل آخیر کورواں کے بعد پانڈو نے زمانے میں
بطور خاص وہ چھتیس برسوں تک بہ کردفر
اپانک دوار کا میں اک جماعت چندریوں کی
رشی مٹیوں نے پہلے اس جگہ اُٹھان فرمایا
۱۰ شرمیدھری گیت۔

تلاफी = نुकسان کو
پورا کرنا، بھगतان
تمننا-تमानی-
آनंद पाने की इच्छा
बतर्जे-नव = नये ढंग से

अपने कुलमरु से = अपने
राज्य से

अकब = पीछे
अस्य = छोड़ा

गिरफते अस्य की तहरीस
= छोड़ा पकड़ने की
लालच

जाविये = चारों ओर से
इशरत = ऐशो आराम

जमाअत = मंडली

تمنای طمانیت بطرز نو تکمیل آئی،
کہ رقیقت نے روپاک یگانہ لایا
کہ چھوڑا اسپ صحت مذاک اپنے قلمرو سے
کہ جس کو ناز ہو وہ آزمائے قوت بازو
ہمیشہ ساتھ رہی تھی حافظ اسپ کی بسکر
گرفت اسپ کی تحریریں تھی یہ یکجہا ہوں کو
ہوئے اس سمت بلوغت پیکر غم و جواں کتنے
نہ جانے کتنی بار آئی انہیں پھر جنگ کی نوبت

شری کرشن جی کا ساندان دوار کا میں

بہرہر زائے سے رنگ عشرت کے فائیں
گزائے ہیں زمین ہستیا پر حکمراں بسکر
کہیں سے آئے تیرتہ گاہ پندارک میں ٹہری تھی
پھر اپنی آتما کو سکھ، تپسیا کر کے پہنچایا
۱۰ شرمیدھری گیت۔

इसी आलम में यादव खानदों के शोखे-तिफलों ने।
 ठठोल और दिल्लगी ऋषियों से की, इस गोले-नादों ने॥
 वहीं इक शौब नामी तिफल था, इस गोल के अन्दर।
 कि जिस ने हमेला औरत के जैसा रूप इक भरकर॥
 मजाको-तंज से पूछा बताओ ऐ ऋषि मुनियो।
 तवल्लुद होगा इस आवस्तनी से क्या ? महापुरुषो॥
 तो फौरन चढ़ गई, मुनियों की यह कहते हुए चितवन।
 कि होगा बल से फौलाद का मूसल इसे उत्पन्न॥
 इसी मूसल से जग में, नाश यादव खानदों होगा।
 तमाशा-ए-हलाकत, एक जेरे-आसमाँ होगा॥
 यह सुनते ही दिलों पर, बालकों के खौफ सा छाया।
 उठा कर सित्र देखा तो, उन्हे मूसल नज़र आया॥
 फिर इस फौलाद के मूसल को सारे यादवाँ मिल के।
 समुन्दर में बहाया, रेजा रेजा करके साहिल से॥
 वह रेजे बहर की लहरों से, रफ़ता रफ़ता टकरा कर।
 करीब-फिकें-साहिल, तैह बतैह सब जम गए आकर॥
 उन्हीं टुकड़ों में कुछ ऐसे भी थे फौलाद के टुकड़े।
 कि जिनको मछलियों ने, आब में निगला था बेखटके॥
 कुछ अर्सा बाद, इक मछली को माही गीर ने पकड़ा।
 और उसके पेट में, फौलाद का टुकड़ा वही निकला॥
 फिर इस लोहे के टुकड़े को, जरा नामी बिहारी ने।
 लगाया फुक अपने बान में ज़ालिम शिकारी ने॥

गोखे-तिफलों = चंचल
 बच्च
 गोले-नादा = मूर्खों की भीड़

करीब-फिकें-साहिल =
 समुद्र तट के निकट
 तैह ब तैह = नीचे से
 उपर तक

चला फिर दौर

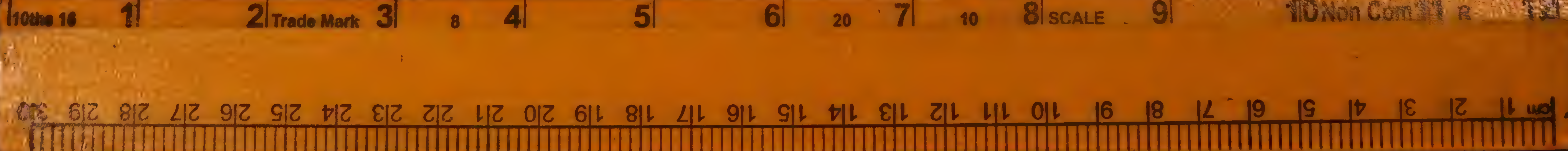
सहबाए-कोहन का खूब फुरसत से

पड़ा था श्राप जब से, बाखुदा ऋषियों का यादव पर।
 हुआ उस रोज़ से फिर, द्वारका उत्पात का मज़हर॥

इसी आलम में यादव खानदों के शोखे-तिफलों ने
 हमें एक शानब नामी طفل तैह आस गोल के अन्दर
 مذاक डफ़्तेर से पोचपा, बतावले रशी-मिनो
 तो फौराचरुह गयी मिनो की ये बैसे होئے पतोन
 असी मूसल से बग में नाश यादव खानदों गगा
 ये सन्तेही दलों पर बालकों के खौफ सा चहया
 पहरास फोलाद के मूसल को सारे यादवाँ मिल के
 वह रیزर बहर की लहरों से रफ़ते रफ़ते टकरा कर
 अही न्हरो में कچه ऐसे भी तैह फोलाद के टुकड़े
 कचे एरुव बेदाक ज़हिल को माही गीर ने पकड़ा
 पहरास लोहे के टुकड़े को ज़रा नामी बिहारी ने
 लगाया पचोक अपने बान में ज़ालिम शिकारी ने

चला फिर दौर सहबाए के कهن का خوب فرصت سے

پڑا تھا شاپ جب سے باخودا رشیوں کا یادو پر
 ہوا اُس روز سے پھر دوار کا اُتپات کا منظر
 لے حاملہ لے شدت، انا انسانی، شگون۔



تگھڑور شام نے دیکھا یہ معمولات میں جس دم
 یہ لکھی چھوڑ دو اس پر عقاب قہر نازل ہے
 پلو پر بھاس تیر تھ اب ہی اک جا ہے احسن
 پھر اس کے بعد سب یادوں کو لیکر شام بنواری
 پہنچ کر جلے محمودہ پر سب نے غسل فرمایا
 فراغت پا چکے جب لوگ کار خیر و برکت سے
 پیاجی بھر کے سب نے بادہ گلفام بھر بھر کے
 کرشمہ دقترا نگور نے یوں اپنا دکھ لایا
 ذرا سی دیر میں وہ خوش پیلے سے بن گئے باہم
 دگر اس کے وہی موئل کے تھکے بولب سا مل
 انہی سے وہ لگے اک دوسرے کی نلپنے گردن

یادوں کی ہلاکت

جڑی ہوتی رہی گل رنگ تیر تھ گاہ کی سپہم
 جڑی پر گھر رہا تھا، جا بجا خون بنی آدم

تگھڑور = بدلاؤ
 مامولات = رोज के काम
 काज
 ब चप्पे नम = रोती
 आंखों से
 डताव-ओ-कहर = ईश्वर
 का गुस्सा और फटकार
 नाजिल = गिर रहा

माहूदा = ते की हुई जगह

सहबा-ए-कोहन = पुरानी
 शराब
 बादा-ए-गुलफाम
 = शराब
 उम्मुल खबाएस = बुराईयों
 की माँ यानी शराब

बाहम = आपस में

आतिल = बेकार

تغیر شام نے دیکھا یہ معمولات میں جس دم
 یہ لکھی چھوڑ دو اس پر عقاب قہر نازل ہے
 پلو پر بھاس تیر تھ اب ہی اک جا ہے احسن
 پھر اس کے بعد سب یادوں کو لیکر شام بنواری
 پہنچ کر جلے محمودہ پر سب نے غسل فرمایا
 فراغت پا چکے جب لوگ کار خیر و برکت سے
 پیاجی بھر کے سب نے بادہ گلفام بھر بھر کے
 کرشمہ دقترا نگور نے یوں اپنا دکھ لایا
 ذرا سی دیر میں وہ خوش پیلے سے بن گئے باہم
 دگر اس کے وہی موئل کے تھکے بولب سا مل
 انہی سے وہ لگے اک دوسرے کی نلپنے گردن

یادوں کی ہلاکت

جڑی ہوتی رہی گل رنگ تیر تھ گاہ کی سپہم
 جڑی پر گھر رہا تھا، جا بجا خون بنی آدم

یہ منظر شام اور بلدیوچی نے دیکھا حسرت سے
تو ازراہِ مَلطَف پہنچے وہ یاد کو سمجھانے
مگر یہ سر پھرے نادان خود ہی پل پڑے ان پر
یہ صورتِ شام نے دیکھی تو چھوڑا انکو سمجھانا
وہی ایرا اٹھا کر اپنے بھی کر دیا دمھاوا
ہر ہنگامہ محشر اٹھا تھا اتنی شدت سے
یہاں تک رفتہ رفتہ یادواں سب ایک اک کر کے
پھر اس کے بعد ہی بلدیوچی باقلبِ رخسیدہ
بہت تکلیف پہنچی اس تماشائے ہلاکت سے
جو دنیا خرد سے ہو چکے تھے سارے بیگانے
انہی کو قتل کرنے کو بڑے وہ مشتعل ہو کر
لبالب ہو گیا تھا مبر کا ان کے بھی پیمانہ
پہنا، سویا ہوا برکان، نکلا آتشیں لاوا
جسے تشبیہ دے سکتے ہیں ہم روز قیامت سے
سیدھا رک سے پر لوک دستِ شام سے مر کے
دخولِ بحر ہو کر ہو گئے دنیا سے پوشیدہ

خندنگِ آہنی سے پائے بنواری ہوا زخمی

ادھر یاد و کشتادہ دار فانی سے ہو کر نصرت
شری بلدیوچی کے ڈوبنے کے بعد بنواری
چرن رکھا انھوں نے اپنے دائیں پیر پر بیاں
کہ اتنے میں پئے صید گئی ویرانِ نرجس میں
ادھر بلدیو، غرقِ بحر ہو کر، کر گئے رملت
لگا کر ٹیک پیل کے تنے سے میٹھے گڑھاری
خیال و سنکریں گم ہو گئے پھر خالقِ دُورِاں
کیس سے اک جہا، نامی شکاری آگیا بن میں

یہ منظر شام اور بلدیوچی نے دیکھا حسرت سے
تو ازراہِ مَلطَف پہنچے وہ یاد کو سمجھانے
مگر یہ سر پھرے نادان خود ہی پل پڑے ان پر
یہ صورتِ شام نے دیکھی تو چھوڑا انکو سمجھانا
وہی ایرا اٹھا کر اپنے بھی کر دیا دمھاوا
ہر ہنگامہ محشر اٹھا تھا اتنی شدت سے
یہاں تک رفتہ رفتہ یادواں سب ایک اک کر کے
پھر اس کے بعد ہی بلدیوچی باقلبِ رخسیدہ
بہت تکلیف پہنچی اس تماشائے ہلاکت سے
جو دنیا خرد سے ہو چکے تھے سارے بیگانے
انہی کو قتل کرنے کو بڑے وہ مشتعل ہو کر
لبالب ہو گیا تھا مبر کا ان کے بھی پیمانہ
پہنا، سویا ہوا برکان، نکلا آتشیں لاوا
جسے تشبیہ دے سکتے ہیں ہم روز قیامت سے
سیدھا رک سے پر لوک دستِ شام سے مر کے
دخولِ بحر ہو کر ہو گئے دنیا سے پوشیدہ

خود گے-آہنی سے پاؤ-بنواری ہوا زخمی

یہ منظر شام اور بلدیوچی نے دیکھا حسرت سے
تو ازراہِ مَلطَف پہنچے وہ یاد کو سمجھانے
مگر یہ سر پھرے نادان خود ہی پل پڑے ان پر
یہ صورتِ شام نے دیکھی تو چھوڑا انکو سمجھانا
وہی ایرا اٹھا کر اپنے بھی کر دیا دمھاوا
ہر ہنگامہ محشر اٹھا تھا اتنی شدت سے
یہاں تک رفتہ رفتہ یادواں سب ایک اک کر کے
پھر اس کے بعد ہی بلدیوچی باقلبِ رخسیدہ
بہت تکلیف پہنچی اس تماشائے ہلاکت سے
جو دنیا خرد سے ہو چکے تھے سارے بیگانے
انہی کو قتل کرنے کو بڑے وہ مشتعل ہو کر
لبالب ہو گیا تھا مبر کا ان کے بھی پیمانہ
پہنا، سویا ہوا برکان، نکلا آتشیں لاوا
جسے تشبیہ دے سکتے ہیں ہم روز قیامت سے
سیدھا رک سے پر لوک دستِ شام سے مر کے
دخولِ بحر ہو کر ہو گئے دنیا سے پوشیدہ

نماشا = تماشا
میں

نماشا = تماشا
میں

برکان = جواں موی

دستہ-شام = کھڑا
ہاں
با کلبہ رنجدی = دیکھ
دیل
دخول-بحر = سمندر
میں

پئے سید افرنگی = شکار
کھیلنے کے لیے

उसे कुछ फासले पर, इक सरे-आहू नज़र आया।
हरन बैठा हुआ सा, इक शजर की ओट में पाया।।
चरन को श्याम के समझा 'मिर्गमुख' उस शिकारीने।
चढ़ाई कौस चिल्ला खींचकर फौरन बिहारी ने।।
निशाना पाये बनवारी कालेकर तीर को छोड़ा।
खदंगे-आहनी ने, रुख निशाने से न फिरमोड़ा।।
निशाना लगते हि, पीपल के नीचे दौड़कर आया।
वहाँ लेकिन शिकारी को अजब नक़शा नज़र आया।।
पशेमाँ हो के फौरन, गिर पड़ा केशव के चरणों पर।
खताये बख़्शवाने लग गया वह अपनी रो रो कर।।
खताये बख़्शवर्दी सय्याद की, घनश्याम ने सारी।
हुआ लुत्फो-करम का, चष्माए-फैजे-रसाजारी।।
बहुकमे-श्याम फौरन इक विमान आकाश से आया।
कि जिस ने इस सितम इजाद को बैकुण्ठ पहुँचाया।।

श्री कृष्ण का सफ़र-ए-आखिरत

फिर उसके बाद बन में, सार्थी घनश्याम का आया।
निहायत जुस्तजू के बाद, उन को इक जगह पाया।।
कहा रथ बाण से घनश्याम ने, तू द्वारका जाकर।
पिता से मेरे कह देना जो मेरा हाल है अबतर।।
फिर अर्जुन से यह कहना छोड़ दे अब द्वारका नगरी।
कि उठने वाला है तूफ़ाँ महासागर से फौरनही।।
जो सारे शहर को इक आन में गरकाब कर देगा।
कज़ा की मय से सब की, ज़िन्दगी का ज़ाम भर देगा।।
जहाँ तक हो सके कहना कि फौरन सब निकल भागो।
हो जितनी जल्द मुमकिन हस्तना नगरी चले जाओ।।

सरे-आहू = हरन का
सर
शजर = झाड़, पेड़

सय्याद = शिकारी
लुत्फो-करम का
चष्माए-फैजे-रसा = दया
और एहसान का फायदा
पहुँचाने वाला झरना
सितम इजाद = नित नये
जुल्य करने वाला

जुस्तजू = खोज

गरकाब = पानी में
डुबना,
कज़ा की मय = मौत की
शराब

अस कچه فاصले پر اک سر آہو نظر آیا
چرن کو شیا م کے سمجھا مرگ نکھ اس شکاری
نشانہ پائے بنواری کالے کر تیر کو چھوڑا
نشانہ لگتے ہی پیپل کے نیچے دوڑ کر آیا
پیشاں ہو کے فوراً گر پڑا کیشو کے چرنوں پر
خطائیں بخشیں میا د کی گھنٹیاں نے ساری
ہو الطف و کرم کا چشمہ فیض رسا مباری
بھکم شیا م فوراً اک دمان آکاش سے آیا
کہ جس نے اس ستم ایجاد کو بسکندہ پہنچایا

شری کرشن کا سفر آخرت

پھر اسکے بعد بن میں سارثی گھنٹیاں کا آیا
کہا تھ بان سے گھنٹیاں نے تود وار کا جا کر
پھر رجن سے یہ کہنا چھوڑ دے اب دوار کا نگری
جو سا شہر کو اک آن میں غرقاب کر دیگا
جہاں تک ہو سکے کہنا کہ فوراً سب نکل بھاگو
ہو جتنی جلد ممکن ہستنا نگری سے جاؤ

یہ سنکر چوڑی تھہبان نے پھر دوار کا پوری
پہر اسکے بند کشتی موتی کے پاس دشن کو
دگر اسکے وہاں اپنا لئے سب دیوتا آئے
پہر اسکے بعد لوگ ابھیاں میں بیٹھے شری گھر
ای عالم میں مثل برق سوئے آسمان اک و
تحر کا عالم چھا گیا سب دیوتاؤں پر!!

چلے پاندو وہاں سے جھوڑ کر تاج اور سلطانی

دیار ہستنا میں آ کے، ارجن نے یوधिष्ठिर سے
تباہی یادواں کے نسل کی، کھ دی موفیکر سے
کولوب پاندواں اب بھر گیا تھا حکمرانی سے
یہی تھا اک سبب راجہ یوधिष्ठیر نے حکومت کو
پرکشت کو سبھدر کے کیا پھر زیر نگرانی
مارتے میں ان کو اک لگ آوارہ و مفر
بڑے وہ سوئے مشرق دھتر پنچال کو لے کر

اکیوت = شری
گوهر = موتی

رو = لہر

تھپور = اچھا، ہیرت

دیارے-ہستنا = ہستنا
شہر
موفیکر = اکلند
کولوب = دل کی جما

سبھ = پوتا

سگ = کولتا

سور-مشاریک = پورب کی
طرف
کےف = نشا

نیرل ہی چکی تھی دوار کا غرق ہونے کی
برجی پیدھا کے اور کیا پر نام موتی کو
عقیدت اور حجت کے گھر سب نذر فرمائے
تھیں نکھیں بند حجتی لبت تھیں شلوک کے منتر
زیر سے تافلک دیکھی گئی اور چل بے کشتی
پہی انکھوں سب دیکھا کے حیرت فضا نظر

چلے پاندو وہاں سے جھوڑ کر تاج اور سلطانی

تباہی یادواں کے نسل کی کہہ دی منکر سے
حقیقت میں بہت اکتا چکے تھے دار فانی سے
سپر و سبط ارجن کر دیا ساری ولایت کو
چلے پاندو وہاں سے جھوڑ کر تاج اور سلطانی
ہوا، ہمراہ پاندو وہ بھی ان کا ہم سفر بن کر
وہاں کی یاترے کیف ساطاری رہا دل پر

فیر اُسکے باءِ دکن اور دکن سے چلے مگر۔
 ہما تن وہ رہے، اُسا ایشیہ-اُکبا کے سب تالیب۔
 وہ جس دم دوار کا پہنچے اُسے دوبا ہوا پایا
 وہ جس دم دوار کا پہنچے اُسے دوبا ہوا پایا
 وہاں سے وہ چلے سنگ گراں کھ کر گلیجے پر
 ہما چل کا کیا رخ بادل آرزوہ و مفطر

پانڈواں کا انجام اور سفر-آ-آخیر

کیا فیر خلتا-آ-اُجے-ہیماچل پار پاڈو نے۔
 اُک آسانی سے تپ کی، منجیلے-دوہوار پاڈو نے۔
 میلا رستے میں اُنکو اُک خلتا راجاؤں کا۔
 بیل-آخیر کارواں منجیل پہ پہنچا بے سہاروں کا۔
 اُنہیں کچھ فاصلے پر میر و پرست اک نظر آیا
 کچا کا دھڑا جس جا، اُن کا پِغام-اُجلا لایا۔
 گیری بھینٹے-دوہوار، چلتے چلتے بے خیاالی میں۔
 نہ ٹھہری رُہ اُس کی، ناٹواں جیسے-سفاالی میں۔
 دیگر اُسکے فیر اُک کے باءِ اُک مارتے گئے پاڈو۔
 جگہ اُکبا میں اپنی، مُنتقل کرتے گئے پاڈو۔
 یوڈیشٹر ہی بچا تھا، سیرف اب دُنیا-فانی میں۔
 ہزاروں اُنکے لایا آئے جس کی جیندگانی میں۔
 اب آخر وقت آئی بچا تھا اس کا بھی بہر صورت
 شری دیوارج نے راجہ یوڈیشٹر سے یہ فرمایا

ہما تن = پوری طرح
 اُسا ایشیہ-اُکبا = پرلوق
 کا آگام، اُناں

دیلے-آجوردا-آ-مُنتقل
 = نیراں اور بے چین دِل

پِغام-اُجلا = مِٹ کا
 دُکھ

ہ = اُتھا
 ناٹواں جیسے-سفاالی =
 کمزور مِٹ کی کے بدن
 اُکبا = پرلوق
 مُنتقل = بدلنے
 دُنیا-فانی = مِٹنے
 والی دُنیا

پہر اُسکے بعد دکن اور دکن سے چلے مگر۔
 ہما تن وہ رہے اُسا ایشیہ-اُکبا کے سب تالیب
 وہ جس دم دوار کا پہنچے اُسے دوبا ہوا پایا
 وہ جس دم دوار کا پہنچے اُسے دوبا ہوا پایا
 وہاں سے وہ چلے سنگ گراں کھ کر گلیجے پر
 ہما چل کا کیا رخ بادل آرزوہ و مفطر

پانڈواں کا انجام اور سفر آخرت

کیا پھر خط ارض ہما چل پار پاڈو نے
 اُک آسانی سے طے کی منزل شوار پاڈو نے
 ملا رستے میں اُن کو اُک خط رگ زاروں کا
 بالآخر کارواں منزل پہ پہنچا بے سہاروں کا
 اُنہیں کچھ فاصلے پر میر و پرست اک نظر آیا
 قضا کا دُوت جس جا اُن کا پِغام اُجلا لایا
 گری بھینٹے دروید چلتے چلتے بے خیاالی میں
 نہ ٹھہری رُح اس کی ناٹواں جسم سفاالی میں
 دیگر اُسکے پھر اُک کے بعد اک مرتے گئے پاڈو
 جگہ اُکبا میں اپنی منتقل کرتے گئے پاڈو
 یوڈیشٹر ہی بچا تھا صرف اب دُنیا فانی میں
 ہزاروں انقلاب آئے تھے جس کی زندگانی میں
 اب آخر وقت آئی بچا تھا اس کا بھی بہر صورت
 شری دیوارج نے راجہ یوڈیشٹر سے یہ فرمایا

وہاں آکاش سے لایا ہوں سپر بلندیہ کر چلے
 نہ دل میں کیجئے سنبھہ خوف و خطر چلے
 کہا راجہ نے میں چلتا ہوں لیکن شرط ہے اتنی
 چلے گا ساتھ میرے ہمسفر بن کر یہ کتا۔ بھی
 مگر دیو رتن بولے سورگ میں یہ جا نہیں سکتا
 ہوا کے تھپہ اس کتے کو میں بیٹھا نہیں سکتا
 یہ باتیں سنکے کتا اپنے اصلی رُپ میں آیا
 تیر خیر چشم اندر کو نظارہ دکھلایا
 حقیقت یہ ہے وہ کتا نہیں تھا دھرم دیوتا
 یہ شہر کے پتا تھے منج دین جلا تھے
 غرض پھر دھرم نے اپنے جگر گوشہ سے فرمایا
 سگ آواہ بننے کا سبب بیٹے کو سمجھایا
 پرکٹ اس طرح لینا فقط مقصود تھا میرا
 مرے بیٹے مگر یہ امتحاں محدود تھا تیرا
 ہوا ہے کامراں جا، یا ترا بیکٹھ کی کر لے
 وہاں کی سیر کر اور دامن مقصود کو بھر لے

یہ سنتے ہی یہ شہر اس ہوائی تھپہ جا بیٹھا

وہاں اس کو زیریں سے یکے سونے آساں پہنچا

विमान आकाश से लाया हूँ इसपर बैठ कर चलिये।
 न दिल में किजिए सन्देह, बेखौफ-ओ-खतर चलिये॥

कहा राजा ने मैं चलता हूँ, लेकिन शर्त है इतनी।
 चलेगा साथ मेरे, हमसफ़र बनकर यह कुत्ता भी॥

मगर देवराज बोले स्वर्ग में, यह जा नहीं सकता।
 हवा के रथ पे इस कुत्ते को मैं, बैठा नहीं सकता॥

यह बातें सुनके कुत्ता, अपने असली रूप में आया।
 तहय्युर खैज़ चष्मे-इन्द्र को, नज़ारा दिखलाया॥

हकीकत यह है, वह कुत्ता नहीं था, धर्मदेवता थे।
 युधिष्ठिर के पिता थे, मम्बा-ए-दीने-मुजल्ला थे॥

गरज़ फिर धर्म ने अपने, ज़िगर गोशा से फरमाया।
 सगे-आवाराह बनने का सब्ब, बेटे को समझाया॥

परीक्षा इस तरहा लेना, फ़कत मकसूद था मेरा।
 मेरे बेटे मगर यह इमतेहाँ महदूद था तेरा॥

हुआ है कामराँ जा, यात्रा बैकुण्ठ की करले।
 वहाँ की सैर कर, और दामने-मकसूद को भरले॥

यह सुनते ही युधिष्ठिर उस हवाई रथ पे जा बैठा।
 विमान उसको ज़मी से लेके सूए आसमाँ पहुँचा॥

मम्बा-ए-दीने-मुजल्ला =
 साफ उसूलों की सोच
 ज़िगर गोशा = ज़िगर का
 टुकड़ा यानी पुत्र, बेटा

मकसूद = मकसद की जमा
 महदूद = एक हद तक

दामने-मकसूद = आरजू
 पूरी होना

شاہنامہ ہند

بشمول

قدیم ہندو عہد حکومت

حصہ دوم

اردو نظم میں وطن عزیز کی مکمل اور جامع تاریخ

فردوسی ہند

فروع نقاش

شاہنامہ-آ-ہند

ب-شامل

قدیم ہندو عہد حکومت

دوئمہہ ہاگ

اردو کویتا میں ہاروت کا سंपूर्ण इतिहास

फिरदौसी-आ-हंद

फरोग नक्काश

شاہنامہ ہند کے دوسرے حصہ کی فہرست

نمبر شمار	عنوانات	نمبر شمار	عنوانات
۱	جغرافیہ اور جائزہ ہند	۱۹	تحقیق نسل انسانی اور بحث و تبصرہ
۲	رض منصف	۲۰	ادوار عالم
۳	بھارت کی جغرافیائی حیثیت	۲۱	برہما اور افزائش نسل
۴	حقیقت کا انکشاف	۲۲	مضامین وید
۵	وجہ تسمیہ ہند	۲۳	مقدس تخلیق
۶	مختصر جائزہ	۲۴	ادوار اور اس کی حقیقت
۷	جواز بر اعظم	۲۵	جواز حقیقت
۸	اتحاد و اتفاق	۲۶	ہڑپا اور مہن جو دارو
۹	مسلمانوں کا دور	۲۷	تخصیص آثار قدیمہ
۱۰	انگریزوں کا دور	۲۸	سلسلہ ڈراوڑ
۱۱	بھارت کے قدرتی حصے	۲۹	جواز نسل انسانی
۱۲	پہلا حصہ	۳۰	نسل سام
۱۳	محافظہ ہند	۳۱	نسل یافت
۱۴	تسخیر بمالیہ	۳۲	نسل جام
۱۵	دوسرا حصہ	۳۳	نسل ہند
۱۶	راجستھانی علاقہ	۳۴	نسل بنگ و پورب
۱۷	تیسرا حصہ	۳۵	در اور کا دو ہزار سالہ دور
۱۸	مشرقی گھاٹ اور مغربی گھاٹ		در اور کا ارتقائی دور
	سمندر		

شاہنامہ-ہند کے دوسرے भाग की फہرست

انوی. ک.	ویषی	انوی. ک.	ویषی
	جوغرافیایا اور جاااا-ہند		تہکیکے-نستے-انسانی اور بہس-او-تبسیرا
۱.	ااے-مومنیف	۱۹.	ادوارے-آلام
۲.	بھارت کی جوغرافیایا اےسیات	۲۰.	براہما اور اافااا-نست
۳.	ہکیکت کا انکشاف	۲۱.	مجامینی-وید
۴.	بجہ تسمیہ-ہند	۲۲.	مقدس تخلیق
۵.	مختصر جااا	۲۳.	ادوار اور اامکی ہکیکت
۶.	جوااے-برے اااا	۲۴.	جوااے-ہکیکت
۷.	ااااا-ااااا	۲۵.	اااا اور موہنجااا
۸.	موملماااں کا ااا	۲۶.	تفہ ااا-اااا-اااا
۹.	اااااں کا ااا	۲۷.	میلمیل-ا-اااا
۱۰.	بھارت کے کدرااا اااا	۲۸.	جوااے-نستے-انسانی
۱۱.	پہلا ااا	۲۹.	نستے-سام
۱۲.	محااا ہند	۳۰.	نستے-اااا
۱۳.	ااااا اااا	۳۱.	نستے-اام
۱۴.	ااااا	۳۲.	نستے-ہند
۱۵.	ااااا	۳۳.	نستے-بگا-ااا
۱۶.	ااااا	۳۴.	اااا کا اا ہااااااا ااا
۱۷.	ااااا ااا اور ااااا ااا	۳۵.	اااا کا ااااااا ااا
۱۸.	اممندر		

نمبر شمار	عنوانات	نمبر شمار	عنوانات
۵۴	گوتم بدھ	۳۷	نسل ہرمز اور آریہ
۵۵	گوتم بدھ کی تربیت اور شادی	۳۸	بنام آریہ نسل ہرمز کی آمد
۵۶	انجام بشر اور ملکی کاراستہ	۳۹	آریوں کا دروازہ قوم سے نکلنا
۵۷	گوتم بدھ کی صحرانوردی اور سعی لاحاصل	۴۰	پنجاب پر آریوں کا تسلط
۵۸	نجات کی منزل	۴۱	آریوں کا ہند میں پھیلاؤ
۵۹	بدھ دھرم کا پیر چار	۴۲	ہرمز کے بیٹوں آریوں کا تمدن
۶۰	بدھ دھرم کے آٹھ اصول	۴۳	آریوں کا ہند حکومت
۶۱	زبان عام میں دعوت تبلیغ	۴۴	فوجی نظم و نسق
۶۲	تبلیغ و دعوت میں مقتدر راجاؤں کا حصہ	۴۵	اقتصادی حالت
۶۳	نوشتہ گوتم بدھ	۴۶	غذا اور لباس
۶۴	بدھ مذہب کے زوال کا سبب	۴۷	عورت کا مرتبہ
۶۵	عصر گوتم میں جمہوریت کا چلن	۴۸	قدیم ہندوستان کا جائزہ
۶۶	تمدنی اور اقتصادی حالت	۴۹	جین اور بدھ دھرم کا سلسلہ
۶۷	ملکہ کے راجہ بمبار کا ناخلف بیٹا اجات شترو	۵۰	چھ سو قبل مسیح سے چھ سو بعد مسیح تک
۶۸	شیش ناگ خاندان کا عروج و زوال	۵۱	سیاسی دور کی ابتداء اور چار حکومتیں
۶۹	یونان و فارس کے بھارت پر حملے	۵۲	برہمن ازم کے خلاف نئے ادیان کے اچھے اصول
۷۰	دارامسنڈ ایران پر	۵۳	بدھ اور جین مذہب کا عروج و ارتقاء
۷۱	سپہ سالار سائی نکس کا ہندوستان پر حملہ	۵۴	جین مذہب کا سہہ رتن
۷۲	ہندو فارس کے تعلقات	۵۵	مہابیر سوامی "برہدھما"
	سکندر اعظم اور یورس	۵۶	برہدھما کی تعلیم
۷۳	سکندر اعظم (الکرنڈز)	۵۷	جین مذہب کے دو فرقے
۷۴	فتوحات سکندر		

ان. ک.	موضوع	ان. ک.	موضوع
	نستے-ہرمز اور آریا	۶۸	گوتام بھو
۳۶	بنامہ-آریہ نستے-ہرمز کی آمد	۶۹	گوتام بھو کی تربیت اور شادی
۳۷	آریوں کا دراوڑ قوم سے ٹکراؤ	۷۰	انجامہ-بشر اور مکتی کا راستہ
۳۸	پنجاب پر آریوں کا تسلط	۷۱	گوتام بھو کی سہرا نوردی اور
۳۹	آریوں کا ہند میں پھیلاؤ	۷۲	سڈے-لاہاسیل
۴۰	ہرمز کے بیٹوں آریوں کا تمدن	۷۳	نجات کی منزل
۴۱	آریوں کا ہند حکومت	۷۴	بھو دھرم کا پرچار
۴۲	فوجی نظم و نسق	۷۵	بھو دھرم کے آٹھ اصول
۴۳	اقتصادی حالت	۷۶	جوانے-آدم میں دوات-تبدلی
۴۴	غذا اور لباس	۷۷	تبدلی-دوات میں مکتدیر راجاؤں
۴۵	عورت کا مرتبہ	۷۸	کا ہسسا
۴۶	قدیم ہندوستان کا جائزہ	۷۹	نویشتہ-گوتام بھو
۴۷	جین اور بدھ دھرم کا سلسلہ	۸۰	بھو مکتدیر کے جوان کا سبب
۴۸	چھ سو قبل مسیح سے چھ سو بعد مسیح تک	۸۱	اسے-گوتام میں جمہوریت کا چلن
۴۹	سیاسی دور کی ابتداء اور چار حکومتیں	۸۲	تمددونی اور ہکتےسادی حالت
۵۰	برہمن ازم کے خلاف نئے ادیان کے اچھے اصول	۸۳	مگدھ کے راجا بھوبسار کا ناخلف
۵۱	بدھ اور جین مذہب کا عروج و ارتقاء	۸۴	بھو اجات شترو
۵۲	جین مذہب کا سہہ رتن	۸۵	شوپناگ خاندان کا اورو-جوان
۵۳	مہابیر سوامی "برہدھما"	۸۶	یوناؤ-فارس کے ہارت پر ہمتے
۵۴	برہدھما کی تعلیم	۸۷	دارا مسند-ایران پر
۵۵	جین مذہب کے دو فرقے	۸۸	سپہ سالار سائی-لکھ کا
		۸۹	ہندوستان پر ہمتا
		۹۰	ہند-او-فارس کے تالوکات
		۹۱	سکندرے-آجام اور پورس
		۹۲	سکندرے-آجام (الکرنڈز)
		۹۳	فوتہاتے-سکندر



نمبر شمار	عنوانات	نمبر شمار	عنوانات
۱۱۷	فن تعمیرات	۱۳۷	لوٹانی اور ستھین قوم کے حملے
۱۱۸	معاشی اور اقتصادی حالت	۱۳۸	ستھین اور یونانیوں کی شورشیں
۱۱۹	اشوک کا مرتبہ	۱۳۹	ریاست بافتریا میں ڈمزیر کا عروج
۱۲۰	موریائی خاندان کا آئین جہان بینی	۱۴۰	ڈمزیر کا جانشین مندر
۱۲۱	خاندان موریہ کا زوال	۱۴۱	مندر کا عروج و زوال
۱۲۲	نشانِ قبر ہے اسکا، نہ کوئی لوحہ جوں ان پر	۱۴۲	خاندان یوچی کی ایک شاخ بنام کشان یا کشن
۱۲۳	خاندان موریہ کے زوال کا سبب اور خاتمہ	۱۴۳	کونی سس اول کا عروج و زوال
۱۲۴	شات واہن کے مگدھ پر حملے	۱۴۴	کشک کی تاجپوشی
۱۲۵	پیشہ متر مگدھ کے تخت پر	۱۴۵	کشک کا دور حکومت اور فتوحات
۱۲۶	پیشہ متر کا اٹومیدہ یگیہ	۱۴۶	کشک کا دھرم
۱۲۷	خاندان شنگ کا خاتمہ	۱۴۷	کشک کی وفات
۱۲۸	کالو خاندان	۱۴۸	کشک کا جانشین
۱۲۹	کالو خاندان کا خاتمہ اور شات واہن نسل کا عروج	۱۴۹	کشک کا جانشین
۱۳۰	عہد شنگ اور کالو میں ہندو دھرم کا عروج	۱۵۰	ہندوستان کی تاریخ کا تاریک دور
۱۳۱	عہد شنگ و کالو اور شات واہن میں فنِ نقاشی	۱۵۱	گپت خاندان کی حکومت
۱۳۲	دکن میں آندھ یعنی شات واہن خاندان کی حکومتیں	۱۵۲	چندر گپت اول
۱۳۳	شات واہن ملک کے انقلابات	۱۵۳	چندر گپت اول کی فتوحات اور سفرِ ہجرت
۱۳۴	شات سے شات واہن نسل کا خاتمہ	۱۵۴	سمدر گپت
۱۳۵	خاندان شاک کے حملے	۱۵۵	سمدر گپت کی فتوحات
۱۳۶	شاک اور کشان خاندانوں کی چپقلش	۱۵۶	سمدر گپت کا لائق بیٹا سمدر گپت
۱۳۷	۲۲۵ قبل مسیح سے ۲۲۵ بعد مسیح تک تاریخِ خوارِ خلاصہ	۱۵۷	سمدر گپت کا جاہ و جلال

ان. ک.	موضوع	ان. ک.	موضوع
۱۲۷	فنے-تاسیغات	۱۳۷	یونانی اور سٹھین قوم کے حملے
۱۲۸	مآذی اور ذکے سادی حالت	۱۳۸	سٹھین اور یونانیوں کی شورشیں
۱۲۹	اشوک کا مرتبہ	۱۳۹	ریاست بافتریا میں ڈمزیر کا عروج
۱۳۰	موریائی خاندان کا آئینہ-جہان بینی	۱۴۰	ڈمزیر کا جانشین مندر
۱۳۱	خاندان موریہ کا زوال	۱۴۱	مندر کا عروج و زوال
۱۳۲	نشانِ قبر ہے انکا، نہ کوئی لوحہ جوں ان پر	۱۴۲	خاندان یوچی کی ایک شاخ بنام کشان یا کشن
۱۳۳	خاندان موریہ کے زوال کا سبب اور خاتمہ	۱۴۳	کونی سس اول کا عروج و زوال
۱۳۴	شات واہن کے مگدھ پر حملے	۱۴۴	کشک کی تاجپوشی
۱۳۵	پیشہ متر مگدھ کے تخت پر	۱۴۵	کشک کا دور حکومت اور فتوحات
۱۳۶	پیشہ متر کا اٹومیدہ یگیہ	۱۴۶	کشک کا دھرم
۱۳۷	خاندان شنگ کا خاتمہ	۱۴۷	کشک کی وفات
۱۳۸	کالو خاندان	۱۴۸	کشک کا جانشین
۱۳۹	کالو خاندان کا خاتمہ اور شات واہن نسل کا عروج	۱۴۹	کشک کا جانشین
۱۴۰	عہد شنگ اور کالو میں ہندو دھرم کا عروج	۱۵۰	ہندوستان کی تاریخ کا تاریک دور
۱۴۱	عہد شنگ و کالو اور شات واہن میں فنِ نقاشی	۱۵۱	گپت خاندان کی حکومت
۱۴۲	دکن میں آندھ یعنی شات واہن خاندان کی حکومتیں	۱۵۲	چندر گپت اول
۱۴۳	شات واہن ملک کے انقلابات	۱۵۳	چندر گپت اول کی فتوحات اور سفرِ ہجرت
۱۴۴	شات سے شات واہن نسل کا خاتمہ	۱۵۴	سمدر گپت
۱۴۵	خاندان شاک کے حملے	۱۵۵	سمدر گپت کی فتوحات
۱۴۶	شاک اور کشان خاندانوں کی چپقلش	۱۵۶	سمدر گپت کا لائق بیٹا سمدر گپت
۱۴۷	۲۲۵ قبل مسیح سے ۲۲۵ بعد مسیح تک تاریخِ خوارِ خلاصہ	۱۵۷	سمدر گپت کا جاہ و جلال

نمبر شمار	عنوانات	نمبر شمار	عنوانات
۱۵۷	سمندر گیت کا اشومیدھ گیت	۱۵۷	ہولوں کی جدوجہد
۱۵۸	سمندر گیت کی سیرت اور علم پروری	۱۵۸	شمال و مغرب میں ہولوں کی فتوحات
۱۵۹	سمندر گیت کا دھرم	۱۵۹	اسکندر گیت کی رحلت
۱۶۰	چندر گیت ثانی و کرما دتتہ	۱۶۰	پرگیت گیت ۸۰ عیسوی سے ۸۵ عیسوی تک
۱۶۱	۳۷ عیسوی سے ۱۳ عیسوی تک	۱۶۱	نرسنگھ گیت بالا دتتہ
۱۶۲	سمندر کی تجارت سے مالی استقامت	۱۶۲	۸۵ عیسوی سے ۵۳ عیسوی تک
۱۶۳	چندر گیت ثانی و کرما دتتہ یا بکرماجیت	۱۶۳	ہونی سردار توراسن کا خاتمہ
۱۶۴	چندر گیت ثانی و کرما دتتہ کے کردار و اطوار	۱۶۴	مہر گل کی تخت نشینی اور ظلم و بربریت
۱۶۵	چندر گیت و کرما دتتہ کا دھرم	۱۶۵	نرسنگھ بالادیتہ کے زیرِ کرمان ہندوستانی
	چینی سیاح		راجاؤں کا اجتماع
۱۶۵	چینی سیاح فامیان ۵۰۵ عیسوی سے ۱۱۱ عیسوی تک	۱۶۵	نرسنگھ گیت بالادیتہ کے اتحادیوں کا مہر گل سے مقابلہ
۱۶۶	فامیان کی سیاحت	۱۶۶	مہر گل کا زوال اور خاتمہ
۱۶۷	فامیان کا سفر نامہ	۱۶۷	بدست ایران و ترکی وسط ایشیاء ہولوں کا خاتمہ
۱۶۸	فامیان کا بیان	۱۶۸	گیت خاندان کا خاتمہ نرسنگھ گیت بالادیتہ
۱۶۹	بودھ دھرم پر فامیان کا تبصرہ	۱۶۹	۸۵ سے ۵۳ عیسوی
	گیت حکومت کا خاتمہ اور ہونے کے محلے		میںڈر سے مہر گل تک تاریخ اور خلاصہ
۱۷۰	گیت ۱۳ عیسوی سے ۵۵ عیسوی تک	۱۷۰	تین رجواڑے
۱۷۱	اسکندر گیت ۵۵ عیسوی سے ۸۰ عیسوی تک	۱۷۱	شمالی ہند میں حکومت تھانی شہور کا عروج
۱۷۲	گیت دور میں ویدی دھرم کا عروج	۱۷۲	۵۸۰ عیسوی سے ۶۲۸ عیسوی تک
۱۷۳	گیت دور کے علماء و فضلاء	۱۷۳	راجہ پر بھاکر تخت تھانی شہور تیر
۱۷۴	سفید ہولوں کا وطن اور ان کی سیرت	۱۷۴	مورخ بان کا ہرشن چرتر اور ہرشن درہن کی
			پیدائش ۵۹۰ عیسوی

اندر ک	ویب	اندر ک	ویب
۱۶۵	سمندر گیت کا اظہار و یج	۱۶۵	ہولوں کی جدوجہد
۱۶۶	سمندر گیت کی سیرت اور علم پروری	۱۶۶	شمال و مغرب میں ہولوں کی فتوحات
۱۶۷	سمندر گیت کا دھرم	۱۶۷	اسکندر گیت کی رحلت
۱۶۸	چندر گیت ثانی و کرما دتتہ	۱۶۸	پرگیت گیت ۸۰ عیسوی سے ۸۵ عیسوی تک
۱۶۹	۳۷ عیسوی سے ۱۳ عیسوی تک	۱۶۹	نرسنگھ گیت بالا دتتہ
۱۷۰	سمندر کی تجارت سے مالی استقامت	۱۷۰	۸۵ عیسوی سے ۵۳ عیسوی تک
۱۷۱	چندر گیت ثانی و کرما دتتہ یا بکرماجیت	۱۷۱	ہونی سردار توراسن کا خاتمہ
۱۷۲	چندر گیت ثانی و کرما دتتہ کے کردار و اطوار	۱۷۲	مہر گل کی تخت نشینی اور ظلم و بربریت
۱۷۳	چندر گیت و کرما دتتہ کا دھرم	۱۷۳	نرسنگھ بالادیتہ کے زیرِ کرمان ہندوستانی
۱۷۴	چینی سیاح	۱۷۴	راجاؤں کا اجتماع
۱۷۵	چینی سیاح فامیان ۵۰۵ عیسوی سے ۱۱۱ عیسوی تک	۱۷۵	نرسنگھ گیت بالادیتہ کے اتحادیوں کا مہر گل سے مقابلہ
۱۷۶	فامیان کی سیاحت	۱۷۶	مہر گل کا زوال اور خاتمہ
۱۷۷	فامیان کا سفر نامہ	۱۷۷	بدست ایران و ترکی وسط ایشیاء ہولوں کا خاتمہ
۱۷۸	فامیان کا بیان	۱۷۸	گیت خاندان کا خاتمہ نرسنگھ گیت بالادیتہ
۱۷۹	بودھ دھرم پر فامیان کا تبصرہ	۱۷۹	۸۵ سے ۵۳ عیسوی
۱۸۰	گیت حکومت کا خاتمہ اور ہونے کے محلے	۱۸۰	میںڈر سے مہر گل تک تاریخ اور خلاصہ
۱۸۱	گیت ۱۳ عیسوی سے ۵۵ عیسوی تک	۱۸۱	تین رجواڑے
۱۸۲	اسکندر گیت ۵۵ عیسوی سے ۸۰ عیسوی تک	۱۸۲	شمالی ہند میں حکومت تھانی شہور کا عروج
۱۸۳	گیت دور میں ویدی دھرم کا عروج	۱۸۳	۵۸۰ عیسوی سے ۶۲۸ عیسوی تک
۱۸۴	گیت دور کے علماء و فضلاء	۱۸۴	راجہ پر بھاکر تخت تھانی شہور تیر
۱۸۵	سفید ہولوں کا وطن اور ان کی سیرت	۱۸۵	مورخ بان کا ہرشن چرتر اور ہرشن درہن کی
			پیدائش ۵۹۰ عیسوی

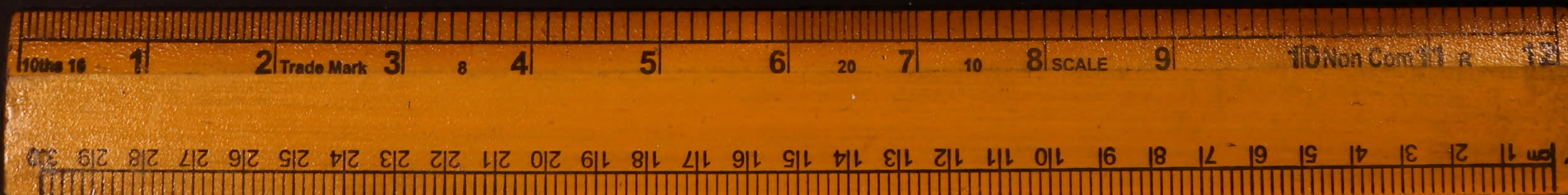
صفحہ نمبر	عنوانات	نمبر شمار	عنوانات
۱۹۱	ہونی قبیلوں کی بغاوت	۲۰۹	شیلا دتھ کے مذہبی رجحان میں تبدیلی
۱۹۲	ہرش وردھن کی ملک اور راجہ برہماکر کی وفات	۲۱۰	شیلا دتھ کا عصب اور کشادہ دلی
۱۹۳	راج وردھن کی تخت نشینی، گرہ و من کا قتل اور راجیشری کا اغوا	۲۱۱	ہرش وردھن کی وفات اور اس کا زمانہ
۱۹۴	راج وردھن کی وفات	۲۱۲	ہرش وردھن کا علم و ادب سے لگاؤ
۱۹۵	ہرش وردھن یا شیلا دتھ دوم	۲۱۳	سیاہ ہیوان سانگ
۱۹۶	ہرش وردھن قنوج میں	۲۱۴	ہیوان سانگ کا سفر ہند
۱۹۷	ہرش وردھن کی تخت نشینی	۲۱۵	ہیوان سانگ کی دربار وردھن میں رسائی
۱۹۸	ہرش وردھن کی فوجی تیاریاں اور مالوہ کی سمیت پیش قدمی	۲۱۶	ہیوان سانگ کا سفر نامہ
۱۹۹	دوران سفر میں سفیران آسام کی ملاقات	۲۱۷	ہیوان کا جائزہ
۲۰۰	گرہ و من کے قاتل مادھو گپت کی پریشانی	۲۱۸	ہرش وردھن کا نظم سلطنت ہیوان کی نظریں
۲۰۱	مادھو گپت ہرش وردھن کے قدوں پر	۲۱۹	سستی کی رسم
۲۰۲	راجیشری کی واپسی	۲۲۰	تھانی شور کے عروج سے ہرش وردھن تک
۲۰۳	راجیشری کی تخت نشینی اور ہرش کی فوجی تیاریاں	۲۲۱	شیلا دتھ ہرش وردھن کے بعد ارجن تحت شہنشاہی
۲۰۴	ہرش وردھن کی بنگال پر یورش	۲۲۲	راجہ ارجن اور قنوجی حکومت کا زوال
۲۰۵	ہرش وردھن کی فتوحات	۲۲۳	قنوج میں لیشو و من کا عروج
۲۰۶	ہرش کے آٹھ سال امن و امان کے	۲۲۴	لیشو و من کا زوال
۲۰۷	۶۱۲ عیسوی سے ۶۲۰ عیسوی تک	۲۲۵	کشمیر کے لہا دتھ کا عروج
۲۰۸	مہاراشٹر کے پللیشی سے ہرش وردھن کا مقابلہ	۲۲۶	لہا دتھ کی پہلی فتح
۲۰۹	ہرش وردھن کی سیرت	۲۲۷	لہا دتھ کی فتوحات اور وفات
۲۱۰	ہرش وردھن کا طرز حکومت	۲۲۸	لہا دتھ کے بعد بھارت کے تمام علاقے آزاد و مختار

انوی. ک.	موضوع	انوی. ک.	موضوع
۱۹۹	ہونی قبیلوں کی بغاوت	۲۰۹	شیلا دتھ کے مذہبی رجحان میں تبدیلی
۱۹۹	"ہرپورڈن" کی کومک اور راجا پرباکر کی وفات ۶۵۶ء	۲۱۰	شیلا دتھ کا تاسمبھ اور کونادا دیلی
۱۹۹	"راجورڈن" کی ترکت نانی "گرہومین" کا قتل اور "راجیشری" کا اغوا	۲۱۱	ہرپورڈن کی وفات اور اسکا زمانہ
۱۹۹	راج ورڈن کی وفات	۲۱۲	ہرپورڈن کا ڈلمو-اڈھ سے لگاؤ
۱۹۹	ہرپورڈن یا شیلا دتھ دویم	۲۱۳	ہیوان سانگ کا سفر نامہ-ہند
۱۹۹	ہرپورڈن کونوج میں	۲۱۴	ہیوان سانگ کی دربار-ورڈن میں رسائی
۱۹۹	ہرپورڈن کی ترکت نانی	۲۱۵	ہیوان سانگ کا سفر نامہ
۱۹۹	ہرپورڈن کی فوجی تیاریاں اور مالوہ کی سمیت پیش قدمی	۲۱۶	ہیوان کا جائزہ
۱۹۹	دوران سفر میں سفیران آسام کی ملاقات	۲۱۷	ہرش ورڈن کا نظم سلطنت ہیوان کی نظریں
۱۹۹	گرہ و من کے قاتل مادھو گپت کی پریشانی	۲۱۸	سستی کی رسم
۱۹۹	مادھو گپت ہرش ورڈن کے قدوں پر	۲۱۹	تھانی شور کے عروج سے ہرش ورڈن تک
۱۹۹	راجیشری کی واپسی	۲۲۰	شیلا دتھ ہرش ورڈن کے بعد ارجن تحت شہنشاہی
۱۹۹	راجیشری کی ترکت نانی اور ہرپورڈن کی فوجی تیاریاں	۲۲۱	راجہ ارجن اور قنوجی حکومت کا زوال
۱۹۹	ہرپورڈن کی بنگال پر یورش	۲۲۲	قنوج میں لیشو و من کا عروج
۱۹۹	ہرپورڈن کی فتوحات	۲۲۳	لیشو و من کا زوال
۱۹۹	ہرش کے آٹھ سال امن و امان کے	۲۲۴	کشمیر کے لہا دتھ کا عروج
۱۹۹	۶۱۲ عیسوی سے ۶۲۰ عیسوی تک	۲۲۵	لہا دتھ کی پہلی فتح
۱۹۹	مہاراشٹر کے پللیشی سے ہرش ورڈن کا مقابلہ	۲۲۶	لہا دتھ کی فتوحات اور وفات
۱۹۹	ہرش ورڈن کی سیرت	۲۲۷	لہا دتھ کے بعد بھارت کے تمام علاقے آزاد و مختار
۱۹۹	ہرش ورڈن کا طرز حکومت	۲۲۸	

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر	عنوانات
۲۳۹	میواڑ کا خاندان گہلوت	۲۵۰	خاندان کانٹے کا زوال ملک کافر کے ہاتھوں
۲۴۰	راجپوتی حکومتوں کا ارتقائی زمانہ	۲۵۱	پہلو یا پلو خاندان کا جائزہ
۲۴۱	ترقین پیدا گہلوتیوں کا سردار	۲۵۲	پلو خاندان کے حکمران
۲۴۲	تومر، چوہان اور راجپوتوں کی حکومتیں	۲۵۳	چول پیر اور ماندیہ خاندان کا جائزہ
۲۴۳	بندیل گھنڈ کے خاندان	۲۵۴	خاندان چول کی حکومتیں
۲۴۴	راجہ پرماں کے جانناز سپہ سالار ملکھان اور داول	۲۵۵	چول خاندان کا عروج
۲۴۵	نسلی پرماں اور راجہ بھوج	۲۵۶	چول خاندان کا خاتمہ
۲۴۶	راجہ بھوج علم و ادب کا شائق	۲۵۷	مانڈیہ نسل کی حکومتیں
۲۴۷	راجہ بھوج کا بھوپال تال	۲۵۸	مانڈیہ حکومت کا زوال
۲۴۸	جنوبی ہند میں راجپوتی اور ہندو ریاستیں	۲۵۹	کیرل میں میر خاندان
۲۴۹	ساتویں صدی سے بارہویں صدی تک	۲۶۰	میر خاندان کا خاتمہ
۲۵۰	خاندان چالوکیہ یا پنجویں صدی سے بارہویں صدی تک		
۲۵۱	پلیکشی کے بھائی دشنور و رھن کی بغاوت		
۲۵۲	اوروپا پر تہذیب کا قیام		
۲۵۳	پلیکشی سے غیر ملکوں کے تعلقات		
۲۵۴	مہاراشٹر کے راجپوتی راشٹرکوتوں کا عروج		
۲۵۵	راشرکوتوں کا زوال		
۲۵۶	جنوبی ہند کے یادو اور ہوشیل خاندان		
۲۵۷	یادو نسل کا راجہ سنگھن		
۲۵۸	راجہ سنگھن کی کامیابی		
۲۵۹	ہوشیل خاندان کا راجہ شل		
۲۶۰	خاندان گنگا اڑیسہ میں		
۲۶۱	خاندان کانٹے کا عروج		

ان. ک.	موضوع	ان. ک.	موضوع
۲۲۹.	مہاراجہ کا "خاندان-گہلوت"	۲۵۰.	خاندان-کانٹے کا جوال
۲۳۰.	راجپوتی حکومتوں کا ارتقاء کا زمانہ		'ملک کافر' کے ہاتھوں
۲۳۱.	"رتن بھوپا" گہلوتیوں کا سردار	۲۵۱.	پہلو یا پیلو خاندان کا جائزہ
۲۳۲.	تومر، چوہان اور راجپوتوں کی حکومتیں	۲۵۲.	پیلو خاندان کے حکمران
۲۳۳.	بندیل گھنڈ کے خاندان	۲۵۳.	چول، چیرا اور پانڈیا خاندان کا جائزہ
۲۳۴.	راجہ پرماں کے جانناز سپہ سالار ملکھان اور داول	۲۵۴.	خاندان-چول کی حکومتیں
۲۳۵.	نسلی پرماں اور راجہ بھوج	۲۵۵.	چول خاندان کا عروج
۲۳۶.	راجہ بھوج علم و ادب کا شائق	۲۵۶.	چول خاندان کا خاتمہ
۲۳۷.	راجہ بھوج کا بھوپال تال	۲۵۷.	پانڈیا نسل کی حکومتیں
۲۳۸.	جنوبی ہند میں راجپوتی اور ہندو ریاستیں	۲۵۸.	پانڈیا حکومت کا جوال
۲۳۹.	ساتویں صدی سے بارہویں صدی تک	۲۵۹.	کیرل میں چیرا خاندان
۲۴۰.	خاندان چالوکیہ یا پنجویں صدی سے بارہویں صدی تک	۲۶۰.	چیرا خاندان کا خاتمہ
۲۴۱.	پلیکشی کے بھائی دشنور و رھن کی بغاوت		
۲۴۲.	اوروپا پر تہذیب کا قیام		
۲۴۳.	پلیکشی سے غیر ملکوں کے تعلقات		
۲۴۴.	مہاراشٹر کے راجپوتی راشٹرکوتوں کا عروج		
۲۴۵.	راشرکوتوں کا زوال		
۲۴۶.	جنوبی ہند کے یادو اور ہوشیل خاندان		
۲۴۷.	یادو نسل کا راجہ سنگھن		
۲۴۸.	راجہ سنگھن کی کامیابی		
۲۴۹.	ہوشیل خاندان کا راجہ شل		
۲۵۰.	خاندان گنگا اڑیسہ میں		
۲۵۱.	خاندان کانٹے کا عروج		

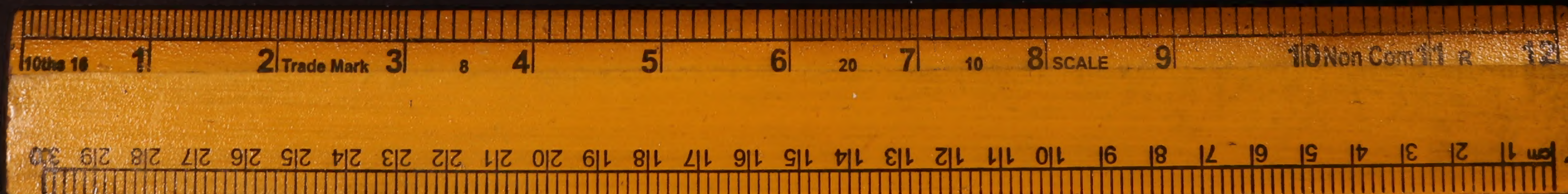
**
*



शाहनामा-ए-हिन्द के आठ भाग

यह दुनिया में पहली और सबसे लम्बी उर्दू कविता है, जो हिन्दुस्तान के इतिहास पर लिखी गई है। जिस में अशआर की संख्या बीस हजार है।

- ◆ इस का पहला भाग "शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल उर्दू महाभारत" है, जो आप के हात में है।
- ◆ दूसरा भाग "शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल हिन्दू अहदे-हुकूमत" है। जो जैन और बौद्ध धर्म से शुरू होकर शात वाहन खानदान के साथ हर्षवर्धन पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का तीसरा भाग "मुसलिम अहदे-हुकूमत" मोहम्मद इब्ने-कासिम से शुरू होकर महमूद गज़नवी पर खत्म होता है।
- ◆ चौथा भाग "शाहनामा-ए-हिन्द गौरी-ओ-गुलाम खानदान" जो अफगानिस्तान की तारीख से शुरू होकर शहाबउद्दीन गौरी और गुलाम खानदान के आखरी बादशाह गयासउद्दीन बिलबन पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का पाचवाँ भाग "शाहनामा-ए-हिन्द खिलजी खानदान" अलाउद्दीन खिलजी से शुरू होकर बाबर की आमद और शेर शाह सूरी पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का छठवाँ भाग दकन के खानदाने-बहमनी से शुरू होकर खानदेश, गुजरात, कश्मीर, मालवा, जवनपूर की शरकी हुकूमत और बंगाल की हुकूमतों पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का सातवाँ भाग मुगलीया हुकूमत के दूसरे दौर अकबर से शुरू होकर शाहजहाँ पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का आठवाँ भाग औरंगजेब से शुरू होकर बहादुरशाह ज़फ़र पर खत्म होता है।

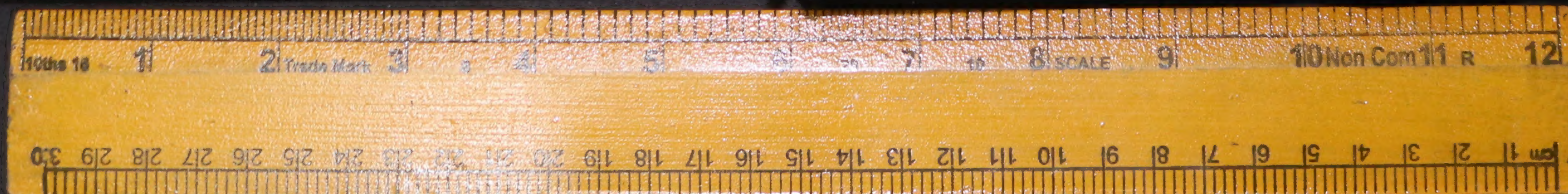


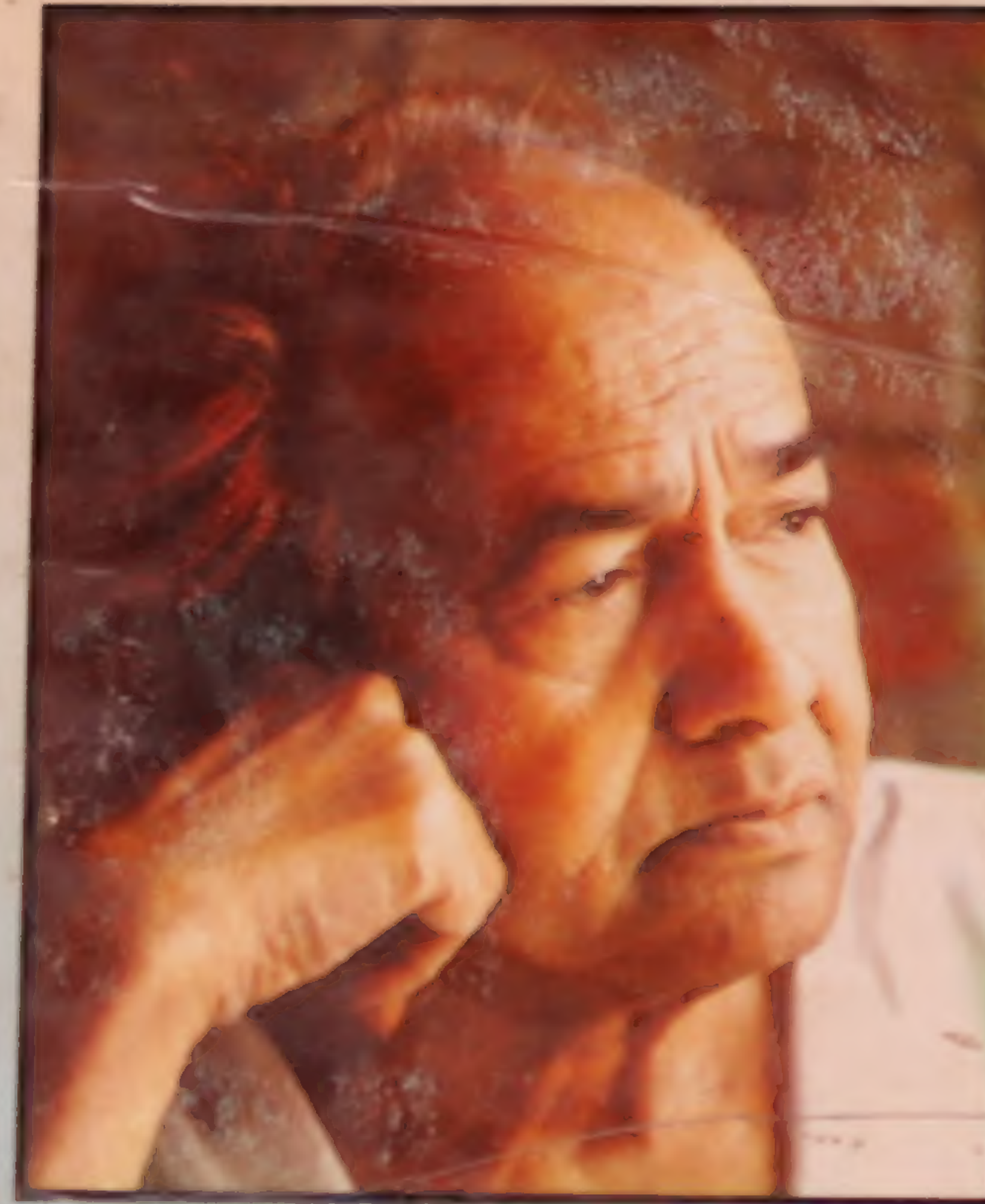
58/283417

तीसरा भाग

शाहनामा-ए-हिन्द का तीसरा भाग शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल मुसलिम अहदे-हुकूमत, मोहम्मद इब्न कासिम के हमले से शुरू होता है। मोहम्मद इब्न कासिम का पसमज़ूर बयान करने के लिए अरबस्तान की मुसलिम अहद की तारीख का तफ़सीली खाका पेश किया गया है। जिसमें हुज़ूर सरवरे-कायनात सललल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत से विसाल तक के वाक्यात और खुलफ़ा-ए-राशेदीन से लेकर उमवी खलीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान तक के तमाम हालात व वाक्यात को कहीं इख़्तिसार और कहीं तफ़सील के साथ नज़्म किया गया है। इसके अलावा राजा दाहीर, अलप्तगीन, सुबक्तगीन, राजा जयपाल, लमग़ान की जंग, गिरोहे-करामता का पस मज़ूर, राजा आनन्द पाल, कन्नोज का राजा कन्नुराय, महमूद ग़ज़नवी, सोमनाथ के वाक़ेआत, "महमूद ग़ज़नवी का अद्ल", "शोराए - ग़ज़नविया" को नज़्म किया गया है।

★ ★ ★





शाहनामा-ए-हिन्द के आठ भाग

यह दुनिया में पहली और सबसे लम्बी उर्दू कविता हैं, जो हिन्दुस्तान के इतिहास पर लिखी गई है। जिस में अशआर की संख्या बीस हजार है।

- ◆ इस का पहला भाग "शाहनामा-ए-हिन्द व-शमूल उर्दू महाभारत" है, जो आप के हाथ में है।
- ◆ दूसरा भाग "शाहनामा-ए-हिन्द व-शमूल हिन्दू अहदे-हुकूमत" है, जो जैन और बौद्ध धर्मों से शुरू होकर शात वाहन खानदान के साथ हर्षवर्धन पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का तीसरा भाग "मुसलिम अहदे-हुकूमत" मोहम्मद इब्ने-कासिम से शुरू होकर महमूद गजनवी पर खत्म होता है।
- ◆ चौथा भाग "शाहनामा-ए-हिन्द गौरी-ओ-गुलाम खानदान" जो अफगानिस्तान की तारीख से शुरू होकर शहाबउद्दीन गौरी और गुलाम खानदान के आखरी बादशाह गयासउद्दीन बिलबन पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का पांचवाँ भाग "शाहनामा-ए-हिन्द खिलजी खानदान" अलाउद्दीन खिलजी से शुरू होकर बाबर की आमद और शेर-शाह सूरी पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का छठवाँ भाग दकन के खानदाने-बहमनी से शुरू होकर खानदेश, गुजरात, कश्मीर, मालवा, जवनपूर की शरकी हुकूमत और बंगाल की हुकूमतों पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का सातवाँ भाग मुगलीया हुकूमत के दूसरे दौर अकबर से शुरू होकर शाहजहाँ पर खत्म होता है।
- ◆ शाहनामे का आठवाँ भाग औरंगजेब से शुरू होकर बहादुरशहा जफर पर खत्म होता है।

Designed & Printed By Mohan Computers Ph: 528145.

